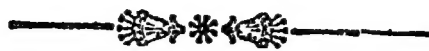




॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः

## ॥ रत्नसमुच्चय ॥



### ॥ मंगलाचरण ॥



ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ॥  
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

### ॥ कवित ॥

र उदार अगम्भ अपार । संसारमें सार पदार्थनांमी ॥  
समृद्धि सरूप अनूप । भयो सबही सिर झूप सुधामी ॥  
यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजांमी ॥  
इष्ट वसे परमेष्ट । सदा भ्रमसी करै ताहि सलामी ॥ १ ॥  
निसदिस नमायके सोस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥  
जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥  
रिंद दिणिंद छुणिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥  
धरम्भको धीर धराधर । ध्यान धरे भ्रमसी गुण ध्याता ॥ २ ॥

### ॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

॥ जिणकी महिमें १ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥  
ग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥  
देतहि दूनो वधै । अरु खायोहि खूटत नांहि खजीनो ॥  
साय कियो गुरुराय । तिणें भ्रमसो पदपंकज लीनो ॥ १ ॥  
अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥ २ ॥  
नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ ३ ॥



कोऽर्थःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न ज्ञेयमान् ॥ १०

उपदेशो हि मर्वाणां । प्रकोपाय न ज्ञातये ॥

पयःपानज्जङ्गानां । केवलं विपवर्द्धनं ॥ ११ ॥

मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥

आत्मवत्सर्वज्ञूतानि । विद्वन्ते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमा-  
तेषांद्वाद्वान्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोद्गस्वः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वज्र-  
नामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यञ्जनानि तेवर्गापंचप-  
वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शपसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ड-  
त्रणनमाः अनतस्थाः यरलवाः उष्माणः शपसहाः अःइतिविसर्ज-  
नीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपमानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व-  
परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरं व्यञ्जनं परं वर्णं नयेत् अनतिक्रमयन्-  
विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरण-  
समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अहतोभगवंतं इन्द्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥

आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥

श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । स्तनत्रयाराधकाः ॥

पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वन्तु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलं कुर्वन्तु)

यह जो पंचपरमेष्ठिपदहे सो हमेसां तुमजव्यजीवोंकूं मंगलकरो, के-  
लेकहे पंचपरमेष्ठि (अहंतोभगवंतं इन्द्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री  
अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोकों हणो सो अरिहंत कहौजे  
श्री-श्री-जिहंत केमेहे केननना केनदर्शन संयुक्तहे फेर

अर्थदे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसें दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत जगवंतमेंदे एकतों सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालकै फेर श्री अरिहंत जगवंत कैलैकहें ( इंद्रमहिता ) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें विराजमानहै सो बारे गुण ऐसेहैं प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग नर पत्नीना नर मैदारहित वना खसवोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलवे फूल जेसी खसवो होतीहे २ लोही नर मांस गन्धके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृश्य होतीहे अर्थात् चर्म चट्टुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह चार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे नर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ जगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी गाय वेठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके समूह गोमे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । वीट नीचा रहे पांखरी ऊपर रहे २ । ( दिव्यध्वनि ) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यच सब जीव अपनी २ जाषामें स्थावस्थित समजै ऐसा उनोंको मालम देवेके जगवान हमारी गेलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही बात सिद्धांतोंमें कहाजीहे ॥ तथा ॥ एगाङ्गिराणेगे । संदेहदेहिणंसमंविता ॥ तिहुअणमणु-नासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ आमर ४ जगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्बर ढोलता रहै ४ ॥ आसनअ ५ जगवंतके जी-के इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासन रहै ५ ॥ जा ६ जगवानके पितामी भामंमल रहे जिसें जव्यजीव जग-रफ देखसके जगवंतके चारमुख चारुंदिसामें दीखानेनुज-वान पूर्वदिशामें मुख करके बैठे हर तीन दिशामें जगजी

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन भगवानके अतिशयसे  
ज्यारोहीदिसामें दारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेजये दि-  
खाइदेवे ६ ॥ उंडुजी उ आकाशमें देव ते देवउंडुजीवाजिन्न वजावे  
उ ॥ रातपत्रं उ जगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन ठन्न  
रहै उ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे ऐसे अरिहंत देवाधिदेव  
चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोजित एक हजार  
आठ लक्ष्मालंकृत अठारै दूषणरहित शांत दांत रूपासागर त्रैलो-  
च्यनाथ तीन जगलूके गुरु वर्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-  
वलज्ञान केवलदर्शनसें लोकालोकका ज्ञाव देखतेजये पृथ्वीमंरुल-  
पर जव्यजीवोंके मनोरथ पूरणयके विचरतेहैं ऐसे अनंत गुणसें  
विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संधमें सदा मंगल करो ? ॥  
( सिद्धाश्रसिद्धिस्थिता ) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार  
हुत केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप  
अग्निसें जस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तजये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-  
नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक  
जयादिकसें रहित चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकस-  
मयमें जाणते उर देखतेथके लेकिन आत्मगुणोंमे मग्न रहेजये ऐसे  
श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंधमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ ( आचार्या-  
जिनशासनोन्नतिकरा ) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-  
स्कार हुत केसेकहे श्रीआचार्यमहाराज उत्तीसगुणोंसें विराजमान  
पद-  
सोयक दमागुणजंमार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-  
सेकहे उनके उन्नतिके करणवाले ऐसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-  
अरिहंत-  
श्रीसंधमें सदा मंगल करो ३ ॥ ( पूज्यानुपाध्यायका श्रीसि-  
का ) चौथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नम-  
के श्रीउपाध्यायमहाराज

एकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धान्तकेपढाणेवाले २५ गु-  
णोंसें विराजमान ऐसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मं-  
गल करो ॥ ( सुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः ) पंचम परमेष्ठिपदमें  
सब साधूमुनिराजजी ऐसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान ? दर्शन ?  
चारित्र ३ इन तीन रत्नोंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीने गुप्ते-  
युक्ता वक्तायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक  
ऐसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसें सोजित श्रीसंघमें सदा  
मंगल करो ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थ ॥

## ॥ अथविंशतिजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

- |                    |                        |
|--------------------|------------------------|
| १ श्रीकेवलज्ञानीजी | ९ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥   |
| ३ श्रीसागरजी       | १० श्रीमहायसजी         |
| ५ श्रीविमलदेवजी    | ११ श्रीसर्वानुभूतिजी   |
| ७ श्रीश्रीधरजी     | १२ श्रीदत्तस्वामीजी    |
| ९ श्रीदामोदरजी     | १३ श्रीसुतेजनाथजी      |
| ११ श्रीस्वामीजी    | १४ श्रीमुनिसुव्रतजी    |
| १२ श्रीसुमतिनाथजी  | १५ श्रीशिवगतिजी        |
| १४ श्रीअस्तागजी    | १६ श्रीनमिश्वरजी       |
| १७ श्रीअनिलनाथजी   | १७ श्रीयशोधरजी         |
| १९ श्रीकृतार्थजी   | १८ श्रीजिनेश्वरजी      |
| २१ श्रीगुह्यमतजी   | १९ श्रीशिवकरजी         |
| २३ श्रीस्यन्दनजी   | २० श्रीसंप्रतिस्वामीजी |

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

- |                   |                 |
|-------------------|-----------------|
| १ श्रीऋषभदेवजी    | २ श्रीअजितनाथ   |
| ३ श्रीसंज्ञवनाथजी | ४ श्रीअजिनंदनजी |
| ५ श्रीसुमतिनाथजी  | ६ श्रीपद्मजुजी  |

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी	८ श्रीचंद्राप्रभूजी
८ श्रीसुविघनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रियांसजी	११ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी	१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी	१६ श्रीशान्तिनाथजी
१७ श्रीकुंभुनाथजी	१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी	२० श्रीसुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी	२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी	२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

### अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी	४ श्रीश्वयंप्रभूजी
५ श्रीसर्वानुभूतिजी	६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभूजी	८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी	१० श्रीशतकीर्तिदेवजी
११ श्रीसुव्रतनाथजी	१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी	१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी	१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी	१८ श्रीसंवरनाथजी
१९ श्रीयसोधरजी	२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमल्लिप्रभूजी	२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी	२४ श्रीभद्रंकरजी

### ॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी	२ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीवाहूजी	४ श्रीसुवाहूजी
५ श्रीसुजातजी	६ श्रीस्वयंप्रभूजी

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
९ श्रीसूरप्रभूजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहजी	१४ श्रीभुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रभूजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहाभद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ चारसाश्वतातीर्थकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव ज्वन्ति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनबालाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीशीताजी
९ श्रीसुभद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीद्वंद्वतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि बड़ी २ सतियोंको त्रिकाल २ वंदना ॥

॥ ॐ परमोष्ठिने नमः ॥

॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो  
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवद्यायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सव्वसा  
हूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासखो ॥  
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ए ॥  
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण कें थापनाजीकी थापना  
करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥  
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्वहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥  
॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ प  
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥  
॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-  
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीठें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने  
ब्रह्मा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

अथ ॥ अथ खमासमण ॥

इवामि खमासमणो वंदितुं जावणिजाए निसीहिआए म  
इदामि ॥ इति ॥ ३ ॥



॥ अथ सुगुरुने शीर्षी सुखपुञ्जा ॥

॥ इच्छाकर जगवन् सुहराश, सुहदेवसी, सुख तपशरीर निरा  
बाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोगोजी? स्वामी शाता ठेजी? इति ॥

॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे दे-  
वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अष्टुष्टि  
जमि कहे पीठें खमासमण देकें इच्छाकोरेण संदिस्तह जगवन्  
सामायिक लेवा मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेह. पीठें इच्छ  
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सर्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥  
मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल  
मुहपत्ती खोलती बिरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परि  
हरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥  
॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान  
॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पमिले-  
हण नावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-  
विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥  
कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरुं ॥ १ ॥ वचनदंरुं ॥ २ ॥ काय-  
दंरुं ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पमिलेहण जिमणे हाथसैं करणी  
॥ यह पच्चीस बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीस पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ क पोतलेश्या  
॥ ए तीनुं नीलामे मस्तकें परिहरुं ॥ ॥ क विराग



॥ रुद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥ ३ ॥  
ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ नियाणाशब्द ॥ २ ॥ मिच्छादंसणं-  
शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय रुवे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन रुवे  
हाथे परिहरुं ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन  
जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ ए  
तीन रुवे पगे परिहरुं ॥

॥ वाजकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥  
ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुद्दपत्ति पम्हिलेहणा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठें खमा दोय कें इच्छामि खमासमणका पाठ कहे कें  
इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे  
संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्छं कहे कें फेर खमासमण दे कें इच्छा ॥  
जण ॥ सामायिक ठाळं ? गुरु कहे ठाण्ह ॥

॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देइ थोमो जुकी तीन नव-  
कार गणी इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् पसाज करी सामायिक  
दंभक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंते  
सामादयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चखाण ॥

॥ जेमि जंते सामादयं, सावळं जोगं पच्चखामि ॥ जाव  
हंदांमि ॥ मामि ॥ दुविहं ति विहेणं मणेणं वायाए काण्णं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स ज्ञंते पम्किमामि निंदामि गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठेँ खमासमण दे केँ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्  
इरियावहियं पम्किमामि ॥ गुरु कहे पम्किमह. पीठेँ इच्छं कही ॥  
इच्छामि पम्किमिच्छं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावहियं पम्किमा  
मि ॥ इच्छं इच्छामि पम्किमिच्छं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए  
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे  
॥ उंसा उत्तिंग पणग दग मट्ठी मक्करु संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे  
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदि  
या पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अज्झिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टि  
या परियाविया ॥ किलामिया उद्विया ठाणान् ठाणं संकामिया  
जीवियान् ववरोविया ॥ तस्समिच्छामि उक्कमं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायञ्चित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं  
॥ विसट्ठीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ शिग्घायणठाए ॥ ठामि  
कानस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ उससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ उससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंजाइएणं  
उरुएणं वायनिसग्गेणं जमलिए पित्तमुञ्जाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचा  
ळेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचाळेहिं ॥ सुहुमेहिं णिठिसंचाळेहिं ॥ २ ॥ एव  
माइएहिं आगारेहिं ॥ अज्जग्गो अविराहिन् ॥ हुज्ज मे कानस्सग्गो  
॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं जगवताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥  
तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इ  
ति ॥ ए० ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लो० तस्सको क० विराहरे,

करे. पीठें एमो अरिहंताणं कहे केँ कानुस्सग्ग पारकेँ मुखसेँ प्रगट  
लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिब्बयेरे जिणे ॥ अरिहंते  
कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसज्ज मज्झिअं च वेदे ॥  
संजव मज्झिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जांत वासु  
पुज्जां च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥  
कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुवयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ  
नेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्झिअुआ ॥ वि  
हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिब्बय  
रामे पत्तीयंतु ॥ ५ ॥ कित्ति य वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ  
त्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग वोहिलाज्जं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥  
चंदेसु निम्मलयरा ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवग्गंजीरा  
॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीठें खमासमण देइ इच्छा० ॥ जगवन् बैसणो संदि  
स्तावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्छं कहे केँ वली खमा-  
समण दे कर ॥ इच्छा० ॥ जगवन् वेसणो ठाजं ? गुरु कहे  
ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे केँ खमासमण दे कर इच्छा० ॥  
ज० ॥ मिज्जाय संदिस्तावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीठें  
इच्छं कहे के वली खमासमण दे कर इच्छा० ॥ जग० ॥ सिद्धाय  
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे केँ इच्छा खमे हो कर  
आव नवकार कह कर सद्धाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे  
तो खमासमण दे केँ इच्छा० ॥ ज० ॥ पागरणो संदिस्तावुं ? गुरु  
कहे संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा० ॥  
पागरणो पाग्याजं ? गुरु कहे पणिग्घाएह ॥ पीठें इच्छं क

३। वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक  
 यदि तो "वंदामो" ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सि  
 द्धाय करेह, ऐसै कहे ॥ इति प्राज्ञातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खभासमण दे के इच्छा ० ॥ ज्ञ ० ॥ चैत्यवंदन  
 करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीवैं इच्छं कही जयन सामि जियेन सामि  
 इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयन सामिय जयन सामिय, रिसह सेतुंजि उज्जंति ॥  
 ॥ पंडु नेमिजिण, जयन वीर सच्चनरिमंण ॥ १ ॥ जरुअवेह  
 मुणिसुवय, महुरिपास डुह डुरिय खंण ॥ अवरविदेहिज तिठ-  
 यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडु जिण  
 सवेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसन सत्त-  
 रिसन, जिणवराण विहरंत लग्गई ॥ नवकोमीहिं केवल्लिण, कोमि  
 सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमीहिं  
 चरणाण ॥ समणह कोमी सहस्स डुई, शुणिज्जइ निच्च विहाण  
 ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा उप्पन्न अठ कोमीनु ॥ चउ-  
 सय ठायासीया, तिच्छुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं,  
 पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठावीस सहस्सा, चउसय अठ-  
 सिया पन्निमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिठं ॥ सग्गे पायाले भाणुसे लोए  
 जइ विणविंवाइ ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥

उग्राणां, सैव संवुक्षाणां ॥ १ ॥ पुरिसुत्तमाणां, पुरिससीहाणां, पुरि-  
 सवरपुंरुरीक्षाणां, पुरिसवरगंधहवीणां ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणां, लो-  
 गनाहाणां, लोगहिआणां, लोगपईवाणां, लोगपज्जोअगराणां ॥ ४ ॥ अज-  
 यदयाणां, चरखुदयाणां ॥ मग्गदयाणां, सरणदयाणां, बोहिदयाणां  
 ॥ ५ ॥ धम्मदयाणां, धम्मदेसियाणां ॥ धम्मनायगाणां, धम्मसा-  
 रहीणां, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणां ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरनाणां  
 दंसण धराणां, विअट्ट ठउमाणां ॥ ७ ॥ जिणाणां जावयाणां, तिन्नाणां  
 तारयाणां, बुद्धाणां बोहयाणां, मुत्ताणां नोअगाणां ॥ ८ ॥ सब्बूणां  
 सब्बदरिसिणां, सिव मयल मरुअ मणांत मरुवय मवावाह मपुसरा-  
 वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणां संपत्ताणां, नमो जिणाणां,  
 जिअ जयाणां ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ जविस्संति  
 णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सब्बे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं  
 ताइं वंदे ॥ इहसंतो तउ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥  
 सब्बेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिदंन विरयाणां ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहस्तवनं ॥

॥ उवस्तरगहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसह-

तो विमनिन्नासं ॥ मंगलकट्ठाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुग्गिअमंनं

चेतोदेहो धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स महारोगमारी ॥

गंगरणां ॥ २ ॥ चिउउ दूरे मंतो ॥ तुअ पणामो

॥ परिणसुवि जीवा ॥ पावंति न उरुस्व

॥३॥ तुह सम्मते लदे ॥ चिंतामणि कप्पयायवप्रहिए ॥ पावंति  
अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संशुद्धं महायस  
॥ जत्तिप्ररनिप्र्रेण हिअएण ॥ ता देव दिऊ वोहिं ॥ जवे जवे  
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ हाउ ममं तुह पज्जावउ जयवं ॥  
जवनिवेउ मग्गा, एउसारिआ इउ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचा  
उ ॥ गुरुजणपूआ परउकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतवय, ए सेवणा  
आजव मखंसा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें  
खमासमण दे केँ इच्छा ॥ ज ० ॥ कुसुमिण दुसुमिण राई पाय  
छिच विसोहणठं काउस्सग्ग करुं ? गुरु कहे करेह पीठें इठं कह  
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित विसोहणठं करेमि काउ  
स्सग्गं ॥ अन्नठ उलसिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे केँ सोले नव  
कार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन  
कर केँ काउस्सग्ग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर काउ  
स्सग्ग पारीकेँ सुखलेँ एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें  
गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागर  
वरगंजीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पम्पिकमणां ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम  
ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि केँ वांदिथे ॥ १ ॥ खमासमण  
देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिथे ॥ २ ॥ खमासमण देइ  
जंशम युगप्रधान वर्तमान जट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले केँ वां  
॥ ३ ॥ खमासमण देइ केँ सर्व साधुजीकुं वांदिथे ॥ ४ ॥ इस  
चार खमासमणसें पम्पिकमणां ठावी गोमालीये बैठ केँ मस्त  
माय कर दोलुं हाथे सुहपत्ती सुहमे दे कर ॥ सबस्सविराहरे,

॥ इत्यादि पाठ कहे, परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सहं इच्छं इस्स माफकं न कहे ॥

॥ अथ सवस्सवि ॥

॥ सवस्सवि देवसिअ उच्चित्तिअ उप्पासिय दुच्चिठ्ठिअ इच्छा कारेण संदिस्सह जगवन् इच्छं ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कमं ॥ इति ॥ १८ ॥ संवेरका देवसिके ठिकाने राश्यं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठें नमुत्तुणं कह केँ खमा होय केँ ॥ करेमि जंते सा माश्यं सावच्चं जोगं पच्चस्सामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठें इच्छामि कानस्सगं जो मे राइनं ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि कानस्सगं ॥ जो मे देवसिअ अइआरो कं ॥ काइअ वाइअ माणसिअ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अकरणिज्जो ॥ उच्चानं ॥ दुच्चित्तिअ अणायारो ॥ अणिच्चिअवो ॥ असावगपाजग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गुणवयाणं ॥ चउन्हं सिस्कावयाणं ॥ बारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंमिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ इहां देवसियंके ठिकाने राश्यं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठें तस्सउत्तरी ० ॥ अन्नउत्तसिएणं कह कर चारित्रिअदि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका कानस्सग करी पारि केँ दर्शन अदि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि कानस्सगं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, सग वत्तिआए ॥ बोहिलान्न वत्तिआए ॥ निरुवसग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वद्धमाणी  
ए ठामि कान्हस्सगं ॥ २ ॥ इति ॥ ३० ॥

पीठें अन्नवृ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका  
कान्हस्सग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुस्करवरदी० ॥  
सुयस्स जगवन्त करेमि कान्हस्सगं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ पुस्करवरदी ॥

॥ पुस्करवरदीवहे, धायइसंभे अ जंबुदीवेअ ॥ जरहे स्वय  
विदेहे, धम्मइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्धं, सणस्स  
सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल  
स्स ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्स, कद्धाण पुख्खलवि  
सालसुद्धावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार  
मुवल्लभ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेणो पवन्तणमो जिणमए, नंदी  
सया संजमे ॥ देयं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्पूअ जावच्चिए ॥  
लोगो जन्त पइठिन्त जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वद्धन्त स  
सन्त विजयन्त, धम्मुत्तरं वद्धन्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३१ ॥ सुअस्स ज  
गवन्त करेमि कान्हस्सगं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर  
अन्नवूससिएणं कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका कान्ह  
स्सग करे, कान्हस्सगके मांहे आजुणा चार ग्रहर चिंतवे, सो आ  
गे लिखेंगे, पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु-  
वगयाणं, नमो सया सब्बसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं  
देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी  
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ तं  
आज्जागगान्न तारेड नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिन सेल सिंहरे,



दिक्का नाणं निसीहिद्या जस्त ॥ तं धम्मचक्रवट्ठिं, अरिठनेमिं न  
मंसांमि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउघीसं  
॥ परमठ निद्विअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्विठि समाहिगराणं ॥  
इति ॥ करेमि कानुस्सगं ॥ अन्नवण ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र  
वाढणां निमित्तें मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेह ॥ मुहपत्ती  
पमिलेहे, पीठें वाढणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उजा हुआ आधा नीचा नम कर  
इचामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए निसीहिद्याए अणुजा-  
णह मे मिउगहं. इतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता  
हुआ निसीहि कह कें कवुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संभासा  
प्रमार्जन कर कें उक्कर बैठ के नावे हाथमें मुहपत्ती ले कें नावे  
कानलें ले कें जिमणा कान पर्यंत निह्नाम पूंजी, मुहपत्ती आर्ये  
रख कें तिसके मध्य जागमें गुरुचरणकी कढपत्ता कर कें ॥ अहो  
कायं इत्यादि आवर्त कर कें कवुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि  
कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो जे किलामों  
॥ इत्यादि पाठ कहे, पीठें फेर ॥ जत्ता जे ॥ इत्यादि आवर्तन कर  
कें खडा होकें पीठें पगसैं जूमि पूजता हुआ अवग्रहसैं बाहिर  
निजजकें स्वस्थान पर आवे. उहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ  
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुस्वांदाणां ॥

॥ इचामि खमासमणो वंदिउं, जावणिजाए निसीहिद्याए  
अणुजाणह मे मिउगहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं,  
खमणिज्जो जे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुज्जेण जे, दिवसो

वश्कंतो जत्ता जे जवणिऊं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देव-  
 सिअं वश्कम्मं आवसिआए, पम्किमामि खमासमणाणं ॥ देव-  
 सिआए, आसायणाए ॥ तितीसन्नयराए जं किंचि मिआए, मण-  
 डुक्कमाए, वयडुक्कमाए कायडुक्कमाए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-  
 ज्ञाए, सबकालिआए, सब मिआोवयाराए, सबधम्माश्कमणाए ॥  
 आसायणाए जो मे अइआरो कउं, तस्स खमासमणो पम्किमामि ॥  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें  
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउं वश्कंतो, तथा  
 चउमासीयें चउमासीउं वश्कंतो, पस्कीयें पस्को वश्कंतो, संवत्त-  
 रीयेसंवत्तरीउं वश्कंतो ॥ एसीतरेपाठकहेनां ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इआकरेण संदिस्सह जगवन् देवसियं आलोउं इअं ॥ आ-  
 लोएमि, जो मे ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीठें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु सम्ह आलोवे, सो क-  
 हेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय  
 ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख  
 तेजकाय ॥ सात लाख वाजकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-  
 काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइं-  
 द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख  
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्थेच पंचैंद्रिय ॥ चउदे  
 लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,  
 माहारे जीवें जे कोइ जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणतां  
 प्रत्ये जलो जाण्यो होय, ते सबेहुं मन वचन कायार्थे करी मिआ  
 मि डुक्कमं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अंदारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥  
मैथुन ॥ ४ ॥ परियुह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया  
॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२  
॥ अन्ध्याख्यान ॥ १३ ॥ पैगुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥  
परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द  
॥ १८ ॥ ए अंदारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय,  
सेवना प्रत्ये जलां जाण्यां होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायार्ये  
की तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव  
करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा  
नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, खीकथा, ज्ञत  
कथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीयुं होय, कराव्युं  
होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायार्ये करके, दि  
वस अतिचार आलोयणे कर के पम्किमणामे आलोउं ॥ तस्स  
मिच्छा मि डुक्कमं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रजातके पम्किमणामे  
दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ केहेनां ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ पीठें सबस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ केहे, तिहां  
इच्छाका ॥ जण ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रा-  
यचित्त मागे, गुरु कहे पम्किमह ॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि  
डुक्कमं कह के संमासा प्रमार्जन कर के आसन पर बैठे के जि-  
मणा गोमा उंचा रख के मावा गोमा नीचे कर के ऐसें कहे कि  
जगवन्! सूत्र जणुं? तव गुरु कहे जणेह ॥ पीठें इच्छं कहि के तीन  
नवकार अरु तीन बार करेमि जंते ॥ जण के इच्छामि पम्कि  
मिच्छं जो मे रा- इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे, सो लिखते हैं ॥ पीठें खम्हा हो कें अष्टुठि  
जमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सब सिद्धे, धम्मायरिए अ सबसाहू अ ॥ इहामि  
पम्किमिजं, सावगधम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,  
नाणे तह दंसणे चरिजे अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे  
तं च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे  
अ आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पम्किमे देवसियं सबं ॥ ३ ॥  
जं वरुमिदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ रागेण व दोसेण  
व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं-  
कमणे अणाज्जेणे ॥ अज्जिज्जे अ निज्जे, पम्किमे ॥ ५ ॥ संका  
कंख विगिंठा, पसंस तह संयवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,  
पम्किमे ॥ ६ ॥ ठक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसां  
॥ अत्तघाय परछा, उज्जयछा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचणहमणुव-  
याणं, गुणवयाणं च तिसह मइयारे ॥ सिक्काणं च चउसहं, पम्कि-  
मे ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइवाय विरइं ॥  
आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वहं बंध ठविजेए,  
अइ जारे जत्त पाण वुत्तेए ॥ पढमं वयस्त इआरे, पम्किमे ॥  
१० ॥ बीए अणुवयंमि, परिधुलगअलिअ वयण विरइं ॥ आया-  
रिअमप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्त दारे,  
नेसुवएसे अ कूमलेहे अ ॥ बीयं वयस्त इआरे, पम्किमे ॥  
१२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलग परदव्वहरण विरइं ॥ आयरिअ  
मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरप्पज्जे, तप्पमिरूवे  
वरुह गमणे अ ॥ कूरुतुल कूरुमाणे, पम्किमे ॥ १४ ॥ चउत्ते  
अणुवयंमि, निच्चं परदारगमण विरइं ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ  
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिब्ब

अगुरागे ॥ चञ्च वयस्स इआरे, पम्किमे० ॥ १६ ॥ इत्तौ अणुव्वए  
 पं, चमंमि आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्त पमायप्पसं  
 गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्तू, रूप्प सुवत्ते अ कुंविअ परि-  
 माणे ॥ डुपए चञ्चप्पयंमि, पम्किमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-  
 माणे, दित्तासु उट्ठं अहेअ तिरिअं च ॥ वुम्भिसइअंतरद्दा, पढमंमि  
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ  
 गंधमत्ते अ ॥ उवज्जोग परिज्जोगे, वीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते  
 पम्किदे ॥ अपोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुत्थोसहि ज्ञस्सकणथा,  
 पम्किमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसामी, ज्ञामी फोमी सुवज्जाए  
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥  
 एवं खु जंतपिच्चणं, कम्मं निच्चंणं च दवदाणं ॥ सरदद तलाव  
 सोलं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्तग्गि मसल जंतग, तण  
 क्के मंत मूल जेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पम्किमे० ॥ २४ ॥  
 न्हाणू वट्ठण वन्नग, विलेवणे सदल्लव रसगंधे ॥ वत्तासण आन्नरणे,  
 पम्किमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुकुइए, मोहरि अहिगरण जोग अइ-  
 रिचे ॥ दंमंमि अणठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे  
 डुप्पणिहाणे, अणवठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए,  
 पढमे सिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ  
 पुगलखेवे ॥ देसावगा सिचंमि, वीए सिस्कावए निंदे ॥ २८ ॥  
 संया रुच्चारविही, पमाय तह चेव ज्ञोयणाज्जोए ॥ पोसह विदि  
 विवरीए, तइए सिस्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्किवणे, पि-  
 हिणे ववाएस मत्तरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चञ्चे सिस्कावए  
 निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सअ डुहिए सुअ, जामे असंजएस अणुकंपा  
 ॥ रागेणव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ सादूसु  
 संविज्जागो, न कञ्च तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ  
 आसंस पज्जे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मच्च हुज्ज मरणंते ॥३३॥  
 काएण काइअस्स, पम्भिकमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसि-  
 अस्स, सबस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिस्कागा,  
 रवेसु सन्ना कसाय दंसेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो  
 अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मदिठि जीवो, जइ विहुपावं समायेरे  
 किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥  
 तं पिहुसपम्भिकमणं, सप्परिआवं सज्जत्तरगुणं च ॥ खिप्पं जवसामेइ,  
 वाहिब सुसिख्खित्तं विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुठ्ठयं, मंत मल  
 विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥  
 एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्झिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो,  
 खिप्पं हणइ सुत्तावत्तं ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ  
 निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुत्तं, उहरिअ जरुव जारवहो  
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावत्तं जइवि बहुरत्तं होइ ॥  
 डस्काण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलो-  
 अणा बहुविहा, नयसंज्जरिआ पम्भिकमणकाले ॥ मूल गुण उत्तर-  
 गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि  
 पन्नत्तस्स ॥ अप्पुठित्तमि आरा, हणाए विरत्तमि विराहणाए ॥  
 तिविहेण पम्भिकंतो, बंदामि जिणे चत्तवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति  
 चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय  
 पाव पणासणीइ, जवसयसहस्स महणाए ॥ चत्तवीस जिण वि-  
 णिग्गय कहाइं, वोत्तंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता,  
 सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मदिठो देवा, दितु समहिं च  
 बोहिं च ॥ ४७ ॥ पम्भिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पम्भिक-  
 मणे ॥ असदहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खा-  
 मेमि सब जीवे, सबे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सब नूएसु, वेरं

मङ्गं न केणइ ॥ ४९ ॥ एव महं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगं-  
 ठिअं सम्मं ॥ तिविहेण पन्निक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५०  
 ॥ इति ॥ ५१ ॥ इहां प्रजातके पन्निक्कमण्णमे देवसिके ठीकाने राइयं  
 कहना ॥

॥ पीठे दो बाइणां देकर अवग्रहमांदिथकोज कहे ॥ इच्छा-  
 का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अमुष्णिमि अग्निंतर ॥ राइयं खामेमि ?  
 गुरु कहे खामेइ ॥ संतासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, वे  
 बांइ पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ  
 गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो अको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
 संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अमुष्णि ॥

॥ इच्छाकरेण संदिस्सइ जगवन् अमुष्णिमि अग्निंतर देव-  
 सिद्ध खामेजं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं जत्ते  
 पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर-  
 ज्ञासाए उवरिज्ञासाए ॥ जं किंचि ॥ मङ्गविणय परिहीणं सुहु-  
 मंवा वायरं वा ॥ तुझे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स सिद्धामि  
 डुक्कं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिद्धामि डुक्कं कहे. पीठे वे बांइणां देई  
 जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसैं अवग्रह बाहिर आय के आयं-  
 रिय उवजाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवजाए ॥

॥ आयरिअ उवच्चाए, सीते साहमीए कुलगणे अ ॥ जे  
 मे कया कसाया, सबे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समणं  
 संवस्स, जगवन् अंजलिं करिअ सीते ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि  
 सबस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, ज्ञावन् धम्मो निदिअ  
 निअ चित्तो ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीठें करेमि जंते इछामि ठामि कानुस्सगं तस्सुत्तरी० ॥  
 श्रीमहावीर स्वामी ठमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि कानु-  
 स्सगं अन्नवू० ॥ कहि कें कानुस्सग करे, कानुस्सगमें श्रीवीर-  
 कृत ठम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा ठ  
 छोगस्सका कानुस्सग करे, कानुस्सग पारिकें प्रगटलोगस्स कहे ॥  
 ॥ ठठे आवश्यककी मुहपत्ती पम्हिलेहुं ? गुरु कहे पम्हिलेह  
 ॥ मुहपत्ती पम्हिलेही वे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लइ नम-  
 स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सङ्गत्तया देवलोके रविशशिजवने, व्यंतराणां निकाये,  
 नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्न-  
 गेंद्रे स्फुटमणिकरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदि-  
 वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे  
 कुंभले हस्तिदंते, वरुकारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥  
 शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥  
 श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्वुदे पावके वा, सम्मेते तारके  
 वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमल-  
 गिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षि-  
 तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे व धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे  
 विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरंकटे चक्रकूटे च ज्योटे ॥ श्री०  
 ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निपधे मेखले पिष्ठले वा,  
 नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले  
 कोशले वा विगलितसलिले, जंगले वा ठमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥  
 अंगे वंगे कर्लिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरंमे  
 वरतरद्रविमे उद्रियाणे च पौंमे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविमुकवलये



कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमधु-  
 रापत्तने चोक्तायिन्यां, कौशल्यां कौशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां  
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे जदिले ताम्रलिप्त्यां ॥  
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे,  
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये  
 वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री-  
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाढमलौ जंबुवृक्षे, चौकान्ये चैत्यनंदे  
 रतिकररुचके कौमले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ  
 व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके ज्वंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्या-  
 लयानि” ॥ ९ ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः,  
 प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं जक्तिज्ञाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-  
 तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः  
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥  
 इति ॥ ३१ ॥

पीठे गुरुमुखे यज्ञस्काण करि कै ॥ इच्छामोनि लक्ष्यं कहि  
 कै गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीठेशमो खमासमणार्ण एमोऽर्हत्तिष्ठा ॥ कह कर.  
 परसमय तिमिरतरणिं ए लीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, जवसागर वारि तरण वरतरणिं  
 ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं आहावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार  
 विहारकरि, दुरन्तजावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा  
 न्नी, जवावहं मोहजरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ,  
 संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-  
 नागमं परमसिद्धिकरं जमामि ॥ ३ ॥ परिमलजरलोत्तालीढलोला-  
 लिमात्रा, वरकमलनिवासे हारनीहारहाणे ॥ अविरलजविकारागार

विञ्चितिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥  
३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥  
माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-  
वावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमालितानि ॥  
संपूरिताजिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि  
तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराजिरामं, जीवाहिंसा-  
विरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,  
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल  
परिमला लीढलोलालिमाला, जंकारा रावसारा मलदलकमलागार-  
जूमिनिवासे ॥ ग्यासंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहारान्जिरामे, वा-  
णीसंदोहदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा जणी, शक्रस्तव कहे. पीठें स्वर्ग हो  
कर अरिहंत चेइयाणं करेमि कान्दस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआएण अन्नबूण  
॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ कान्दस्सग्गमाहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक  
प्रथम कान्दस्सग्ग पारी नमोऽर्हस्सिद्धान्द कही ॥ एक गाथा स्तुति  
कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम,  
नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंठण सेवित, पञ्चमावड धरणिंद ॥  
प्रह ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक  
जण कहे ॥ दूसरे सब कान्दस्सग्गमाहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीठें  
शमो अरिहंताणं कहि कें कान्दस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगे पण  
जाणणां ॥ पीठें लोगस्स कहि ॥ सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंदण

वत्ति० ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहि कैं ॥ एक नवकारका काउस्तग  
करी पारि कैं दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयद्वड, कणयाचल अन्निराम ॥ मानुषोत्तर  
नंदी, रुचक कुंरुल सुखगाम ॥ जुवणोसुर व्यंतर, जोइस विमाणी  
नाम ॥ वर्ते ते जिणवर, पुरो मुज मन काम ॥ २ ॥

॥ पीठें पुरकरवदीवद्धे कहि कैं सुयस्त जगवन्तं वंदणं  
अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग पारि कैं ॥ त्रीजी  
स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, वार उपंग ठ ठेद ॥ दस पयन्ना  
दाख्या, मूल सूत्र चउत्तेद ॥ जिन आगम पद्मव्य, सप्त पदारथ  
जुत्त ॥ साजलि सईदतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ कहि कैं वेयावच्चगराणं ॥  
अन्नबू० कही ॥ एक नवकारका काउस्तग करी पारि कैं एमो-  
इहत्तिद्धाणं कहि कैं चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पञ्चमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट,  
दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनजकि, सूरि कहे इक्ष चित्त ॥ सुख  
सुजस समापो, पुत्त कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीठें नीचा वैठ कैं एमोबूएणं कहि कैं ॥ तीन खमा-  
समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्यय, सर्वसाधु वांटे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें  
मुहपत्ती देई अट्टाइजेसु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अट्टाइजेसु ॥

॥ अट्टाइजेसु ॥ दीव समुद्धेसु ॥ पन्नरससु कम्मजूमसीसु ॥  
जादंत केवि साहू ॥ रयहरण गुत्तपणिग्दधारा पंचमहद्वयधारा ॥  
जडारसहस्त सीलंगधारा ॥ अस्कराधारारिचा ॥ ते सबे सिरसा  
ह्मसा मन्त्रेण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता हुवे तो खमासमें  
सीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन् ॥ चैत्यवंदन करूं  
जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिजुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय  
जय करुणा शान्त दांत, जवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद  
वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-  
जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥  
त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-  
चिनाम तिष्ठं ॥ नमोऽब्रूणं जावंति चेद्भ्राण जावंत केवि साहूण  
॥ नर एमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुज्यः ॥ तक कहि के  
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग बालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतमी अवधार लाल रे ॥  
परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥  
केवल ज्ञान दिवाकरू, जांगे सादि अनंत लाल रे ॥ जासक लो-  
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र  
चक्कीसरू, सुर नर रहे कर जोरु लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,  
अणहूँता इक कोरु लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर  
वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-  
शरो, जव जव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उधारण  
गो तुम्हें, दूर हरो जव डुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी,  
देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीठें लयवीरराय० वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नब्रू० क.

कैं ॥ एक नवकारका काजस्तग करे ॥ पारि कैं नमोऽर्हत्सिद्धां  
कही ॥ एक शुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंरुणं पुससोवन्न देहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥  
महाणंदलब्धी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंघरं तिष्ठरायं ॥ १ ॥ इम  
होज धिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाजि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय  
प्रथम जिणंद चंद, जव दुःख विहरण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद,  
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषज्ज जिणोसर ॥  
अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुज पद पंकज  
प्रीति धर, निशिदिन नमत कढ्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिष्ठं  
॥ एमोत्तुणं ॥ जावंति चेइआइं ॥ जावंत केवि साहू ॥ एमो-  
ऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः तक कहि कैं श्री सिद्धाचल-  
जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेठ्यां रे ॥ धन्य ज्ञान्य हमारां ॥ विम-  
लाचलगिरि ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोठो, कहेतां न आवे  
पारा ॥ रायण रूख समोसर्पा स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध०  
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट  
द्रव्यसें पूजो जावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर  
देगथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धरण  
विरुद्ध तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ जाव  
जक्तिसें प्रभू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि  
जिविन गुप्त जावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥  
इत अठारे ज्ञासी मास आपाढे, वदि आठम जे ॥ ५ ॥

प्रभुके चरण परतापसिंहमें, कमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५॥

॥ पीठें जयवीरराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नबू० ॥ कहिकें  
एक नवकारकाकानुस्संग करी ॥ पारिकें नमोऽर्हत्तिस्स० ॥ कहिकें ॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रुषनदेव पुंरुंरीक ॥ शुभ तपनो  
महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासैं, विधिगुं  
चैत्यवंदनाक ॥ करियें जिन आगत, ठाली वचन अलीक ॥ १ ॥  
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पंमिलेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ पमि-  
लेहण संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥  
॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥  
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणें  
अंग पमिलेहण संदिस्सानं ॥ अंगपमिलेहण करुं, कहीके धोतियुं  
कणदोरो पमिलेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन् पसान  
करी पमिलेहण पमिलेहावो जी. एम कही ॥ आपनाचार्य  
पमिलेह रखे, अने जो गुर्वादिक आपनाचार्य पमिलेहे, तो  
पण खमासमण देई आग्या मागे, पीठें खमासमण देई  
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह  
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इ-  
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पमिलेहण संदिस्सानं ॥ उही पमि-  
लेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पमिलेहे ॥ पीठें पोषध-  
शाला प्रमार्जी काजो, विधिगुं परठवी खमासमण देई इरियावही  
पमिकमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तो ज्ञी  
दृष्टिपमिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अबज्जी प्राये एही करते दि-  
खते हैं ॥

॥ अथ सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती  
पन्विलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक  
पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायबो, पीठें यथाशक्ति कही वली खमा-  
समण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारेमि ॥  
गुरु कहे आचारो न मोत्तबो ॥ पीठें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊजो  
थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें वेसी मस्तक नमावी  
॥ जयवं दसस्रजहो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दसस्रजहो ॥

॥ जयवं दसस्र जहो, सुदंसणो थूलिजद वयरोय ॥ सफली  
कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणें, ना-  
सइ पावं असंकिया जावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अजिगहो  
नाण माईणं ॥ २ ॥ ठुमबो मूढमणो, कितिय मित्तं पि संजरइ  
जीवो ॥ जं च न संजरामि अहं, मिच्छामि डुक्कं तस्स ॥ ३ ॥  
जं जं मणेण चित्तिय, मसुहं वायाइ जासियं किंचि ॥ असुहं काएण  
कयं, मिच्छामि डुक्कं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, वियस्स  
जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधबो, सेसो संसारफलहेऊ  
॥ ५ ॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशा-  
तना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, वारह कायाका, वत्तीस  
दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन  
कर, कायार्थें करी मिच्छामि डुक्कं ॥ इति सामायिक पोसह  
पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीठें पन्विलेहण करे.  
उहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूठै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें  
सैं कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिठले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पमिलेहे, जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपमिलेहण करे ॥ पीठें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी जूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे ॥ पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक तंदिस्ताजं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक ठाजं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे, इच्छकार जगवन् ! पसाज करी सामायिक दंरुक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें सामाश्यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ इरियावहियं पम्किमामि ? गुरु कहे पम्किमेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ इच्छामि पम्किमिजं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसैं इरियावहियं पम्किमी ॥ एक लोगस्सका कान्त्सगग करी, एमो अरिहंताणं कही, कान्त्सगग पारी मुखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पमिलेहि वांदणां देई कहे, इच्छाकार जगवन् ! पसाज करी पञ्चस्काण करावोजी, पीठें गुरु, दिवस चरिम पञ्चस्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावें थापनास समकें अथवा स्वमुखें, अथवा वेमेरा साधमीं मुखें पञ्चस्के ॥ तय, जो तिबिहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पमिलेहि पुसअ करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउबिहार उपवास हुवे, तो ११ ॥ स्काण करवुं ठे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पमिलेहे ॥ अवरगं-विस्तार विधि है ॥ पीठें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥



॥ सिद्धाय संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. पीठें इच्छं कही  
 वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ ॥ सिद्धाय करुं ?  
 गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ जजो थको  
 मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठें खमासमण देई  
 ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ वेसणुं संदिस्तानं ? गुरु० संदिस्तावेह  
 ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ वेसणुं ठानं ?  
 गुरु कहे, ठाएह ॥ पीठें इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ पांगरणुं संदिस्तानं ?  
 गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥  
 ॥ पांगरणुं पन्निघानं ? गुरु कहे पन्निघाएह ॥ पीठें इच्छं  
 कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पन्निक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ॥ ॥ ॥  
 चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे  
 ॥ जिसमें परकी तथा चउमासी तथा संवत्तरीके रोज तीस गाथा  
 कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पड़ेलेकी, और दोय गाथा  
 पिठामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं.  
 अथ जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धन्नं तरि, जय  
 तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-  
 पारवाण भुवणत्तय सामिअ, कुणमुसुहाइं जिणेस पास अन्नणय  
 ॥ १ ॥ तं समरंत लहंति जत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धस सुवन्न  
 पुण्ण जणजुंजहि रज्जहि ॥ पिरकहि सुक्क असंखसुक्क तुह  
 यसाइण, जय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहि कुण महजिण ॥  
 ॥ जरजजोर परिजुस वसणहुठ सुकुठिण, चक्कुरकीणखणखुस

निरसस्त्रिअसूत्रिण ॥ तह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणसव,  
 जय धसंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो जव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस  
 मंततंतसिद्धिअपयत्तिण, जुवणपुअ अठविह सिद्धि सिद्धि तुह  
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तनवि जण होइ पवित्तन, तं ति-  
 हुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तन ॥ ४ ॥ खुह पवत्तइ मंत  
 तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिजवग्गविगंजइ ॥  
 डुब्बियसत्त अणत्त घत्त निम्मारइ दय करि, डुरिअई हरन सुपासदेव  
 डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंजेइ नीमदप्पुद्धर सुरवर,  
 ररकस जरक फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरनदखुह  
 पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअदिलंघिआण जय पास सुसामिअ  
 ॥ ६ ॥ पत्तिअ अत्त अणत्तहित्तज्जत्तिप्रर निप्रर, रोमंचं चिअचारु-  
 काय किस्सरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल परकालिअ  
 कलिमलु, सो जुवणत्तयसामि पास महमद्वज रिजवलु ॥ ७ ॥ जय  
 पणकमलजसलजय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद  
 देणधर ॥ जय मइमेशणि वारिवाह जयजंतुपिआमह,  
 ॥ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहु विहवणुअवणु  
 धिअपसहि, मुक्कधम्मुकामत्तकाम नर नियनियसत्तहि ॥  
 पुरदि दरिसणत्त बहु नाम पसिद्धन, सो जोइ अमण  
 हिरसण पास पवद्धन ॥ ९ ॥ जयदिअल रणज्जणिरदसण  
 पासरय, तरलिअ नयणविसणुसुणुगगिरगिरकरुणय ॥  
 १० ॥ सरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविज्जविसज्जसइ पास  
 कुंजर ॥ १० ॥ पइंपासविविअसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय,  
 वाहपवाहपवूढरूढ डुहदाहसुपुलइय ॥ मणूहिंमणसजण पुसअ-  
 णंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥  
 कल्लाणमहेसुघंटंकारवपिद्धिअ, वल्लरमल्लमहल्लजत्तिसुरवरगं-  
 अ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति जवणेहिमहूसव, इय तिहुअ

आषाढचंद जय पाससुहुअव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनिय-  
 रविदुरिअ तमपहयर, दंसिअ सबलपयत्रविठरिअ पहाजर ॥ क-  
 लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहथगोयर, तिमिरइं निरुहर  
 पासनाइ जुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित  
 माणव मइ मेइणि, अवरारसरसुहुमन्नबोइ कंदलदलश्रेणि ॥ जायइ-  
 फलजरजरिय हरिय उहदाइ अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाइ  
 दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवच्चिजल्लुरि-  
 यउहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डुग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जंतुद-  
 जणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयज पास जय  
 जंतु पिआमइ ॥ १५ ॥ जूवणारसनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,  
 जोइणिपूअणखित्तवाल खुडासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ  
 अविंसंठुलचिठहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं  
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर, रंजिअ नइयल, फलिणी  
 कंदलदलतमाल निल्लुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संसं-  
 ग्गअगंजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास थंजणय पुरठिअ ॥ १७ ॥  
 मइमणतरलपमाणेय वायाविविसंठु, नियतणुरवि अविणयसहाव  
 आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाइप्पपमाणदेव कारुसपवत्तनं, इयम-  
 इमाअवहीरपासपालहिविलवंतज ॥ १८ ॥ किंकिंकिप्पिजणैयकलु,  
 एकिंकिंवनजंपिज, किं वनचिठ्ठिकिठ्ठेवदीणयमविलंविज ॥ का-  
 सुनकियनिप्पल्ललल्लुअल्लेहिंउहत्तइं, तहविन पत्तजताण किंपि पइं  
 पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिइ तुहुं माय वप्प तुहुं  
 मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु  
 ॥ इजं उइज्जरज्जारिअवरान रानलनिप्पगज, लीणज तुह कमक-  
 मल सरणजिणपालहि चंगज ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोय-  
 लोयकिविपावियसुइसय, किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसि-  
 पय ॥ किवि गंजिअरिजवग्गकेविजसघवल्लिअ जूअल, मइं अवही-

रहिकेणपास सरणागयवञ्चल ॥ ११ ॥ पञ्चुवयारनिरीहनाहनिप्पस  
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त संम-  
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुगगजविमइं पासनिरं-  
 जण ॥ १२ ॥ हनं बहुविहउहत्तगत्तुहुं उहनासणपरु, हनं  
 सुयणहकरुणिकगण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हनंजिण पासअसामि-  
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन  
 सोदिअ ॥ १३ ॥ जुग्गाजुग्ग विजागनाहनहुजोअणतुहंसम, जव-  
 णुवयारसु हावजाव करुणारससत्तम ॥ समविसमह किंघण नएइं  
 नुविदाहुसमंतन, इय उहबंधव पासनाह मइं पाळ शुणंतन ॥  
 १४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अस्सविकिविजुग्गय, जं जोइयउवं-  
 यारुकरइउवयारसमुज्जाय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिण-  
 चत्तन, तो जुग्गनअहमेव पासपालहिमइं चंगन ॥ १५ ॥ अहअ-  
 स्सविजुग्गयविसेसकिविमस्सहि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ  
 तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कट्ठाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह,  
 किं अस्सुण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ १६ ॥ तुह पण्ण नहुं  
 होइ विहल जिणजाणन किं पुण, हनं उरुक्किन निरुसत्तचत्तउक्कहु  
 उस्सुयमण ॥ तं मस्सुन निमिसेण एण एउविज्जइ लप्पइ, सच्चं जं  
 उरुक्किवसेण किं उंवरु पच्चइ ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह  
 मइं अप्पपयासिन, किज्जन जं नियरूवसरिसुनमुणुंवहुं जंपिन ॥  
 अणु ए जिणजगुहसंमोविदस्सिणादयासन, जइअवगिणासि  
 णुंहिजअहहकिंहोइसहयासन ॥ १८ ॥ जइ तुहरूविणकिंणविपेअ  
 ॥ इणवेलंविन, तनजाणुंजिणपास तुम्ह हनंअंगीकरिअन ॥ इयमं-  
 णिअ जं न होइ सातुहउहावण, रक्कंतह नियकित्तिणे य जु-  
 णइअवहीरण ॥ १९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणामहूसन, जं  
 णेलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धन ॥ इय मइं पसि-  
 सुपासनाहअंजणयंपुरदिअ, इय मुणिवरंसिंरि अजयदेव विस्सवइ

आणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंजनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्त-  
वनम् ॥

पीठे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाजाग जय चिंतिय  
मुह फलय ॥ जय समठ परमठजाणय, जय जय गुरु गिरिम  
गुरु ॥ जय डुहत्त सत्ताण ताणय, अंजणयठिय पासजिण ॥ ज-  
वियह ज्ञीम जवठु, जव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुज्जत्ति संज  
नमोठु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठे शक्रस्तव कह केँ खरुा हो कर अरिहंत चेइयाणं०  
॥ करेमि कानुस्सगं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नवू० ॥ इत्यादि पाठ  
कहे केँ कानुस्सगमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक कानु-  
स्सग पारी नमोऽर्द्धत्तसिद्धाण ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो  
लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूर्ति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ  
नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंठन, सात हाथ तनु  
मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब कानु-  
स्सगमें रहे थके मुने. पीठे एमो अरिहंताणं कह केँ कानुस्सग  
पारे. इत्तीतरे आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीठे लोगस्त कह कर सबलोए अरिहंत चेइयाणं वंद-  
णवत्ति० ॥ अन्नवू० ॥ कहि केँ एक नवकारका कानुस्सग करे.  
पारि केँ उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित जर  
पूरण, अज्जिनव सुरत्तरु कंद ॥ जवियणनें तारे, प्रवहण सम नि-

शिदीस ॥ चौबीशे जिनवर, प्रणमं विशवा वीस ॥ यह दूसरी  
गाथा कहि कैं कानुस्सग्ग पारे. पीठैं पुस्करवरदी० वंदणवत्तिआए०  
अन्नहू० कहि कैं, एक नवकारका कानुस्सग्ग कर कैं, पारि कैं उक्त  
स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, ज्ञाख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने  
गूण्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न  
शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥  
यह गाथा कहि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नहू० ॥  
कही कानुस्सग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चौथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धाधिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे,  
पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोमो, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे  
गुण गण इम, श्रीजिनलान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन  
स्तुतिः ॥ यह चौथी स्तुति कहि कैं वैठ कैं नमोत्तूणं कहे, पीठैं एक  
खमासमण देई कैं श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. प ठैं  
श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्त्तमान आ-  
चार्यजीका नाम ले कैं मिश्र चौथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र  
इसी तरे कह कर गोमाळीयें वैठ कैं मस्तक नमावी सबस्सवि  
देवसियण इत्यादि कह कर तस्स मिच्चामि पुक्कमं कहे, परंतु 'इ-  
च्चाकारेण संदिस्सह इच्चं' ए पद न कहे ॥

॥ पीठैं खमे हो कर करेमि जंतं सामाइयं० ॥ इच्चामि ठामि  
कानुस्सग्गं जो मे देवसिज्जं० ॥ तस्सुत्तरिणं ॥ अन्नहू० ॥ इत्यादि  
कहि कैं, आठ नवकारका कानुस्सग्ग करे. कानुस्सग्गमांहे आजूरा  
चउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, एमो अरिहंताणं कही  
कानुस्सग्ग पारि कैं प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जित पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेदेह. पीठें मुहपत्ती पमिलेहि कें वांदणां देवे. पीठें अवग्रहमांदिज उजो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोउं, ऐसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीठें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अतिचार आलोवे. पीठें सबस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांमाने इच्छाकारेण संदिस्सइ पर्यंत कहे, तब गुरु पमिक्कमइ. यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इच्छं तस्स मिच्छामि उक्कमं कहि कें संभासा प्रमार्जित प्रमार्जित जूमियें आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं ऐसा कहे. तब गुरु कहे जणेइ. पीठें इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंते जणीने इच्छामि पमिक्कमिजं जो मे देवसिज्ज इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीठें खमा हो कर अप्पुब्बिमि आराइणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांदिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्पुब्बिमि अप्रितर देवसियं खामेजं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीठें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उव-  
आय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि जंते सामाइयं इच्छामि ठामि कान्धस्सगं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि कान्ध-  
स्सगं अन्नवू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका कान्धस्सगं करी पारि कें पीठें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० अन्नवू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका कान्धस्सगं करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुस्कारवरदीवळे कहि कें सुयस्स जगवन्० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नवू० ॥

॥ कहि कैं एक लोःस्सका कानस्सग्ग करे. पीवैं पारि कैं सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कैं वेयावच्चगराणं न कहे. पीवैं सुयदेवयाए करेमि कानस्सग्गं अन्नवू० ॥ कही एक नवकारनो कानस्सग्ग करे. पीवैं गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक कानस्सग्ग पारिकैं एमो अर्हत्सिद्धा० कहि कैं श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कैं कानस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीवैं खित्तदेवयाए, करेमि कानस्सग्गं० ॥ अन्नवू० ॥ कहि कैं, एक नवकार चित्तवी पूर्वली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञा साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीवैं खमा हुवा एक नवकार कही, संमासा प्रमार्जि न्कमूवैठ कैं ठठे आवश्यक्की मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे पमिलेदेह.

॥ पीवैं मुहपत्ती पमिलेही विधिगुं दो वांङ्गां देइ उँ वरकनक कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ उँ वरकणय संख विद्रुम, मरगंय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सवामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ उँ नवणवय वाण मंतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि डुढदेवा, ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ पच्चरकाण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसठो पमिकमणां, वांङ्गां, कानः



स्सग, पञ्चस्काण, ठ आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, उंगो अः  
 धिको अकर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायार्थे  
 करी मिच्छामि डुक्कं ॥ इच्छामो अणुसदिं० ॥ कहो वैठे. प ठें गुरु  
 एक स्तुति कह्या पीठें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें एमो  
 खमासमणाणं ॥ एमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहो ॥ एमोऽस्तु वर्द्धमानाय०  
 इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका एमो खमासमणाणं, कहो सं-  
 सारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा-  
 समोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या,  
 ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं  
 संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्द्धितजंतुनिर्वृतिं, क-  
 रोतियो जैनमुखांबुदोक्तः ॥ स शुक्रमासोन्नववृष्टि सान्नजो, ददातु  
 तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरज्जिगंधा लोढनृङ्गाकुरङ्गं,  
 मुखशशिनमजस्रं विघ्नती या विघ्नति ॥ विकच कमलमूचैः साऽ-  
 स्त्वर्चित्यप्रज्ञावा, सकलमुखविधात्रो प्राणज्जाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ ॥ ति ॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीठें एमो नमोऽस्तु० कह कें एक  
 श्रावक खमासमण देई कहे:-इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्तवन,  
 जणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ स्त-  
 वनजणुं स्तवन सांजणुं ? गुरु कहे, जणोह सांजलेह. पीठें आसन  
 पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें वमो स्तवन कहे, सो लि-  
 खते हैं ॥

॥ अथ श्री चितामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ जविका श्रीजिनविंव जुहारो, आतम परम आधारो रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

काई ॥ आगम वाणीने अनुसारे, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज०  
 श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविंब स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणे  
 ॥ जूला तेह अज्ञाने जरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिठाणे रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ २ ॥ अंबर आवक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक  
 ॥ विविधपरें जिन जगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगतें जोतां, होय निश्चय उप-  
 गार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, ठे बहु जलधि  
 मजार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥  
 ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें  
 अधिकार ॥ सूरियाज सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मजार  
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या  
 जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोसी, करिये केम अकाज रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन  
 पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, ठे ज्ञाता अंगें रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी  
 चित्त शिर राखी ॥ द्रव्य ज्ञाव बिहुं जेदे कोनी, जीवाजिगम ते  
 साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें,  
 कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम  
 पयो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु  
 पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाने सुगुरु उपदेशें,  
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंता-  
 मणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥  
 ॥ पीठें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी,  
 ढाड़जेसु कहनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छाका ॥ सं ॥ ज० ॥

देवसि पाय छित्त विशुद्धि निमित्तं कान्तस्तग करुं? गुरु कहे, करेह. पीठें इच्छं कहि कें देवसि पाय छित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि कान्त-स्तगं अन्नबू ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्तका कान्त-स्तग करे, पारी कें लोगस्त कहे.

॥ पीठें खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-  
दोवदव नमावणं करेमि कान्तस्तगं ॥ अन्नबू० ॥ इत्यादि कहि.  
शोल नवकार अथवा चार लोगस्तका कान्तस्तग करे, पारि कें  
प्रगट लोगस्त कहे. पीठें खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्तानं फेर  
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीठें खमा-  
समण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥  
ऐसा कह कर थंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-  
जयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव  
फलं स्फूर्जत्फलापह्नवः, पार्श्वः कटपतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनो-  
वांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लीशिरोमणिः ॥  
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठें नमोवृणंसे लेकें जयवीरराय सुधी कहे ॥ पीठें  
खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंजणयडिय पास सामिणो०'  
इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयडियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंजणयडियपाससामिणो सेस तिष्ठसामीणं ॥ तिष्ठ  
समुन्नय कारणां, सुरासुराणां च सबेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणं,  
कान्तस्तगं करेमि सत्तीए ॥ जतीए गुण सुद्धिस्त, संघस्त समुन्नय  
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंभुनाथ पार्श्वनाथजी आराधना निमित्तं करेमि काउ-  
स्सगं ॥ पीठें खेने हो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोग-  
स्सका काउस्सग करि कें पीठें पारी प्रगट लोगस्स कहि कें ॥  
श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगम युगप्रधान जट्टारक दादाजी श्री  
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधना निमित्तं करेमि  
काउस्सगं ॥ अन्नबू० कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग करे,  
पीठें प्रगट लोगस्स कहि कें

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगमयुग प्रधान जट्टारक दा-  
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणिजी आराधना निमित्तं  
करेमि काउस्सगं ॥ अन्नबू० कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग  
करे, पीठें प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें मावो गोमो उंचो करि कें  
खमासमण देई कें, इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं जी,  
ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पमिछूछूण, उज्जय मयण बाण मुसुमूरण  
॥ सरस पिंयंगु वन्नु गय गामिण, जयण पास जुवणत्तय सामिण  
॥ १ ॥ जसु तणु कंति करुणसिणिद्ध, सोहइ फणमणि किरणा  
लिद्ध ॥ ननव जलहर तमिछय वंढिय, सो जिणु पासु पयण्य  
वंढिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-  
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-  
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेश्विनः प्रतिदिनं  
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीठें नमुबूणसैं ले कें जयवीरराय पर्यंत कहि के परकी,  
चउम्मासी अरु संवत्तरीके रोज तो बनी शांति सुणे, परंतु और

दिनोमें ठोटी शांति नुणे, ओ लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्नवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः  
शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितव-  
चसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,  
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्ति-  
समन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय  
॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ ज्ञुवन-  
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघना-  
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह जूतपिशाच, शाकि-  
नीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-  
कृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम्  
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥  
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि  
च संघस्य, जद्र कळ्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु-  
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ ज्ञव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि !  
सत्त्वानाम् ॥ अजय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥  
९ ॥ ज्ञक्तानां जन्तूनां, शुजावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-  
ष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां,  
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कोर्त्ति यशो, वर्द्धिनि !  
जय देवि दिजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज  
रोगरणजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२  
॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं  
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जग-  
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरु कुरु जनानाम् ॥

उ नमिति नमो नमो ह्रीं, ह्रीं ह्रूं ह्रः यः कः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,  
नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-  
विदर्शितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिभ्य विनाशी, शांत्यादिकरश्च  
नक्तिनताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा  
यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥  
उपसर्गाः द्वायं यांति, विद्यंते विघ्नवह्नयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,  
पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण  
कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीठे चौराकका अथवा बीजलीला चांदणा परा होय तो  
इरियावहि० तस्मुत्तरी० अन्नलू० कहि कै, एक लोगस्तका कान-  
स्तग करे, प ठैं प्रगट लोगस्त कहि पूर्वलो परें सामायिक पारे,  
पीठे एक स्तवन दादाजोको कहे ॥ इति देवसी पम्किमण  
विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥  
कमले स्थिता जगद्वत्, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-  
दिगुणगुणानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु ज्ञानदेवी,  
शिवं सदा सर्वलाभनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः  
साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनी ॥  
३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखं मान्निधं  
पार्श्वे, सदा ध्यायामि मानसे ॥

॥ अथ छुटक चैत्यवन्दनस्तुतिलिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवह्नी, पुष्करावर्त्तमेधो, डुरिततिमिरजानुः,  
कल्पवृक्षोपमानः ॥ जवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स जवतु  
सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनादुरितध्वंसी, वंदनादिष्ठितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः  
श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम्  
॥ नरामरेन्द्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञप्त्या रूपज्ञं जिनोत्तमम् ॥  
३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन  
वरण शरीर कांपि, अतिशय अन्निरामी ॥ अचिरा अंगज विश्व-  
सेन, नरपति कुलचंद ॥ मृगलंगन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद  
॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंरित आण ॥ एक मर्ने  
आराधतां, लहिये कोमि कळ्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादव-  
कुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी  
जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे  
सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अन्निराम ॥  
तास कमा कळ्याण मुनि, निशिदिन नमत कळ्याण ॥ ५ ॥ इति  
श्रीनेमिनाथ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण  
अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कलप साख, वामा-  
सुत सार ॥ श्रीगोमी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिजु-  
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जमु वाण ॥ ध्यान धरंतो  
एहनूं, प्रगटे परम कढ्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदधीर सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा  
मरणादि रूप, ज्ञव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात,  
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिजुवन विख्यात  
॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कढ्याण  
मुणि, आपो करि सुयसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदितु सूत्र पर्यंत दैवसिक पम्किमी ॥ १ ॥  
खमासमण देई देवसी आलोइयं पम्किंता ॥ इच्छा ० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पम्किहेहुं ? चउमासीए चउमासियं मुह-  
पत्ती, संवच्चरीये संवच्चरी मुहपत्ती पम्किहेहुं ? एम कहे. पीठें गुरु  
कहे, पम्किहेह ॥ पीठें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देई, मुहपत्ती  
पम्किहेही, वांढणां देई, तिहं ज्ञापि पम्को वंइकंतो ॥ चउमासी  
पम्कि ॥ चउमासीउ वंइकंतो संवच्चरीमें संवच्चरो वंइकंतो. एम  
य ॥ पीठें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पा-  
प्रतिचमासिक सांवच्चरिक जणजो. ठीक जयणां करजो.  
शासपम्किमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांरुलमें  
राज श्रो, पीठें सधलाही तदत्ति कहे ॥ पीठें ऊठी ॥  
इच्छाकांनसुप ॥ ज० ॥ संवुद्धा खामणेणं ॥ अष्टुविंशति अष्टि-



तर पस्त्रियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेइ ॥ पीठें मस्तके  
 अंजलि करतो थको, इहं खामेअ पस्त्रियं ॥ ३ ॥ कहो, गोमंलीयें  
 वेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करा, मुइपत्ती  
 मुखें देई ॥ पस्त्रियें पनरसहुं दिवसाणं पनरसहुं राईणं जं किंचि-  
 अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे, चनमासें चनहुं मासाणं अ-  
 ष्णं परकाणं वीसोत्तरसो राईदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
 कहे. संवठरीयें डुवालसहुं मासाणं चनवीसहुं परकाणं तिन्नितय-  
 सठिराईदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवरें गुरु  
 पण मिठामि डुक्कं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-  
 खियें तीन, चनमासीयें पांच, संवठरीयें सात साधुने खनावे ॥  
 ॥ पीठें उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥  
 पस्त्रियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएइ ॥ पीठें इहं आलोए मि, जो  
 मे पस्त्रियं ॥ ३ ॥ अड्यारोकठ, इत्यादि मूत्र ज्ञसी ॥ संकेपे  
 अथवा विस्तारें पाखी चनमासी संवठरी, अतिचार आलोवे, सो  
 लिखते इ ॥

## ॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥  
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहात्तणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,  
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच  
 विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, वादर,  
 जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाईं करो  
 मिच्छामि डुक्कंडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणप् बहुमाणे, उवहाणे तहय निह्वणे ॥ वंजणं

अत्थ तदुभए, अष्टविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-  
मांहि पढिउं गुणिउं नहो, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान  
हीन उपधान होन थो उपाव्यायकर्ने नही पढिउं, अथवा अनेरा-  
कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव  
वांदणे पढिक्कमणे सिद्धाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने  
मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या,  
भणोनें बोलायें, तपोधन तणे धर्म काजो अण ऊवरे दांडो अण-  
पडिलेही, वसती अणसोधी, असिद्धाई अणोज्ञा कालवेलामाहि  
दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो  
ज्ञानोपगरण पाटो, पोथी, ठवणो, कवली, नवकरवाली, सांपडा  
सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना दुई,  
पग लागो थूंक लागो ओसासे मूक्यो कर्ने छतां आहार नोहार  
कीयो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीयो, प्रज्ञापरार्थे विणारंथो  
विणसतो उवेख्यो, छती शर्के सार संभाल न कीवी, ज्ञानचंत प्रतें  
मछर वह्यो, अयज्ञा आशातना कीवी, कोई प्रतें भणतां गुणतां  
प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपवात कीयो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-  
ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असहहगा  
कीवी, कोई तोतडो बोंबडो हस्यो, वितवर्यो आपणा जाणपणा  
तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषड्ड जिको अतिचार  
पक्ष दिवसमांहे सूझ्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते  
सहु मन वचन कायाई करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आट अतिचार ॥

॥ निस्संक्रिय निक्कंखिअ, निवितिगिष्ठा असूददिठो अ ॥

उववूह थिरोकरणे, वच्चल पभावणे अठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे  
विषे निःशंकपणो न कीधी, तथा एकांत निश्चय धर्यो नही,

सबलाई मत भला छे, पहुँची थुछा कोवी, धर्मसंवंधिया फलतणे  
 विषे निःसंदेह बुद्धि धरो नही. चारित्रिया साधु साधवो तणां मल-  
 मलीन गात्र देखी दुर्गन्धा उपजावो, मिथ्यात्वीतणो पूजा प्रभावना  
 देखो, मूढदृष्टिपणो कीधो, संघमांहे गुणवंततणो अनुपबृंहणा अ-  
 स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चितवी. संघमांहे थिरीक-  
 रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधो, देवद्रव्य विनाशिउं,  
 विणसंतुं उवेखीउं, छतो शक्ते सार संभाल न कीधो, साधर्मिकशुं  
 कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी,  
 गुरुपते तेत्रीश आशातना कीधी, अघोतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं  
 ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठवको लागो, सुखतणी  
 वाफ लागी, ठवणारिच हाथथको पडीओ, पडिलेहवो वीसारथो,  
 नवकरवालोनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहि समिईहिं तिहि गु ॥ १ ॥ इरियासमितौ १ ति  
 चरित्तायारो, अष्टविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमितौ १ ति श्रीस  
 सासमितौ २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिस्केवण ४, उच्चारणासवणखेलजलसंधाणपारिष्ठावणोयासमितौ ५. म  
 १. चचनउप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति ७ ॥ पा  
 पें पाली नहीं ॥ साधु तणें सदैव थावक तणे पोसह पडि ८ ॥  
 लीवे अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः थावकतणें धर्म श्रीसम्यक्त्वमूल वारह व्रत श्री  
 सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंख विगिछा, पसंस तह  
 संयदो कुलिंगीनु ॥ संकाः—श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान  
 लक्ष्मी गांधीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र  
 गिनदंचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः—ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक  
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आ-  
 तेंकें इहलोक परलोकार्थें पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी  
 भरडा भगत लिंगिया योगी दस्वेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र  
 चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र  
 शोख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजा-  
 पडिचो प्रेतबोज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाच्छ  
 शीलंसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-  
 त्सवारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,  
 जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां घर  
 चाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान  
 दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां  
 थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकिष्ठाः—धर्म-  
 संबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर  
 विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें  
 न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी,  
 कुच्चारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुआ मिथ्यात्वी तणी  
 प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति माडी, दाक्षिणलगे तेहनो धर्म  
 मान्यो ॥ श्रोसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि  
 सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुआ होय, ते सह मन, वचन,  
 कायाई करी मिष्ठामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह  
 बंध छविछेए, अइभारे भक्तपाण बुछेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें  
 रीशवर्शें गाढो धाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारे  
 पोड्या, निर्लीछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

आल न कीधी, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें मूखे आपण जिम्या. अणगल पाणी वावरयुं, रुडे गल्युं नहो, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झीलयां लूगडां धोयां, इंवण अणमोव्युं जाल्युं. साय कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहनां मृआं, दू-  
खव्यां, रुडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडो उदेहा घीवेली कातरा झूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा वगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विगठा चांपिया दूहव्या  
आला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फटां, अनेरा एकें-  
द्रियादिक जिके जीव विणठा चाप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनंरुं कांड काम काज करतां विव्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रुडे  
न कीधी, संखागे सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीयां, दलाव्यां,  
भरडाव्यां, खाटला तावडे झाडक्या, सूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल  
भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे  
रुडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी  
करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृदावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, सोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसा-  
त्कारः—किणहिक प्रतें अयुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें  
वान करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चितवो छो. इत्यादिक कळुं.  
स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म  
प्रकाशयो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी  
माख भरी, थापण सोसो कीधो. कन्या दोर गाय भूमि संवांधिया  
लेइयें देणें व्यवसाय वाद वदावहि करता मोटकुं झूठ वोल्युं, हाथ  
पग धर्गी गाल दीधी, करडका मोज्या, अधर्म वचन वोल्यां ॥  
बीज मृदावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेनाः  
हडप्पलगे. घर बाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी,  
दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संबल  
दीधुं, संकेत कहुं विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नत्रा पुराणां सरस  
विरस सजीव निजीव वस्तु तगा भेल संभेल कोधा, खोटे तोल  
मानें साप व्होस्यां, दाणचोरी कोधो, साटे लांच लीधी, माता  
पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किण्होनें लेखे  
पलेखे भुलव्युं, पढी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत  
विषइओ० ॥

॥ चौथे स्वदार संतोष मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरि  
गृहीत्या इत्तर, अणंग वीवाह तिबअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन,  
इत्तरपरिगृहीतागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोक-  
तणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम  
चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या, घरघरणां कोधां,  
कराव्यां, अनुमोदोयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कोधो,  
पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाष कीधो,  
कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुषशुं हांसुं कीधुं, चौथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त  
वहू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्य सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव  
परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगे संक्षेप न कीधो,  
प्राता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण  
लेई पळ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे  
परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परि  
माणे ॥ ऊर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यग्दिसि जायवा आयवा तणो

नियम जे कोई अजाणे भागो, एक गमा संकोठी बीजी गमा  
वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूभि गया, पाठवणी आधी  
मोकली ॥ छठे दिग्ब्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सांतमे भोगोपभोग परिमाण ब्रत ॥ जेहना भोजन  
आश्री पांच अतिचार अने करमहूती पन्नरे, एवं वीश अतिचार ॥  
सच्चिते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे० सच्चित्त तणे नियम  
लीधे अधिक सच्चित्त लीधुं, तथा सच्चित्त मली वस्तु अपक्काहार  
दुपक्काहार तुद्यौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी  
भंड्यां कीधां, सुल्यां धान प्रसुख भक्षण कीधां ॥ सच्चित्त दब्ब  
विगई, पाणह तंबोलवन्न कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण,  
बंम दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या  
संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस  
अनंतकायमांहि आहुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची  
आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रसुखमांहे वासी कठोलनी  
रोटी खाधी. त्रिहुं दिवरातुं दही लीधुं, मधु महुडां माखण  
माटी वेंगण पीलू पीचू पंपोटा पीपी विष हीम करहा घोल  
वडां अणजाण्यां फल टींबरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीठुं, तिल  
खसखस काचां कोठिबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती  
वेलार्यें व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मा-  
दान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत  
वाणिज्ये, लख्ख वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विप वाणिज्ये,  
जंत पीलणकम्मे, निहंछणकम्मे, दवगिदावणया, सर दह तलाव  
सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म, पांच  
सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या,  
धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा



कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्यां, कूकडा सूडा प्रमुख पोण्या, अनेक जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्यु ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषंडओ ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदुपे कुकुइए ॥ कदर्प लगे विटनी परे हास्य कुतूहल मुखादि अंग कीधी, मूर्खपणा लगे कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या. कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक मारी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अंग पापोपदेश दीधो, अंधोल नाहण, दांतण, पगधोअण तेल अधिक आप्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा तथा स्त्रीकथा पराई वात कीधी, आर्त रौद्र ध्यान ध्यायां, रा वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांड डा, भिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगे खाई चिंतवी माटो मीढुं कण कपासिया काजविण चांप्या, उपर बयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोलो प्रमुख जीव विणठा, सूडा जीव क्रीडा हेंतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष ने रुद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा व्रतवि ॥

नवमा सामायिकव्रते पांच अतिचार ॥ तिविहे दुष्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेहुं हलाव्युं, छती वेलाई सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, उंघ आवी कीधी, बीज दीवा तणी उजाही लागी. कण कपासोया माटो मीढुं नील फूल



हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ. तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तोयो संघट्टी, सामायिक अण परउं पारिउं पारुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषड्यो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सहाणुवाइ रुवाणुवाइ वहिया पुग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामांदिवाहिर थको कांड अणाव्युं, आप कन्हाथी वाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषड्यो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुद्धार विहो, पमाय तह चेव भोजणा भोए० ॥ पोसह लीये संथारा तणी भूमि वाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अण पडिलेहुं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकांड परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कड्युं. पोसहशालामांहि पडसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वोसारी, पृथ्वोकाय, अप्पकाय तेऊकाय चालकाय वनस्पतिकाय व्रतकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्व इ आ संथारा पोरसि तणो विवि भगवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंव्या अविधि संथारुं पाययुं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणा दिक्क तणी चिंता निपजावी, कालवेल देव वांदवा वीसारिया पोसह असूरो लीयो, सवारो पारंथो, पर्व तिथि आवी पोस लीधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषड्यो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चि निरुक्कवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे उपरि थके महातमा व्रतें असूझ दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धे चूजतुं फेडी असूझतुं कीधुं, दे

तणी वुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातया तेज्या, मन्त्ररत्ने दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचपी, छती शक्ति साध-  
र्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदाता छती शक्ते उद्धर्या नही ॥ वारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥  
इहलोका संसप्पज्जे परलोगासंसप्पज्जे जीविआसंसप्पज्जे मरणां  
संसप्पज्जे कामभोगासंसप्पज्जे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व  
लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछ्यां.  
परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव  
वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी,  
कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार वारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू  
णोयरिया, अणसण कहीये उपवास, ते पर्वतिथि छती शक्त कीधुं  
नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप  
विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न  
कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी  
गंठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमद्ध एकासणो बेआसणो नीवी  
आंबिल प्रमुख पच्चस्काण पारवां वीसार्या. वेसतां नवकार भण्यो  
नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक  
तप करी काचुंपाणी पीधुं, वसन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायडितं विणओ० गुरुकने मन सुद्धें  
आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायडित तप लेखा शुद्ध पुह-  
चाडयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मा प्रते विनय साचव्यो नही; वा-  
चना पृथना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिजाय

कीधी नहीं, धर्मेध्यान शुद्धध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त  
लोगस्स दस बीसनोकाउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइयो ० ॥

॥ वीर्यचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ,  
परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायवो वीरि-  
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजां सामायिकं  
दानं शीलं तप भावना प्रमुखं धर्मं कृत्यतणे विषे मन वचनं  
कायतणुं छतुं बल वीर्यं गोपव्युं, रूढां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां,  
वैठां पडिक्कमणुं कोधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ० ॥

॥ नाणाइ अठ अइ वय, समसंलेहेण पण पनर कम्मेसु ॥  
वारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं  
करणे ० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज  
भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा  
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधां, जीवाजीवादि वि-  
चार सद्वहिया नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी;  
प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह  
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,  
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अस्-  
तिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८, ए अहंकार  
पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोचो ॥ एवं प्रको-  
थावक धर्मे श्रो सम्यक्तत्व मूल वारह व्रत चोवीसां सो अतिचा-  
मांहि जिओ कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणता  
अजाणतां हुवो होय ते सह नन वचन कायार्थे करो मित्रामि-दु-  
कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके वारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीठें सबस्सवि पस्सिय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सह  
 पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउड्डेण पस्सिमह, चउमासे ठडेण  
 पस्सिमह, संवड्डरीयें अठमेण पस्सिमह. इत्थं तस्स मिड्डामि डुक्कमं  
 कही. चादशावर्त्त वांदणां देवे. पीठें इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्,  
 देवसियं आलोश्यं पस्सिक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयस्वामणेणं, अप्पुट्ठिमि  
 अप्पित्तरपस्सियं ॥ २ ॥ स्वामेज्जं? गुरु कहे स्वा० ॥ पीठें इत्थं स्वामेमि  
 पस्सियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिड्डामि  
 डुक्कमं देई खमावे, पीठें वे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोश्यं  
 पस्सिक्कंता पस्सियं ॥ ३ ॥ पस्सिमवह? गुरु कहे सस्सं पस्सिमह. पीठें  
 इत्थं कही करेमि जंतं सामास्यं ॥ इच्छामि ठामि कान्दस्सग्गं जो मे पस्सिज्ज  
 ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नबूणं ॥ कही ॥ कान्दस्सग्गं करे, गुरु,  
 पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुयको जूदा पस्सिमता हुवे, तो  
 एक श्रावकं खमासमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे,  
 जणेह. एसो वचनं मनमें धारी ॥ इत्थं कही, उज्जो थको, हाथ जोमो  
 सुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ. मनमें  
 चिंतवंतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि जं तं० इच्छामि  
 ठामि कान्दस्सग्गं तस्सुत्तरी० अन्नबूणं कही कान्दस्सग्गमें रह्यां  
 सुणे. सूत्रप्रातिं एमो अरिहंताणं कही. कान्दस्सग्गं पारी, उज्जा  
 थका तीन नवकार गुणी बेसे. पीठें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि  
 जं ते कही, इच्छामि पस्सिमिज्जं जो मे पस्सिज्ज ॥ ३ ॥ इत्यादि  
 कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पस्सिममे देवसियं सव्वं ॥ एहने ठिकारें  
 पस्सिममे पस्सियं, चउम्मासियं संवड्डरियं सव्वं कहे. पीठें ऊठो, अप्पु-  
 ट्ठिमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी, खमासमण देई इच्छा०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं,  
 कान्दस्सग्गं करूं? गुरु कहे करेह. पीठें इत्थं कही, करेमि जंतं

सामा० 'इष्टामि ठामि कान्तस्सग्गं तस्सु० अन्नबू० इत्यादि कही,  
 पाखीयें वार लोगस्स चन्नासियें वीस लोगस्स संवत्तरीयें चालोत्त  
 लोगस्सतो कान्तस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, कान्तस्सग्ग करी.  
 पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पमिलेही, वे वांदणां देई इष्टा०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अप्पुठ्ठिओमि अप्पितर प-  
 स्सियं ॥ ३ ॥ खामेज्जं ? गुरु कहे खामेह. पीठें इष्टं खामेमि पं-  
 स्सियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्व कहे. तिम कहे, पीठें इष्टाका० ॥  
 सं०॥ज०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर  
 खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त  
 खामणां खामेह. पीठें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं  
 नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीठें गुरु कहे  
 निष्ठारग पारगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इष्टं इष्टामि अणुत्तठिं कही,  
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आ-  
 विल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे  
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेटें पूरज्यो, पाखीने स्थानकें  
 दैवसिक जणजो. एम चन्नासो ए सर्व डुगुसो कहणो, संवत्तरीयें  
 त्रिगुणो कहणो. पीठें जिणें तप कीथो हुवे ते पइठियं कहे, न  
 कीथो हुवे ते तद्धत्ति कहे ॥ पीठें बे वांदणां देई, अप्पुठ्ठिओमि अ-  
 प्पितर देवसियं खामेमि इत्थादि कहे. पीठें बे वांदणां देई. आय  
 रिय नवप्राए० तीन गाथा कहे, इम आगे सर्व विधि दैवसिक  
 पडिक्कमलानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो कान्तस्सग्ग  
 करी स्तुति कहे. पीठें जवण देवयाए कहेमि कान्तस्सग्गं. इत्यादि  
 विधे जवनदेवताको कान्तस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य डुरि-  
 नान्पेषा, करोतु सुखमहायम् ॥ १ ॥

देवतानो काजस्तग करे, तथा तीने पवे वडा स्तवनः  
अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा  
पम्कमणो पूरो हुवा पीठें एक आवक शुर्वाझायें, नमोऽर्हत्ति-  
द्धा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिणने  
रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति  
पाक्षिकादि तीन पडिक्रमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चख्वाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरे पञ्चख्वाण  
करे ॥ उग्गए सूरें नमुकार सहियं मुंठसहियं पञ्चख्वाइ चउविहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं असठणान्जोगेणं सहसागारेणं  
महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं विगइउ पञ्चस्काइ. असठणा-  
न्जोगेणं सहसागारेणं लेवालेवणं गिहिउसंसिठेणं उखिखत्तविवेगेणं  
पुञ्चमस्किणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्ति-  
यागारेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चस्काइ. असठणान्जोगेणं  
सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥  
इति नवकारसी पञ्चस्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो आवक नियम संजारे नहिं, सो विगइका उर  
देसावगासिकका आगार न पञ्चस्के. निक्केवल नवकारसी आदिक  
पञ्चस्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरें नमुकार सहियं पञ्चस्काइ ॥ चउविहंपि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नव-  
कारसी पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पौरसी मुंठसी पञ्चस्कामि, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं  
गणं खाइमं साइमं असठ० ॥ सहसा० ॥ पञ्चस्काळेणं दिसा  
साहुवयणेणं सब० विगइउ पञ्चस्कामि. इत्यादि पूर्वकी

पेरें कहणां ॥ इति पोरिसी पञ्चस्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साठ पोरसीका पञ्चस्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चस्काइके ठिकाने इहां साठपोरसिं पञ्चस्काइ कहणां ॥ इति साठ पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरें उगए पुरिमठं अयठं वा पञ्चस्काइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० ॥ सह० ॥ पठ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइउं पञ्चस्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमठपञ्चस्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पठ० दिसामो० साहु० सब० एकासणं विआसणं वा पञ्चस्काइ, उविहं तिबिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं आउठणपसारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण विआसण पञ्चस्काण ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पठ० दिसामो० साहु० सब० एकासणं एगठणं पञ्चस्काइ, उविहं तिबिहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठाव० मह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकठणणा पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उगए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस्स० सह० पठ० दिसामो० साहु० सब० आयंविहं पञ्चस्काइ, अस्सठ० सह० लेवालेवेणं गिहठसंतिठेणं अरिक्कविवेगेणं पारिठा० मह० सब० एकासणं पञ्चस्काइ, तिबिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह०

सागारिआगारेणं आनट्टणपसारेणं गुरुअप्पुढाणेणं पारिठां० महं०  
सब० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चरकाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं वा पच्चरखाइ. नग्गए सूरे चनव्विहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पच्च० दिसा०  
साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चरखामि. अस्स० सह० लेवालेवेणं  
गिहत्तसंसिठेणं उखित्तविवेगेणं पमुच्चमखिएणं पारि० मह० सव्व०  
एकासणं पच्चरखाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स०  
सह० सागा० आनट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पच्चरखामि. अस्स० सह० मह० सव्व० वोसिरामि  
॥ इति नीवी पच्चरखाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ सूरे नग्गए अप्रत्तठं पच्चरखामि. चनव्विहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० मह० सव्व० देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पच्चरखामि. अस्स० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥  
इति चनविहार उपवास पच्चरखाण ॥ ९ ॥

॥ सूरे नग्गए अप्रत्तठं पच्चरखामि. तिविहंपि आहारं असणं  
खाइमं साइमं अ० सह० पाणंहार पोरसिं साह पोरसिं पुरिमट्ट  
अवट्ठं वा पच्चरखाइ अस्स० सह० पच्च० दिसा० साहु० सव्व०  
देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चरखामि. अ० स० म० सव्व० वो-  
सरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चरखाण ॥

॥ पोरसिं साहु पोरसिं पुरिमट्ठं अवट्ठं वा पच्चरखामि. नग्गए  
सूरे चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह०  
पच्च० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगघाणं दत्तियं पच्चरखामि.  
तिविहं चनव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह०  
सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइत्त पच्चरखामि. इत्यादि पूर्ववत्.  
देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चरखाण ॥ १० ॥



॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वाइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं  
खाइमं साइमं अण्णं सहं महं सब्बं वोसिरइ ॥ इति दिव-  
सचरिम पञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं  
अण्णं सहं महं सब्बं वोसिरामि, देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति  
दिवसचरिम डुविहार पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पञ्चख्वामि अन्नं सहं महं  
सब्बं वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पञ्चख्वाण ॥ ए ॥

॥ जवचरिमं पञ्चख्वाइ तिविहंपि चउविहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं अन्नं सहं महं सब्बं वोसिरइ ॥ आगार  
॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकाजी होय ॥ इति जवचरिम पञ्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि सुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अ-  
ज्जियह पञ्चख्वाणकेजी ए चार आगार, अन्नं सहं महं सब्बं  
वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुको होय ॥ इति अ-  
ज्जियह पञ्चख्वाण ॥

॥ अहणं जंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पञ्चख्वामि  
इच्छं खित्तणं कालणं जावणं दव्वणं देसावगासियं खित्तणं उव्व  
वा असाववा कालणं मुहुत्तधारणाप्रमाणं जावनियमं पञ्चख्वामि  
जावणं जावगहेणं न गहिज्जामि ठलेणं न ठलिज्जामि अस्सेण-  
केवि रायंकेण वा एसो परिणानो न पन्निवज्जइ ता अज्जिग्गह  
असत्तणात्तोणेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्तिया-  
गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चस्काण करे, तव देसावगासी नही पञ्चस्के.  
अरु तिविहार उपवासमें आबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें  
पाणस्सकाठ आगार पञ्चस्के सो दिखावे हैं, पाणस्स लेवानेण वा

अलेवामेण वा अन्नेण वा बहुलेण वा ससिन्हेण वा असिन्हेण वा  
वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार उच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त  
पुरमिद्धे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्सत्त, अठेवय आ-  
यंविंलंमि आगारा ॥ पंच वयज्जाठे, उप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥  
पंच चत्तरो अज्जिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावण्णे पं-  
चत्त, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहियं पञ्चखाण चत्तविहंपि आहारं ॥  
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाण. शिष्य कहे पञ्चखामि. पञ्चखाणका  
अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसैं सूरज उदय हुआ  
पीठे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते  
दो घन्टी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पाकूं नहीं तहां  
तक चत्तवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो  
च्यार प्रकारका आहार इस मुजब है. असन कहते अन्न, चावल,  
गहूं, मूंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जबकूं आदि  
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लहू वगेरे सब  
तरेका पकवांन सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब  
घाट सब पतली नर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूण सेंधवादिक  
इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥ १ ॥ पाणं इसका अर्थ आञ्जन  
जबोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-  
काय ॥ २ ॥ खाइमं कहते खादिम सूखमी नाखेर खजूर द्राख सेक्या  
अनाज आंबा केला काकमी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब  
जातका मेवा सब जातका फल खाइमं जाणना ॥ ३ ॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींवर हरमे बहेना आंवला तुलसी कसेला  
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविमंग अजमा  
 अजमोद कुलिंजन कवावचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया  
 कुंजटिआ पांसुपारी पोहकरमूल जवालाकीजर वावची वांवल-  
 वाल धवंठालि खेजमेकीठालि खबरसार यह सब स्वादिम वस्तु  
 जाणाना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींवकीठालि जर  
 पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीठालि चंदन-  
 कीराख रोहिणीकीठालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया  
 चिरमी कयर घोरकीजर इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब ठो-  
 रुणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो  
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे. पञ्चखाणका अर्थ जाणे  
 विगर जो पञ्चखाण करे सो अंधा पञ्चखाणहे इस वास्ते संक्षेप  
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पञ्चखाणमें जितना आगार  
 होय सो रखकर हमारे पञ्चखाणहे. अन्नघणान्नोगेण कहिये अना-  
 न्नोग टालके किया जो पञ्चखाण. अत्यंत झूल जाणेंसें कोइनी  
 चीज झूलके मुंमे मालवी होय लेकिन जाणे बाद तत्काल बसी  
 वखत पीठा नाख देवे तो पञ्चखाणमें जंग नही. जर जाणे बाद  
 नक्षण करे तो पञ्चखाण निश्चे जंग होय ॥ १ ॥ पञ्चकालेण कहते  
 कालकी प्रवृत्तता. आकाशमें गर्द ऊरती होय आकाशमें वहल  
 गये होय तेसेइ पहामकीउठ आजावे सूरज नही दीखे तब ज  
 रमसुं पञ्चखाणका वखत पूरा हुवा जाणकर नोजन करे तो व्रत  
 जंग नही ॥ २ ॥ दिसामोहेण कहतां दिसा झूलकर पूरबकूं पछि  
 जाणकर पञ्चखाणका काल पूरा हुये विगर नोजन कर लेवे त  
 व्रत जंग नही ॥ ३ ॥ सदस्सागारेण कहतां सदसात्कार दहोत नता  
 लके योगसें अथवा अकस्मात् विदोवते तोजते धी वगेरेका ठी

मूंमें गिर जाय तो व्रत जंग नही ॥४॥ साहूवयणेणं कहतां साधूके  
 वचनसें उग्यामा पोरसीआदिक जरम संयुक्त सुणकर पञ्चस्काणका  
 काल पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥५॥ सब  
 समादिवत्तियागारेणं कहतां पञ्चस्काणका काल पूरा होणेसें पदली  
 अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी धिरता रहे  
 नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाणे वास्ते ओषधादिक  
 पशुय देवे वा आप लेवे तो पञ्चस्काण जंग नही ६ महत्तरागारेणं  
 कहतां पञ्चस्काणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा  
 निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नही आवे ऐसा जो चैत्य  
 संघादिकका प्रयोजन होणेसें पञ्चस्काणका काल पूरण जये विगर  
 ही जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ७ सागारीआगारेणं कहतां  
 गृहस्थ देखतां साधू जोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा  
 दे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पञ्चस्काण कर जोजन  
 करणे वेठादे उस बखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब  
 साधू उस ठिकाणेसें ऊठकर उर ठिकाणे जाकर जोजन करे तो  
 व्रत जंग नही उर गृहस्थकूं इसमें ऐसा आगार हे जिस पुरुषकी  
 निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणेसें एकासणेवाला उठकर उर  
 ठिकाणे जाकर जोजन करेतो व्रत जंग नही ॥ ८ ॥ आनट्टणपसारेणं  
 कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें थोमासा आसन  
 चल जाय तो व्रत जंग नही ॥९॥ गुरु अशुवाणेणं कहतां आपका गुरु  
 आणेसें तथा आपसें कोइ वना पुरुष आणेसें विनयके वास्ते जोजन  
 करतां एकाशनादिकमें आसन ठोम खमा हो जावे तोजी व्रत जंग  
 नही ॥१०॥ पारिवाणियागारेणं कहतां सब पञ्चस्काणमें यह आगार  
 साधुकादे जिस आहारके परठणेसें बहुत जीवकी विराधना होती  
 जाणकर गुरु कहे यह आहार परठो मत सरस आहार हे तब

एकाशनादि व्रतधारी साधू गुरुके आह्रासें दुसरी वखतजी आ-  
हार करे तो व्रत जंग नही ॥ १ १ ॥ लेवालेवेणं कहतां जोजन कर-  
णका आल प्रमुख ज्ञाजन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका  
अंसलगाजयाहे उसकूं हाथ बगेरेमें पूब माला उस परजी किंचित्वे  
मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाला जोजन कर लेवे  
तो व्रत जंग नही ॥ १ २ ॥ उस्किन्नविवेगेणं कहतां आयंबिलादि पञ्च-  
ख्वाणमें नही खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणे  
योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत जंग  
नही लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उठाय  
सके नही ऐसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत जंग  
नही ॥ १ ३ ॥ गिहत्थसंसिद्धेणं कहतां जोजन पुरबे जिससेती एसी कु-  
रुठी आदि देकर ज्ञाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरमी होय  
प्रत्यह निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसें  
जोजन पुरसे तोजी व्रत जंग नही १ ४ पडुच्चमुखिणं कहतां सर्व  
आ लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमा-  
लम चोपमणेमें आयाहे लेकिन घृतादिकका स्वाद नही मालम देता  
हे तो नोवी पञ्चख्वाणमें उस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत जंग  
नही उर जो धारविगय लेवे तो व्रत जंग होय ॥ १ ५ ॥ इति पनरे  
पञ्चख्वाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केव-  
लिपसात्तो धम्मोमंगलं १ चत्तारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालो-  
गुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलपसात्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्तारिसरणं  
पवज्जामि अरिहंतेसरणं पवज्जामि सिद्धेसरणं पवज्जामि साहूसरणं पव-  
ज्जामि केवलपसात्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ३ इत्थमि पन्तिकमिउं

पगामसिद्धाए निगामसिद्धाए संधारानवट्टणाए परिचट्टणाए श्रान्तं-  
 णाए पसारणाए उप्पइयासंधट्टणाए कइए कक्कराईए ठोए जंजाइए  
 आमोसेससर स्कामोसे श्रान्तलमानत्ताए सोअणवत्तियाए इत्थोविप्प-  
 रियासिद्धाए दिक्खीविप्परियासिद्धाए मणाविप्परिआसियाए पाणा-  
 न्नोयणाविप्परिआसिद्धाए जोमेदेवसिन्न अइयारोकत्तं तस्समिच्चामि-  
 ड्ढकम् पम्भिकमामि गोयरचरिआए त्तिखायरिआए उग्घारुकवारु उ-  
 ग्घारुणाए साणावत्तादारा संधट्टणाए मंनोपाहुमिआए वत्तिपाहु-  
 मिआए ठवणापाहुमिआए संकिएसइस्सागारे आणेतणाए पाणेत-  
 णाए आणन्नोयणाए पाणन्नोयणाए वीअन्नोयणाए हरियन्नोयणाए  
 पञ्चकम्मियाए पुराकम्मियाए अदिठ्ठहन्नाए दगसंसठ्ठहन्नाए रबसंसठ-  
 हन्नाए पारिसारुनिआए पारिठावणिआए उहासणत्तिस्काए जंज-  
 ग्गमेणं उप्पायणेतणाए अपरिश्रुदं पम्भिगहिअं परिज्जुत्तंवा जंनप-  
 रिठवणिअं तस्समिच्चामिड्ढकम् पम्भिकमामि चानक्कालं सिद्धायस्स  
 अकरणायाए उज्जत्तकालं जंनोवगरणस्स अप्पमिलेहणाए अप्पमज्झ-  
 णाए उप्पमज्झणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयोरे अणायोरे जोमेदेव-  
 सिन्न अइयारो कत्तं तस्स मिच्चामि ड्ढकम् पम्भिकमामि एगविहे  
 असंजमे पम्भिकमामि दोहिं बंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं  
 पम्भिकमामि तिहिं दंमेहिं मणदंमेणं वयदंमेणं कायदंमेणं  
 पम्भिकमामि तिहिं गुत्तोहिं मणगुत्तोए वयगुत्तोए कायगुत्तोए  
 पम्भिकमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिच्चादं  
 सणसल्लेणं पम्भिकमामि तिहिं गारवेहिं इत्थीगारवेशं रसगारवेशं  
 सायागारवेशं पम्भिकमामि तिहिं विराहणाहिं नाणविराहणाए  
 दंसणविराहणाए चारित्तविराहणाय पम्भिकमामि चउहिं क-  
 साएहिं कोइकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं  
 पम्भिकमामि चउहिं सप्पाहिं आहारसप्पाए जवसप्पाए मेहुणसप्पा

ए परिगहससाए पन्निक्कमामि चउहिं विगहाहिं इञ्चिकहाए जत्त-  
 कहाए देसकहाए रायकहाए पन्निक्कमामि चउहिं जाणेहिं अट्ठेणं  
 जाणेणं रुद्धेणंजाणेणं धम्मेषणंजाणेणं सुक्केणंजाणेणं पन्निक्कमामि  
 पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउत्तियाए पारताव-  
 णीआए पाणायवायकिरियाए पन्निक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं  
 सहेणं रुद्धेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पन्निक्कमामि पंचहिं महद्वएणि  
 पाणाइवायानुविरमणं मुसावायानुवेरमणं अविन्नादाणानु<sup>सत्तम</sup>  
 मेहुणानुवेरमणं परिगहानुवेरमणं पन्निक्कमामि पंचहिं  
 इरिआसमिईए ज्ञासासमिईए एसणासमिईए आयाण<sup>१७५</sup>  
 खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेवजल्लसंघाणपारिठावहिं<sup>इत्ति१७५</sup>  
 ईए पन्निक्कमामि ठहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं अ<sup>इत्ति१७५</sup>  
 तेजकाएणं वाजकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पन्निक्कमामि  
 ठहिं लेसाहिं किन्हेलेसाए नीललेसाए कान्हेसाए तेजलेसाए प-  
 चमलेसाए सुक्खेसाए पन्निक्कमामि सत्तहिं जयवाणेहिं अट्ठहिं म-  
 यवाणेहिं नवहिं वंज्जचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं  
 उवासगपन्निमाहिं बारसहिं जिस्कुपन्निमाहिं तेरसहिं किरियावा-  
 णेहिं चउदासहिं जूयगामेहिं पसरसहिं परमाइम्मिणहिं सोलसएहिं  
 गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अवंजे इगुणवीसाए ना-  
 यच्चयणेहिं वीसाए असमाहिवाणेहिं इकवीसाए सववेहिं बावीसाए  
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगमज्जयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवी  
 साए जावणाहिं ठवीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकावेणं सत्ता  
 वीसाए अणगारगुणेहिं अठवीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए  
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअवाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं  
 वत्तीसाए जोगसंगहेहिं तिच्चीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसाय  
 णाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवच्चायाणंआ-



सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० दे  
 वाणंआ साय० देवीणंआ० इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलपन्नः  
 तस्स धम्मस्सआ० सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० सव्वपाणञ्चअजी-  
 वसत्ताणंआ० कालस्सआ० सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा  
 रिअस्सआ० जंवाइहं वच्चामेखिअं हीनस्करिअं अच्चस्करिअं पयहीणं  
 विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुठुदिन्नं, दुहुपमिष्ठियं अकालेक-  
 न्तमज्झानं कालेनकन्तमज्झानं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-  
 इयं तस्स मिच्छामि दुक्कमं एमो चउवीसाए तित्थयराणं नसज्जाइ-  
 माहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निगंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-  
 वलियं पमिपुसं नेआनयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमगं मुत्तिमगं  
 निज्जाणमगं निव्वाणमगं अवितहमविसंधि सव्वडुस्सकपहीणमगं  
 इत्थद्वियाजीवा सिद्धंति बुद्धंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वडुस्सखाणं-  
 मंतंकरंति तंधम्मं सदहामि पत्तियामि रोएमि फालेमि पालेमि अ-  
 णुपालेमि तंधम्मं सदहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-  
 पालितो तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अप्पुठ्ठिमि आराहणाए  
 विरज्जिमि विराइणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि  
 अबंजं परिआणामि बंजंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं  
 उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं  
 परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्चत्तं परिआणामि सम्मत्तं  
 उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमगं प-  
 रिआणामि मगं उवसंपज्जामि जं संजरामि जं च न संजरामि जं  
 पमिक्कमामि जं च न पमिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स  
 अइयारस्स पमिक्कमामि समणोहं संजय विरय पमिदय पच्चख्खाय  
 पावकम्मे अनियाणो दिविसंपन्नो मायामोसविवज्जित्ठं अट्ठाइज्जोसु  
 दीवंसमुदेषु पन्नरसकम्मज्जमीसु ॥ जावंतिकेविसाहू, रयहरणगुब्ब



परिगृह्यथारा ॥ पंचमहव्यथारा, अष्टार सहस्त सीलंगधारा ॥  
 अस्वव्याथार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥  
 खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मित्ति मे सव्व भूएसु,  
 वेरं मच्चं नेकेणई ॥ १ ॥ एवमइं आलोडय, नंदिअ गरहिय डुगंठियं  
 सम्मं ॥ तिबिदेण परिक्कंतो, वंदामि जिणेचउवीसं ॥ २ ॥ इतिश्री  
 साहू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

### ॥ अथ पख्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिठंकरे अतिठे, अतिठसिद्धेय तिठसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-  
 णेयरिसी, महारिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर,  
 मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-  
 भियुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥  
 खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्धं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं  
 करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवड्डितं, महव्वय उ-  
 च्चारणं कालं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा  
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वाड पाणाड-  
 वायाओ वेरमणं सव्वाड मूसावायाड वेरमणं सव्वाड अदिन्नादाणान्  
 वेरमणं सव्वाड मेहुणान् वेरमणं सव्वाड परिगृहान् वेरमणं सव्वाड-  
 राड भोयणान् वेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वप् पाणाडवायान्-  
 वेग्मणं सव्वं भंते पाणाडवायं पच्चस्कामि से सुद्धुमं वा वायरं वा तसं  
 वा थावरं वा नेवसयं पाणे अड्वाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अड्वायाविज्जा  
 पाणे अड्वायंतेवि अन्नेन समणुजाणामि जावल्लीवाप् तिबिहं तिबिहेणं  
 मणेणं वायाप् काएणं न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्नं समणु  
 जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोस्तिरामि  
 से पाणाडवायाप् चउव्वहे पन्नते तंजहा दव्वड खित्तड कालड  
 भावड दव्वडणं पाणाडवाप् छसुजीवनिकाप्सु खित्तडणं पाणा

इवाए सयल्लोए कालञ्जणं पाणाइवाए दियावा राञ्जवा भावञ्जणं  
 पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लि  
 पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंती-  
 पहाणस्स अहिरस्ससोवसियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स  
 अप्पयमाणस्स भिखावित्तियस्स कुल्लवीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स  
 संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-  
 त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविंसंवाइयस्स  
 संसारपारगामियस्स निव्वान गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाण  
 याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-  
 गदोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारब-  
 गरुयाए चउक्कसानवगएणं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
 सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-  
 वाञ्ज कञ्जवा कारिञ्जवा कीरंतोवा पेरेहिं समणुन्नाञ्ज तं निंदामि ग-  
 रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-  
 ड्डपन्नं संबरेमि सव्वं पाणाइवायं जावजीवाए अणिस्सिञ्जहिं नेव  
 सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं प्राणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-  
 यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं  
 साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खू-  
 णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राञ्जवा एगोवा  
 परिसागञ्जवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खल्लु पाणाइवायस्सवेरमणे  
 हिएसुहे स्वमेनिस्सेसिए आणुंगामिए पारगामिए सब्बेसिं पाणाणं  
 सव्वेसिं भूयाणं सब्बेसिं जीवाणं सब्बेसिं सत्ताणं अदुक्कणयाए अ-  
 सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुद्ववणयाए महत्ते महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु-  
 चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्ते तं दुक्कययाए कम्मस्कयाए मोहस्क

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिक्कट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि  
 पढमे भंते महव्वए उवड्डिमि सव्वाञ्च पाणाइवायाञ्चवेरमणं ॥ १ ॥  
 अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायाञ्चवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं  
 पच्चस्कामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइच्चा  
 नेवन्नेहिं मुसंवायाविच्चा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि  
 जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-  
 रेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-  
 कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउ-  
 व्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वञ्च खित्तञ्च कालञ्च भावञ्च दव्वञ्चणं मुसा-  
 वाए सव्वदव्वेसु खित्तञ्चणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालञ्चणं  
 मुसावाए दियावा राञ्चवा भावओणं मुसावाए रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालस्क-  
 णस्स सच्चाहिष्ठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-  
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभवेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्का-  
 वित्तियस्स कुस्कीसंबलस्स निरगिगसरणस्स संपस्कालियस्स चत्तदो-  
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलस्कणस्स पंचमहव्व-  
 यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स  
 निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ-  
 बोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए  
 बालवाए मोहयाए मंदयाए किद्धयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसान्चवग-  
 णं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहं  
 वामवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा  
 भासिज्जंतो वा पेरेहिं समणुत्ताओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि-  
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवेरेमि अणागर-  
 पच्चस्कामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयंमुसंवा

चा नेवन्नेहिं सुसंवायाविद्या सुसंवायंतंवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखिखयं साहससखियं देवससखियं अप्पससखियं  
 एवं इवह भिखुवा भिखुवुणोवा संजयविरीयपडिहय पच्चख्खाय पा-  
 वकम्भे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा  
 एस खलु सुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खभे निस्सेसिए आणुगामिए  
 पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-  
 व्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-  
 याए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुद्वणयाए महत्ते महाणुणे  
 महाणुभावे महापुरिमाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्ते तं दुग्गख्खयाए  
 कम्मख्खयाए मोहख्खयाए वाहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उद-  
 संपज्जत्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिमि सव्वाउ सुसा-  
 वायाओवेरमणं ९ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणानवेरमणं  
 सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चख्खामि से गामेवा नगरेवा रत्तेवा अप्पंवा  
 वहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं  
 गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंन-  
 समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं  
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए  
 तस्स भंते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ये  
 अदिन्नादाणे चउट्ठिवहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भा-  
 वओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणद्वारणिच्चेसु दव्वेसु खित्तओणं  
 अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्तेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा  
 राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-  
 म्मस्स वम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिठियस्स वि-  
 णयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स  
 नववंभत्तेर सुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुम्भीसंवलस्स

निरिगिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-  
 व्वियारस्स निव्वित्तोलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंवि-  
 यस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण  
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं  
 अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिव्वयाए बालयाए मोहयाए  
 मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरूयाए चउक्कसान्वगएणं पंचेदियवसट्टेणं  
 पडिपुन्नभारियाए साचासुक्कमंणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्ग  
 हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा विप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना  
 ओ तं निदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अं  
 इयं निदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि सबं अदिन्नादा  
 णं जावज्जोवाए अणिसिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं  
 अदिन्नं गिन्नाविद्या अदिन्नंगिन्नंतेवि अन्नंसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं साहूसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं  
 एवं हवइ भिखूवा भिखुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चस्काय पाव  
 कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा  
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ  
 णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं  
 जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुखणयाए असोयणयाय अजूरणवाय  
 अतिप्पणयाय अपोडणाय अपरियावणियाय अणुहवणयाय महत्ते  
 महाणुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्ते तं  
 दुस्सकयाय कम्मस्सकयाय मोहस्सकयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय  
 त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अणुद्धिओमि स-  
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-  
 व्वए मेहुणाओवेरमणं सबं भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिव्वंवा मा-  
 णुसंवा तिरिख्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविद्या नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविद्या मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अ-  
 न्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि ।  
 अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ  
 कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्त-  
 ओणं मेहुणे उट्ठलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-  
 हुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-  
 यमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चा-  
 हिठ्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरत्नसोवन्नियस्स उव-  
 समप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुखावित्तियस्स  
 कुख्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण-  
 गाहियस्स निव्वत्तीलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिय-  
 स्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपद्धात्रसाण-  
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अ-  
 भिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए वालयाए मोहयाए मंद-  
 याए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेदियवसट्टेणं  
 पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा  
 भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविच्चंतोवा परेहिं समणु-  
 न्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का-  
 एणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चख्खामि सव्वंमेहुणं  
 जावजीवाए अणिसिओहं नेवसयंमेहुणंसेविद्या नेवन्नेहिंमेहुणंसे-  
 वाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहां अरिहंतसख्खि-  
 यं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं ५/५पसख्खियं एवं हव-  
 इभिख्खूवा भिख्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चक्कायपावकम्मे दि-  
 यावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एससल्लुमेडुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पार-  
 गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं-  
 सत्ताणं अदुख्खण्याए असोयण्याए अजूरण्याए अतिप्पण्याए  
 अपीडण्याए अपरियावणियाए अणुद्वण्याए महत्ते महागुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदैसिएपसत्ते तंदुख्खस्स्याए  
 कम्मस्स्याए मोहस्स्याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिकट्टु उव-  
 संपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवडिओमि सव्वाओ-  
 मेडुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं  
 सव्वं भंते परिग्गहं पच्चस्सामि से अप्पंवा वडंवा अणुंवा थूलंवा चित्त-  
 मंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं  
 परिगिण्हविद्या परिग्गहंपरिगिन्नंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जा-  
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकार-  
 वेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपस्सत्ते  
 तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचि-  
 त्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-  
 सुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे  
 अपग्घेवा मंहग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स  
 केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिडियस्स विणयमूलस्स  
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरु  
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खाविच्चियस्स कुक्खीसंवलस्स निरग्गि-  
 सरणस्स संपत्त्वालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स  
 निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयलुत्तस्स अविसंवाइयस्स संसारपा-  
 रगामियस्स निव्वाण गमण पच्चवसाणफलस्स पुर्व्विअन्नाण्याए अस-  
 वण्याए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-



दोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किंरुयाए तिगारव-  
 गरुयाए चउकसानवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
 सोरुक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-  
 हिउवा गाहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुज्जाणं तंनिदामि गरि-  
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिदामि पडुप्प-  
 न्नसंवरेमि अणागयंपच्चस्कामि सबंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिसि-  
 उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हंविद्धा परिग्गहं-  
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखियं सिद्ध-  
 सखियं साहुसखियं देवसखियं अप्पसखियं एवंहवइभिख्खूवा भि-  
 ख्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राउवा  
 एगंउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखल्लुपरिग्गहस्स-  
 वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिं  
 पाणाणं सबेसिंभूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिंसत्ताणं अदुरुखणयाए  
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुद्वणयाए महत्थे महायुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने  
 परमरिसिदेसियपसब्बे तंदुस्सकयाए कम्मकयाए बोहिलाभाए सं-  
 सारुत्तारणाए त्तिक्कट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महवए  
 उवट्ठिउमि सब्बाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते धहव्वए रा-  
 इभोयणानवेरमणं सब्बं भंते राईभोयणं पच्चस्कामि सेअसणंवा पाणंवा  
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइभुंजाविद्धा राइभुं-  
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं  
 वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि  
 तंस्सं भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-  
 भोयणे चउविहेपस्सत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं  
 राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे



समयखित्ते कालओणं राईभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभो-  
 यणे तिच्चेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालस्क-  
 णस्स सञ्चाहिद्वियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-  
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभवेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्कावि-  
 त्तियस्स कुस्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्कालियस्स चत्तदोसस्स  
 गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तोलस्कणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स  
 असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वान-  
 गमणपच्चवसाणफलस्स पुब्बिअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिणं अ-  
 णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए  
 मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं  
 पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा  
 भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसुं राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुज्जंतंवा  
 परेहिंसमणुजाओ तंनिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वा-  
 याए काएणं अइयंनिदामि पडुपन्नसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि  
 सव्वंराइ भोयणं जावज्जोवाए अणिस्सिओहं नेवसयं राईभु-  
 जिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुज्जंतेवि अन्नंसमणुजाणाभि  
 तंजहा अरिहंतसस्सिकयं सिद्धसस्सिक्खयं साहुसस्सिकयं देवसस्सिकयं  
 अप्पसस्सिकयं एवंहवइभिस्खूवा भिस्खुणीवा संजयविरय पडिहय  
 पच्चस्कायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा  
 सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिणसुहेखमे-  
 निस्सेसिए आणुगाभिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिं-  
 भूयाणं सव्वेसिजीवाणं सव्वेसिसत्ताणं अदुस्सकणयाए असोयणयाए  
 अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणु-  
 हवणयाए महव्वेमहागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि;

देसिप्पसत्थे तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए  
 संसारुत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छट्ठे भंते महवत्  
 उवट्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चैइयाइं पंच-  
 महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइं उवसंपज्जित्ताणंविह-  
 रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे  
 एसबुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातहेवय  
 सुसावायस्सवेरमणे एसबुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-  
 दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सहा-  
 रूवारसागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइ-  
 क्कमे ॥ ४ ॥ इट्ठापुट्ठायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे  
 एसबुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-  
 णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 धम्मे तइयंवयमणुरख्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विर-  
 यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-  
 णधम्मे पंचमंवयमणुरख्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छट्ठंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-  
 धम्मे पढमंवयमणुरख्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-  
 हारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 अलियवयणञ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिञ जुत्तोगुत्तोठिञसमणधम्मे  
 तइयंवयमणुरख्खे विरियामो अदिन्नादाणाञ ॥ १४ ॥ आलियविहार-  
 समिञ जुत्तोगुत्तोठिञसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विरियामोमेहु-

णाञ्च ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तो गुत्तो ठिञ् समणधम्ममे पंच-  
 मवयमणुरस्के विरयामो परिग्गहान् ॥ १६ ॥ आलियविहारस-  
 मिञ् जुत्तो गुत्तो ठिञ् समणधम्ममे छव्वयमणुरस्के विरयामो राई भोयणा-  
 ञ् ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तो गुत्तो ठिञ् समणधम्ममे तिविहे-  
 ण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिञ्चत्तं  
 एगमेव अज्ञाणं परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-  
 वच्चजोगमेगं सम्मत्तं एगमेव नाणं तु उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वए-  
 पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियज्ञाणां अट्टरूहां परिवच्चंतो-  
 गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तं धम्मं दोन्नियज्ञाणां  
 धम्मसुक्कां उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-  
 नीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊ अप्पसत्थानं परिवच्चंतो गुत्तो रक्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाऊ अप्पसत्थानं उव-  
 संपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविज्जं  
 वायांसच्चैरणकरणसच्चैणं तिविहेण विसच्चविज्जं रक्खामिमहव्वएपंच  
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवच्चंतो  
 गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं  
 संवरंसमाहिंच उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥  
 पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवच्चंतो गुत्तो रक्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेदियसंवरणं तहेव पंचविहमेव सव्वायं उवसंप-  
 न्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायबहि छप्पिय-  
 भासान् अप्पसत्थानं परिवज्जंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥  
 छविहमभित्तरियं वज्जंपिय छविहंतवोकम्मं उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयठ्ठाणां सत्तविहंचेव नाणविभ्रंगा परिव-  
 चंतो गुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-  
 सत्तिकयामहच्चयणा उवसंपन्नो जुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अष्टमयष्टाणां अष्टयकम्माइतेसिबंघिच परिवच्चंतोगुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अष्टयपवयणमाया द्विष्ठाअष्टविहनिट्ठिअष्टेहिं उवसं  
 पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसारं  
 णायनवविहाजीवा परिवच्चंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न  
 वबंभचेरगुत्तो दुनवविहंभंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम  
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंबरंतहयसंकिलेसंच परि  
 वज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिष्ठाणां दस  
 चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥  
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंपतिदंडविरत्तं तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लोति  
 विहेण पडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चयंमहव्वयउच्चारणं  
 थिरत्तं सञ्जुद्धरणं धिइवलंवसानं साहणघोपावनिवारणं निकायणा  
 भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संबरजोघोपः  
 सब्बघाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमघो उत्तमघो एसखलुतित्थं  
 केरहिं रइरागदोस महणेहिं देसिअ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय  
 संजमं उवइसिअं तिच्चुक्क सक्कयंठाणं अणुवगया नमोत्तुते सिद्धबुद्ध  
 मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय न  
 मोत्तुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहन् नमोत्थुते भग  
 वन् चिक्कट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाक्रया इच्चामोसुत्तकित्तणं  
 काउं नमोतेसिखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग  
 वंतं तंजहा सामाइयं चउवोसब्बन् वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पंच  
 रक्खाणं सव्वेहिं विण्यंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्ते  
 सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ  
 गवंतेहिं पन्नत्तावा परुवियावा तेभावे सइहामो पत्तियामो रोएमो  
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सइहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपखस्स अंतोचउमासीए अंतो  
 संवच्चरस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपालियं  
 तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता  
 रणाए त्तिक्कट्ठुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपखस्स जंनवाइयं नप  
 ढियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवी  
 रिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरि  
 हामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुढेमो अहारिहं तवोकम्मं  
 पायच्चित्तं पडिवच्चांमो तस्स मिच्चांमिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जे  
 हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं  
 कप्पियाकप्पियं चुलकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं  
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद  
 थुंउ तंदुलवेयालियं चंदा विच्चयं पमायप्पमायं वीयरागसुयं विहार  
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चस्खाणं महापच्चस्खाणं सव्वेहिंपिए  
 यंमि अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सगंगंथे सन्नि  
 जुत्तीए ससंगहणीए जेयुणावा भावावा अरिहंतोहिं भगवंतेहिं प  
 न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सहहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो  
 पालेमो अणुपालेमो तेभावेसहहंतोहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं  
 अणुपालंतेणं अंतोपखस्स जंवाइयं पढियं परिअट्ठियं पुच्चियं अणु  
 पेहियं अणुपालियं तंदुख्खस्सयाए कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहि  
 लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिक्कट्ठु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोप  
 खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपा  
 लियं संतेवले संतेवोरिए संतेपु रिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प  
 डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुढे  
 मो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिवच्चांमो तस्स मिच्चांमिदुक्कडं न  
 मोतेसिं समासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरअयणाइं दसानकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं  
 जंबुद्वीपपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चंदपन्नत्तो दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा  
 णपविभत्तो महल्लियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया वि  
 वाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए  
 वेलंघरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरियाव  
 लियानं निरयावलियानं कप्पियानं कप्पवडिंसयानं पुप्फियानं पुप्फचु  
 लियानं वह्नीदसानं आसीविसभावणानं दिट्ठीविसभावणानं चारणसु  
 मिणभावणानं महासुमिणभावणानं तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयं  
 मि अंगवाहिए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए  
 ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवि  
 यावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो  
 ते भावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं  
 अंतोपरूखस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपा  
 लियं तंदुरुखस्सयाए कम्मखस्सयाए मोहखस्सयाए बोहिलाभाए स  
 सारुत्तारणाए तिकट्ठ उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरूखस्स जंन  
 वाइयं नपढियं नपरियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते  
 बले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो  
 तिंदामो गरिहामो विउट्ठेमो विसोहंमो अकरणयाए अणुट्ठेमो अहारिहं  
 तवोकम्मं पायच्चित्तंपडिवज्जामो तस्स मिट्ठामिदुक्कडं नमोतेसिंखमास  
 मणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो  
 सूयगडो ठाणो समवानं विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहानं उवासगद  
 सानं अंतगडदसानं अणुत्तरोववाइअदसानं पणहावागरणं विवाग  
 सुयं दिट्ठिवानं सुदिट्ठिसुहानं सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे  
 भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणा  
 वा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

इहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सह  
हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो  
पख्वस्स जंवाइयं पढियं परियट्ठियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपालियं तं  
दुखखक्याएकम्मखक्याए मोहखक्याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए  
त्तिकट्ठु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्वस्स जंनवाइयं नपढियं नप  
रियट्ठियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस  
क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदाओ गरिहामो विउट्ठेमो  
विसोहेमो अकरणयाए अणुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिव  
जामो तस्समिच्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवाल  
संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्ठं  
ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्चामिदुक्कडं ॥ सुय  
देवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं  
सुयसागरेभत्ती ? इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अणुपुरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाठकी घमियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमैष्ठिस्म-  
रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पन्नि-  
लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशाखायें थाप-  
नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आर्वी,  
जूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीठें ख-  
मासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह मुहपत्ती पन्नि-  
लेहुं ? गुरु कहे, पन्निखेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती  
पन्निखेहे. पीठें उज्जो थई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
॥ पोसह संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इच्छं कही, ख-  
मासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह ठाउं ? गुरु कहे



ठाएह, पीठें इहं कही खमासमण देई उजो अई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार जगवन् पसान करी, पोसह दंरुक उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें पोसहं ॥ इहांसैं ले के अप्पाणं वोसिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पञ्चखाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पञ्चकाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसनं सबन वा, सरीरसकार पोसहं, सबन वंजचेर पोसहं, सबन अवावार पोसहं, सबन चनविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पञ्चखामि, जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जुवासामि, डुविहं ति विहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स जं ते पक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञाषण करतो उच्चरे ॥ पीठें एक खमासमणें ॥ इच्छाका ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेहेह. बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्सानं ? सामायिक ठानं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ज्ञो अको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंतें उच्चरी दोय खमासमणें बेसणो संदिस्सानं ? बेसणो ठानं ? कही, पीठें दोय खमासमणें सिध्दाय संदिस्सानं ? सिध्दाय करुं ? कही खमासमण देई ज्ञो अको, आठ नवकारनो सिध्दाय करे. शीतादि परिसहे दोय खमासमणें, पांगरणं संदिस्सानं ? पांगरणं पमिग्धानं ? कहे. ए सर्व सामायिक विधि पूर्वं कह्यो ठे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष ठे. पहिलां इरियावही पक्कमी ठे, तेमाटे इहां सामायिक दंरुक उच्चरयां पीठें इरियावही नही पक्कमीजें ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीरशाय,



सूधी करी कुसुमिण दुस्समिण कानुस्सग्ग करे, पीठें पम्भिकमण-  
 वेलासीम सिञ्चाय ध्यान करे. पीठें पूर्वोक्त रीतें पम्भिकमण करे,  
 पण इतरे विशेष के चारे शुद्धिये देव वाद्या पीठें खमासमण देई  
 कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं संदिस्सानं ? गुरु कहे,  
 संदिस्सावेह. पीठें इच्छं कही खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥  
 सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इच्छं कही,  
 तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीनपाध्यायजी मिश्र  
 २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम-  
 स्कार जणें, जो पम्भिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं  
 चैत्यवंदनादि करी, सिञ्चाय करे. हवे पम्भिलेहण वेला पम्भिलेहण  
 करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो ठे तो पण संक्षे-  
 पें फेर लखीयें वैयें. दोय खमासमणें, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पम्भिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पम्भिलेहें. पीठें दोय खमा-  
 समणें अंग पम्भिलेहण संदिस्सानं ? अंग पम्भिलेहण करुं ?  
 कहे. पीठें गुरुवचनें इच्छं कही. धोतियो कणदोरो पम्भिलेही  
 वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इच्छकार जगवत्त ! पसान करी, प-  
 म्भिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पम्भिलेही स्थापे,  
 अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पम्भिलेहे, तो पण खमासमण देई  
 उक्त रीतें आग्या मागे. पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं०  
 ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पम्भिलेहुं ? गुरु कहे, पम्भिलेहेह.  
 पीठें इच्छं कही, मुहपत्ती पम्भिलेही दोय खमासमणे ॥ इच्छाका०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही पम्भिलेहण संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्सा  
 वेह. उही पम्भिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अणहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें  
 पासवणें अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे  
 ॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पा-  
 सवणें अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अहि-  
 यासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ८ ॥ आ-  
 गाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पास-  
 वणें अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणें अहियासे ॥ ११ ॥  
 आगाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उ-  
 च्चारें पासवणें अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पास-  
 वणें अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अणहि-  
 यासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणें अणहियासे ॥ १६ ॥  
 अणागाढे मध्ये पासवणें अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पास-  
 वणें अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणें अ-  
 हियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २०  
 ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणें अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे  
 आसन्ने पासवणें अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणें अ-  
 हियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणें अहियासे ॥ २४ ॥ ए  
 अंमिलपमिलेहण पाठ कइया ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं :-

॥ ६ अंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम  
 पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवज्जेके ज़ीतर पासे दहिणें ३,  
 वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ अंमिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासे पमिलेहे  
 ॥ ६ अंमिलां जिहां उच्चार प्रस्ववणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ  
 पमिलेहे ॥ इति २४ अंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीठें इच्छं कही, कंवल वस्त्रादि पमिलेही पोसइ शाला प्र

मार्जी काजो विधिगुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पम्किमे, इहां आचार दिनकरमें कह्यो ठे. दोय खमासमणें इच्छा का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्सानं ? वसती पम्किहेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे, इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिद्धाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणें, गुणें, वखाण सुणें, इम करतां पूर्ण पदुर दिन चढ्यां, उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपम्पिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई, इरियावही पम्किमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पम्किहेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पम्किहेही पान जोजन पात्र पम्किहेही राखे, पीठें सिद्धाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्तही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्र स्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पार्सें वेसे, स्त्री हुवे तो वाम पार्सें वेसे, पीठें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीठें नमोबुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पम्किमे, एक लोगस्तनो काउस्तग करे. मुखें लोगस्त कहे. संतासा प्रमार्जी वेसे, तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. “जं किंचि नाम तिष्ठं” इत्यादि कही पीठें नमोबुणं कहे, उजो अई अरिहंत चेईयाणं करेमि काउस्तगं वंदणवत्ती ॥

अन्नबू० कही, एक नवकारनो कानुस्तग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्त० सवलोए अरि० वंदणव० अन्नबू० कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीठें पुस्करवरदी० सुअस्त जग० वंदण० अन्नबू० कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नबू० इत्यादि कथन पूर्वक चौथी थुईकी गाथा कह कर, बैठकें नमोबूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरे चार थुईये देव वांदि बेसे

नमोबूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे, पीठें जयवीयराय कही. नमोबूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तव देववंदन विधि जाणवों ॥

॥ ए दिधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे. तथा चैत्यवंदन वृहज्जाप्यमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथने पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसे देव वांदि. फेर शक्रस्तव कही “ जावंति चेइयाइ ” गाथा जणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोबूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीठें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पम्पिक्रमे. पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पञ्चखवाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकू पञ्चस्काण पारे ॥

॥ हवे पञ्चखवाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्पिक्रमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पञ्चखवाण पारवा मुहपत्ती पम्पिलेहुं ? गुरु कहे, पम्पिलेहेह ॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पम्पिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज्ञ० ॥ पाणहार अमुक पञ्चख्वाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि क  
यवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज्ञ० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तवो. पीठें तहत्ति  
कही, अमुक पञ्चख्वाण चञ्चविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी  
पञ्चख्वाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं,  
जं च न आराहियं, तस्स मिच्चामि उक्कमं, कही ॥ चैत्यवंदन करे.  
क्षणमात्र सिज्जाय करी यथासंज्ञवें अतिथिसंविज्ञाग करी पाणीपीये ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पञ्चख्वाण  
पारी आहार करे. पीठे आसण बैठो अकोहीज दिवस चरिम्  
पञ्चख्वाणे, पीठें इरियावही पम्किम्मी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन  
आहार संवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चख्वाण पारणेका विधि ॥

॥ पीठें जो बहिर्जूमि जावणो हुवे, तो आवस्तही कही  
उपयोगी अको, निर्जीव अंमिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही  
पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे,  
प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कंहिवे करी मल  
मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही प  
म्किम्मे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ गमणा  
गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीठें इठं कही गमणाग  
मण आलोवे ॥ ते इम आवस्तही करी, प्राशुक देशें जई, संसा  
सा पूंजी, अंमिलो पम्किम्मेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही  
करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतैहिं जं खंमियं, जं विरा  
हियं, तस्स मिच्चामि उक्कमं, एम कही वेसे. पीठें पम्किम्मेहण वेला  
सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठवे पहुरे इरियावही पम्किम्मी खमासमण देई  
कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ पम्किम्मेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इहं कही दूजे खमासमणे इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला  
 प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीठे इहं कही, मुहपत्ती पमिलेही  
 दोय खमासमणे अंग पमिलेहण संदिस्तानं ? अंग पमिलेहण करुं ?  
 कहे. पीठे गुरु वचने इहं कही मुहपत्ती पमिलेही दंमासणो पूजणी  
 प्रमुखते प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे, पीठे काजो शुद्ध करी, उद्धरी  
 एकांते विखरतो परवही इरियावही पमिकमी, खमासमण पूर्वक  
 कहे ॥ इच्छकार जगवन् पत्तान करी पमिलेहणी पमिलेहावोज ॥  
 पीठे स्थापनाचार्य पमिलेही स्थापे. गुरुसमीपे अथवा थापनाचार्य  
 समीपे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती  
 पमिलेहुं ? गुरु कहे, पमिलेहेह. पीठे इहं कही खमासमण देई,  
 मुहपत्ती पमिलेहे. पीठे दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ सिधाय संदिस्तानं ? सिधाय करुं ? उक्त रीते कणमात्र सि  
 द्धाय करी तिथिहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार  
 पचस्के ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो बांदणां  
 दोय देई, पचस्काण करे. पीठे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥  
 सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पमिलेहण संदिस्तानं ? बीजे ख  
 मासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पमिलेहुं ?  
 गुरु वचने इहं कही, दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ बेसणो संदिस्तानं बेसणो ठाउं ? कही बेसे. वंस्व कंबलादि प  
 मिलेहे. पूजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पमिलेहे. उपवासी तो  
 ते तेमाटे सर्व पागे कम्पिटो धोतीयो कणदोरो पमिलेहे, उपधा  
 नवाही प्रमुख भोजन कीधो हुवे तो कम्पिट्टादि पमिलेह्यां. पीठे  
 वस्व कंबलादि पमिलेहे. ए विशेष ठे ॥ पीठे कालवेला सीम  
 सिधाय ध्यान करे. पीठे उच्चार प्रश्रवण १४ श्रंमला पमिलेहे,  
 जो चन्द्रदश हुवे, तो पाखी चनुमामो पमिकमणो करे, संवच्छरीये

संवहरी पन्तिकमणो करे. तिहां देवसी पन्तिकमणो पूर्वे लिख्यो  
 ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो  
 एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीठे " ठाणे कमणे चंकमणे " इ  
 त्यादि पाठ कहे. खुद्दोवदव कानस्संग कियां पीठे दोय खमासम  
 णे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिद्धाय संदिस्सांज ? सिद्धाय करुं ?  
 कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिद्धाय करे ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पन्तिकमणविधि आगे एही पुस्तकमें  
 लिख गये हैं. वहांसिं जान लेना.

॥ हवे पन्तिकमणो हुवा पीठे साधुको वेयावश्च करी पोरसी  
 सीम सिद्धाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ज  
 केहतो थको, जूमि प्रमाजें थमिल स्थानके जई, देहशंका निचारे  
 प्रश्रवण वोंसिरावी, स्वस्थानके आवे. जगवन् ! बहु पन्तिपुत्रा पो  
 रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे, पीठे राई  
 संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राई संथारा  
 मुहपत्ती पन्तिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहह. पीठे इच्छा कही, खमास  
 मण देई मुहपत्ती पन्तिलेहे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ राई संथारो संदिस्सांज ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०  
 ॥ ज० राई संथारो ठावुं ? पीठे गुरु वचनें इच्छा कही, चउकसाय  
 पन्तिमुल्लूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी  
 चैत्यवदन करे. जूमि प्रमाजी, संथारो उत्तर पटो पाथरे. पीठे  
 शरीर प्रमाजी निस्तही निस्तही एम कही संथारे बेसी, तीन  
 नवकार तीन करेमि जंते ऊवरी ॥ एमो खमासमणाय, गोयमा  
 ईण भंढामुणीण. अणजाणह जिठिळा अणजाणह परम गुरु

इत्यादि राइ संथारा गाथा जणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवानो फेर तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेर, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पम्किमे ॥ पीठें जघन्यें पण तीन गाथानी सिधाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पदोर ऊगी, नवकारादि गुणी, इरियावही पम्किमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्सुमिण काउस्सग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पम्किमे. पीठें दोयखमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार गुणी, पम्किमण वेला सीम सिधाय करे. पम्किमण वेला हुवां पम्किमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष ठे, के राइ आलोयां पीठें संथारा उवढणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पम्किमणो करी पम्किमण वेलायें पूर्वोक्त विधें पम्किमण करी, धर्मशाला पुंजी काजो ऊहरी इरियावही पम्किमे. दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. पीठें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पम्किमे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायबो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ जसंवंधी सह पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मो-  
हुं ॥ पीठें नहकिया, पीठें दोसमण देई अर्धावनत गात्रें उजो  
अंवाः तीनके पम्किमण देई, मुहपत्ती पम्किमे, पीठें  
तवर समण देई पम्किमे. यहा० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ?  
ये ॥ कहे पुणो यथाशक्ति कही, खमासमण देई  
इच्छाका० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आं-



घारो न मोत्तव्वो. पीठें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत्त गात्रें उज्जो थको दाध जोड्या- मुहपत्ती मुखें दियां थकां तीन न वकार गुणी संभासा पमिलेहे. गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी, " जयवं दसन्नजहो " इत्यादि ज्ञावनारूप गाथा कहे. पीठें पोस-हना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविज्ञागत्रत सा-चवण निमित्तें साधु जणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीठें साधुनें जे आहार दीधो, तेहनोदीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीठें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरंथकी निश्चित अई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पमिलेही, कचरो विधिगुं परठवी इरियावही पम्किमे. खमास-मण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पमिलेहे, आगे पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पो-सहदीज करणो हुवे, तो पोसह दंमक उच्चस्तां जावदिवसं पञ्जु-वासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्ति पञ्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीठें आमाधिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिण्डुस्तमिण कासिमण करी पम्किमण करी दोय खमासमणें बहुवेळं संदिस्सावे ३, अने जो पञ्चमिण गुण पम्किमणो गुरु साधें करयो हुवे, तो अने पूर्वक जे आचार पमिलेही गारव्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सारो उत्तर पट्टो पण पमिलेही खमासमणें बहुवेळं संदिस्सावे ३, न कही संघारे विधि करी दोय मणो करयो हुवे, तो गुरुपासें आवणमो खमासमणा जुदो पम्कि-करी, आलोचण खामणादि निमित्तें अज्ञा अणुजाणहीयेक सर्व विधि पमिलेही वे वांछणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोचनं ? गुरु कहे, आ-  
 लोएह. पीठें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका०  
 ॥ सं० ज० ॥ अष्टुब्जमि अग्रिंतर, राइयं खामेमि ? गुरु कहे  
 खामेह. पीठें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पम्किमणामें न-  
 वकारसी पञ्चख्यो ओ तेमाटे पीठें गुरु साखें पञ्चस्काण उपवासनो  
 करे. पीठें दोय खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे ॥ ए तीन प्रका-  
 रका विकल्प जाणनां. हवे पम्किलेहण तो पूर्वे करी ठे, तो पण  
 आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पम्किलेहण संदिस्ताजं ? बीजे खमासमणें पम्किलेहण करूं ?  
 कही मुहपत्ती पम्किलेहे. पीठें इमहीज दोय खमासमणें अंग पम्कि-  
 लेहण संदिस्तावी मुहपत्ती पम्किलेहे. पीठें वली खमासमण देई  
 इच्छाकार जगवन् ! पसाज करी पम्किलेहण पम्किलेहावो जी. एम  
 कहे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ-  
 पधि मुहपत्ति पम्किलेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपम्किलेह्यो राख्यो  
 हुंवे, तो पम्किलेहे. नही तो वली आसण पम्किलेहे. दोय खमास-  
 मणें सिध्दाय संदिस्तावी उपदेशमाला प्रमुख सिध्दाय करे. आगें  
 सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है. तिमहीज जाणवी,  
 पण इरां अठ पुहरी पोसह तो पाठली रातें वली सामायिक न-  
 लेवे. जिए, अस संबंधी चउ पुहरी पोसह लोधो हुवे, ते पाठले  
 पुहर पञ्चस्काण किया, पीठें दोय खमासमणें उही पम्किलेहण सं-  
 दिस्ताजं ? उह पम्किलेहण करूं ? कहे, पण अंमिला पद न कहे.  
 कणने अंमिला नही पम्किलेहे. यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह अ-  
 ण करणेमें दिगुष विधिही, सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह  
 संदिहणविधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिले प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्चरघो है.  
 पीठें संध्याती पनिलेहण करतां रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो  
 पञ्चस्काण कियां पीठें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पनिलेही  
 तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंरुक ऊच्चरे. तिहां जाव  
 रत्तिं पञ्जुवासामि एम पाठ ऊच्चरे, पीठें सामायिक विधि पूर्व  
 लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊच्चरयां पीठें दोय खमासमणें  
 सिद्धाय संदिस्तावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्तावी, पांग  
 रणो संदिस्तावी, पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ उही थंमिलां पनिलेहण संदिस्ताउं उही थंमिलां पनिले  
 हण करुं? गुरु कहे, करेह. इच्छं कही उपधि पनिलेहे. आगे सर्व  
 क्रिया पूर्व लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो  
 व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव  
 थये, पाठले पदुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो  
 सरयो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण  
 पनिलेही इरियावही पनिकमे. पीठें चउविहार पञ्चस्काण करी  
 दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पनिलेही दोय खमासमण देई  
 पोसह संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, ती  
 वार पोसह दंरुक ऊच्चरे. तिहां दिवसेसरत्तिं पञ्जुवासामि कहे.  
 थ्या हुवे, तो रत्तिं पञ्जुवासामि कहे. पीठें बिहुं खमासमणें  
 यिक मुहपत्ती पनिलेहे. दोय खमासमण देई, पण पनिलेही  
 स्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, ती वार  
 ऊच्चरे. दोय खमासमण देई सिद्धाय संदिस्तावी विधि करी दोय  
 कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्तावी जूदो पनिक-  
 खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्तावे. पीठें जे स्वयं सर्व विधि

पमिलेइण संदिस्तावी, मुहपत्ती पमिलेहे. फेर वे खमासमण वेई, सेंही अंमिलां पमिलेइण संदिस्तावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्यां हुवे, तो यण आ नक शून्यता टालवा ज्ञणी वली आसण पडिलेही, पडिकमण वे ला सांम सिधाय ध्यान करे, पीठें उच्चार प्रश्रवणना १४ अंङिला पडिलेही पडिकमणो करे. तथा पाळलो रातें वली सामायिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेकमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंधटे वीयकायसंधटे यावरकायसंधटे वप्पइयासंधटे सबस्सवि देवसिअ, डुच्चितिय डुप्पासिय डुच्चिडिय ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्चं तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥ १ ॥ संथाराउवट्ठणकी, आउट्ठणकी, परिअट्ठण की, पसारणकी, वप्पइयासंधट्ठणकी, अच्चरुकुविसयकायकी, सबस्स विराइअ, डुच्चितिय, डुप्पासिय, डुच्चिडिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्चं तस्स मिच्छा मि डुक्कमं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

खवे. जिणे ॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

पुहर पच्चस्काए पुत्तसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलज्जाणगेहं ॥  
दिस्साणं ? उहं सुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंभरं तिज्जरायं ॥ १ ॥  
जाने अंमिला नदुत्ताण जाया, जवस्संति ते सब ज्ञवाण ताया  
य, एण करणेमें दिहेर निज ॥ वट्ठमाणा, सुहं दितु ते मे तिलोयप्पहा-  
तिइणविधिः ॥ महे तार कुबार पोयं, कलंका वली पंकपरका

तोयं ॥ मणोवन्धियञ्चे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहप्पं  
॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंजो जलीणा, कलारूव लावस सोदग्ग  
पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि जाणं, सिरी जारई देहि मे  
सुद्धाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमदिव्य  
पदबीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि  
तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांबनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्  
॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच  
सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचरुषीकनिर्जयमथो प्राप्ता  
गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतभूतां तीर्थकराः शंकराः ॥ २ ॥  
पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं  
पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाजं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी,  
पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां  
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, जक्तानां जविनां गृहेषु ब-  
हुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रहो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न  
पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धायिका प्रायिक  
॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चणवीसे जिनवर, प्रणमं हुं नितमेव ॥ आलो पण्डित पण्डित  
चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनि ॥ पण्डित पण्डित  
डःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोस पण्डित पण्डित  
जीना पाय ॥ इंद्राणी अपहर, कर जोडी साव ॥ पण्डित पण्डित  
दीपे मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ मन्त्रेस्साव ॥ पण्डित पण्डित  
॥ २ ॥ शेत्रंजा शिखरे जाणी जाय अ बे ख ॥ पण्डित पण्डित  
पण्डित पण्डित वे वांदाणां

गणधर मुनि परिवार ॥ न्रविषणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध  
साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणुं, क  
रिये व्रत पञ्चस्काण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥  
आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे,  
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लैर्जन्म  
व्रतमपमलं केवलमलं ॥ बलकैकादश्यां सहसि लसद्ब्रह्ममहसि,  
क्षितौ कल्याणानां हृपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्रथेणया  
गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥  
जिनानामप्यापुः क्षणमतिमुखं नारकसदः, क्षितौ ॥ २ ॥ जिना  
एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुणामिति च विदि  
तं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुजवेयुर्बहुमुदः, क्षि ॥ ३ ॥  
सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्कास्त्रि  
लज्जवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तुणां विदधति सुखं विस्मि  
तहृदः, क्षितौ ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ ईडेकि धपमप, धुधुमि धौधौ, धसकिधर, धपधोरवं ॥  
॥ दौं दागिदि दागिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥  
॥ निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर  
खवे. जिणे ॥ निजणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ १ ॥ कटरेगिदि  
पुहर पचस्काण ॥ एतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेगिदि  
दिस्साजं ? उह ॥ एगिगुदां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगू,  
गुणने थंमिजा नंद ॥ गुणगुणगण, गौरवं ॥ ऊजि ऊंकि ऊंऊं, ऊणण  
॥ निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कं करो  
॥ महेजिनाः ॥ २ ॥ ठकि ठैकि ठैठै, ठं  
विदणविधिः ॥

ह्रिक, ठह्रिपट्टा, ताज्यते ॥ तललोक लोलों, त्रैषि त्रैषिनि, मैषिमैषि  
नि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, भुंगि भुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल  
रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्चवे ॥ ३॥  
धुंदांकि धुंदां, पुषुद्दि धुंदां पुषुद्दि दोंदों, अंधरे ॥ चाचपट चचपट,  
रणकि ऐंऐं रुणण मँमँ, मँवरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस,  
सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु  
शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी  
जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ्र समता रस धामी जी ॥  
श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव  
श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज  
पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,  
नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनं ध्यान धरंतां लहिषें, अविचल  
पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति  
प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम बलि, चैत्रक माग  
जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिव  
जी ॥ तेर सहस बलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो स जी ॥  
गण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख न पावे पन्धिकमैल  
विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्रसरि देखें, जो पदवे गुण  
क्षक जविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी ज, जेव जाई पदवे गुण  
हुक सदगुरु, श्रीजिनजक्ति मुनिंदा जी ॥ इति पन्धिकेही  
जीनणे, श्रीजिनलाज सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति विधि करी दोय

दीपें ॥ अथ पजूसणकी स्तुति ॥ जूदो पन्धिक-  
॥ २ ॥ ॥ बलि बलि हुं ध्यावुं गाऊं जिनवर जायेक सर्व विधि  
मलेही वै वांछणां



सण, दारुग्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूँती दिन पंचास,  
 षष्ठिकमण संवहरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर  
 पूजा सत्तर प्रकार, करिये जलें जावें जरिये पुण्य जंमार ॥ वलि  
 चैत्य प्रवामें फिरतां लाज अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि  
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प  
 सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अगर  
 उस्केव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा  
 हम्मीवञ्चल करिये वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी-  
 लभार ॥ अरुदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध  
 कहे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोजितं, घन  
 सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंठन शोजितं ॥ शिवादेवि नंदन  
 त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर  
 वंदूं नेमिनाथ जिने ॥ सुहम १ ॥ अष्टापदै श्रीआदिजिनवर  
 वीर जिन पावापुरि, निरिंदसमुज्ज्वल ॥ पुरिय सीधा नेम रेवय  
 गिरिवरे ॥ समेत शिखरें वंस्पणया ॥ सुगति पहुता मुनिवरू,  
 ॥ ४ ॥ जावर तेह वंदूं सधरतिपद सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार  
 दश पयन्ना जाणिये, ठ छेद ग्रंथ प्रसन्न अन्ना  
 लवे, जिणे ॥ जाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन  
 पुहर पञ्चस्काण्ड ॥ एह वृत्ति चूर्णी जाण्य पैतालीश आगम ध्याइये  
 दिस्तानं ? उद्दी ॥ से बालक दोय जेहने सदा जवियण सुखकरू,  
 अने थंमिला जेह ॥ सुंदर डुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंरुण  
 हण करसेमे दिजे ॥ रणपंकज सेविये, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो  
 ॥ इति गिरनारमंरुण श्रीनेमि० ॥  
 अदणविधिः ॥



## ॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पाषायां पुरि चारुपष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, द्दमापालप्र  
 जुहस्तपालविपुलश्रीगुह्यशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनामकरणे  
 तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र  
 जुम् ॥ १ ॥ यज्ञर्त्तागमनोन्नव व्रतवरज्ञानाकरासिद्धिणे, संज्यूयाशु  
 सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् कणात् ॥ श्रीमन्नाजिज्जवादिवीरच  
 रमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांत्यने  
 नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाजिब,  
 हतत्पश्चाज्जणनायका विरचसांचक्रुस्तरां सृजतः ॥ श्रीमन्तीर्थसमर्थनै  
 कसमये सम्यग्दृशां जूरष्टशां, ज्यूयाज्जावुककारकप्रवचनं चेतश्चम  
 त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्ञावनपरा सिद्धायिका देव  
 ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन  
 चण्डीस्सुमतिनो ज्ञव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने  
 शार्दूलविक्रीरितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

## ॥ अथ शुद्धमनोहर जिनर्त्ता ॥

## ॥ अथ वीसतिमयी कशिं स्तुतिः ॥

पंचविदेहविषे विहरंतां गुणसं जिनसर जगज्जय स जी ॥  
 कमल तसु नामूं सीस । अहनि स समरूं ते जगदी ॥  
 च मेरुयाते ऊलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥  
 जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ १ ॥  
 बुवालस अंग । ध्यानक वीस ज्ञया तिहां चंग ॥  
 शरणे रंग । ते नर पामे सुख अन्नंग ॥ २ ॥  
 नदीस । पूरे मुज मनतणी जगीस ॥ संघतणा ॥  
 ॥ अथ ॥ जिन नंनिय मारे ॥ ५ ॥

## ॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ न  
 गरजेसलमेरविभूषणं । नजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरे  
 श्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहजंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुख  
 कारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयतिथः सुकृती जि  
 नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका ।  
 फलति तस्य मनोरघमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।  
 जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु  
 सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकय  
 ठप्पयदेवगणं । सिरिअवुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसि  
 यपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया ।  
 मम हुंति जिनागमसुक्कसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । क  
 ज्जाणपयोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जि  
 नागममन्धिकरं ॥ ३ ॥ सिरिंदसमुज्जलगायलया । सुहजाणविणम्मि  
 यएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम जाणि सुहाणि कुणेसुस  
 णा ॥ ४ ॥ ॥ ति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

## प्रथम आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रथम पुरुषपरमेश्वर, परमात्मपद धारीजी । प्रथम  
 जिनेसर प्रथमेश्वर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन  
 राज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिने  
 सर, आत्मसंपद भूषोजी ॥ १ ॥ पांच जगत वलि पांचे एरवत,  
 मंच विदेह भूषारोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव  
 गद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, आस्थे इणही प्रका

रौजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ ५ ॥  
 अरथे श्रीजिनराज वखाएया, गूण्यां श्रोगणधारोजी । अंग डुवालस  
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय जंग  
 प्रमाणे, जिहां षट्पद्य विचारोजी । ते आगम मन श्रुद्ध आराध्यां  
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरि  
 वीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वंढित नित सेवीज  
 ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजि  
 नचंद मुणेंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र  
 णमे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद ।  
 श्रीमूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति  
 शय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतोस ॥ अगणि  
 त रुद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंडु जिन चोवी  
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन ज्ञापित सिद्धांत । स्वाद्वादम  
 यादिक हेतुयुक्ति नवि अंत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह  
 नाणी । सुणिअे, नित, त्रविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी  
 साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥  
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पयंपे होज्यो  
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञारी ॥

॥ यदंहिनमतादेव । देहिनःसंति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु  
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविधातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नान्ने  
 यजिनादिजिनपति ॥ नैमिषद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखे  
 ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुणायतो जिनाः । सदर्थं । यच्चयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥  
३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता  
भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञय्यान् जनान्नयस्तु नित्य  
ममङ्गलेज्यः ॥ ४ ॥ इति महावीरस्तुति अणोजारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे । जैनाः पादा युष्मान् पांतु १ जैनं  
वाक्यं नूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी  
स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूर्ति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन  
त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंठन सात हाथ तनु मान, दि  
न १ सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं  
दित पद अरविंद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जवि  
यणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमं विसवा  
चीस ॥ २ ॥ अरण्ये करि आगम ज्ञाख्या श्रीजगवंत, गणधर ते  
गूण्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके  
एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायि  
का देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥  
अहनिस्सि कर जोम्नी सेवे सुरनर इंद, जंप्पे गुणगण इम श्रीजिन  
लाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नात्रेयं संज्ञवं तं, अजियसुविदयं, नंदणं सुवयवा ॥ सु  
प्पासं पञ्चमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं ध  
र्मशक्तिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंथुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,  
नमिं विनमिसौ, पंच कल्याण एसु ॥ १ ॥ गच्छेद्दुःखेषु जन्मे,

धय गहणखणे, केवले लोयकाले, पन्नाणिवाणठाणे, पगवण समए,  
 संशुआ जावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, जवणवणसए, वितरे किंन  
 रेहिं, । तं मझं दिंतु मोरुं, सयलजिनवरा, पंच कल्लाण एसु ॥२॥ हेजं  
 तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सवन्नूणं च पासा,  
 अहमविनियमा, जायए सवकालं ॥ अन्नपत्तिएहिं, नियगममहणं,  
 वीयअंकूरूवं । अद्यावाहं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कल्लाण एसु  
 ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहठा । सवढामाणमं  
 वा, वरकमलकरा, रोहिणीउत्तअंवा ॥ पन्नत्ती उत्तपन्नमा, धणइसर  
 णई, वित्तगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच क  
 ल्लाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकल्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंरुण आदिदेव । हूं अहनिस समरुं तास सेव  
 ॥ रायणतल पगलां प्रज्जूतणा । पूजि सफल फल सोहामणा ॥१॥  
 तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण जरया ॥ गिरि  
 कमणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेळो सुगतिसाथ ॥२॥ सोहम  
 सांमी उपदिश्या । जंबुगणधरने मन वरया ॥ पुंरुरगिरि महिमा  
 जे मांहा । ते आगम समरुं मनउच्चाह ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख क  
 वरुयह । मन वंठित पूरण कळपवृह ॥ सिद्धक्षेत्रसिहरे सहदेव  
 ता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीशत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा वर केवल  
 ज्ञान अने निरवाण ॥ जसु तीन कल्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु  
 जवियण प्रणामो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अद्यावय चंपा पावापुर  
 शुभ ठाण । आडन वारम जिण चळवीसम जिणजाण ॥ अजिता  
 दिग्वीप्ते प्रह्लाद, सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमं अधिक

उच्छ्वास ॥ १ ॥ जिणवर मुख हूँती सुणि त्रिपदी ततकाल । ग  
णधारक गूण्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयजंग पदारथ सत्त  
नव तत्त । जवियणने तारे सायर जिम बोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केस  
रि अंवा पनुमादेवि प्रत्यक् । श्रीसंघ मनोरथ पूरे बासुरवृक्ष ॥ ध्या  
वे सुख पावे श्रीजिनलान्न सूरिस । जिनवर सुप्रसादे आस फले  
सुजगीस ॥ ४ ॥ इतिनेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दृढरथ नृप रां  
णी नंदाकेरो नंद ॥ जद्विजपुर स्वामी फेरे जवना फंद । चित चो  
खे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अ  
नंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं जवणे ठवणा  
सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २  
॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयजंग निरक्षेपा स्या  
द्वाद मितसिद्ध ॥ जविजन उपगारी ज्ञारी जिन उपदेश । श्रुत  
अवणे सुणतां नासे कौमि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सा  
सन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥  
चिंता डुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन  
लान्नसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगुणो सार । अढी गात्र  
जुंचो पिहुलो जौयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पदमासन सुख  
कार । श्रीतीरथनायक बैसै चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन वत्र निहू  
वर चामर ठोले इंद । देवडुडुजि वाजे जांजे कुमति फंद गोयम  
मंरुल पूंठे ऊलेके जांण दिनंद । तिहुअण जन जवि मन् ॥ ज  
सयल जिनंद ॥ २ ॥ इत्य ज्ञाव सुठवणा नाम निक्षेप जिन

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मज्जार ॥ जिनवरनी पद्मिमा  
जिन सरखी सुखकार । शुभ ज्ञावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥  
उख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । जवछेद कृपाणी मीठी  
अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिवूजो ज्ञवि प्राणी । सुयं  
देवि पसाये पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजगिरि नमिये रूपदेव पुंमरीक । शुभ तपनी म  
द्दिमा सुण गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य  
वंदनीक । करिये जिन आगल टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र  
स्तवनादिक प्रथम तिलक दस बीस । अद्वैत गिणतीसे चढता तिम  
चालीस ॥ पंचासनी पूजा ज्ञापड इम जगदीस । तेहिज नित प्र  
णमूं स्वामी जिन चौबीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनी पूनम चेत्र मास  
शुभ वार । विधितेती लहिये आगम साख विचार ॥ इन सोखे  
वेरसखग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे जवनो पार  
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्षेसरीदेवी से  
विय नर सुरवंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंवे  
गणनायक श्रीजिनलाजसूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुय वीर जिनंद । जिण नवपद  
मद्दिमा ज्ञापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव  
दीन । नव आंखिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि  
ज्ञान बलि सिद्ध आचारज उवजाय । मुनि दरमण तिम बलि नाण  
तव आय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हज्जार । सहु  
गुणनो पूजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वारत अमवत्तीस पेण बी  
स बीस नवपद । समस्त उक्तावन सितर पञ्चास प्रकार ॥ इति

સંખ્યા કાન્તગ પરદક્ષા પરિણામ । આગમ પ્રાપ્તિ વિધિ હમ  
કીજે અગ્નિરામ ॥ ૩ ॥ ચક્રેસરિદેવી તિમ વિમલેસર જરુક । શ્રી  
પાલતણીપર પૂરે વંઠિત સુલક ॥ ૬ ॥ વિધિ આરાધો સિદ્ધચક્ર પ્રવિ  
પ્રાણી । જિનદર્પ વદે નિત શ્રીજિનચંદની વાણી ॥ ૪ ॥ ૬તિ ॥

॥ અથ વીસ સ્થાનક સ્તુતિઃ ॥

॥ શિવસુલ દાતા જગત વિલ્લ્યાતા પૂરણ અગ્નિનવ કામી  
જી । જ્ઞાનાદિક ગુણ ચેતનરૂપી ચિદાનંદધન ધામીજી ॥ ધ્યાનક  
વીસે આગમ પ્રાણિયા વીતરાગ ગુણ પ્રુક્તાજી । જે નર અંતર આ  
તમ ધ્યાવે સિવરમણી વર પ્રુક્તાજી ॥ ૧ ॥ અરિહંત સિદ્ધ પ્રવચન  
સૂરી પ્રિવર પાઠક મુનિ સારોજી । જ્ઞાની દરસન વિનય ચારિત્ર  
બ્રહ્મચારજ ક્રિયધારોજો ॥ તપસી ગણધર જિણ ચારિત્રી નાણ શ્રુત  
તિષ્ઠ પ્રૂપોજી । એ પદ નિજ પ્રવિ પ્રાવે સેવે તેહિજ બ્રહ્મ સરૂપો  
જી ॥ ૨ ॥ દોષ સહસ ગુણનો પ્રત્યેકે બ્યાર સયા નપવાસોજી  
। ઇચ્છાવસે વિધિ પરકાસે તોર્થકર પદ સ્વાસોજી ॥ તીજે પ્રવ  
વર વીસ આનકની સેવ કરે પ્રવ્ય પ્રાણીજી । સમકિત વીજે જે  
નિજ આતમ આરોપે ચિત્ત પ્રાણીજી ॥ ૩ ॥ સુરતરુસમ તપ ફલ  
દે મોટો શ્રીસુરદેવિ સદાઈજી । સ્વરતર ગઢ જિન આજ્ઞાધારી પા  
ટોધર વરદાઈજી ॥ જિન સૌજ્ઞાગ્યસૂરિંદ પસાથે હંસ સૂરિંદ ગુણ  
ગાવેજી । સંઘ સકલકું સાનિધકારી મન વંઠિત ફલ પાવેજી ॥  
૪ ॥ ૬તિશ્રીવીસસ્થાનક સ્તુતિ ॥

॥ અથ વીસ સ્થાનક સ્તુતિ ॥

॥ અરિહંત સિદ્ધ પ્રવચણ આચારજ પ્રિવરાણ । નવજાય સાહુ  
દંસણ વિનય પદાણ ॥ ચારિત્ર બ્રહ્મ કિરિયા તપિ ગોયમ  
નનજાણ । સંયમ નાણી શ્રુત સંઘ સેવો વીસે ઘાણ ॥ ૧ ॥ ન  
ત્કષ્ટે જિનવર એકસો સિત્તર ધીર । બલિ કાલ જઘન્યે વિન



वीम मंजीर ॥ जिन आय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे  
थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक वे वेला जिनवंदन  
त्रिण काल । थानकप्रद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ कानसग  
गुण स्तवना पूजा प्रज्ञावना सार । इम शासन वञ्चल करतां ज  
वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जस्क  
जस्कणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे  
मन रंग । देवचंड आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥  
नवपदमांहे सुख्य वखाण्या रुपजादिक जिनचंदाजी ॥ ज्ञाव धरी  
ने जे जवि वंदे ठेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो  
पावो सुख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवद्याया सकल  
मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं  
भारीजी ॥ नवमें जव जवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी ।  
वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे जाखीजी ॥ २ ॥ द्वादस आठ ठत्तीसे  
गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । सप्तसठ इक्कावन वलि जैती  
सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम  
थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंवल नव  
विहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयहा चक्रेसरीदेवी रिथ सिध वंढित दाता  
जी । जुली नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर  
गठ जिन आज्ञाकारी पाटोथरपद जुक्ताजी । जिन सौजाग्यमूरिंद  
पसाये दंसमूरिंद गुण उक्ताजी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंमन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही  
दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रंजय

रिसिखरे समवसरथा सुखकंद ॥ १ ॥ इण चव्वीसीमां ऋषज्ञादिक  
 जिनराय । वलि काल अतांते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण  
 गिरवर आवी फरसी जाय । इम ज्ञावी काले आवस्ये सवि मुनि-  
 राय ॥ २ ॥ श्रीऋषज्ञना गणधर पूंरुरीक गुणवंत । द्वादसं अंग  
 रचना कीथी जेण महंत ॥ सब आगममाहे सेत्रुंज महिम महंत  
 । ज्ञाखी जिन गणधर सेवो करि धिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुह  
 कवरु पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण आपे इंड नदार ॥ देवचंड-  
 गणि ज्ञाखे जविजनने आधार । सब तीरथमाहे सिद्धाचल सिरदार  
 ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

... एक

॥ शांति जितेश्वर जगन्महेश्वर आचरा नदर अवतार दुगुणा  
 । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हज्जेलापुर सुख करियाजी जाय ॥  
 उपडव मारि विकारी शांते करी संचरियाजी । जे ज्ञाणी गुणिये  
 कारण ध्यावे ते दुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्तमान ज्ञिधान ।  
 सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । वारे चक्री नव नारायण वण  
 प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सलाका वंदत पाप निकं-  
 दोजी । इव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे जवजय वंदोजी ॥ २  
 ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी ज्ञाखीजी । इव्य  
 ज्ञाव विहुं जेदे पूजा महानिसीधे साखीजी ॥ विषय निवृत्ती सत्  
 आरंजे विनय तपी ते जाणोजी । शुभयोगे नहि आरंजकारी जग  
 वइ अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ आपना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने  
 सुखकारीजी । कारणथी सब कारज सीजे जिनवर आज्ञा धारीजी  
 ॥ श्रीजिनकीर्ति सूरेश्वर गह्वरपति पाठक श्रीऋक्षसारीजी । सम-  
 कितधारी देव सहार्इ सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांति-  
 नाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमं धरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुख वंदो जावे जवियण श्रीसीमं धर रायाजी । पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति संत्यकि नंदन वृषजलंबन सुखदायाजी । विजय जखी पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरण्ये श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिश्र्यात नवपद्मजर नासन अजिनव सूर समाणीजी ॥ जवोदधि तरणी ने जे जसराणी नय निक्षेप पहाणीजी । नय नय जिनवाणी अमिय पावो सुखदायाजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवी मुनि सुपुत्री माईजी । विघन विचारण संपत्तिकारण सेवकजन भारीजईजी ॥ त्रिजुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति सवीईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनदर्ष सहाईजी ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमं धरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक जाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांठन लांठित वंठित दान सुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो जविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक जव्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दम सिव पंडुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर जवियण उपर नुग्रि करी सुप्रसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित जाजत मद पंच वाण ॥

॥ पंचम काल तिमरन्नरमांहे दीपकसम सोजंत । पांचम तपफल  
मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-  
वाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह, ज्ञानी  
सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री  
जिनलान्न सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-  
पंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमद्वि जनम  
व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार ।  
ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक  
अधिक गुण धार । इग्यारे बारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डुगुणा  
दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥  
२ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । बलि गुणनो गुणिये  
विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान ।  
इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर नृवण  
वण सम्यग् दरसणवंत । जिनचंद सुसेवक बेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ  
सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कल्याण  
॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादशीस्तुति ॥

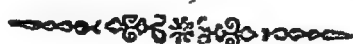
॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल  
आख्यो श्रीजगवंत ॥ नरनारी जादे आराधो तप एह । सुख संपत् ली-  
ला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ रुषजादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार ।  
जिनमुख परकासे बेठी परखदा वार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो  
उपवास । मन वंछित लीला सुंदर जोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो  
बोळ्यो लान्न अनंत । विधसुं परमारअ साथे सुधो संत । इत्ये

इग तेहनो नासि जाय सब दूर । बलि दिन१ अंगे बाधे अधिको  
नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौजाग्य  
सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर२ महोन्नव नित नवला  
सिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ परखी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गह  
चोरासी जेहने आप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस,  
कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम२ संशय  
जाय ॥ १ ॥ चउबीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, क  
टपसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर ठाम३  
तुम देखो चउदस परकी होय, नूला कांड जमो तुम प्राणी ताचो  
जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख,  
नविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी जाख ॥ आवश्यक  
सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर  
बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो  
मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन ह  
रेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूयो समकित पाय, खरतरगह  
मंमण कुमति विहंमण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति परकी  
चोदस युद्ध संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवन्नयं, संतिं च पसंतसवगयपावं ॥ जय  
गुरु संति गुणकरे, दोळि जिणवरे पणिवयासि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल ज्ञावे, तेहं विजलतवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम मंहप्पं  
 ज्ञावे, ओसामि सुदिठ सप्पावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सब डुक्कप्पसंतीणं,  
 सब पावप्पसंतीणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतीणं ॥ ३ ॥  
 सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं  
 ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥  
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अ  
 जिअं निचिअं च गुणेहिं महासुणि सिद्धियं ॥ अजिअस्स य संति  
 महा सुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निवुइ कारणयं च नमं  
 सणयं ॥ ५ ॥ आलिंणयं ॥ पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विम  
 ग्गह सुक्ककारणं ॥ अजिअं संतिं च ज्ञावत्तं, अजयकरे सरणं पव  
 ज्ञहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय ज  
 रमरणं, सुर असुर गरुल जुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिअ म  
 ह्मविअ, सुनय नय निज्जणमजयकरं, सरणमुवसरिअ जुवि दिवि  
 ज, महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम  
 नित्तम सत्तधरं, अज्जाव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संति  
 अरं पणमामि दमुत्तम तिज्जयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं  
 हिसत्त ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्तिपुव्वपत्तिवं च वरहत्ति मज्जय प  
 सत्त विज्जिन्न संचिअं अर सरिह वत्तं मयगल लीलायमाण वर गंध  
 हत्ति पत्ताण पत्तियं संयंहरिहं हत्तिहत्तं बाहुं धंतकणग रुअग नि  
 रुवहय पिंजरं पवर लक्खणो वचिअ सोम्म चारु रुवं सुइ सुहम  
 णाजिराम परम रमणिज्जा वरदेव उंउहि निनाय महुरयर सुहगिरं  
 ॥ ९ ॥ वेहत्तं ॥ अजिअं जिआरिणं, जिअ सब्बजयं जवो हरिजं ॥  
 पणमामि अहं पयत्तं, पावं पसमेव मे ज्ञायवं ॥ १० ॥ रासालुद्ध  
 त्तं ॥ कुरु जणवय हत्तिणानर नरी रो पढमंतत्तं महाचक्कव  
 ट्ठिज्जोए महप्पज्ञावो जो बाहत्तरि पुरवरं सहस्सवर नगर णिगम

जणवय वई बत्तीसारायवर सहस्साणु आयमगो चनदस वररयण  
 नव महानिहि चनसठि सहस्त पवर जुवईण सुंदर वइ  
 चुलसी हय गय रह सय सहस्त सामी ठणवइगाम कोमि  
 सामी आसिज्जो जारहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेढ्ढन ॥ तं  
 संतिं संतियरं, संतिन्नं सब जया ॥ संतिं शुणामि जिणं, संतिं वि  
 हेन मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्कागु विदेह नरीसर, नरव  
 सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु  
 अग्या ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविज्जल  
 कुला ॥ पणमामि ते जवजय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥  
 १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम,  
 लठ रूव धंत रुप पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति स  
 ति किति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सबलोअ जावि  
 अ प्पजावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमल स  
 सिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणा  
 इरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते  
 अ सया अजिअं, सारीरे अंबले अजिअं ॥ तव संजेमअ अजिअं,  
 एस अइं शुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ जूअंगपरिरिंणिअं  
 ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ  
 न तं नवसरय रवी ॥ रुद्धगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणव  
 इ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥  
 तिठवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणशुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं  
 ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयण, संतिमहं महा मुणिं सरण मु  
 वणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणनणय सिरिरइ अंजलि, रिसि  
 गण संशुअं शिमिअं ॥ १९ ॥ न्हाहि वधणवइ नरवइ, शुअ महिअच्चिअं  
 बहुसो ॥ अइ रुग्गय सारय दिवायर, समहिअ सप्पजं तवसा ॥

गयणंगण वियरण समुद्रं, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलय  
 माळा ॥ असुर गरुड परिवंदिअं, किन्नरोरग एमंसिअं ॥ देव कोम्नि  
 सयसंधुयं, समणसंध परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं  
 अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयउ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥ आग  
 यावर विमाण, दिवकणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ स  
 संजमो अरण सुज्जिअ लुलिअ चल कुंमलंगय तिरीम सोहंत मऊ  
 लिमाळा ॥ २२ ॥ वेढउ ॥ जं सुरसंधा सासुर संधा, वेर विज्जता  
 नत्ति सुज्जता, आयर नूसिअ संजमपिंमिअ, सुहु सुविज्जिअ सबब  
 लोधा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ न्नासुर नूसण न्नासुरिअंगा,  
 गाय समोणय नत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥  
 रयणमाळा ॥ वंदिऊण ओऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया  
 हिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुद्रा सज्जवणाइतो गया  
 ॥ २४ ॥ स्वित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजलि, राग दोस जय  
 मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महात्तवं नमे  
 ॥ २५ ॥ स्वित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस बहुगामि  
 णिआहिं ॥ पीण सोणिअण साळणिआहिं, सकल कमल दललो  
 अणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर अणन्नरविणमिय गायल  
 याहिं, मणिकंचण पसिढिलमेहल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिं  
 खिणि नेजर सतिलय वलय विज्जूसणियाहिं, रइकर चजर मणो  
 हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तकरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय  
 वंदिआहिं वंदिआय जस्त ते सुविक्रमाकमा अप्पणो निमाळएहिं  
 मंण्योमुग्गप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं  
 चिद्धएहिं संगयं गयाहिं नत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि  
 आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायण ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं  
 जिअमोहं ॥ धुअसवकिलेस् पयउ पणमामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥



धुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणोहिं, तो देव वहुहिं पयल पणमिअ  
 स्ता ॥ जस्स जगुत्तमसासणयस्ता, जत्तिवसागयपिंमिअआहिं ॥  
 देव वरहरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पंमिअआहिं ॥ ३० ॥  
 ज्ञासुरयं ॥ वंस सह तंति ताल मेलिए तिउरकराजिराम सह मी  
 सएकए अ, सुइसमाणणोअ सुइ सज्ज गीअ पाय जालघंठिआहिं ॥  
 वलय मेहला कलावनेउराजिराम सह मीसएकए अ देवनट्ठिआहिं  
 ॥ हाव ज्ञाव विअमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय  
 जस्सते सुविक्कमाकमा ॥ तयं तिलोअ सब सत्त संतिकारयं पसंत  
 सब पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायण ॥  
 वच्च चामर पणागजूअ जव मंमिआ, ऊववर मगर तुरय सिरिवच्च  
 सुलंठणा ॥ दीव समुइ मंदरदिसागयसोहिआ, सच्चिअ वसह सी  
 हसिरिवच्चसुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा,  
 अदोस-डुवागुणोहिं जिठा ॥ पसायसिठा तवेण पुठा, सिरीहीं इठा  
 रितीहीं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,  
 सबलोअहिअ मूल पावया ॥ संघुआ अजिअ संति पायया, हुंतु  
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि  
 जलं, धुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,  
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, सु  
 रक्क सुइएण परमेण अविसायं ॥ नासेलं मे विसायं, कुणअ परि  
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनंदिं, पावेउअ नं  
 विसेशमज्जनंदिं ॥ परिताइवि सुहनंदिं, मम य-दिसज संजमे  
 नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चान्ममासिय, संवच्चरिए अवस्स  
 जणिअवो ॥ सोअवो सबोहिं, उवसग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥  
 जो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जल कालंपि अजिअ संतिअयं ॥ न हु  
 हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इवह परम

पयं, अहवा कितिं सुविन्नमां नुवणे ॥ ता तेलुकुद्धरणे, जिणव  
यणे आधरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्त  
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक मनस्क निगयपहा दंमवलेणंगिणं, वंदारूण  
दिसंत इव पयं निवाणमग्गावल्लिं ॥ कुंदिंडुज्जल दंतकंति मिसन्न  
नीदंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इज्ज सोलस जिणे ओसामि खेमंकरे  
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो  
जणिज्जा गर्हए ॥ सहल नहय लंवा लंघए जो पएहिं, अजिअ म  
हव संतिं सो समवो वणेनं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु ल्लासज्जत्ति  
अरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता  
एंतसामवन्नसिं, फलहइ लहु सवं वंठिअं णि च्छिअं मे ॥ ३ ॥ सय  
यजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरइ लहु डुवा निवदोघट्ठणं  
॥ नमिरसुर किरीडू गिठ पायारविंदे, समय मज्जिअ संती ते जि  
णिंदे ज्जिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्ठए देहदित्ती, विलसइ  
नुविं मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमतित्ती होइ संसारवित्ती,  
जिणजुअ पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं नू  
रिदिवंगहारं, फुरुगणरसज्जावो दारसिंगारसारं ॥ अणमिसरमणीज  
दंसणवे अज्जीया, इव पुणमणि वंधा कास नट्टोवचारं ॥ ६ ॥  
थुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा ठज्जए जा  
णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिरंज्जं रंज्जनिवाणलब्धी, घणअणधुसि णिकु  
प्पंकपिंणीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयज्जंगं वट्ठणिच्चं अणिच्चं, संसद  
एज्जिलप्पा लप्पमेगं अणेणं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं,  
वयण मवय णिज्जं ते जिणे संज्जरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए  
ताव मोहंधयारं, जमइज्जय मससं तावमिच्छत्तवणं ॥ फुरइ फुरुप

लंता एतणाणं सुपूरो, पयस मज्झिमसंती जाण सूरौ न जाव ॥ ए ॥  
 अरि करि हरि तिण्हु एहंनु चोरा द्विवाही, समर रुमर मारी रुद्ध  
 खुद्धो वसग्गा ॥ पलय मज्झिमसंती कित्तेणे ऊत्तिजंती, निविमतरत  
 मोद्धा न्नुत्तरालुंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरेअदारु दित्तजाणग्गि  
 जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं जाण रूवं ॥ कणय निहसरेद्धा  
 कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लब्धिं गाढसंयंनिअव ॥ ११ ॥  
 अरुविनिवमिअणं पठ्ठिवुत्तासिअणं, जलहि लहरि हीरं ताण  
 गुत्ति धियाणं ॥ जलिय जलय जाला लिंगिअणं च जाणं, जणयइ  
 लहु संतिं संतिनाहा जिअणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिस्सं पक्क  
 पाडक्कपुस्सं, सयलपुहवि रज्जं ठक्किअं आण सज्जं ॥ तण मिव पन्नि  
 लग्गं जेज्जिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवस्सा हुंतु ते मे पसस्सा ॥ १३ ॥  
 वणससिबयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, अणन्नरनमिरीहिं मुठ्ठिगिज्जोद  
 रीहिं ॥ ललिय न्नुअलयाहिं पीण सोणिठ्ठणीहिं, सयसुर रमणीहिं  
 वंदिअ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस्स किम्भि न्नुकुठ गंठि कासाइसार,  
 खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसणव्ही कुञ्चिक  
 साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु  
 उहतासे परिके चाउमासे, जिणवर दुग्गुत्तं वठ्ठरे वा पवित्तं ॥  
 पढड सुणइ सिअ एह जाएड चित्ते, कुणह मुणह विग्गं जेण धा  
 एह सिग्गं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे  
 सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कोसर ॥ तिठंकर सोल  
 सम संति जिणवत्तइ संथुअ, कुरु मंगअ मम हर सुडुरिअमखिलं  
 पि थुणंतइ ॥ १७ ॥ इति श्रीलवुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं ॥

॥ अय नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूमामणि किरणरंजिअं मुणि  
 णो ॥ अयणजुअलं महान्नय, पणासणं नयवं बुद्धं ॥ १ ॥ समिय

कर चरण नह मुह, निबुद्ध नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुह महारो  
 गानल, फुलिंग निदृष्ट सवंगा ॥ १ ॥ ते तुह चलणा राहण, स  
 लिलंजलिसेय बुद्धिय छाया ॥ वण दवदह्या गिरिपा यव व पत्ता  
 पुणो लब्धिं ॥ ३ ॥ उवाय खुप्रिय जलनिहि, उप्पन्न कल्लोल ज्ञी  
 सणारावे ॥ संजंत जय विसंवुल, निव्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥  
 अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण  
 चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुअ  
 वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ मज्झंत मुद्धमिय  
 बहु, ज्ञीसरणरव ज्ञीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,  
 निव्वाविअ सयल तिहुअणान्जोअं ॥ जे संजंरंति मणुआ, न कुणइ  
 जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत जोग ज्ञीसण, फुरिआरुण न  
 यण तरल जीहालं ॥ जगजुअं नवजल य, सज्जहं ज्ञीसणाचारं  
 ॥ ८ ॥ मज्झंत कीरु सरिसं, दूर परिबुद्ध विसम विस वेगा ॥ तुह  
 नामस्कर फुमसि ह, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु जि  
 ह्व तक्कर, पुलिंद सदल सदज्ञीमासु ॥ जयविहुर बुन्नकायर, उल्लु  
 रिअ पहिअ सत्तासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह वसारा, तुह नाह प  
 णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं छाणं  
 ॥ ११ ॥ पल्ललिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह  
 कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंजजलान्जोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंज  
 म पडिव, नहमणिमाणिक्क पमिअ पमिमस्स ॥ तुह वयण पहरणं  
 धरा, सीहं कुंइपि नहाणंति ॥ १३ ॥ लसिधवल दंतमुसलं, दीह  
 करुल्लाल वट्ठि उन्नतं, महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलं  
 हरारावं ॥ १४ ॥ महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति  
 ॥ जे तुम्ह तासणं ज्ञो, मुणिवइ तुंगं समल्लोणा ॥ १५ ॥ स  
 मरम्मितिक्कहणं ॥ य पविद्ध उरुय कबंधे ॥ १६ ॥ अविणिज्जि

न करि कल, ह मुक्क सिक्कार पञ्जरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर  
 रिज, नरिंद निवहा ज्ञा जसं थवलं ॥ पावंति पाव पसमिण,  
 पासजिण तुह प्पञ्जावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,  
 चोरारि मइंद गय रण ज्ञयाइं ॥ पास जिणनाम संकिं, त्तोण  
 पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा ज्ञयहरं, पास जिणिंदस्स संथ  
 वमुत्थारं ॥ ज्ञविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥  
 राय ज्ञय जस्क रक्कस, कुसुमिण डुस्सज्जण रिक्क पीमासु ॥ सं  
 जासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो  
 अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणातुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिज,  
 सयल जुवणच्चिय चलो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृ  
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयज्ज जय तिष्ठं, जमिष्ठ तिष्ठाहि वेण वीरेण ॥  
 सम्मं पवत्तिअंज, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय  
 लकिलेसा, निहय कुलेसा पसच्च सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिष्ठ,  
 स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निदद्धकम्म वीआ, वीआपरिमि  
 षिणो गुणलमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुवाणि तिष्ठ  
 स्स ॥ ३ ॥ आचार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय  
 रिया तह तिष्ठं, निहय कुतिष्ठं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय  
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पणिणीय कए,  
 वणित्तु लवस्स संयस्स ॥ ५ ॥ निवाणसाहुणिमज्ज, साहुणं जणिअ  
 सव साहज्जा ॥ तिष्ठप्पञ्जायगाते, हवंतु पयातिस्तो जइणो ॥ ६ ॥  
 जेणाणुगयं नाणं, निवाणकलं च चरणम् ॥ स्मरणम् तिष्ठस्स दंसणं  
 नं, मंगलमुपणोउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ तिष्ठमणि किरणरत्तो, सम्मग्ग  
 च्चरिअय नम्मो ॥ गुणसुद्धिय संयवं बुद्धं ॥ लं सम्ममि

इदिसु ॥ ८ ॥ रम्भो चरित धम्भो, संयावित्र जवसत्त सिवसु  
 म्भो ॥ नीलेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥  
 गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिठस्स ॥  
 सिरिवद्धमाण पडुपय, मित्रस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥  
 जियपनिवस्काजस्का, गोमुह मायंग गयसुह षमुस्का ॥ सिरि  
 वंन संति सहिआ, कय सपरस्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा  
 प रुहयमिंवा, सिद्धा सिद्धाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुद्धा,  
 संति सुरा दिसु सुखाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदितु  
 संघस्स मंगलं विडलं ॥ अत्तुत्ता सहिआल, विस्सुअ सुयदेवयाउ  
 समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रस्का, जस्का चउवीस सासण  
 सुरावि ॥ सुहजावा संतावं, तिठस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि  
 णपवयणंभि निरया, विरहा कुपहाउ सब हासवे ॥ वेयावच्च गरा  
 विअ, तिठस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसत्तय सुत्तसमग्ग,  
 जिणि जवण जणिअ साहज्जो ॥ गीधरई गीयजत्तो, सपरिवारो  
 उ ॥ १६ ॥ निहयुत्त ॥ जलथल, वण पवय वासि  
 ॥ १७ ॥ जिण सासण तत्पूत, उहाणि सवणि निहणंतु  
 ॥ १८ ॥ दसदिसिवालास मदेन सायानवगगहा सनस्कता ॥  
 ॥ १९ ॥ राहुं पस्का, लपर्वजा गं ॥ सवे सवण सुहं, दिगंतु  
 ॥ २० ॥ एहिं, सविठिव ॥ २१ ॥ जिणो जे देवा ॥ धरणिंद श्रीधर ७, दत्त ८, द  
 ॥ २२ ॥ सुमति ॥ २३ ॥ पि विलो ॥ वीरो,  
 ॥ २४ ॥ नमो नमो वरुणनिव १७, यशोधर १८ ॥ नमो ॥ ह नासणं  
 ॥ २५ ॥ जविसासणं लो ॥ शिवकर २२, स्यन २३ ॥ ॥ २४ ॥ तिठस्स ॥ २०  
 ॥ २५ ॥ जविसासणं लो ॥ शिवकर २२, स्यन २३ ॥ ॥ २४ ॥ तिठस्स ॥ २०  
 ॥ २५ ॥ जविसासणं लो ॥ शिवकर २२, स्यन २३ ॥ ॥ २४ ॥ तिठस्स ॥ २०

बंहा दिसंतु तिष्ठस्स ॥ सब जिणाणं गणिहा, रिणो एहं वंठेअं  
 सबं ॥ १३ ॥ सिरि बद्धमाण तिष्ठा, हिवेण तिष्ठं समप्पिअं जस्स  
 ॥ सम्मं सुद्धम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ १४ ॥ पय  
 इएज्जदिआ जे, जहाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयरसुदु, जृकु म्मं,  
 जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥ १५ ॥ इय जो १२, विदिता  
 उस्सव्वं तस्स नत्ति किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएभिन्ना १३, धारि  
 मुही होई ॥ १६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिना ६, बला १७, धारि

॥ अथ गुरुपारतंव्यनामक पंचमं सधारी ११, अंजिका :

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सार्वर्तमानचतुर्विंशतिती  
 सुगुरुजण पारतंतं. उवहिब शुणामि तं चेव ॥ १ ॥ धृति, कीर्ति, कां  
 मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणधनेवेशनेषु, सुगृहीत  
 सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहसि २, वज्रशूल  
 तिष्ठ जणिय संखोहा ॥ पम्भिज्जग्ग मोह जोहा, दंस्स ३, मह  
 सजोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सज्जहा, हय उह दाहा सिबंभ तरु  
 साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, ख सुखिणुव अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु  
 गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो ॥ निहं गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुह  
 साहण सज्जा, जयगिरि गुरु चय पसिस्स ॥ अज्जसुद्धम्म पयसुत्त,  
 गुणगण निवहा सुरिंद विहिय पंचपयारं १२, तिसंजं नामं, नामं  
 न पशासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ तत्तं पयासंतु ३ देवो, देवायरिउ डुरंत  
 जवहारी ॥ सिरि नेम वायगा वाए ॥ पवरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥  
 सिरि बद्धमाण सूरिस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुणि ॥ पम्भिहय कसाय  
 पसरें, सज्जा मरुत्तं पपजायगाते, हवंतु प्राप्तिनील चोर चप्पर, ए  
 पच्चलो अं नाणं, निव्वाणफलं च चरणम्भ स्मनं, तज्जाणं पणय  
 सुगुणजणवेषेण सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निव्वमणि स्स अणहिद्ध वामए  
 ॥ १८ ॥ सुय सम्मो ॥ गुणसुद्धिअ संघवं गया ॥ १० ॥ ६

[illegible]



वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात-  
 असी निःसंक ॥ ७ ॥ बलि करण करावण अनुमति त्रिगुण कि० ॥  
 इकलकख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत  
 वर्तमान बलिकाल जे अइयविराधना तिणि त्रिगुण संजाल ॥ ८ ॥  
 तीन लाख सहस च्यार वेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख वह  
 लाखे उगुण जाय ॥ इम लाख अदारह बलि सहस चउवीस ॥  
 इकसो बीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपडनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिठामि डुक्कमंदेई जविक तरया जवजल नि  
 धिकेई ॥ तरे अठै बलि आगलि तरिती ॥ निरमल केवल लखमी  
 वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम  
 करि निरमल ॥ सें मुखजाषै वीर जिणोसर ॥ सूत्रकरि गूणै ते श्रु  
 तधर ॥ ११ ॥ इम पम्किमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केव  
 ल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणामी जै ॥ मानव जनम  
 सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुईकरो ॥  
 तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवजाय लखमी  
 किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लखिवल्लज तवन करि  
 इम संश्रुणयो आवै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिठामि डुक्कम  
 संख्या स्तवनं ॥

॥ अंथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपे तेरी राजा ॥ वस्तु-  
 सचि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ उहो स्यादां दर्शी  
 संपजे, विख्यात ॥ सत जंग रचन ॥

वेसे वात ॥ ७ ॥ वाद वदे नय जूजूआ, आप आपणे ठाम ॥  
 पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह  
 गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला  
 अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥  
 धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रूप रे ॥  
 नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥  
 ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥  
 कालै ऊपजै विणसे कालै, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री० ॥  
 कालै गर्ज भरे जग वनिता ॥ कालै जनमे पूत रे ॥ कालै बोलै  
 कालै चालै, कालै जालै घरसूत रे ॥ ८ ॥ कालै दूधयक्ती दही पायै,  
 कालै फल परपाक रे ॥ विविध पदार्थ काल उपावै, अंत करे बे  
 वाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिनचमवीसै बार चक्रवै, वासुदेव बलवंत  
 रे ॥ कालै कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥  
 ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पणी आरा, बै बै जूजूये जांते रे,  
 षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ जिनर दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री० ॥  
 कालै बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुद्धपणे दुय  
 बलि पू दुर्बल, सकल तही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ गिरवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तव ज्ञानावदादी वदै जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वप्नावे  
 नीपजे जी, करंतिमज निस्संक ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारो जुओ  
 वस्तु स्वप्नावले आंकणी ॥ ठते योग यौवनवतीजी, वांऊणि  
 जणै बाल ॥ पण ही महिला सुखे जी, करतल ऊगै न बाल  
 ॥ सु० ॥ गृह ज्ञान नवि संपजै जी, किमह पदार्थ कोय ॥

अंग न लागै नीबमै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपीठ  
 कुण चोतेरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी,  
 सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा बोर वंबूलना जी, कुणें अणि-  
 याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥  
 ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस  
 ततकाल, परवत धिर चल बायरो जी, ऊरध अगननी जाल ॥ १८ ॥  
 ॥ सु० ॥ मद्य तुंज जलमां तिरै जी, वूमै काग पाहाण ॥ पंख जाति  
 गयणे फिरै जी ॥ इण परै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय  
 सुंढयी उपशमै जी, हरमेकरै विरेच ॥ सीऊ नही कण कांगरो जी ॥  
 सकल स्वप्नाव अगेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी,  
 भुंयमां आयै पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वप्नाव  
 प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सशि सीयलो जी, जव्यादिक  
 बहु ज्ञाव ॥ ठए डव्य आपायणा जी, न तजै कोइ सुप्नाव ॥  
 ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ बाल ॥ ३ ॥ कपूर हुयै अति ऊजलो रे ॥ एदेसी ॥

काल किसुं करै वापरो रे, वस्तु स्वप्नाव अकज ॥ जो न  
 होय जवतव्यता जी, तो किम सीजै कज्जा रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म  
 करो मन जंजाल, ए तो ज्ञावी ज्ञाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए  
 आकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोहि यतन करै कोय ॥  
 अणज्जावी होवै नही जी, ज्ञावी होय ते होयरे ॥ प्र० ॥ प्रा० ॥  
 आवै मोर वसंतमां जी, मालै केइ लाख ॥ २४ ॥ केइ खांसटी  
 जी, केइ आंवा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ वंज जिम जव  
 तव्यता जी, जिण जिण दिसै उजाय ॥ परत एहि मानसतणो जी,  
 तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ हो वै पिण चितव्य  
 जी, आवै मिते नतकाल ॥ वरमां सोन ॥ २७ ॥ जी नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुन्नूमिते जी, समुद्र  
 पन्थो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरै गोवांल रे ॥  
 प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करै जी, किम राखीस रे प्राण ॥  
 आहेमी सर ताकियो जी, ऊपर जमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥  
 आहेमी नागे मस्यो जी, बाण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊमी  
 गयो जी, कोऊ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हणया  
 संग्राममां जी, रात पन्था जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जो,  
 राख्याही न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वप्नाव नियत मति रूमी, करम करे ते थाय ॥  
 करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव जवंतरै जाय ॥ ३२ ॥  
 चेतन चेतज्यो रे करम न ठूटै कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें  
 राम वस्या वनवासै, सीता पामी आल ॥ कर्म लंकापति रावणनुं,  
 राज्य अयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्म कीमी कर्म कुंजर ॥  
 कर्म नर गुणवंत ॥ कर्म रोग सोग डख पीमित, जनम जायै  
 विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्म वरस लगे रिसहेतर, उदक न पामे  
 अन्न ॥ कर्म जिननें जोऊ निमा रे, खीला रोण्या कन्न ॥ ३५ ॥  
 ॥ चे० ॥ कर्म एक सुखपाले बैसै, सेवक सैवै पाय ॥ एक दय  
 गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम  
 मांणी अंधतणी पर, जग हीमै हाहूतो ॥ कर्म वली ते लहै  
 सकल फल, सुखजर सेजै सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके  
 कीधो उद्यम ॥ करंमीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो नूखो,  
 नाग रह्यो रुमसोलै ॥ चे० ॥ ३८ ॥ द्विवर करी मूषक तसु  
 मुखमां, दीयै आपणूं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पथारधा,  
 कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजै ॥ ए देसी ॥

हिव उद्यमवादी जणो ए, ए च्यारै असमब्र तो ॥ सकल  
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरब्र तो ॥ ४० ॥ उद्यम  
करतां मानवी ए, स्युं नवि सीजै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी  
ए, लीधो लंकाराज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां  
सत्त्व न होय तो ॥ देवल बाधमुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय  
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥  
उद्यमथी जंची चढै ए, जोवो एकेंडिय बेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम  
करतां इक समें ए, जेह न सीजै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी  
हुवे ए, जो नवि आवे बाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि ऊरयां विना  
ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पमै कोलियो ए, मुखमां हेपे  
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म  
तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र  
हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंज तो ॥ उद्यमथी खट मासमां  
ए, आप अया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपैश् सरवर जरै ए, कां  
करे ३ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल  
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंडुन ए, करे पाहाणमां गम तो ॥  
उद्यमथी विद्या जणै ए, उद्यम जोमै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय  
रसै जिन वयण सुणीनै, आणंद अंग न मावै रे ॥ ५० ॥ प्राणी  
समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥  
॥ प्रा० ॥ ते मिछ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए  
पाचे समवाय मिछ्यां विन, कोइ काज न सीदै ॥ अंगुल जोगै

कवल तणी पर, जे बूजै ते रंजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी  
 कोइ एकनें, एहमां दिवै वमाई ॥ पिण सेना मिल सकल रंगंगण,  
 जीते सुजट लमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै,  
 काल क्रमें वणाई ॥ जवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विधन  
 घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय नद्यम जेतादिक, जाग्य सबले  
 सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उत्तपत जोवो विचारो  
 रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म अर्हनें, निगोदथकी नीक-  
 लियो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे  
 प्रा० ॥ ५५ ॥ जवधितनो परपांक अयो तब, पंक्ति वीर्य नल्ल-  
 सिक्क ॥ जव्य स्वजावै शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे  
 प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गा  
 वोर ॥ मधवा सनतकुमार, पोहता सरग ॥ धरी घणो ॥ श्रीविजय  
 ॥ ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह ॥ क, वीर जिनवर संशुण्यो  
 ॥ ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आव थय, कीर्तिविजय वाचक  
 ॥ बाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥ इति श्री पञ्च स  
 पहिलो त्रिपृष्टि जाण, द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रभु जा-  
 पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमाणिये वारंवार,  
 ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए मति दाता ॥ दमण नारे कहिस्थुं सूत्र  
 ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव गुण ॥ अति ॥ उगो ॥ म मिथ्यात कह्यो  
 ॥ ११ ॥ सातमो पंचमी नैजम जव ॥ अति ॥ उगो ॥ म मिश्र वखाणूं ॥ चो  
 ॥ मती ॥ ॥ रा ॥ कदाणो, के ॥ पंचम परमाणो, उगो प्रमत्त  
 ॥ मिव गती ॥

पिठाणू ॥ १ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अधम अपुरव करण  
कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम् ॥ सुखम लोभ दसम सुविचार,  
उपज्ञांत मोह नांम इग्यार, स्त्रीणमोह बारम् ॥ ३ ॥ तेरम  
सयोगी गुणधाम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणू प्रथम  
विचार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म बखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणवाणै,  
तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पढ़ थापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती  
ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय  
मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प धणै, संस  
यी नाम मिथ्यात चोशो जणै ॥ ६ ॥ समझ नही काय निज  
धंद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादि अ  
नंत अज्ञव्यनै, करिय अनादि थिति अंतसुज्ञव्यनै ॥ ७ ॥ जेम  
नर खीर घृत खंर जिमनै वमै, सरस रस पाय बलि स्वाद केहवो  
गमै ॥ चौथ पंचम, बढै ठाण चढने पमै, किणहि कषाय बस आग्र  
पहलै अमै ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि षठ आवली, सहोय  
सासादनै थित इसी सांजली ॥ दिव इहां मिश्र गुणवाण तीजो  
कहै, जेह उत्कृष्ट अंतरमदुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वे कर जोडी तांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला ज्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि  
मिथ्यामती ए ॥ ए बेहिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर  
दहणा बेजं बती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणाखय मांहि, मरण लहै  
नही, आन बंधनपमै नवो ए ॥ कैतो लहै मिथ्यातकै समकि-  
त लहै, मति सरखी गति प्ररजवै ॥ ११ ॥ ज्यार ॥ ॥ शुरुआन,  
उदय करी लहै, मति विन किहां, समकितपणो ॥ च अविज्ञ

गुणगण, तेत्रीस सागर, साधिक धिति एहनी जणी ए ॥ १२ ॥  
 दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥  
 सहु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी, अधिक १ उन्नत करै  
 ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगल अरधतां, उत्कृष्टा जव  
 में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद  
 लहै ए ॥ १४ ॥ ज्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या  
 मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप  
 शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते कय कीध, ते नर  
 क्हायकी, तिणहिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ,  
 तातें तिहां थकी, तीजै चोषे जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचमदेसविरति गुणगण, प्रगटै चोकनी प्रत्याख्यान ॥ जेण  
 तजैवा बीस अजक, पांभ्यो आवकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण  
 इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संजारै ॥ पूजादिक षट्  
 कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्त्त रौड  
 मंद, आयो मध्य धरम ॥ सूरती महीन मागध, ऊणी  
 गुणगणे धित जोम ॥ १९ ॥ तिमिणो बासाते गु  
 अंतरमहुरत मान ॥ पंच प्रमाद ॥ २० ॥ तिमिणो वाम, तेण  
 गुणधाम ॥ २० ॥ शिवरकल्प जिहकल्प आचार, साधै  
 स्यक सार ॥ उद्यत चोथा ज्यार कषाय, तेण  
 कहाय ॥ २१ ॥ रुधो राखै चित्त समाधै, धरम  
 आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासै,  
 गुण नासै ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंक्तिया

पहिले अंसे अहम गुणगणातणें, आरंजे



ते गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, कपकश्रेणि  
 कायक प्रकृति दस कय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम  
 अपूरव गुण लहै, अठम नाम अपूरव करण तिणें कहै ॥ सुकल  
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अमिग ध्याने  
 थरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां जाव  
 थिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मान ने माया संजलणा हणें,  
 उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम  
 लोभ कांइक शिव अजिलखै, ते सुखम संपराय दसम पंक्ति अखै ॥  
 संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण ठाम  
 सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै कियही  
 परै, तो आयै अहमिंइ अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि  
 करै संसारमें, एक जवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥  
 चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पमै, मोह उदय उत्कृष्ट अरथ  
 पुदगल रमै ॥ कपकश्रेणि इग्यारम गुणवाणो नही, दशमअकी  
 बारम्ह चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ दाल ॥ ६ ॥ एक दिन को हिव इहां सुंदर पास ॥ ए देसी ॥  
 खीणमोह नामे गुणवा ॥ तेरम जाण, मोह खपायो नेमो  
 आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे ॥ जिहां चरित अमल यथा आख्यात,  
 हिव आगे तेरम गुणध्यान तणी कहै वात ॥ २९ ॥ धातीय चोकमी  
 कय गई रही य अघातीय ऐम, प्रकृति पिज्यासी जेहने जूना कप्पम  
 जेम ॥ दरसन ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान  
 प्रगट अयो विचरै श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी बानी  
 परगट वात, महिमावंत अढारै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे  
 उणी कही इक पूरवकोमि, उत्कृष्ट तेरम गुणवाणें ए थिति जोमि  
 ॥ ३१ ॥ कर सेवेसी करण निरुध्या मन वच कय, तेण अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति स्वपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊंचरता जेहनी  
मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चन्द्रम गुणग्रान ॥ ३२ ॥ त्रोजे  
चारमें तेरमें मांहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चौथो परजव साथे  
होय ॥ नारक देवनी गति मांहे लाजै पहिला चार, धुरला पांच  
तिरी मांहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर चाहम मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसानलै ॥  
गुणगण चवद विचार वरण्यो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतरैसै  
ठत्तीसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध,  
कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणगणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु  
सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव  
तत्त्वनी, गाथा ज्ञासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कहिस्युं  
सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निज्जर  
बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि बायाल,  
सत्तावन बारै चौ नव क्रम जेदनी माल ॥ १ ॥ इग डु ति चौविह  
पणविह बधिह जीव कहाय, चेतन अस थावर वेदै गई करणे  
काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय जिय ठाण, सन्नि असन्नि  
पणिंदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पङ्कता अपङ्कता चवदै  
होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंसण  
गरित वीरज तप तिम उपयोग, ए धरु लक्षण लक्षत जीव इय  
इ लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पङ्कती तीन, सासोसास

प्राणा मन धर्म ए अनुक्रम लीन ॥ चार एगेंदी पंच पञ्जती  
 विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें धर्म पञ्जती होय ॥ ४ ॥ इंद्रिय  
 पांच उतास आळ बल ए दस प्राण, चार व सात आव एगिंदी  
 विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंदी नें नव दस क्रम आय, प्राणाधी  
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धर्माधर्म आगास तोनूना  
 त्रिण्ण जेद, काल दसम इग आगास पुगल चार विवेद ॥ खंधा देस  
 पणस परमाणू चवद अजीव, धर्माधर्म पुगल नन काल ए पांच  
 न जीव ॥ ६ ॥ चवण सहार्ध धर्मेथिर संठाण अधर्म, अवगार्हे पूरण  
 गल्लें नन पुगल धर्म ॥ समयावलय महुत्त दोह पख मास नें  
 साल पढ्योपम सागर उत्पण्या तपण्या काल ॥ ७ ॥ धर्म इग दो संग  
 संग संग धर्म इग अंक गिणाय, एग मुहुत्त आवलि संख्या सूत्र  
 कहाय ॥ तीन सात वलि सात तोन ऊनासें माण, केवलनाणी  
 जणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर हुग  
 पंचिंदी जाय, पांच शरीर आदि प्रति शरीर उवंग कहाय ॥ आदि  
 संवेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परध उतास तेम वलि अ  
 तप ने उजोय ॥ ९ ॥ सुजखगइ निम्नाणत सादि दगु नीमाल,  
 सुर नर तिरि आळ तिळंकर पुण्य वयाळ ॥ तस वाइर पञ्जत प  
 तेय थिरं सुज सोय ॥ सुजग सुसर आइज्ज जलें तस दसको होय  
 ॥ १० ॥ नाणनराय धर्म कनव वोजा नोचअसाय, मित्य आवर  
 दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ तिरियं च हुग एगेंदी वि ति  
 चौरिंदी तेय, कूखगइ उपधा अपसत्थ वस चौ जेय ॥ ११ ॥ पद  
 म मंघयण विना संवेण तेम संठाण, एम वयासी प्रकृति पाप त  
 तनी ए जाण ॥ आवर सुइम अपज्ज साहारण अथिरे गेय, असुज  
 उजग दू सरणा इज्ज अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय  
 इंदि कसाय अवय तिम जोग वायालीस सेय पचोत्त क्रिया संजो

॥ कांडव अहिगरणीया पावसिया परितोप, प्राणातिपात और  
 जकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मित्रादंसण वत्ती  
 तेम,, अपञ्चखाणकी दिठ पुठ पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि  
 य ने सत्थि सहत्थे जेह, आझापनकी वेयारण अणजोगा तेह ॥  
 १४ ॥ अणव कंख पच्चयना उवज्जंगी समुदाय, प्रेम छेष इरियाव  
 ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म जाव  
 ण चारित्त, पणतिग बाबीस दस बारै पण संबर तत्ते ॥ १५ ॥ इ  
 रिषा ज्ञावा एषण सुमतीना जेद होय, आदान जंरु उच्चार नि  
 स्केवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण, हि  
 व आगे बाबीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ चूख पिपासा  
 सीत ज्ञेसने मांसा निरवत्थ, अरति जोषा चरित्रा नैबिद्या सिज्जा  
 सत्त ॥ अक्कोसवहजायण अलाज रोग त्रिण फास, मल सक्कार य  
 ज्ञा अज्जाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव  
 संजंम सम्म, सत्थं सौच अकिंचन वंजचेरज इ धम्म ॥ पढम अ  
 नित्य असरण संसार एण अनत्त, असुचि आश्रव संबर निज्जर ज  
 नि ज्ञावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाव बोध डुरलज इग्यारम गाम,  
 धरम साधक अरिहंत ए बारै ज्ञावना ज्ञाव ॥ सापायक छेदोप  
 स्थापन बीजो सोय, परिहार विश्रुद सूखम संपराय चउत्थो जोय  
 ॥ १९ ॥ तिम अहस्काय चरित्त सरव जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु  
 विधि आचरणे के जिय पांम्या सिद्ध ॥ बारै बिध निज्जर तत्त्व बंध  
 ना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिई अनुजाग प्रदेस जेदे निर्धार ॥ २० ॥  
 अणसण जणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सच्चिनिता  
 बाहिर तप परु जाग ॥ पायचित्त विनय वेवावज्ज तेम सिज्जाय,  
 ध्यान कान्तसग अरुणंतर तप परु विध आय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु  
 ज्ञाव काल अवधारण थित निरवंच, अनुजागै रस तेम प्रसेदे दल

नौ संच ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगम चित्र  
 कर कुंजकार जंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना ज्ञाप्या  
 जे जे ज्ञाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सज्ञाव ॥ इम संसेपे  
 विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्युं हिव मोख  
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपण इव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल  
 पांचमो ठेठो अंतर जाण ॥ ज्ञाग सातमो ज्ञाव आठ तिम अलप  
 बहुत्त ॥ ए नव जेदें ज्ञावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक  
 पदवी वै जे पदेअविनाज्ञाव, व्योम कुसुम तिम ससिक मृंग, जिम  
 नदीय अज्ञाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मगण छार, विवरण  
 कर वरणवस्युं सुषाज्यो सुदुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै द्वायक सन्नी  
 अतन्नी येसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न द्रव्य प्रमाणे सिद्ध  
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम ज्ञाग एग सिद्ध होय अणंत ॥  
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती  
 धित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां ज्ञावै नहि सिद्धां अं  
 तर जोय, सरव जीवथी ज्ञाग अनंतम सद्धू सिद्ध होय ॥ २७ ॥  
 दंशण नाण जेइने बे ते द्वायक ज्ञाव, जीवत जेइने वलि परणाम  
 के ज्ञाव समाव ॥ सद्धुथी धोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी  
 थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक  
 नव तत्त तस सम्मत्त, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव  
 जिनेसर मुखथी ज्ञाप्या वयण जहत्थ, ए दुद्धी जेइने मन संमंत  
 निबल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमदुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, उ  
 र्द्ध पुगल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ असप्पणिय अणंते इ  
 पुगल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३०  
 ॥ इम नव तत्त जेद पन्निजेदै विवरण कीध, आवक आयह कीन  
 सहाय पूरण रंस पीध ॥ कोटिक गण सुज सदन प्रकास नदी उपमांन,

श्रीजिनलान्जचंद कुल-पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक  
करिवर सिंहे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वरसाखानी पमिसाख ॥  
ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणे  
विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवहर निश्चय नय विगई प्रवचन  
माय, परम सिद्धि पद वाम गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन  
ससि वार मेरु तिथ परन कीध, ब्यार कथा तजि तत्वकथा ज्ञान  
नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ डूहा ॥ रुषजादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥  
दंरुक रचनायें तबुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरुक  
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विजु अगन दीवो दही, दिसि प्रवणें  
अणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आज तेज बलि, वाज वणस्सइ काय ॥ बि  
ति चौरिंदी गझधर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस  
वेमाणिया, ए दंरुक चोवीस ॥ एहना चार कहूं द्विवै, गणनाये  
ते वीस ॥ ४ ॥

॥ डाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरती ॥ ए देशी ॥

सररीर जगाहण संघयणेंसणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो  
समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम बलि उवयोग,  
उपपात बलि चवण ठिई पज्जति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार  
सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा डुगनो ए अरथ कह्यो संकेव ॥  
द्विव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अल्प रुची हुं तेहयो  
कहिसुं अल्प विचार ॥ २ ॥

॥ डाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गझय तिरि वाऊ कायें ब्यार सररीर, मनुष्य सैं पांच  
दंरुक इगवीस रूखा ति सररीर ॥ आवर ब्यारनें जघन्य उकोसे देइ

प्रमाण, जाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो  
 जघन्य स्वजावकं अंगुल जाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने  
 विक्कात ॥ सुरनो सात हाथ गणय तिरि वणस्सय काय, जोयण  
 सहस साधक इक सहस अनुक्रम आय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगान  
 वेइंदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंदी देह उंचै आकार ॥ आरंज  
 कालै वैक्रिय देहनो ए परिमाण, जाग एक इग अंगुलनो संख्या-  
 तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख,  
 नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साजावकणी डुगणो नारक  
 वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥  
 सुरनें पक एक उक्कोसविजवण काल, विगल संघयणी आवर सुर  
 नारकनी माल ॥ गणय नर तिरनें परु विगलनें ठेवठ एक, सरव  
 जीवनें च्यार दसेससाये लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें परु सुरनें सम-  
 चौरंस संठाण, हुंरग इग नारग विगलेंदी सूत्र प्रमाण, नाणाविह  
 भयसूर्मरनी चंड आकार, वणसइ वाऊ तेऊ जू बुदबुद अप्पा-  
 कार ॥ ६ ॥ सहनें च्यार कसाय गणय परु नर तिरि दोय, वेमां-  
 णिय नारग तेऊ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस  
 रह्या ने च्यार, दार इंडियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥  
 समुद्धात सग नरनें पण गणय तिरि देव, नरग वाचुनें च्यार  
 नेसनें तीनं जेव ॥ दिढी दोय विगलमें आवरने मिछ्यात, सेसने  
 तीन दिढि जिम प्रवचनमें विक्कात ॥ ८ ॥ आवर बि ति नें एक अच-  
 स्कू दंसण होय, चौरिंदी ते चस्कू अचस्कू दंसण होय ॥ मनुजने  
 चचार सेस दंरुगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर  
 नारगनें छीन ॥ ९ ॥ आवर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण,  
 गणय अणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें  
 तरै जोग, मनुजने परै च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाङ्मकायनें पाच तीन आवर संयोग, मनुजने बार नरग तिर देवनें  
 नव उपयोग ॥ विगल दुगै पण परु चौरिंड़ी आवर तीन, नववाय  
 इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या  
 चवण पपात, गणय तिरि विकलेंड़ी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ  
 अथावर वणस्सई संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत  
 तेम उपजंत ॥ १२ ॥ बावीस सात तीन दस वरस सदस उक्किठ,  
 वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पढ्य  
 सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पढ्य अधिक लाख वरस पढ्य  
 जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसें  
 ऊणा दोय पढ्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणचांस  
 दिवस ठम्मास ॥ अंतमुहुत्तजदनें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥  
 नुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पढ्य तेना अमंस वेमा-  
 णिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें षट आवरनें च्यार ॥ विग-  
 लनें पंच पङ्कती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरब जीवनें होय बए  
 दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मजार,  
 दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पणसा  
 सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गणय मणुजनें दीह कालकी सन्ना  
 होय, केइक आचारज कहे दिठिवायथी दोय ॥ निच्चय पङ्कता पं-  
 चिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥  
 संखाउपङ्कत पंचेदी तिरि नर तेम, पङ्कता नू दग पत्तेय वणस्सई  
 जेम ॥ ए सरबेमें निश्चै सुरनी आगति हुंति, पङ्कत संख गणय  
 तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वस्त्या नर तिर  
 उपजै न हुवे सेस, नू अप्प वणस्सईमें नरग विण उपजै असेस ॥  
 पुढवाई दस पयमें नू आऊ वणजंति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ  
 उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुंत, पुढ-



कोई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सद्गुमें तिर गति आगति  
 मणुआ सद्गुमें जाय, तेउ वाऊथी मरीने जीव मनुज नवि थाय  
 ॥ २० ॥ श्रीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, आवर विगल  
 नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पऊता मणु वादर अगन वेमाणिक  
 तेम जवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम ॥ २१ ॥ त्रैइंड़ी तेइंड़ी  
 पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्तइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥  
 हे जिन ए सद्गु ज्ञावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिखतां  
 किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सद्गु दंरुगमें ते गति  
 संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण  
 दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत  
 प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी  
 तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक  
 दंशण देव, आतम गुण संसार समत कम्म सयमेव ॥ २४ ॥  
 खरतर गढ जट्टारक श्रीजिनलाज सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना  
 पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तजु सीस, तेण तव्या  
 तेवीस दार दंरुग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रस वारण तेम  
 चंद निरधार, पोस मास पख उज्जाल सातमनें सोमवार ॥ आवक  
 आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अछम चौमासो कर जैपुर नगर  
 मजार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ डहा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥  
 कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ डाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव डु जेद, सत्ता जिनै सिद्ध अनं  
 तै रूप अजेद ॥ संसारी आवर इग तिम त्रस दोय प्रकार, जु अप-वाइ

सैन वण स्सई थावर धार ॥ १ ॥ फिटकरयण मणि विष्म हिंगुल वलि  
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी  
 अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ जोमल तूरी नुस नूमि पाहण जे खाण  
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विवेद ॥ नूमि आकास,  
 नुस हिम करग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं  
 अर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाहण जेम ॥ ३ ॥  
 अंगारा जाला जोजर तिम नलकापात, असणि कणग विद्युतादिक  
 अगनि जीव विहात ॥ उअमगनकलिका मंमल वलि मुख वात,  
 सुद्ध गुंज तिम घण तणु धाऊ जेदेँ हात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय  
 वणस्सई जीव ड जेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं  
 दा अंकुर कूपल फूलण बलि जंबाल, जूंफोला अदत्तिथ सरवे जे फ  
 ल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ बाथलो थेग पालंको साग, गुपत  
 सिरा सांधा गांठा जांजे सम जाग ॥ काटी माल जूंमिमें रोप्यां पछ  
 व थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरी रे  
 एक जीव जे ते अत्येक, फूल गल फल मूल काठ बीजै जिय एक ॥  
 वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु  
 हुचै आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिछी निजर न होय, लोका  
 लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय ॥ कवमी संख गंमोला लहिगा  
 लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विहात ॥ ८ ॥ माय बा  
 हाक्रम पौरादिक बेइंडी होय, गोमी माकण जूआ कीमा कीमी दोय  
 ॥ दीपक ईली धीवेली गोगीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर  
 कम नुतपात ॥ ९ ॥ घनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेह, ईली  
 कंधुक इंडगोप तेइंडी एह ॥ वीठू ठंकण जमरा जमरी इंडी च्यार,  
 तीमा माखी मांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवरमोला मांक  
 मिय पतंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचेइ च्यार बिबेद ॥

धम्मा वेसा सेला अंजन रिवा क्कात, मघा माधवई नारंग ए नौमे  
 सात ॥११॥ जलचारी अलचारी नन्नचारी तिरयंच, मछ कछ सुस-  
 न्धार मगर गाहा जल अंव ॥ चौपय नुरपरि नुनपरि साप नुचारी  
 तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥१२॥ खेचर चरम्  
 रोम पंखी चमचेरु कपोत, मनुजलोकथी बाहिर समुग विगय पंख  
 होत ॥ सरवे जल थल खचर समुष्ठम गप्पय दोय, कम्म अकम्म जूमि  
 अंतर दीवा मणु जोय ॥१३॥ असुरादिक दस होय वाण अंतरिया अठ,  
 जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु ते दिठ ॥ पनरे जेदे सिद्ध कह्या ए  
 जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कइसुं अधिकार ॥१४॥ देह  
 आनखो एक सरीरे अितनो मान, प्रांश जेहने जेता तिम वलि योन  
 प्रमाण ॥ अंगुल जाग असंखसदू एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक  
 पत्तेय वणस्सई काय ॥१५॥ वि तिचउरेंडी अनुक्रम उक्किदेह ऊंचास,  
 वारै जोयण तीन गाउ इग जोयण जास ॥ सत्तमना नेरइया धणु  
 सय पंच प्रमाण, तेइथी अरय २ ऊशा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जो  
 यण सहस गप्पधर मछ नुरगनो देह, गाउ धणुअ पुहत्त नूचारी पं  
 खी जेह खेचर नव धणु नुरग नुयंग जोयण नव होय, नव गाऊ  
 परिमाण समुष्ठम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरु गाउ उंचास चउप्प  
 य गप्पय मांण, तीन कोस उकोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ नुवन  
 अंतर जोइस वेमाणिय ईसायंत, सात हाथ उकोसैं ऊंचपणै तणु  
 हुंत ॥ १८ ॥ सनत्कुमार माहेंडै पर बल लांत ४ पांच, शुक्र स  
 हसारे उकोस चार कर वांच ॥ आणत प्राणत आरत अच्युत हाथै  
 तीन, नवथैवेयक दोय पंचाणुतर इग लीन ॥१९॥ बावीस सात तीन  
 दत्त वरस सहस्सैं आय नू आऊवाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ बार  
 वरस गुणचास दिवस तिम बाते ठम्मास, अनुक्रम बेइंडी तेइंडी  
 चौरिंडी रास ॥ २० ॥ सुर नारंग तेतोस अयर उकोसैं आय, चौपय

तिरिय मनुजनौ तीन पढ्योपम थाय ॥ जलचर उरपर जुजपर  
 उक्तासे पुर्वकोमि, पंखीने इग जाग असंख्य पढ्यनो जोर ॥ २१ ॥  
 सरब सूखम साधारण समूहम मणुं जेह, जहन्न उक्तासे अंतमुहुत्त  
 नियम थिति तेह, इम उगाहण आख्यो संखेपे अधिकार, जे वलि  
 इत्थ विसेस विसेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उसपिणी सहु  
 एगिंडी आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥  
 संख्याता संवत्तर विगल आपणी देह, सात आठ जव पंचेइ तिरि  
 भणुआं जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय,  
 देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंडिय सासोसास आठ  
 बल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ इग डु ति चौरिंडीय जाण  
 ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेई दस नव अनुक्रम जोय, प्राणयक  
 जेवि प्रयोग जिय मरणें होय ॥ ज्ञोम सायर संसार अपार अनंती  
 वार, जमियो जीव धरम विन जोण असीनें च्यार ॥ २५ ॥ सग सग  
 सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवद  
 लख सूत्रें साख ॥ जू अप तेज वाऊ वणयत्तेय साधार, वि ति चौ  
 पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आथ न  
 पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत जंग जिन आगम थित  
 विहात ॥ रोग न सोग न जोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपु-  
 सक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज  
 ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धतै सिद्ध कहंत ॥ इम ए  
 जीवविचार गाथाथी ज्ञाषारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम  
 सुगम संरूप ॥ २८ ॥ खरतर गहं जट्टारक श्री जिनदाज सूरीस,  
 रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस  
 वारण ससिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर  
 मजार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्षित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणंद ॥  
प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद ॥ १ ॥ तीर्थकर आवे  
तिहां, त्रिगमो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहूं  
अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रदांसा समकिती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥  
सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे धूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर बखानी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपठरह गंधर्व ॥  
समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहूं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥  
जुवनपति बीस इंदै मिथ्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस ड  
दस वेमाणिय जुम्या जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥  
पवन सुर पूंज परमारजै जी, जूमि योजन-सम जान ॥ मेघकुमर  
रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिम्काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर  
सुंज धूपणां जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर दिव वेगसूं  
जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुद्ग पंच वरण  
उरंध मुखै जी, वरपए जाणु प्रमाण ॥ जवणवइ देव त्रिगमो जलो  
जी, करय तें सुणउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-  
तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी,  
कनकनो बीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरे जी,  
रचय वेमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ जीतरे जी, जिहां विराजै  
जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ जीत उंची धणु पांचसै जी, सवा-  
तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास  
धणु ड्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावनी  
बीस हजार ॥ थाक अम नहिय चढतां थकां जी, एक कर उच्च  
विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीथकी जी, उच्च

रहे त्रिगढ़ आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर  
 आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं १ दिस तिहां जी,  
 नीलमणि मोर निरमाण ॥ इसय धणु मध्य मणि पीठका जी,  
 उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ च्यार आसण तिहां  
 चिहुं दिते जी, मोतीयें जाकजमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें  
 जी, देवबंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवकुंडुजि नाद उपदिसे  
 जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्न जिम आइ सिर ऊपरे जी,  
 गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुढ दिसि आसणे आय वेसे पदू, सुर रुत चौमुख रूप देखै सहू  
 ॥ दीपै असोक तस बारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम  
 मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण उत्र सुविसाल ए, रूप चि  
 हुं १ दिसैं चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वांण श्री जिनतणी,  
 जगवंत उपदिसै बार परषद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग  
 निकूलैं करी, गणधर साधची तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतपी नु  
 वणनी वितरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवांण ऊनी सुणे ॥ त्रिहंत  
 णा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणिय नर तारि ईसाण ए  
 ॥ बारह परखदा मद मन्वर गोम ए, नूख त्रिस विसरै सुणै कर जोम  
 ए ॥ १९ ॥ पूछ जामंमल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज उं  
 च आकास ए, ऊलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहू  
 बारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ बाहण वहिल सहू धरिय पहिले  
 गढै, होय पगचार नर नार उंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि  
 जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥  
 पुन्यवंत पुरुष ते परषद बारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अंव  
 तारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांहिलो प्रौल

माहे वसैं ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणिये, विदिसि  
चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए,  
स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप  
राजिया, मध्ये कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंवरो पुरुष खटंग अ  
र्चि माल ए, रजतगढ प्रौखना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो  
त्रिगमो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्दिक रचै तिण ठाम ए ॥  
करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही  
दोय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी रुद्धि दीठी जियै, तेद ध  
धन धन अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंछित पूरज्यो,  
हिव मुऊ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै रुद्धि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सर-  
दहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिद्धांत  
गुरु परंपर सुणी सहू अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म  
वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री रुषभदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोभरजी पाठियै पवारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जम जीवण अंतरजांमी, हुं  
सो अरज करूं सिरनांमी ॥ रुपानिध विनती अवधारो, जवसायर  
पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ क० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति  
मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जानं वारी हुं वार हजार  
क० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै, मुऊ ऊपर महिर घरीजै  
दिल रंजन दरसन दीजै ॥ क० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया  
जवरना पातिक टलिया, प्रभु जो मुऊसै मुख मिलिया ॥ क० ॥  
॥ ४ ॥ समरथा संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल आवै, मुऊ

आतम पुन्य जरावै ॥ क० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केसर  
चंदन चरचीजै, दिन धन २ तेह गिणोजै ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रभु दरस  
सरस लहि तोरो, अति हरषित हुवो चित मोरो, जिम दीछा चंद  
चकोरो ॥ क० ॥ ७ ॥ परतिख प्रभु पंचम आरै, वीस माहा जय  
संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि  
सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर काई, बाधै संपत शोच सवाई ॥  
॥ क० ॥ ए ॥ नाजिराय कुलंबर चंदा, जव जन मन नयण आनंदा,  
जलगै सुर असुर सुरिंदां ॥ क० ॥ १० ॥ जयकारी रिषज जिनंदा,  
प्रह सम घर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति सूरिंदा ॥ क० ॥ ११ ॥  
इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ ढाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवमीपुर मंरण गुण निखो  
ए, तवन करिस प्रभु ताहरो ए, मन वंछित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥  
नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी  
ठै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु  
घर नार ए तसु गुणहि न लपै पार ए ॥ तास जयर अवतार ए,  
तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए,  
अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूबै जूपतिनें कह्या ए,  
करजोमि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ ढाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ बीजै  
वृषज उदार, घरणी जिण धरयो जार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान,  
जसु बल कोय न मान ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुरसेवी  
॥ ६ ॥ पांचमै पुष्पनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ ठै दीवो



ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो  
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥  
 नवमें पूरण कूँज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,  
 मनह अयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि  
 इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥  
 तेरम रत्ननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें  
 ए दीछो, पातिक धूमथी नीछो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो  
 नूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, आस्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत  
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,  
 आवी मंदिर ऊत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ  
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर  
 पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरुजगत्र अयो जयकार, खिण इक नारकिये  
 पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध,  
 कर आनक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ  
 इंड मिली तिहां आवै, लेइ निज जत्तै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क  
 री जनम महोच्चव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल छी  
 प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इस रथण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार,  
 घर १ गाईजै क्रीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,  
 तसु नाम दियो श्री उत्तम प्रासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु बाधै दिन २ कला  
 करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजितरूप जिसो देविंद ॥ गुणकला  
 विवक्षण विद्यातणो निधान, जीवनवय आयो परणायो राजान ॥ १९ ॥

॥ बाल ४ ॥

कुमरपदै प्रभु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग  
 संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणवै अवसरू ए, देस  
 संवहरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ १० ॥ स्वामी संजम लेय  
 इंद्रादिक सब मिढ्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदढ्या  
 ए, पांमीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ  
 मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ बाल ५ ॥

इम श्री गौमीपास्ततणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह  
 परलोग सुबंधित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवमीपुर जावै,  
 चोर धारु संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ ३२ ॥ धरणांराय  
 पञ्चमावइ जास वहे सिर आंण, सांमल वरण सुसोजित नव कर  
 काय प्रमाण ॥ कढपवृद्ध चिंतामणि कामगवी सम तोलै, श्री गुण-  
 शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ ३३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्व-  
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु  
 अजिथ जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर  
 प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यजंमार जरेसु ए,  
 मानव जव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोरुहि लाख पचास ए, सागर  
 जिनसासन ज्ञास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, उवझाय सरोवर  
 हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां रा, ए, राजा जितशत्रु तिहां  
 गाजियो ए ॥ विजया तसु घरना बिहुं रमयति पासा सार ए  
 ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, नणी ए, न हार ए ॥ नयर  
 बस्यो दस मास ए, प्रभू पूरी ज ॥ ५ ॥ बिहुं जण

धन आशं दियो ए, सुत नाम अजिय जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण  
 सयल उवाह ए, क्रम २ बाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस  
 तणी ए, गति सुखलित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चले  
 गेल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो सं  
 सार ए, बलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए,  
 लंठन मिलि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो  
 ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साथै सब काज ए, प्रभु  
 पावै पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ दिव द्युषापुर ठाम ए, विश्व  
 सेन नरेश्वर नाम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे बेव  
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवरयो ए, अचिरा उयरें सुत अवत  
 र्यो ए ॥ मानव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जाणियो  
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिण नाम दियो श्रीशान्त ए  
 ॥ जिन गुण कुण जाणै कही ए, त्रिहुं नुवणे तसु उपम नही ए  
 ॥ १२ ॥ नयण सलूणो हिरण्यो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए ॥  
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी  
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नै लोक कुरंग ए ॥ तो लंग्यो स  
 सि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग  
 अति खलजड्यो ए, जय जंजण सांमि सांजड्यो ए ॥ आणंदियो  
 मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंठन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति  
 परणे घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल गल अ  
 यण जोगवे ए, पीय राज जल पर जोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर त  
 णें मंमल तमें ए, पंचास ॥ स वरसां गमे ए ॥ तो तेजै दिणय  
 र जिसो ए, ऊपन्नो च प्राप्तकुमनसो ए ॥ १७ ॥ साथी जरह ठ  
 खंर ए, वरतावी अलीन विराजि ॥ चवद रयण नव निहि सही  
 ए, त्रमु मोल सह निधान, जोव ए ॥ १८ ॥ सहस बहुतर पुर

वरा ए, वत्तीस मौखवद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, विन्न  
 वे नमै वे कर जोरु ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख  
 चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र धमधमै ए, वत्तीस  
 सहस नाटिक रमै ए ॥ २० ॥ रूप जिती सुरसुंदरी ए, लक्षण ला  
 वण्य लोला जरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सह  
 स अंतेजरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र  
 यण जंकार ए ॥ ते कहिवा कुण जाण ए, वपुचपु रे पुण्य प्रमाण  
 ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चौथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस  
 सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥ २३ ॥ इण पर बिहुं  
 तीर्थकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए  
 सार ए, बिहुं लीधो संजम जार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर  
 ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन ज्ञाण  
 समाण ए, बिहुं पांभ्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोरु-  
 हिमहि ए, बिहुं चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं ठाण  
 ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेजरी ए,  
 बिहुं आगलि इंड अंतेजरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि  
 गुण गावै सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं तिर ठत्र चमर विमल, बिहुं  
 पंग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग  
 न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं उवयार जुवन जरी ए, बिहुं  
 सिद्ध रमणसुं परवरी ए, बिहुं जंजी जव फंद ए, बिहुं उदयो  
 यरमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम धीजो ने सोलमो ए, जांणे चिंतामण सुर  
 तरु समो ए ॥ शुणि अति संज विहाण ए, तिहां इह परजव नवि  
 हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उठव मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय  
 हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज जुवण  
 रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते जोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण धुय जणि ए ॥ सरण विहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन  
जवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान  
क्रिया जिण उपदिस्ती जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन  
धर श्रीजिन उपदेस, वूटे कर्मकलेस ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ पमिलेहण  
मुहपत्ती तणी जी, जाखी वै पचवीस ॥ तिहां ए जाव विचारिये  
जी, इम जाखै जगदीस ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम वे पास विलोकिये  
जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पमिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी  
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिथ्रनी जी, मोहनी तीननो  
त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥  
ज० ॥ सीप वधू टक गुरुयकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव  
अखोमा आदरो जी, नव पखोमा गमान ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व  
गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुशुरु कुदेव कुधर्मनो जी,  
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरसन चारित्रना जी,  
संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-  
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे  
शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, नीने दंरु विशुद्ध ॥ ज० ॥ ८ ॥  
पमिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी सार ॥ द्विव पमिलेहण  
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ हास्य अरति  
रति धोयनें जी, सुद्ध करो वंभ वाह ॥ तज जय शोक डुगंठना  
जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ ज० ॥ धुरली लेस्या तीन  
ए जी, ते तिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि  
मुखथी चक्रचूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काढ सख्य तीन नरयकी जी, मा

या नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करा  
 घात ॥ १२ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण विन्हे सुद्ध  
 होय ॥ ए पम्हिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ ज० ॥  
 इम पम्हिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै  
 करै जी, पांमैं सुख अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-  
 वरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहा-  
 णी, सुणो जवियण मन रली ॥ उवज्जाय वर श्रीलङ्घिकीरत, मुख-  
 थकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पम्हिलेहण तणी विध, लङ्घिकीरत गणि  
 कही ॥ इति श्रीमुहपती पम्हिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार  
 आयै घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित  
 अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप  
 करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागे जिके गुरुमुख  
 आलोइयै, जीव निमल हुवै वस्र जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे  
 तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नैं अरथ ते धारणा ॥ किणही  
 कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै ॥ ३ ॥  
 कीजीये जेह कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी ॥  
 कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां, दर्प इण नांम करि दोष तीजो  
 तिहां ॥ ४ ॥ विषलतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चोथौ आकु-  
 द्विया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी,  
 दोष धर प्रावृत्ति लेह विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए.देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगरण-  
तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमद्व एकासणो आंबिल  
उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥ ६ ॥ ए  
जो खंमिंत आयै अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां  
दोष सहू मिट जाय ॥ आपना अणपनिखेह्यां पुरिमढनो तप धार,  
गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार  
तिहां पुरमद्व जघन्य, एकासण आंबिल अछम चिहुं जेदं मन्न ॥  
आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणानी  
आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज विणास्यां चोथ  
प्रसिद्ध, वि ति चउरेंडी प्रसायां एकासणथी वृद्ध ॥ बहु बि ति चौरें-  
डिय हण्यां वि ति चउ उपवास, संकटपादि चिहुं विधि डुगुणा  
डुगुण प्रकास ॥ ९ ॥ उदेही कुलियावना कीमो नगरा जंग, बहुत  
जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन  
आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥  
संकटपादिक एक पंचेंडी उपडव होय, दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै  
आलोयण जोइ, बहु पंचेंडी उपडव ठठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं  
प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकमी  
प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें ठठ विचार ॥ साथ  
समकें लोक समकें राज समक, कुमा आल दियां डुइ चौथरु ठठ  
प्रत्यक ॥ १२ ॥ उपवास दस दंभायां तेम मरायां वीस, इक लख  
असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ षष्ठ चौमास वरस लग  
इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास  
॥ १३ ॥ सूआवरुना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन  
कीधां बहु असतने पोस ॥ करीय डवावस वार हजार गुणो नव-

कार, मिच्छाडुकम देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ बे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पञ्चखाण, विण दीधां वांदणा, पक्किमणा  
विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै ज्ञेया, इ  
कश् आंबिल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निबी आंबिल, ज्ञां  
गै आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण  
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास जंग उपवास, आंबिल ऊप  
रां, अधिको दंम वखाणिये ए ॥ पाचम आठम आदि, जंग कियां  
वलो, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग,  
चूले घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी  
ठुरी, आंबिल चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री  
जोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परझोह  
चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमांदान,  
नियम करी जंग, मद्य मांस माखण जरूया ए ॥ आलोयण उ  
पवास, संकप्पादिक, चिहुं जेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोड्या  
मिरखावाद, अदत्तां दांन त्युं, जघन्य एकासण जाणिये ए ॥ अति  
उत्कृष्टी एण, जाण आलोयण, उपवास दस२ आंणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत ज्ञागे अतीचार, जघन्य ठह आलोयण धार ॥  
मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥  
परिग्रह विरमण-दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे जंग ॥ च्यार सिद्धा  
व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी  
नववामि कहाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस  
हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने आवक  
पोसाध, एकेई सच्चित्त संघट्टे कीध ॥ बीसर जोजे सच्चित्त जल पी



ध, दंरु एकासण आंवल दीध ॥ १५ ॥ विण धोयां विण जूह्यां  
 पात्रै, एकासण तिम पुरिमद्व मात्रै ॥ गइ सुहपत्तो आंवल सारो,  
 तिम जुवै अरुम अवधारो ॥ २६ ॥ च्यार आगार वींमो राखै, व्रत  
 पञ्चखाण करै पट् साखै ॥ दोषे मिठामिडुकरु दाखै, आलोयण  
 लेतां अज्जिदाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता  
 नावै पार ॥ तोपिण संकेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि  
 स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने  
 विधि पांमी ॥ जीतकळपठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कळश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयनें ॥ ए  
 कांत पूवै गुरु वतवै, शक्ति वय तसु जोयनें ॥ विध एह करसी  
 तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीधरमसिंह कीधो, चौ  
 पने फल वशी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर वावन जिनालय, साध्वता चोमुख सोहे रे ॥ रुष  
 ज्ञानन चंडानन वारिपेण, वर्द्धमान मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥  
 आठमो द्वीप नंदीसर अदञ्जुन, बलयाकार विराजै रे ॥ तेहने मध्य  
 बिहुं दिस सोजित, अंजन गिरिवर ठाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण  
 सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अजिरामा रे ॥ मूलै प्रभुल सहस  
 दस जोयण, उवरि सहस कर ॥ ३ ॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद  
 प्रभूना, अति नुचंग नदारा रे ॥ साधू जंया विद्याचारण, वांदे वि  
 विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यै ९ इकसो चोवीस, विंव संख्या  
 सत्र दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो जगज्जन जगते, सुध आगम कर सा  
 खी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणे सडु जोयण बहुत्तर, सो जोयण  
 आयामा रे ॥ पिडुलपणे पचास जोयणना, प्रभूप्रासाद सुठामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रज्जुनी, विविध रतनमई काया  
 रे ॥ जिन कल्याणक उज्जव करवा, सुरपति जेके आया रे ॥ नं०  
 ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं नवरै, चोमुख च्यार विसाला रे ॥  
 वाव१ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चो  
 सठ सहस जोयण उत्तंगै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दि  
 सि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥  
 ए॥ वाव२ नैं अंतर विदसैं, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोय२ संख्या  
 जगदीसै, कहा नही ए कूमा रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मान दस  
 ऊंचा, दस२ सहस विस्तारारे ॥ ऊल्लरिसम संठाण जगत गुरु, नि  
 श्वय ए निरधारघा रे ॥ नं० ॥ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण,  
 अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपनिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिन  
 राज वखाणै रे ॥ नं० ॥ १२ ॥ इम प्रासाद प्रज्जुना बावन, नंदीसर  
 चर दीपे रे ॥ इय जाव विधि पूजा करतां, मोह महा जम जापै  
 रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जोवाजिगमें जा  
 णो रे ॥ इम अधिकार ठै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥  
 नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुजव इहा  
 ल्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमात्म, जैनचंड गुण गावो  
 रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्वीपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंडु मनसुध विहरमाण जिणेश्वर वीस, द्वीप अढीमें विचरै  
 जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै कर उपगार, किण २ ठामे  
 कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पैतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र  
 प्रमाण, बलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्रै सोहं  
 द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरै करमाज्जुमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥  
 पहिलो जंबूद्वीप समै विच आल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणने विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुंदरसन नामें मेर, तिणंधी  
 दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षणा दिसि  
 एह ज़रत सुज क्षेत्र, पांचसे बबीस जोयणठ कला तेहनो क्षेत्र ॥  
 उत्तरखंरुमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण चिहु करमांजूमी गए  
 अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस बसे चोरासी जोयण जाणें,  
 च्यार कला ए महाविदेह विखंज वखाण ॥ बावीससै तेरे जोयण  
 एक विजय पडुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने ठाण ॥  
 ॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरव पश्चिम दोय विजाग, सोलै ९ विजय  
 तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारै श्रीअरिहंत,  
 एहवे महाविदेह करमजूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरव विदेह विजय  
 पुष्कलावतो आठमी ठांम, पुंरुरीकणी नगरी तिहां श्रीलीमंधर-  
 स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पश्चिम विदेह  
 बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी बह्विजय  
 बलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥  
 नलिनावर्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी  
 तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप  
 मजार, महाविदेह सुंदरसण मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा  
 गढ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन९ धातकी खंरु ॥ पिंडुलो चिहुं  
 लख जोयणें, मंरुल रूपे मंरु ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय ज़रत दोय  
 एरवत, दोय बलि महाविदेह ॥ करमजूमि खटं ठै जिहां, उण-  
 हिज नामें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरव पश्चिम धातकी, खंरु गिणीजै  
 दोय, विजयमेरु पूरव दिसै, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥  
 इक २ मेरुने अंतरे, करमजूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांमिने,

लेखो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो,  
 उधो स्वयंप्रभु ईस ॥ रुषजानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस  
 ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥  
 पूरव धातकी खंममें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली  
 विहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें,  
 विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो  
 देव विस्तार ॥ इम वज्रधर इग्यामो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥  
 दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंडानन जिन, पञ्चमी धातकी मांहि ॥ विचैरे  
 च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उठाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी  
 खंरु ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-  
 दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींठ्यो चूनी जेम विचार ए ॥  
 सोलह लख जोयण विस्तार ए, बीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥  
 उलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधै पगै ॥ विच पञ्चो  
 परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहा लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख  
 योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमजूमी ठ ए कहीजै, धात-  
 की खंरु जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करनें पूरव दिसै, मंदिर  
 नांमे मेरु तिहां बसै ॥ पश्चिम विजुमाली मेर ए, इहां किण इतरो  
 नांमे फेर ए ॥ २० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥  
 एक २ मेरे तीन तीने, करमजूमि तिहां कही ॥ इम जरत एरवत  
 माहाविदेहे, नांम सरखो हेत ए ॥ तिणहीज नांमे विजय सगली,  
 सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंरु तिम पुष्कर  
 सही, इहां क्षेत्रानी रचना विधकही ॥ बार २ कहनां ए विसतार ए,  
 पहिला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ २० ॥ सुविचार वाकी तेह सगलो,

नगर तिमहिज मन गर्में ॥ पूरवे पष्ठिम जेहनी ते, तेह तिमहीज  
 अनुक्रमें ॥ श्रीचंडबाहु जुजंगईसर नेम व्यार तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर  
 अरध माहे, सरवर्जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन  
 सैतैरमो, श्रीमहाजगद् अठारम नित नमो ॥ देवजता उगणीसम  
 देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण व्यार पुष्कर  
 अरध माहे, कहा पष्ठिम जाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं  
 दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरव लाख बरसा, आठ इक  
 २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरिर तोहे ॥ सोवन वरणा सुहामणो  
 ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ह ॥ दिव उत्कृष्ट  
 जेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहै, पांचे  
 जरते जिम पांचे लहै ॥ ३० ॥ जिण लहै पांचे तेम पांचे,  
 एरवत मिल दस हुवा ॥ इक २ विदेहे वत्तीस विजया,  
 तिहा पिण ठै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोमि  
 नवसय केवली, नव सहस कोमी अवर मुनिवर, वंदिबै नित ते  
 वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां जरते एरवत आज ए, पंचम आरै  
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन  
 गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अठार वरजित, अतिसयां चोतीस  
 ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आज  
 तारण तरण विचरै, केवली दोय कोम ए ॥ दोय सहस कोमी सुसाधु  
 बीजा, नमुंवेकर जोम ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा  
 जूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह जाख्या वीस विहरमाण  
 ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सत्तरगुणतीसै समै, सुखविजयहरख  
 जिनंद सानिध नेह धरि ध्रमसी नमै ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप  
 स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंरु ३ आधोपुष्करद्वीप ए  
 ४ द्वीपमें ५ जरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मजूमामें विच

रता साध्वता २० बिहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाज्जाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र जणी ऊ  
महेज्यो, तुम्हे नरजव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथो  
मांहे गजै, आवू मारूमै देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे ला  
गो, नंचो अंबरियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास  
कहावै, निरखंता भिपति न आवे रे ॥ जा० ॥ एतो मुंगरियानो राजा,  
एदनी ठै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ ठह रुतु वास वणायो,  
एतो चंपला अंबला गयो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा जांजा, जिहां  
तिहां वनवेढ्या आजा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जार अढोरे वणराई,  
एतो इहांहिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फू  
लमानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर जूमि विसाला, देवल  
दीवा रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरदाई, चक्रेसरि देवी सहा  
ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवारु वंस वदीतो, जिणइलपति साहि जो  
तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाइण आरास मंमायो रे ॥ जा०  
॥ ६ ॥ जीणी२ कोरणी ऊरयो, दल माखणजेम उकेरयो रे जा०  
॥ नवी२ ज्ञांति वणाई, जिहां तिहां कोरणिया जिणाई रे ॥ जा०  
॥ ७ ॥ उत्तरे पाइण जेतो, जोखीजे पाइण तेतो रे ॥ जा० ॥  
आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥  
जगणिस कोर सोनइया, इव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा०  
॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥  
पुठै चढिया हाथी, मंमाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इण देवल  
समवरु कोई, जूमंमल मांहि न दोई रे जा० ॥ १० ॥ बलि ति  
स विगताला, वस्तुपाल अनै तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी  
राई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

हवो जिणहर पासै, वार कोमनी लागति ज्ञासै रे ॥ जा० ॥ देस  
 णी जेठाणी, आलानी अजब कहाणी रे ॥ जा० ॥ १२ ॥ इहां देव  
 ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस  
 वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल  
 वामो दीगो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल  
 पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गात्र आ  
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा  
 ज्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते  
 घातो, जिंगमिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्म  
 लौ, जिण बिंबनो ज्ञाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली  
 ज्ञोम सोजागी, जिणवरणी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६  
 ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा०  
 ॥ १७ ॥ इण हुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन ज्ञावी रे ॥  
 जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥  
 ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥  
 जा० ॥ साहमी वढल कीज्यो, जातरुलीनो जसलीजो रे ॥ जा०  
 ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥  
 जा० ॥ सुणिये ठै जे कोई, अदिनाणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥  
 ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥  
 जा० ॥ ए तीरथ समतोळै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥  
 २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिपज्ञानन ब्रधमान, चंज्ञानन जिन, वारिषेण नामे जि  
 णा ए॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिजुवन सासता, प्रणमुं बिंब सोहा  
 मणा ए ॥ २ ॥ चेइहर सग कोमि, लाख बहुत्तर, चेइय प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर,  
 जुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद,  
 चौरासी लाख, सहस ठिन्नू ने सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

दिवै नवग्रीवेकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा  
 सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अरुत्रीस सह  
 स सत साठ अठै गुण षाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंरुल रुचक  
 वखाण, चउ१ चेईहर साठ सबे त्रिहुं ठाण ॥ इकसो चोवीसै गुण  
 प्रतिमा चिहुं नाम, ब्यारसै चाविसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥  
 नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कु  
 रु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत ब्यार२ इखुकार, त्रेसो अति  
 सुंदर वहा सकार मजार ॥ ८ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी इह सुजगीस ॥ कंचन गिर  
 वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढ्य, वीस सत  
 रसो आढ्य ॥ सतर मदानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥  
 जंबू प्रमुख दस रुस्क, इग्यारसै सत्तर सुस्क ॥ कुंरु त्रणसय असी  
 ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं,  
 वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थंकर प्रतिमा युणियै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख  
 सहस बलि ज्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरबाजै सब  
 मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन  
 खरका रे, दोयसै निव्यासी कयरुका ॥ दिव प्रतिमा ग्यान कहीजै



रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरैस बेतालीस कोमी रे,  
अमवन लख अधिके जोमी ॥ बत्तीस सदस अधिक कदीयै रे,  
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ बाळ ॥ ६ मी ॥

जोइस बितर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥  
पायकमल तेइमा नित प्रणमिबै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥  
विनय करी जिन प्रतिमा वंदिबै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्र-  
तिमा चोविद देवता, बलिव विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥  
जिनप्रतिमा बोली जिन सारणी, दित सुख मोक्ष निदानो जी ॥  
जवियणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रवानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥  
जीवाजिगम प्रमुख मांदि जाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥ ४ ॥  
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संधुण्या जिनवर तणा, चिहुं  
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुदावणा ॥ वाचनाचारिज  
समयसुंदर गुण जणें अजिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो  
सदा मुज परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब  
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥  
प्रज्जूजी विराजै रे सूरत बिंदै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥  
जगदितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीहृदरथ नृप गेह ॥ श्रीवज्र  
सोहे रे लांगन सुंदरू रे ॥ कनक वर्ष प्रज्जु देह ॥ २ ॥ ज० ॥  
विषय निवारी रे संजम संग्रहो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घना-  
घन जिम धम वरसता रे, विचरया त्रिजुवन जाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

चदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर  
 निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥  
 संप्रति कालै रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन  
 लहियै रे प्रभु सुप्रसादधी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज० ॥  
 श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, डुकृत दूर पुलाय ॥ इंडिय निग्रह  
 सुग्रह संपजै रे, समकित पिण्ड दृढ आय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसङ्ग-  
 रुना मुखधी सांजिहवा रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे  
 निज चित्तमें थरवा रे, नेमी सुत नार्हवास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य  
 कराव्युं रे सुंदर सोजतो रे, मनधर अधिक मलास ॥ शीतल प्रभुनो  
 रे बिंब अनारविबो रे, सहस्रफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस  
 अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मजार ॥ उज्जल द्वादशी दि-  
 वसे जाबियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी  
 सहु मेले अया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-  
 दनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाज सूरि-  
 श्वर बीषता रे, श्रीखरतर गड नाल ॥ तास पसाय में शीतल जिन  
 धुएया रे, विबुध क्लमा कल्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल  
 जिन स्तवनं ॥

### ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारे हूं तो भरवा गइयां तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हारे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवरुलो  
 चलचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारे मुंने आस्यै कोइयक  
 समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुली तव आस्यै महारी सबि वगे रे  
 लो ॥ १ ॥ हारे कोइ दुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथ जो, उल-  
 वस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारे मारे स्वामी सरि-  
 खो कुण ठै डुनियां मांह जो, जइये रे जिम तेहने घर आस्या

करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे लस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध  
 जो, गली रे सी करवी तेहथी गोठमी रे लो ॥ हारे कांड जूवूं खाई  
 ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतमी रे लो  
 ॥ ३ ॥ हारे प्रभु अंतरजामी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि  
 जाण्यो कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत  
 बल्लभ जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिब सायरू रे लो ॥ ४ ॥  
 हारे प्रभु लागी मुऊने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी  
 दोइ उजोगलो रे लो ॥ हारे कुण जाणें अंतर गतिनी विण माहा-  
 राज जो, देजे रे हसी बोलो ठंमी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे  
 मुखने मटके अटक्यूं आहरो मन्न जो, आंसरुली अणियाली का-  
 मणगारीयूं रे लो ॥ हारे आरे नयणा लंपट जोवे खिण २ तुज जो,  
 राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा  
 ते पिण जाणज्यो करीनें इजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाजं  
 वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो,  
 गिरुआ अइ मन आंणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरै रतियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोहुं  
 रे ॥ उत्तंग तोरण देहरूं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥  
 रा० ॥ १ ॥ चौबीस मंरुप चिहुं विसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा  
 च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नही  
 संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल,  
 मांरुयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जोंयरा रे लाल, सूतां  
 ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो  
 देस मेवारु ॥ म० ॥ लख नवाणुं लगाविथा रे लाल, धन धनो  
 पोरवारु ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

खंतां सुखं थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल,  
 जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतार्थ हुं थयो  
 रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरंतणी रे  
 लाल, दूर गयूं डुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल ठियं-  
 तरे रे लाल, मिगसिर मास मऊार ॥ म० ॥ राणपुरै यात्रा करी रे  
 लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री  
 राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गुंनारै पैसतां जी, पाप पमल गयां दूर रे ॥  
 मोहन मारूदेवीनो लामलो जी, देगे मीगे आनंद पूर रे ॥ स० ॥  
 ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोमाकोमी हीण  
 रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, बीरज अपूरवनो घर  
 लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ ज़ुंगल ज़ांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात  
 मोहनी सांकल साथ रे ॥ धार ऊघामा सम संवेगना जी, अनुजव  
 ज़वनें बेढो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं  
 जी, साधियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रज्जुगुण अनुमोदना  
 जी, दिगुण मंगल आव अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंल  
 पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण रूएह  
 मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधान रे ॥ ५ ॥ दो गुरु  
 ज्ञावपूजाने पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पणिं ॥ ६ ॥  
 कारण जोगें कारज नीपजै जी, कमा विजय जिन आद्र ॥ माय  
 ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥ ॥ ७ ॥ जि

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवनं च ॥ सामाचारो

आदि जिनेसर अरज सुणोजै, मोहन रू० ॥ ८ ॥ जाण  
 दिखरंजन प्रज्जु दरसण दीजै, न्हारो मनमो खोल ॥ रतने काग

प्रभु दरसन लहिवो जग डुरलज, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥  
 जे दरसन विन किरिया पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥  
 नय एकांते दरसन थापै, पिं नरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति  
 आलापै, ते झूला जव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्था-  
 द्दादने संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगै,  
 सिद्धमरणे रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जव कोराकोरीमें जमतां, तुज  
 दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज जले  
 हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटकौ, जो  
 जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण  
 उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्यामी दर-  
 सण दीजै रे ॥ लाजउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजै  
 रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं ॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते सांजलतां  
 ऊपनी रे, रुचि तिए पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥  
 तारज्यो दीनदयाल, अ० ॥ ता० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जे-  
 रे ॥ ते रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्ता तनय  
 रा० ॥ ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्ता वसु रे, लहि का-  
 च्यार ॥ रंग ॥ निज पदकारक प्रभु मिळ्या रे, होय निमित्तम जोग  
 संसार ॥ म० ॥ ३ ॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंद नि-  
 मांरयो अष्टापद प्रभु जेके जवि लहे रे, आतम शक्ति संजाल ॥  
 ऊठ सवेर ॥ म० ॥ निकारण पद कर्तापणें रे, करि आरोप अजेद ॥ निज  
 देस मेवार ॥ म० ॥ ४ ॥ रे, करै अनेक जमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥  
 पारवार ॥ म० ॥ ५ ॥ नूरे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

अमल अखंन अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख ब्रम  
 टट्यो रे, ज्ञास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अजिलाखीपणो रे, कर्त्ता  
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे,  
 व्यापक ज्ञोक्ता ज्ञाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्यं निज  
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा ज्ञासन रमणता रे, दानादिक परिणा  
 म ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०  
 ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद्र  
 सुख सागरू रे, ज्ञावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री  
 अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोचन वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोम्ही वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूरु  
 कपट मूंकी करी जी, वात कडूं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ सु  
 ऊ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिभुवन धणी जी,  
 मुऊने डुत्तर तार ॥ क० ॥ २ ॥ जवसायर जमतां थकां जी,  
 दीठां डुख अनंत ॥ ज्ञागसंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत  
 ॥ क० ॥ ३ ॥ जे डुख ज्ञांजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुस्क ॥  
 परडुख जंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने धो सुस्क ॥ क० ॥ ४ ॥ आलोचन  
 लीधां पखै जी, जीव रुखे संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह  
 सुण्यो अधिकार ॥ क० ॥ ५ ॥ दूषमकालै दोहिलो जी, सूधो गुरु  
 संयोग ॥ परमारथ पीठै नही जी, गरुरप्रवाही लोक ॥ क० ॥ ६ ॥  
 तिण तुऊ आगल आपणा जी, पाप आलोचं आज ॥ माय  
 बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ क० ॥ ७ ॥ जि  
 न धमर सहू कहै जी, आपै अपणी जी वात ॥ सामाचारो  
 जुइ जुइ जी, शंसय पर्यां मिथ्यात ॥ क० ॥ ८ ॥ जाण  
 अजाणपणे करी जी, बोड्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग

जन्मावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ क० ॥ ए ॥ जग-  
 वंत ज्ञाण्यो ते किहा जी, किहां मुऊ करणी एह ॥ गज पाखर  
 खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ क० ॥ १० ॥ आप  
 परंपुं आकरो जी, जाणो लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो  
 जी, मासाहस दृष्टांत ॥ क० ॥ ११ ॥ काल अनंत में लह्या जी,  
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पानिया जी, किहां जइ करूं  
 पुकार ॥ क० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-  
 विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ क० ॥ १३ ॥  
 सहज पड्यो मुऊ आकरो जी, न गमें जूंकी वात ॥ परनिंद्या क-  
 गंता थकांजो, जायै दिन न रात ॥ क० ॥ १४ ॥ किरिया करतां  
 दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखै धंदे पड्यो जी,  
 नरकै करसी रीव ॥ क० ॥ १५ ॥ अणहूंत गुण को कहे जी, तो  
 हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख जली दिवै जी, तो मन आणूं  
 रीस ॥ क० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, परंजण उपदेश  
 ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ क० ॥ १७ ॥  
 सूत्र सिद्धांत बखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक  
 मनमांहे ऊपजै जी, मुऊ मरकट वैराग ॥ क० ॥ १८ ॥ त्रिविध  
 २ कर उचरूं जी, जगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ ज्ञाजू वली जी,  
 दूटकवारो दूर ॥ क० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधां  
 आरंज कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जो, देवदया पर लोम  
 ॥ क० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंम ॥  
 कूरु कपट बहु केलवी जी, व्रत कोधा सत खंम ॥ क० ॥ २१ ॥  
 अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लाग़ा घणा  
 जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ क० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं  
 जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विटंवन सी कहूं जी, ते तूं जाणो

सरूप ॥ क० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको  
 लोभ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो जो, न चढी संजम सोभ ॥ क० ॥  
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीजो जन दोष ॥ में मन  
 मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ क० ॥ २५ ॥ इण जव  
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिछामिडुकरं  
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ क० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कहा  
 जी, प्रगट अघारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, वगस २ माइ  
 वाप ॥ क० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार वै एतलो जी, सरदहणा वै शुद्ध ॥  
 जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ क० ॥ २८ ॥  
 रिषजदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया  
 आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ क० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-  
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडुकरं जी, देतां  
 दूर पुलाय ॥ क० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिव  
 तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥ क० ॥ ३१ ॥  
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,  
 करजोनि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य  
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद  
 सुसीस वाचक समयसुंदर गणि जणें ॥ ३१ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदधनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रूपज देव, जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए चाल ॥

रूपज जिनेसर प्रीतम, माहरो रे, नर न चाहूं रे कंत ॥

रीज्यो साहिव संग न परिहरेण, जांगे सादि अनंत ॥ क० ॥ १ ॥

प्रीत सगाई रे जगमां सहु कंठे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत



सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ३० ॥ १ ॥  
 कोइ कंत कारण काष्ट नृक्षण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए  
 मेलो नवि कहियै संजवे रे, मेलो ठाम न ढाय ॥ ३० ॥ ३ ॥ कोइ  
 पति रंजन अति धणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति  
 रंजन में नवि चित धर्युं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ४ ॥  
 कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥  
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ३० ॥ ५ ॥  
 चित प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंभित एह ॥ कपट रहित  
 अई आतम अरपणा रे, आनंदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

## ॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मारुं मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥  
 जे तैं जीत्या रे तेणो हुं जीतियो रे, पुरुष किस्सुं मुऊ नांम ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, झूलो सयल संसार ॥ जेणें  
 नयणो करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥  
 पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारें  
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही गाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क  
 विचारें रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते  
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारें रे दिव्य  
 नयणतणो रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,  
 वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ पद लबधि लही पंथ निहालसुं  
 रे, ए आस्था अविखंड ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे,  
 आनंदधन मत अंध ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संजव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रभू जेद ॥ सेवन  
सेवन कारण पहली भूमिका रे, अजय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥  
जय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ खेद  
प्रवृत्ति हो करतां आकिये रे, दोष अवोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥  
चरमावर्त्त हो चरम करण तथ्या रे, जव परणति परिपाक ॥ दोष टले  
चली दृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन वाक ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय  
प्रातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यातम श्र  
वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण  
जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण  
कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ सुग्ध सु  
गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित से  
वक याचना रे, आनंदघन स्वरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसणं दुर्लभ देव ॥  
॥ मतर जेदे रे जो जइ पूजिये ॥ सहु थापै अहमेव ॥ अ०  
॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिस्सण दोहलूं, निरणय संकल विशेष ॥  
मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥  
॥ हेतु विवादे हो जूझ धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥  
प्रागम वादे हो गुरुगम दने ठेही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥  
॥ घाती डूंगर आमा अ० ॥ २ ॥ तुज दरिस्सण जगनाथ ॥ घी  
ठाइ करी मारग संचरूं, सेंगुषण अ० साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिस्  
ण रटतो जो फिरूं, तो रण ॥ जो पोता ॥ जेहनेहु प्राप्ता हो अ

सृत पाननी, किम ज्ञाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे  
हो मरण जीवन तणो, सीजे जों दरसन आज ॥ दरसन डुबे  
न सुखन कृपाथकी, आनंदधन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि-  
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सु-  
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत-  
मा, वहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर-  
मातम अविच्छेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक अ-  
हो, वहिरातम अथ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर  
हो, अंतर आतम रूप ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण  
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिंइय गुण गण मणि  
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ वहिरा-  
तमतज अंतरआतमा, रूपसुग्यानी अइ थिर जाव ॥ परमातमनू हो  
आतम जाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ-  
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरम टले मतिदोष ॥ सु० ॥ परम  
पदारथ संपति संपजै, आनंदधन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन भो-  
दे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णताम जोगेनता सोहे रे ॥ शी०  
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी कमल लवर्णि विदारण तीक्ष्ण रे  
ज्ञानादाना रहित परणामी, ज० नीवे तां विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २  
॥ परदुःख वेदन इच्छा क० ६ ॥ इति श परदुःख रीजे रे ॥

जता उज्जय विलक्षण, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ  
 जयदान ते मल कय करुणा, तीक्ष्णता गुण जावे रे ॥ प्रेरणा  
 विगु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥  
 शक्ति व्यक्ति त्रिजुवन प्रजुता, निग्रंथता संयोगे रे ॥ योगी जोगी वक्ता  
 मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जं  
 ग त्रिजंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,  
 आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न वाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिमर ज  
 सन करीनें राखूं, तिमर अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज  
 नी वासर वसती ऊजम, गयण पायाले जाय ॥ सांप खायने मुखरुं  
 थांथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा  
 अजिलापी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अज्यासे ॥ वयरीरुं कांइ एहवुं  
 चितै, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम  
 घरने हाथे, नावै किण विध आंरू ॥ किहां कणे जो इठ करी इठकूं,  
 तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो उग कहूं तो  
 उग तो न देखूं, साइकार पिण नांही ॥ सर्वमांइ ने सहुणी अ  
 लगूं, ए अचरिज र मांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते  
 कान न धारे, आप पते रहे कालो ॥ सुरनर पंरित जन समजावै,  
 समजै न माहारो ॥ ओ हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ मे जाण्युं ए  
 लिंग नपुंसक, सकल पांरदने ठेले ॥ बीजी वार्ते समरथ ठै नर,  
 एहने कोई न जेले ॥ ॥ ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स  
 गलूं सध्युं, एह वा ॥ ॥ तोपिण अ ॥ ॥ साध्युं ते नवि मानूं,  
 ए कहि वात ठे मोटा ॥ ॥ ३ ॥ जो पोतानो ॥ ॥ मनहुं ॥ ॥

चस आणुं, ते आगमंथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रज्जु माहरो आए  
तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिकमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ कुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै, जवना संधित पाप परा  
मेटियै ॥ मन घर जाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहूंसे  
कोमि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरूं प्रज्जु दूरथकी में ताह  
जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ जव २ तुमहीज  
चरण हूं स्त्रि धरूं, जवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ ३  
जुख त्रिपा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम जार  
णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत धा  
एहिज वै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसल विण स  
जवोदधि हूं फिरयो, सहोया डुक्क अनेक न कारज को सरथे  
मिलिया हिव प्रज्जु मुऊ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर ज  
जल लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सै  
कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रथण जिम दीप  
जयघंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १ कुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन जुवन चार ताज ॥ आठे  
नगर ब्रह्मानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिवि प्रधान, निर  
सुगुण निधान ॥ आठेलाज, वामासुत वरुण ॥ याजी ॥ २ ॥  
कनी संजाज, करिय खरी ततकाज ॥ वि  
पण्डिरया जी ॥ ३ ॥ जीवेता विद्वा पढ्यो आनंद ॥  
॥ परउ-चाट विदु, का ६ ॥ इति परउ ॥ प्रज्जुजीने पर

वीता सहु विखवाद ॥ आठेलाल, मन वंछित मुऊ सहु फट्या जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी आप, मिलिया ठो प्रजु आप ॥ आठेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस कमा-  
कळयाण ॥ आठेलाल, वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसावाणी रे ॥ त्रामासुत वरदाय,  
निरमल नांणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रजु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥  
तीन कमल मुऊ संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख,  
चंद लजाणूं रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आंशूं रे ॥ ३ ॥  
सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविलास,  
आल ज्युं ठाजै रे ॥ ४ ॥ प्रजु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे ॥  
ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार,  
श्रीजिन गया रे ॥ साचै पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रजु-  
गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाढ्यो पातिक पंक, आतम संगे रे  
॥ ७ ॥ वरस अठार चोतीस, बदि बैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम दीस,  
सहु संघ साखै रे ॥ नगर महेवा मांदि, पास जुहारया रे ॥ श्री-  
जिनचंद मुखिंद, वांछित सारया रे ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमी  
चाराय ॥ प्रगट थई पातालजी गोमीचा, सेवक जिन साधार हो  
गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसन देखण  
काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ दो दरसन महा-  
राज हो ॥ गो० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो  
वै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति क-  
रवा सेव हो, गो० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवमो, गो० ॥ सगली

प्राति सदीव हो, गो० ॥ उंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो  
जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीठां ते  
न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां  
उलहाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कालै वाढ्यै माहरे, गो० ॥  
कीधी खरी सज्जीम हो ॥ गो० ॥ दरसन देवानी नकी, गो० ॥  
पाणीवलि पिण दीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं  
करै, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर  
संझारज्यो, गो० ॥ इम जंयै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्व-  
मेन वामाजीके नंदन, त्रिजुवनजन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण  
गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जव अ-  
टवी वन घन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥  
दीनदयाल दया कर दीजै, अनुजव गुण अजिरांमी रे ॥ चरणकमल  
सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वशेन  
वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें  
अहिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन-  
मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेव-  
गकी येही अरज हे, जव दुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अंजव सुरंग ३ तूय ॥ सवाइ अजु-  
जी, घांरी सावली सूरत म्हांनु प्यारी लागे सज ॥ वामाजी नंदन  
बांदवा, चितनामें लागी ठे चूंय ॥ सवाइप्रजुजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रज्ञू आंखमी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ आं०  
 ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उड्हास ॥  
 स० ॥ आं० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा  
 नेधि करतार ॥ स० ॥ आं० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीयो, दिल  
 प्रीदार ॥ स० आं० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो  
 प्रमाण ॥ स० ॥ जगतवच्चल जल जेटियै, जिनवर चतुरसु-  
 ॥ स० ॥ आं० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगद जयो, श्रीचिं  
 तामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंडनी, अविचल पुरो जी  
 आस ॥ स० ॥ आं० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम  
 विन देख्यां एक घमी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे  
 अमारा हीयरुलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास ठियै निर  
 धार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि०  
 ॥ चंद चकोरा जलघर नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण  
 तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधोजिम तिम करि  
 नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥  
 आपो जव२ चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरी-  
 नें आवे जे तुह्य पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास  
 म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी आयै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांणि-  
 ने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो सु  
 पर निवर सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी ठिट ॥ म्हारा जि० ॥  
 म्हारा जि० ॥ खर गजपति श्रीजिनलाज स  
 पसार्ये पनर्णे ३ पुमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ जमे, ध्यान धरु पल ३ मे ॥



॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने  
 मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं बै प्रभूजी म्हारो अंतर  
 जामी, पूरव पून्यै आरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिव में तो तु-  
 ज्जनें जाण्यो वै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज  
 ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभु  
 जीस्थुं वधज्यो प्रीन सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी ताह-  
 रो दिलमांहे वसियो, रात दिवस आरा गुणनो वूं रसियो राज ॥  
 सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर वूं खासो, कदिय न मेलूं  
 प्रभुजी पलजर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरे राज मोटा क-  
 हीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहोजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥  
 पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे  
 रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्थुं  
 प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये  
 जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजि-  
 नचंड सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे जवजल तारो राज ॥ सु०  
 ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत आरी लागे प्यारी ॥ दीम  
 आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रभु, तिम२ बाधे प्रीत ॥  
 तन मन मारा नलसै कांइ, रुमी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण  
 ल पांखमी प्रभु, मुखनो पूनमचंद ॥ दीपंशीखासी नासिका  
 ॥ श्रीध्यानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ काने कुंमल जिगमिगे प्रभु,  
 जी, आरी सावर्ल। संपकली सोहे नली कांइ, जिवमै ज्योत अपार  
 वांदवां, चितनामै लागी थे वालहो प्रभु, आणूजी वग कोम ॥ म्हारो

तूहिज साहिबो कांइ, वंदू बे कर जोर, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज  
मनोरथ सब फलया, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा  
कांइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसन वहिलो दीजै ॥ दीजै  
२ जी मोहाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंरणी ॥ मुज मन  
जमरतणी पर मोह्यो, बोलायो नचि बूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण,  
ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने,  
नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जाणूं जइ  
मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरब पुन्यथकी में पायो, ए अवसर  
आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सलूणो  
॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग ठै बहुला, मो सरिषा लख ग्याने,  
माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥  
आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही जाखूं ॥ अमृत जेम  
लही तुज गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन  
ए मुझानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालाने  
गिणतां, कहो कुण मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपणै किंचित  
गुण जाखूं, हूं म्हाारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुज गुण  
लायक, त्रिजुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अठार वली  
इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे,  
यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं,  
मेलों तिहां मंसाये, सखाज उदय जिनचंदने प्रभुजी, वांध्यो प्रेम  
सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पल १२में ॥

धास जिनेसर अंतरंजामी, सेवा कहुं ठिनंशमें ॥ तूं० ॥ १ ॥ की  
हूको मन तरुणीसैं राख्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु  
तुमहीसे राख्यो, ज्युं चात्रक चित्त धनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर  
तेरो गति जांशै, अखख निरंजन ठिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर  
तूही, साहिव तीन जुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ ज्ञाव  
दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध  
अया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण जरतमां ॥ कुण करशे उप-  
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे  
संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥  
मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अग्रमाय ॥ वीर विहूणा  
जीवमा रे, आकुल व्याकुल आयो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय  
वेदक वीरनो रे, विरह ते केस खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे,  
ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक जवसमुझनो रे,  
जव अटवो सबवाह ॥ ते परमे उरविश भिड्यां रे, किम बाधे नत्साहो  
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अकां पण श्रुन तलो रे, हुंतो परम आधार ॥  
हमणां श्रुत आधार ठे रे, एं जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥  
इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि-  
जना रे, जिनपदिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचं-  
रिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव  
चंड पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवन ॥

॥ शत्रुंजय रुषज सश्रोसरथा, जला गुण जरया रे ॥ सिद्ध  
साधु अनंते, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां अयां, मुगे

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,  
गिरिसेहरो रे ॥ नरते नराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति,  
जलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥  
समेतशिखर सोढामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थकर वीश  
॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा-  
सुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरो, रुद्धे नरी रे ॥ मुक्ति  
गया महावोर ॥ तो० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥  
अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें  
रे ॥ अरिहंत देहरां आव ॥ तो० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो  
रे ॥ फलोधी घंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ-  
मीऊरो रे ॥ जीरावलो जंगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,  
जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनामुलाई जादवो,  
गोमी स्तवो रे ॥ आवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां,  
बावन जलां रे ॥ रुचक कुंमल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती  
अशाश्वती, प्रतिमा बती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ  
जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सदीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धा-  
चलगिरि जईए बहेनी, विमलाचलगिरि जईहं रे ॥ आ० ॥ सुण  
बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनं इम जांखी ॥ नरतादिक  
नरपतिने आगल, इंदिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणा गिरि  
खिरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीया ॥ जन्म मरणनां दुःख  
गोमीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-  
मुख पगलां नरतां, आतम शुद्ध सुजावें ॥ कोमि नवांरां पातक  
कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेरु

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन जुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कौड़  
 जे दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जीरंजनगुं नेह धरीने, आगे नलग क-  
 रस्यां ॥ अन्नत आदि जिनैसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥  
 ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पंचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ प  
 हिरावी प्रभु कंठे लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥  
 गहिर स्वरे जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करिये ॥ मन गमती  
 जमती विच जमतां, जवसायर निसतरिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव  
 नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रुंसे आया ॥ ए तीरथ शुभ जावें  
 फरसी, करिये निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज नदे ए गिरि  
 वर लहिये, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल,  
 प्रेम घणो चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री प्रहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥  
 मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनु  
 मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ आवक अच्युय गति लहे, नवयैवेका  
 हेठ ॥ १ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशा  
 लापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इ  
 ग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या  
 श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, जले में जेव्या श्री  
 जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे जाग्य अनोपम माय  
 ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो ठे देहरो जी, तिहां प्रभु कानसग ली  
 थ ॥ पञ्चकाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीथ ॥ ज० ॥ ३ ॥  
 जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले आवकधर्म ॥ आकारे तिण नल  
 ख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवा  
 सीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धसान ॥ काले संद प्रभु जीमस्ये जी,

सै हथ देख्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, हो  
 सी सकल मुज आस ॥ पक्ष मास गिणतां अकां जी, पूरी थइ चो  
 मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइ  
 थार ॥ प्रभुनो मारग देखतो जी, बेगो घरने वार ॥ ज० ॥ ७ ॥  
 घर आवे ठे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रभुजी कां न  
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीठे करस्युं  
 पारणो जी, हूं प्रभूने पमिलान्न ॥ होथ मनोरथ एहवो जी, तोथ  
 विन वरसे आन ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतर ऊज्या गोचरी जी, श्री  
 सिद्धारथपुत ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुंच ॥ ज० ॥  
 १० ॥ मिश्रवात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेनी प्रते  
 इम कहे जी, कांइक निका देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू जरने वा  
 कला जी, प्रभूने आंगी दीथ ॥ नीरामी तेही लिया जी, तिहां प्र  
 भू पारणो कीथ ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुनि जी, जै बो  
 ले कर जोमि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढोवारे कोमि ॥  
 ज० ॥ १३ ॥ कहो सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥  
 लोकां प्रते इम कहे जी, में वडिराइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा  
 दिक् सहूए कहे जी, धन९ पूरणसेठ ॥ उंची करणी तेंकरी जी,  
 अवर सहू तुज देठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ ज़ीरणसेठ सुणे तवे जी, वा  
 जित डुंडुनिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रभु नहि ॥ मनमें थयो  
 विपत्ताद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अज्ञागियो ज, न आया  
 सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पांसीये जी, मारुमंरुल ठांम ॥ ज० ॥  
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ निर  
 थन जिमर चिंतवे जी, तिमर निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा  
 मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास  
 संतानिया जी, तिहां न केवलधार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशालापर

राजियो जी, लोकास्थुं आणंद ॥ राय प्रभू पूछे इस्यो जी, सुगुरु  
 चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठें जी, जीव पु  
 न्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥  
 २१ ॥ राय कहे किए कारणो जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो  
 जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे  
 केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न  
 कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण  
 घाढ्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०  
 ॥ २४ ॥ घनी एक सुर डुंडुजि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-  
 नो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥  
 राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुकनगरमें था  
 पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ २६ ॥ दांन दियो सु-  
 पात्रने जी, तें निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,  
 जीरण जिम फल आय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना  
 जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, नेहने नमे सु  
 नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोचन जीवरासि खभावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ दिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो ज  
 ग दोहिलो, इण जगतअवि ॥ ते मुऊ मिच्छामिडुक्कं ॥ १ ॥ अ-  
 रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु०  
 ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते  
 क्कायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव  
 दे लाख साधार ॥ वि ति चउरेंदी जीवना, वे वे लाख विचार  
 ते० ॥ ४ ॥ देवता तीर्थच नारकी, ज्या प्रकाशी ॥ चवदे लाख  
 मनुष्यना, प लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणअव परअव

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध करवोसकं, डुरगति दातार ॥ ते०  
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोड्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादां  
 नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो, की  
 धो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, बलि राग ने द्वेष  
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूमा कलंक ॥ निं  
 द्या कीधो पारकी, रति अरति निस्तंक ॥ ते० ॥ ए ॥ चामी की  
 धी चोतरे, कीधो थांपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, जलो आं  
 एयो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकोने जव जे किया, जीवना  
 वध घात ॥ चिमीमार जव चिन्कला, मारधा दिन ने रात ॥ ते०  
 ॥ ११ ॥ माढीगर जव माढला, जाड्या जलवासा ॥ धीवर जील कोली  
 जवे, मृग मारधा पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुछाने जवे, पढी  
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥  
 १३ ॥ कोटवालजवमें किया, आकाराकर दंरु ॥ वंदीवान मराविया,  
 कोरमा ठनी दंरु ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार  
 की डुरक ॥ वेदन जेदन वेदना, तारुना, अति तिस्कं ॥ ते० ॥ १५  
 ॥ कुंजारने जव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीजव तिल पि  
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख  
 रुया, फाड्या पृथ्वी पेट ॥ सूराने दान किया घणा, दीधा बलध  
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल  
 पत्र फूल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही  
 धका जार ॥ पोठी छंड कीमा पड्या, दया ना  
 १९ ॥ बीपाने जव बेतरयो, कीधा रांगणपास  
 या घणा, धातुरवाद अज्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर  
 माणस वृक्ष ॥ मदिरा मांत माखण जरव्या,  
 २१ ॥ खाण खिणार् धातुनी, पाणा



आपणे आनक पढुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाहू, हींमे तुरकने  
 जोतो जो ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जानो दीठो गोठी, चोखा तिल  
 क निलामे जी ॥ संकेत पढुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लामे  
 जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुळ घर प्रतिमा तुंजने आपूं, श्रीपास जिने  
 सर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुळ आपे, तो मोल न मांगू फेरी  
 जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, धानक पढुतो रंगे जी,  
 केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी  
 रूमी रूमी कीधी, ते मांदि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या  
 पारकरमांहे, श्रीसंधने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उच्चव दिन  
 धिका आये, सत्तर जेद सनात्रो जी ॥ ठांमरना दस्सण करवा,  
 लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ वुहा ॥

दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो जंग ॥ जतन करूं  
 तीरथ अठे अजंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सैठने, थल,  
 ॥ महिमा आस्ये अतिघणी, प्रतिमा तिहां पढुचामा ॥  
 कैम तिहां अठे, तुंजने मुंजने जांण, संका ठोमी  
 श्रीस कांण ॥ २४ ॥

॥ वाळ ॥

वाहण एक वृषेज जोतरे ॥ पार  
 बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ वारे कोश  
 जी मनहनि सणो थइ,  
 किम करूं प्रगाण, कुढ  
 तणो, मंमाजं कि  
 किहा, सिलावटो  
 पकराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूंदली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहा ॥  
 स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पादणतणी जलटस्ये खांण ॥ २९ ॥  
 श्रीरुख सजल तिहां किण जुन, अमृत जल निसरिस्ये कूड ॥ खा  
 राकूआनो इह सहनांण, जूमि पड्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सि  
 लावटो सीरोही वसे, कोढ पराज्जवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं  
 इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन  
 थिर थापियो, शिलाचटाने सुहणो दियो ॥ रोग गमानं ने पूरुं आस,  
 पासतणो मंमे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांदि मांन्यो ते वेण, हेम  
 वरण देखाज्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया  
 तेरुवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखांर घृत चूरमो ॥  
 धमे घाट करे कोरणी, लगन जले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज २  
 कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंरुप रलियामणो  
 रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग  
 समो मंमे आवास ॥ दिवस विचारी इमो घड्यो, ततखिण देवल  
 ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुज लगन शुज वेला वास, पद्मासण वेठ ॥  
 श्रीपास ॥ महिमा मूढीजेरु समान, एकलमय जामे रहे वांन ॥  
 ॥ ३७ ॥ वात पुरी मंगलं स्थलेली, तवन नोधमो सांकली ॥  
 गोठीतणा गोतरिया आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

(मेष्टि जमस्कारं, सारं नमो जपो निश दीश

॥ जसमराप्यहं ॥ १ ॥ शो नवे निधान ॥ २ ॥

विघन विरु, जु न

श्रीसंघने, देखामे

अरथ जंमार ॥ २ ॥ न गो

नील पलाणे नील ॥

बाट दिखावणदा

वीला संपजे ॥ गौतम नामे

२ ॥ जे वैरी विरुआ वंक

नवि मंमे प्राण, ते गौतम

निरमल काय, गौतम नामे

प्रति अपार, बोधा ॥ ३ ॥ गौतम नामे जय २ का

॥ શ્લોક ૪ ॥

ધરણ અઢારતણો લહે જોગ, વિધન નિવોરે ટાલે રોગ ॥ ૪૧ ॥  
 વિષ્ણુ અઢ સમરે જે જાપ, ટાલે સગલા પાપ સંતાપ ॥ ૪૨ ॥ નિર  
 ધનને ઘર ધનનો સૂત, આપે અપુત્રિયાને પૂત ॥ કાયરને સૂરાપણો  
 ધરે, પાર જતારે લઢી વરે ॥ ૪૩ ॥ દોઝાગીને દે સોઝાગ ॥ પગ  
 વિઠ્ઠાણને આપે પાગ ॥ ઠાંમ નહી તેદને થે ઠાંમ ॥ મન વંઠિત પૂરે  
 અઝિરાંમ ॥ ૪૪ ॥ નિરધારાને થે આધાર, જવસાયર જતારે પાર ॥  
 આરતિયાની આરત જંગ, ધરે ધ્યાન તે લહે સુરંગ ॥ ૪૫ ॥ સમરથાં  
 સાદ દિયે જક્કરાજ, જેદના મોટા અઢે દિવાજ ॥ બુદ્ધિહીનને બુદ્ધિ  
 પ્રકાશ ॥ ગૂંગાને થે વચન વિલાસ ॥ ૪૬ ॥ હુલિયાને સુલનો દા-  
 તાર, જયજંજણ રંજણ અવતાર ॥ બંધન તૂટે બેસીતણા, શ્રીપાર્શ્વ  
 નામ અક્કર સમરણા ॥ ૪૭ ॥

॥ દૂહા ॥

શ્રીપાર્શ્વ નામ અક્કર જપે, વિશ્વાનર વિકરાલ ॥ હસ્તિયુદ્ધ  
 ટલે, હુલ્હર સીંદ સિયાલ ॥ ૪૮ ॥ ચૌરતણા જય ચૂકવે, વિષ  
 ત ઝમકાર ॥ વિષધરના વિષ જતારે સુંગ્રામે જય જ્યાર ॥ ૪૯ ॥  
 રાગ શોગ કરી દોહગ દૂર ૨૪ ॥ મસર શ્રીપાસનો, મ-  
 હિમા ॥ શ્લોક ॥

વાહણા એક વૃ

બીજે જતારે ॥ શ્રીપાર્શ્વ અક્કર જ

ની મનાર ફકવીસ ગુણંતે

તાવ એકંતરા હુ

વાલ મેવાજવંતે

, ફોટકા મોટકા

વિશ્વાનર સિયાલ વિ-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ ॥ धरलेंड पद्मावती संमर सोजावती, वाट  
आघाट अटवी अटते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥  
संयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ अष्ट महाजय हरे  
कानपीमा टले ॥ ऊतरे शूल शीसग जणंते ॥ वडत वर प्रीतसुं  
प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नांम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति  
श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं  
संति, जस्त धम्मो सयामणो ॥ १ ॥ जहा डम्मस्स पुप्फेसु, जम  
आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ वती  
मस्स। वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुं सदा

॥ ३ ॥ वयं च वि त्तिं लभामो ॥ नहि मानुषोने  
हागमे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ नहि मुक्ति  
जवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिं रयादितं ॥ ५ ॥ उदय

॥ ६ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगळ्यं, दास जांणी  
सर्वधर्माणां जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मं  
प्रभु ॥ मंगलं स्थलज्जया, जैनोधर्मो

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥  
ॐ नमो परमेष्ठि जमस्कारं, सारं न नाम जपो निश दीश

॥ १ ॥ शो नवे निधान ॥  
॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंक  
नवि मंरे प्राण, ते गौतम

॥ ३ ॥ निरमल काय, गौतम नांम  
॥ ४ ॥ सव पावप्पणास प्रति अपार, बोध, ॥ १ ॥ गौतम नांम जय ॥

ब्रह्मसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वादांतंच पदं ज्ञेयं, पदमं  
 हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिव्रजमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा  
 प्रजावात् रक्षेयं, कुडोपड्व नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता  
 पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य  
 नस्याज्ञयं व्याधि, राधि आपि कदाचनः ॥ ८ ॥ इति आत्मरक्षा  
 स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ ( छंद )

आर. ॥ सुखकारण ज्ञवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन  
 साद गम चवदे पूरव सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं  
 प्रकाश सुरतरु जिम चितित वंठितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव  
 तार, ज्ञ सेव करे कर जोरु, ज्ञयमंरुल विचरे तारे ज्ञवियण कोमि  
 नाम अक्षर विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं  
 हंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत, पंचमि  
 श्रीपाश अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतके  
 टले, डहर ना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छज्जार  
 त उरुकार ॥ दशशिहर शोम, कर शारणवारण गुण वृत्तीसे थोम  
 शोग न ॥ तिरोमण सागर जेम गंजरी, तीजे पद नमिये आ  
 हिमा ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र जणावे सार,  
 अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुता ते क  
 ६ नमिये अविश तेहना पाय ॥ ५ ॥ प्रं  
 आरी वारी विषय विकार  
 त्रिविधे ते प्रणमुं परमा  
 २ माइख ज्ञूत वेताल,  
 ३ समरयां संकट दूर ट  
 तीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ शैवो पास संखेसरो मन सुखे, नमूं नाथ निश्चे करी एक  
 बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गो, अहो जव्य लोको जुला  
 कां जमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गो, पञ्चा पाश  
 मे जूतमाने जजो गो ॥ सुराधेनु ठंकी अजाने अजो गो, महापंथ  
 मूंकी कुपंथे ब्रजो गो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे,  
 ग्रहे कोण राशजने हस्ति साटे ॥ सुरडुम ऊपामने आक वावे,  
 महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु  
 श्रृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य  
 देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती  
 प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा  
 जेह ध्यावे, तेहना डस्क दाखिड दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पांमी मानुषोने  
 वृथा क्यु गमो गो, कुशीले करी देहने कां दमो गो, नहि मुक्ति  
 वासं विना वितरागं ॥ ६ ॥ उदय  
 रत्न ज्ञाखे सहा ॥ ७ ॥ मोरे आज मोल नोलां ॥ ८ ॥ ६  
 ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ मि रास लिख्यते ॥

॥ गोतम नाम जपो निश दीश

वलशे नवे निधान ॥ १ ॥

दीक्षा संपजे ॥ गौतम नामे

२ ॥ जे वैरी विरुआ वंक

नवि मंरे प्राण, ते गौतम

निरमल काय, गौतम नामे

वाधे आय ॥ जे कृत अति अपार, बोध, ॥ १० ॥ गौतम नामे जयशकार

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंठित कप्पम तंबोल ॥  
 घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ  
 तम उदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा  
 मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल  
 घोसानी जोरु, बारू बिलसे वंठित कोमि ॥ महियल मानि मोटा  
 राय जो तूठे गौतमना प्राय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम  
 सरसी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे बाधे वान  
 ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे बहू ॥ कहे ला  
 वण्य समय कर जोमि, गौतम तूठा संपत कोमि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये  
 ए ॥ प्रजात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥  
 बालकुमारी जगदितकारी, ब्रह्मी जरतनी बहिननी ए ॥ घट २  
 व्यापक अकररूपे शोल शती मांदि जे बनी ए ॥ २ ॥ बाहुवल  
 जगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे रुपज्ज सुता ए ॥ अंग स्व  
 रूपी त्रिभुवनमांदि, जेइ अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला  
 बालपणेशी शीतवती शुद्ध आविका ए, उरुदना वस्त्र प्रति  
 लाज्या, केवल लहि व्रत आविका ए ॥ ४ ॥ सूत्र ज धारणी  
 नंदन राजेमती नेम वस्त्र ए, ओवन मुनिवर गुण ॥ शंजम  
 लेइ देव डुल्लजा ए ॥ ५ ॥ अङ्ग निश तेइना पाय, नदा नाम  
 वस्त्राणिये ए, एकशो आठे ॥ भारी वारी जिस जाणि  
 ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी, त्रिविधे ते ॥ ७ ॥ कौशं  
 मल सलूणी राम जनीता ॥ ८ ॥ तमरा ॥ तस घर ध  
 क ठान शनानिक नामे, ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ सुलश

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, सुखमौ जोतां पाप  
 पुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनी का  
 मण जनकसुता शीता शर्ती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अनल  
 शीतल अयो शीलश्री ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणो बांधो कूं  
 वायकी जल काढियो ए, कलंक उतारवा शतिय सुन्नझ चंपा बार  
 उधारियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद  
 गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल अइये बलिहारी तसु नांमनी ए  
 ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांमवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांमव  
 माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील  
 वती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जप  
 ता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी  
 नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पमियां शीलज राख्यो,  
 त्रिजुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता,  
 पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विधाता कामित दाता, शोलमी  
 शर्ती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र ठे साखी, उदयरत्न  
 जापे मुदा ए ॥ प्रह ऊठीने जे नर जणसे, ते लहिस्थे सुख संपदा ए ॥ १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ दृष्टवीकूख  
 रत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर ॥ व्यास वेद चतुरवीर मन्मथ अ  
 चतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ ॥ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥  
 करत धरत वात्र पात्र, विरुद विजुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत  
 प्रभु आये चंग, वाणी गुण सप्त जंग ॥ वल्ले नीर, अणगले शय  
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रि, अतिचार सधला ॥  
 वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ परहरजे स्वा ॥ इम क  
 अंग बार, स्वना कृत अति अपार, बोधा, मेणि ॥ ४ ॥ किम उपम दी



गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरम  
लीन ॥ सु.ने.मन जल चरण मीन, कुंदन द्युति सारी ॥ ज० ॥ ६ ॥  
सिद्धियोग नंद चंद, कार्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प  
कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणो इंदुजुति  
जगधणो ॥ कुशल निधान सुख जणी, पाठक रुदिसारी ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हानि प्यारो लागे ठे जी मुनिवर जेस ॥ म्हानि० हाथ  
लकनिया कांधे कंवलिया, शिर शोजित तनु केश म्हा० ॥ १ ॥  
चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्ज्वल रहत हमेश ॥ म्हा० ॥ २ ॥ ज  
यणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हा० ॥ ३ ॥ थि  
वरकलप जिनमुझधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हा० ॥ ४ ॥  
दे उपदेश जिविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हा० ॥ ५ ॥  
करतरामरुखितार वंदना, निरखत एसो जेस ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा श्रुद्ध जई, मन अरिहंत २ ध्याते हे ॥ अरि  
हंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय  
२ जय २ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत  
उधारण, सुरनर चरण लुभाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ़ स्वाते,  
अपवर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवउंडु ~~प्र~~ नाद बजाते हे, धर्म के  
ते हे सुख देते हे ॥ जविक जीऊ तिर जाते हे, जो नेश्वर मनमें  
लाते हे ॥ दशरथ नृपते रुद्रसार, तूं आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज०  
॥ सलूणी राम जनीतों दिवक करणोनी सज्ञाय ॥

तुं ऊठे परजात, चार घन्टी ले पाठली  
कार, जेम पामे जव सायर पाठ ॥ १ ॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अ  
 मारो ठे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन माय ॥ २ ॥ सामायिक ले  
 जे मन शुद्ध, धर्मनी हेम धरजे बुध ॥ पत्तिकमणुं करे खणी तणु,  
 पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ते करे पञ्चक्राण सूधि पाले  
 जिनंती आण ॥ जणजे गणजे स्तवन सज्ञाय, जिणहुंती निस्तारो  
 आय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम  
 ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, इव्यजावणी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषालें  
 गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजंतो  
 आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवत्सल करजे घणां,  
 संगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, क  
 रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं  
 मं करे अजिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखमी, धर्म न मूकीश ए  
 के धमी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उग अघिकानो परिहार ॥  
 म ज़रिशकेनी कूनी साख, कूना जनशुं कथन म ज्ञाख ॥ ९ ॥  
 अनंतकाय कहिये बत्रीश, अज्जदय बाविशे विश्वावीश ॥ ते ज़कण  
 नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो  
 जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने शु  
 लो, मधु धावमी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण  
 पोस, दूषण घणां कह्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे वेबे वार, अणगल  
 पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक ठंमी  
 करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूले जोथ, वावरजे जिम पाप  
 न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर  
 म थोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला... तणु  
 ॥ १४ ॥ कह्यां पत्तरे कर्मादान, पापतण्जे, परहरजे खाण इम कांइ  
 म लेजे अनरथ दंम, मिश्रया मेल म ज्ञां, मैणिं... किम उपम दी

ज्ञ-शुद्ध हैने राखजे, बोल विचारीने जांखजे ॥ पांच तिथि म करो-  
 आरंज, पालो शीयल तजो मन दंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध  
 ने दहिं, ऊघामां मत मल स ॥ उत्तम ठामें खरचा वित्त, पर  
 उपगार करो शुज्जित ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार;  
 चार आधार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम जां  
 ने सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर च  
 रण शरण जत्र जर्वे ॥ चरे शरण करी दृढ होय, सागारी अण  
 सण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुजे जा  
 यवा-॥ समेतशिवर आहू गरनार, जैटीश हुं धन धन अवतार ॥  
 ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, इथी अये जवनो ठेह ॥ आठे  
 कर्म पने पातलां, पा १ तणा तु आ-ला ॥ २१ ॥ वारु लहिये  
 अमर विमान, अनुक्रमे धामे शिवरधार ॥ कहे जिनहर्ष धणसस  
 नेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणोत्तर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि प  
 जणिसुं सामी साल गायम गुरुरासो ॥ मणतण वयणे एकंद कर  
 वि निसुणहु जो जवियां, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह  
 गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरिजरहखित खोणी तल मंमण, मगहदे  
 स सेणियनरेस रिजदल वलखंमण ॥ धणवर गुवर गाम नाम जि-  
 हां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुज्जू तल तसु पुहवी जज्जा ॥ २ ॥  
 ताणपुत्त सिरिइंद जूय जूवलपपसिद्धो, चवदह विज्जा विवहरूव ना  
 ॥ ३ ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सा  
 ॥ ४ ॥ नयणवयण कर चरण  
 ॥ ५ ॥ तारा चंद सूर आकास जमामिय  
 ॥ ६ ॥ मेढ्यो निरधामिय, धीरम मेरु गंजी

र सिंधु चंगम चयचामिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण  
 जंपे किंचिय, एकाकी किल ज्ञीत इह गुण मेळया संचिय ॥ अह  
 वा निचयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पनमा गवरि गंग  
 रतिहां विधि वं चय ॥ ५ ॥ नय बुध नय रर कविण कोय जसु  
 आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र ठात्र हींमे परवरिया ॥ करय  
 निरंतर यज्ञ करम मिळयामति मोहिय, अणचल हासे चरमनाण,  
 वंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव जरह वासंमि  
 खोणीतल मंरुण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुवरगाम तिहां,  
 विष्ण वसे वमजूइ, सुंदर तसु पुहवि ज्ञा, सयलगुणगणरूवनिहा  
 ण, ताणपुत्त विज्ञानिलो, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ जास ॥ चर  
 म जिनसर केवलनाणी, चोविहसंघ पइहा जाणी ॥ पाया पुर सामी  
 संपत्तो, चनविह देव निकायाहें जुतां ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण  
 तिहां किजें, जिण दोठे मिळयामत बीजे ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहास  
 सन वेठा, ततखिण माह दिगंत पइहा ॥ ९ ॥ क्रोध मानमाया म  
 दंपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डंडुजि आगासैं वाजी,  
 धरम नरेसर आब्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवां,  
 चनसठ इंडज मागे सेवा ॥ चामर ठत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जि  
 नवर जग सह मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसजर वरवरसंता, जोज  
 नंवाणि ब्रवाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर  
 किल्लर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गंयण  
 विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंडजूइ मन चिंते, सुर आवे अंम  
 यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंकु जिम ते वहिता, समवसरण पुहता  
 गहगहित ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु  
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांड  
 कोले ॥ सो आगल कोइ जाण जणीजें, मेरुं अवर किम उपम बी

जे ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर  
 महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्नहिय, समवसरण  
 बहु सुख कारण ॥ जिणवर जग उज्जाय करे, तेजहि कर दिन  
 कास सिंहासण सामी ठव्यो, हुन तो जयजयकार ॥ १६ ॥ ज्ञास  
 ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंद्रभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो कर सं  
 चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि ममोत्तरण, पे  
 खवि प्रथमारंज ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥  
 १७ ॥ मणिमय तोरणदंरु ध्वज, कोलीसे नवघाट तो ॥ वयरवि  
 वर्जितजंगुण, प्रातीहारिज आव तो ॥ सुर नर किन्नर अनुरवर,  
 इंद, इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चमकिय चितव ए, सेवंतां प्रभु पाय  
 तो ॥ १८ ॥ सहस्र किरण सामो वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल  
 तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंद जाल तो ॥ तो बोला  
 वह त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे,  
 फेरु वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद वेल करे, जगतहिं ना  
 म्यो सीस तो ॥ पंच सयांसू व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो  
 ॥ वंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नास लेइ आजास  
 करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहरयण, आप्या वीर  
 इग्यार तो ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमजुं व्रत वार तो ॥ विहुं उपवा  
 सें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय  
 कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चढियो बहुमान  
 हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि स  
 वे, चरमनाह फेरु फुरंततो ॥ बोधबीज सज्जायमनें, गोयम नवहि  
 विरत्त ॥ दिख लेई सिखा सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ ज्ञास  
 ॥ आज हुन सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य जरो ॥ दीठा गोमय  
 सामि, जो नियनयणें अमिय जगे ॥ समवसरण मज्जार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूवे मुनि पवरो ॥ २३ ॥  
 जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कर्ने अणहुंत, गो-  
 यम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय  
 ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखें रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अष्टा  
 पद सेल, वंदे चढ चढवील जिण ॥ आत्म लब्धि वसेण, चरम  
 सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर  
 संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीगो आवतो ए ॥ २५ ॥ त  
 प्रसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ  
 काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुज ए अजिमान, तापस  
 जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर कि-  
 रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निष्पन्न, दंरु कलस ध्वज वरु सहिय ॥  
 पेखवि परमाणंद, जिणहर जरेतेसर महिय ॥ निय निय काय प्र-  
 माण, चिहुं दिसि संठिय जिणह विंब ॥ पणमवि मन उच्चास, गो-  
 यम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजुं  
 जकदेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंररीक, कंररीक अध्ययन जणी ॥  
 बलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ,  
 चाले जिम जूयाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांर घृत आण, अमीय  
 वृठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचस-  
 यां शुद्ध जाव, उज्जाव जरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, क-  
 वल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण  
 प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे ज-  
 णवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी, निसुणेवि, नाणी  
 हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण  
 पन्नरेसें, उपन्न परवरिय, हरिडुरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग  
 गुरु वयण, तिहिं नाण अण्णाण भिंइ, चरमजिनेसर इम जणे;

गोयम म करिस खेव, ठेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला वेव  
 ॥ ३१ ॥ ज्ञास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल  
 सिय ॥ विहरियो ए जरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव  
 तो ए कणाय पनमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय  
 णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,  
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहुतो पर  
 मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥  
 तो मुनि ए मनविखवाद, नादजेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण  
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु  
 अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो  
 सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा  
 केमें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोलें  
 जोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥  
 साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजे टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो  
 यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट,  
 रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज  
 उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे  
 ए ॥ गणअरु ए करय वखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥  
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें सं  
 वसिय तीसवरससंजम विज्जूसिय, सिरि केवलनाणपुण, वार वरस  
 तिहुअण नमंनिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवड वरसान, सामी  
 गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाठ ॥ ३७ ॥ ज्ञास ॥ जिम सह  
 कारें को षड ठहुके, जिम कुसुनावन परिमल महके, जिमचंदन सो  
 गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहरियां लहके, जिम कणयाचल ते जें ऊ  
 लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हेसा, जिम सुरतरुवर कणयय तंसा, जिम मंहुयर राजीववने ॥ जिम  
 रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर सारागण विकसे, तिम गोयम गु  
 रु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महि  
 मा जिम जगमाहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गि  
 रिवर राजे, नर चड धर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि प  
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम  
 उत्तम मुख मधुरी ज्ञाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जू  
 मीपती ज्ञुयवल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधे  
 गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ पितामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे  
 वंजिय काज, कामकुंज सहु वशि दुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन  
 कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥  
 ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पजणी जें, माया बीजो श्रवण सुणीजें ॥  
 श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहु  
 जवज्ञाय थणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसता  
 काय करीजें, देस देसांतर काय जमी जें, कवण काज आयास क  
 रो ॥ प्रह ऊठी गोयन समरीजें, काज समगल ततखिण सीजे,  
 नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें,  
 गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं  
 भंगल ए पजणीजें, परव महोन्नव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि क  
 ढ्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो, धन्य  
 पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीस्कियो ए ॥  
 विनयवंत विद्या जंर, तसु गुण पुहवी न लप्पइ पार, बरु जिम  
 साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजें, चउविह संघ  
 रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कढ्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन  
 ठमो दिवराचो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासन बेस



णो एं ॥ तिहां ठेठी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काजें सरसी;  
नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगोतम स्वामीनो  
रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रज्ञाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ चूख्यां जोजन  
संपजे, कुरखा करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा जें  
मार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंठिन दातार ॥ २ ॥ पुं  
मरीक गोयम पमुहा, गणवर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊग्रीजें प्रणमतां,  
चवदंसे वावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुसकलियं, सुविशियं सबलदि सें  
पसं ॥ वीरस्स पदम सीसं, गोयम सामी नमंस्तानि ॥ ४ ॥ सर्वा  
रिष्टप्रणाशाय, सर्वाजिघार्थदायिने ॥ सर्वलब्धनिधानाय, गोतमस्वा  
मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ वृहा ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंखी मन आनंद ॥ रास जें  
एूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवन उयार सनोवरे, हुं  
आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज मानाचन जियो, शिर्वाइत्य हंजूर  
॥ २ ॥ वीर जिगंद समवसरंथा, सेत्रुंज ऊगर जेम ॥ इंदादिक आ  
गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एव ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो,  
नदी ठे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताळमें, तरय सगला जोय  
॥ ४ ॥ नांमे नव निध संपजे, दीठा डुरित पुलाय ॥ जेटंता जव  
जय टले, सेवंता सुख आय ॥ ५ ॥ जंत्रू नामे दीप ए, दक्षिण  
जरत मजार ॥ सोरठ देस मुद्दामणो, तिहां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामलिरि ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंमरीक, सिद्धहेत्र कहुं तहतीक ॥ विम  
लाचलने करुं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकरास नाम ॥ १ ॥ सुरगिदि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इन्द्रकास ॥ महातीर्थ पूरवे  
 सुखकांम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो  
 तिण कीजे नक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगंम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृ  
 थ्वीपीठ सुजड केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम  
 कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नाम, जपेज बे  
 वा अपने ग्राम ॥ सेत्रुंज जात्रातो फल ते लदे, महावीर जगवंत  
 इम कदे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोगण परिमाण ॥ पिहुलो  
 सूल उंचपण, वडीस जोगण जाण ॥ १ ॥ सत्तर जोगण जाणवो, बीजे  
 अरे विसाव ॥ बीस जोगण उंचो कह्यो, मुज वंदना त्रिकाल ॥  
 २ ॥ साठ जोगण तीजे अरे, पिहुलो तीर्थराय ॥ सोळ जोगण  
 उंचो सही, ध्यान धरु चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोगण पिहुलपण,  
 सोथे अरे मजार, उंचो दस जोगण अचल, नित प्रणामे नर नार ॥  
 ४ ॥ बार जोगण पंचस अरे, मूलतणै विसतार ॥ दो जोगण उंचो  
 अवे, सेत्रुंजो तीर्थ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठेके अरे, पिहुलो पर  
 बत एह ॥ उंचो दोस्ये सो धनुष, सासतो तीर्थ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा इण ग्राम रे ॥  
 अनंत वली सिऊस्ये इण ठामे, तिण करु नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुं  
 जसाधू अनंता सीधा, सीऊसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज ती  
 र्थ नही जेव्यो, तेगरजावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि  
 आठमने दिवसे, ऋषजदेव सुखकार रे ॥ रायणरुख समीसरया  
 स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ जरतपुत्र वैत्री पुनम  
 दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोमीसुं पुंमरीक सीधा, ति

सा पुंनरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमिराजा विद्याधर,  
 बे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण  
 प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चेत्रमास वदि चौदसने दिन, न  
 मीपुत्री चउसठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी  
 धा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, झावरु ने  
 वारिखिछ रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी  
 मुनिसुं निसछ रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिर सी  
 धा, नव नारद रुपिराय रे ॥ संव प्रज्जुन गया इहां मुगते, आठू क  
 र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम दिना तेविस तीर्थकर, समवस  
 रया गिरिशृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरंग  
 रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, आवच्चासुत साध  
 रे ॥ पांचसें साधुसुं सेलग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाधरे ॥ से०  
 ॥ १० ॥ असंख्यात्ता मुनिसैत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाट रे ॥ रा  
 म अने जरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥  
 जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अन  
 ता सैत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सैत्रुंजना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार  
 ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनमइना पातिक जाय ॥ १ ॥ रु  
 पजदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ जरत गयो  
 वंदणने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहे मोटा  
 अरिहंत देव, चोसठ इंड करे जसु सेव ॥ तेइसी मोटो संघ कहाय,  
 जेइने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेइसी मोटो संघवी कह्यो, जर  
 त सुणीने मन गहगह्यो ॥ जरत कहै ते किम पांमिये, प्रजु कहै से  
 त्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ जरत कहै संघवीपद सृज, अरे आपो

हूं अंगज तुझ ॥ इंदे आण्या अकृतवास, प्रभु आपे संघवीपद ता  
 सं ॥ ५ ॥ इंदे तिण वेला ततकाल, जरत सुजडा बिहुंने माल ॥  
 पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष  
 जेदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतशी दीधी मन रली ॥ जरते गणधर-  
 घर तेनिया, शांतिरु पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू  
 की सहु देस, जरत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,  
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिघणो, सं  
 घ चलायो सेत्रुंज जशी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोम  
 साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्चनी सघली रुद्धि, जरते साथे ली  
 धीतिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नाथे पार  
 ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥  
 संघ आथे सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे  
 निरुखे सेत्रुंजराच, अशि न्नाशिक मोत्यासुं वधाय ॥ तिण वांमे  
 रही महोदध क्रिये, जरते आशंद पुर वासिने ॥ १२ ॥ संघ  
 सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊरु पड्यो ॥ केवलग्यानी  
 पगला तिहा, प्रणम्यां रायणरुख वे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी  
 स्नात्र निमित्त, ईशनिंद आशी तुषवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी,  
 जरते दीगो कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंदे  
 बलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणे देहरो, जरत करायो गुरि  
 सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन  
 रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतशी ॥ प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥  
 सरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनस थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि  
 प्रमुख प्राशाद, जरते आप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक  
 प्रतिमा प्राशाद, जरते कराया गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो  
 वंदार, संगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

हाल बोधी ॥ राग सिंधुदो आसाउरी ॥

॥ नरततणें पाट आठमे, दंरवीरज थयो रायो जी ॥ नर-  
ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज  
उद्धार सांजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा  
बली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपांत-  
णो, सोनानो विंव सारो जी ॥ मूलगो विंव नमारीयो, पञ्चमदि-  
सि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुंजैनी जत्रा करी, सफल  
कियो अवंतारो जी ॥ दंरवीरज राजातणो, ए बीजो उद्धारो जी ॥  
से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंरवीरजथी जिवारो जी,  
इशानेइ करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चौथा  
देवलोकनो धणी, माहेइ नाम उद्धारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करा  
वियो, ए चौथो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी,  
ब्रह्मेइ समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो  
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपंती इडनो कियो, ए षष्ठो उद्धारो  
जी ॥ चक्रवर्ति संगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥  
अग्निनैदन पांसे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइइ करा  
वियो, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंडप्रभु स्वामीनो  
पोतरो, चंडशेखर नाम मळहारो जी ॥ चंडयशराय करावियो, ए  
नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,  
शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो  
उद्धारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वां  
मी वारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥  
से० ॥ १२ ॥ पांरुव कहे अमे पापिया, किम वूटां मोरी मायो  
जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से०  
॥ १३ ॥ पांचे पांरुव संघ करी, सेत्रुंज जेव्यो अपारो जी, काष्ट जे

स्य विंव लेपना, ए वारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी  
 पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी,  
 यापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अठोतर सो वरसां गया,  
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जावम करावियो, ए तेरमो  
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत वार तिमोतरे, श्रीमाली सुविचा  
 रो जी, वाइमदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥  
 से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाइ  
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स  
 त्यासिये, वेसाख वदि शुभ वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,  
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए  
 वरते वे उद्धारो जी ॥ नित शकीजे वंदना, पांमीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दूहा ॥

॥ बलि सेत्रुंज महातम कहूं, सांजलो जिमे वे तेम ॥ सूरि  
 धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-  
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेष मानता, लाज हुवे तह-  
 ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण  
 ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो  
 निपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥  
 स्तिन ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्तनी स्त्री यई,  
 दिनसुख पांमे सार ॥ ५ ॥ कांती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप  
 ॥ ६ ॥ कांती  
 वरवोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक द  
 ॥ ७ ॥ ५पथी नाखे ठोर ॥ ८ ॥ सहस लाख आवक जणी, जो  
 पुन पुन विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पमिलाजतां, अधिको तेहथी देख ॥

॥ दाल पांचमी ॥

॥ सेतुंज गया पाप बूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप  
 जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जि  
 ण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुं  
 ज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी  
 करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेतुंज चढी, एक करे  
 उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांवा रजतनी ॥ चोरी  
 कीधी जेणो जी ॥ सात दिवस पुरिमह करे, तो बूटे गिरि एणो  
 जी ॥ ४ ॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो  
 जी ॥ आंखिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥  
 से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते जेटे सिद्धहेत्रो जी ॥ सेतुंज  
 तलदटी साधुने, पमिलाजे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राञ्जरण  
 जिणो हरया, ते बूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह  
 ऊगी बहू वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो घन जे हरे, ते शुद्ध  
 थाये एमो जी ॥ अधिको इव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो  
 जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय जैस घोमा मही, गज ग्रह चोरणहारो  
 जी ॥ ये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥  
 पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नामो जी ॥ बूटे उम्मासी  
 तप कियां, सामायक तिण ठामो जी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परि  
 आजका, सधव अथव गुरुनासो जी ॥ व्रत जांजे तेहने कह्यो उ  
 म्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालको वि  
 एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, बूटे १ कर  
 तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ दाल छद्दी ॥

॥ संप्रति कासे सोलमो ए, ए वरते ठे उद्धार ॥ सेतुंज

करुं ए, सफल करुं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ ठहरी पालती चाखिये  
 ए, सेत्रुंज केरी वांट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मि  
 ल्या बंधु आट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्ता  
 नी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, वरुने चौतरे आवि ॥ ३ ॥  
 से० ॥ पालीताणे पाजनी ए, चढिये ऊपर परजात ॥ सेत्रुंजनदिय  
 सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिंगलाजने हमे  
 ए, कलिकुंरु नमिये पास ॥ बारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग  
 उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीदूक मनोदरु ए, गज चढी मरुदेवी  
 माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पांय ॥ से० ॥  
 ॥ ६ ॥ वंस पोरवाने परगमो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ  
 वी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा  
 चरचिये ए, जमतीमांहे जला बिंब ॥ पांचे पांरुव पूजिये ए, अदजुत  
 आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं  
 अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ९ ॥  
 धरमडुवारमांहि नीसरुं ए, कुगति करुं अतिदूर ॥ आठं आदिनाथ  
 देहरे ए, करम करुं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमूं मुदा  
 ए, आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, जमतीमांहे जमंत  
 ॥ ११ ॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कल  
 श अठोतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥  
 प्रथम आदीसर आगले ए, पुंरुरीक गणधार ॥ रायण तल पंग  
 ला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा ब्यार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायण तल प  
 गला नमूं ए, चौमुख प्रतिमा ब्यार ॥ बीजी चूमि बिं  
 बावली ए, पुंरुरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंरु नि  
 हाखिये ए, अति जली उलकाजोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध  
 शिवा ए, अंग फरसुं उल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पा



ज उतरुं ए, सिद्धवरुं विसराम ॥ चैत्यप्रवाम-इण पर करी ए, सी  
 था वंछित काम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करो सेत्रुंजतणी ए, सफल  
 कियो अवतार ॥ कुसल केमसुं आवियो ए, संघ सहू परिवार ॥ से०  
 ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर  
 वेगं जणे जावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ सर्व  
 त सोल ब्यासिये ए, आवण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजत  
 णो ए, नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गढ खरतर  
 तणो ए, श्रीजिनचंद सूरिस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल  
 चंद सुजगीत ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीत जग जाणिये ए, सम  
 यसुंदर उवजाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुणतां आणंद ध्या  
 य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजराम संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दृढा ॥

॥ वादी वीत जिनेसरु, रचस्युं रास रसाव ॥ तीरथ शि  
 खरसमेतनी, महिमा बनी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले,  
 प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोनाकोनी मुनिवरु, सिद्ध गए षड खेत ॥  
 २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुत्राय ॥ जविजन ने  
 टो जावसुं, ल्युं सुख संपद धाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी,  
 कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए ती  
 रथ होय ॥ ४ ॥

॥ दाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब  
 लग होय ॥ वीत जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी  
 ने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितवात्रु

नरैसरं बली ॥ विजयैराणीने सुत जाण, अजितकुमर सहु गुण  
नी खाण ॥२॥ जसु इंदादिक सेवा करे, इंदाणी अति उच्चव धरे ॥  
तीर्थकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु-  
क्रम इम जोगवतां जोग, पुन्य प्रसाद मिळ्यो सहु जोग ॥ अवसर  
दे संवत्सर दान, संजम लीनो आप सुजाण ॥४॥ कर्म खपाव  
पांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुहवीमंमलमांहि,  
ज्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥५॥ सिंहसेनादिक गणधर जया, पं-  
चाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरथा, श्रावक  
श्रावकणी सहु करथा ॥६॥ तीन लाख बलि तीस हजार, साधव  
थां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस्र अठाणुं सही, दोय लाख  
संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पेंतालीस हजार, श्रावकणी सं-  
ख्या सुविचार ॥ बहुतर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर  
सुहाय ॥८॥ साढीव्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं-  
जोर ॥ गज लांठन प्रभुजीने जाण, अमृत सम जसु मीठी वाण  
॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आख्या निज हेत  
सहस्र मुनिवरने परिवार, आसखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥  
चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ जूचर खेच  
र किन्नर सुरी, इंदादिक सहु उच्चव करी ॥ ११ ॥ आप्पो तीरथ मोटो  
मही, अठाइ महोच्चव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते  
जवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे-  
त सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जाण ॥ १ ॥

॥ बाल बीजी ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंथर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावजीनगरी नरी धन संपद बहु ओक, जैतारि तूष

राज करै सुखियो सबे लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा  
 णा, जेहने सुत श्रीसंजव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण  
 शरीर मनोहर प्रज्जुनो जाण, लंठन अश्वतथो सोहे प्रज्जुनो परधा  
 न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रज्जुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्च  
 पणै प्रज्जु देह बखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रज्जुने गणधर  
 होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख  
 श्रमणी बली ऊपर सहस उचीस, जूमंजल विचरे प्रज्जु श्रीसंजव  
 जगदीस ॥३॥ तीन लाख बलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट्  
 लाख सहस उचीस श्रावकणी संख्या शोक ॥ त्रिमुखयह अरु उ  
 रितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रज्जु सकल संघमें जयश्रकार ॥४॥  
 सहस श्रमण परिवारे प्रज्जुजी शिखरसमेत, एक मास संलेखण  
 कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रज्जुजी पद निरवाण,  
 तीरथ महिमा महियल मोटी अइय सुजाण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अजिनंदन जिन वंदिथे, पायो पद निरवाण ॥ शिखरसं  
 मेत सोहामणो, जैटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल वीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो ॥ ए-देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम जली, संवर राजा सोहे  
 मन रखी ॥ सिद्धार्थ राणी प्रज्जु तसु नंद ए, अजिनंदन जिन प्रग  
 ट्या चंद ए ॥ उल्लाखो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साही  
 तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंठन ते नित वसे ॥  
 पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि  
 उलाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अख्यासी  
 दो लाख श्राद्धनी, संख्या चौ लाख सत्तावीसनी ॥ श्रावकसंघारी संख्या  
 जाण ए, त्रायकयह कालिका वाण ए ॥ उल्लाखो ॥ ढाण ए शिखरसं

मत ऊपर मास एक संलेखणा, इके सदस साधू परवरया प्रज्नु  
मुक्ति पहुंचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमं  
गला, श्रीसुमति जिनवर ज्ञानंदनसदा होत सुमंगला ॥ ३ ॥ चाली ॥  
सावन वर्ष धनुष तसु तीनसे, लंबन क्रोंच सोहै सुजगे इसै ॥  
पूरव लाख पञ्चासी आन ए, इसौ गणधर गुणगण जान ए ॥  
जुझालो ॥ जान ए मुनि त्रिण लाख सोहै सदस वीस प्रमणां  
ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी आवक दोय लक्ष जाण ए ॥  
संख्या इक्यासी सदस ऊपर आवका इम आणिये, पण लाख  
सोले सदस तुंवरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात  
संख्या सदस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रज्नु मुक्ति  
पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इमकोसंबीनगरीतात ए, धरनृप तात  
सुसीमा मात ए, पदम प्रज्नु तसु अंगज नाथ ए, लंबन कमलतं  
णो सुज हाथ ए ॥ जुझालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अर्द्ध  
सै त, कहौ, तीन लाख पूरव धित कहावै एकसौ गणधर लहो ॥  
लख तीन तीस हजार साधू वीस सदस लख चार ए, साधवी  
दोय खल सदस बितर आवक संख्या सार ए ॥ ४ ॥ चाल ॥ पांच  
लाख बलि पांच हजार ए, आवकण्यारी संख्या सार ए ॥ कुसम  
देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रज्नु सोहै सही ॥ जुझालो  
॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आवसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास सं  
लेखन प्रज्नुनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रज्नुजी मुक्ति पहुता,  
गिर शिखर महिमा जई ॥ तसु चरण पंकज बालवंदे हृदय आनं  
द गहजही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आरामी ॥ जविजन अम  
रसु सेवतां, पांमे वंदित काम ॥ १ ॥

॥ दाल चोयी ॥ श्रीसीमंवर साहिब ॥ ७ ॥ चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोजता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ दे  
वी-पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंठन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व  
जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसे देहनो, कं  
चनवरण सुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कल्या, सा  
धू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरै, सहस सा  
धवियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्षनी, आवक  
संख्या आय लालरे ॥ च्यार लाख बली त्रेणवै, सहस आवकणी  
जाय लालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक शांतासुरी, पांचसे मुनि पर  
वर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार ला  
लरे ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर ङण परै, राजा तात महेस लालरे ॥  
देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंडाप्रभु वेस लालरे ॥ ६ ॥ श्रीचंडाप्रभु  
बंदिये, चंडवरण तनु जेह लालरे ॥ लंठन चंडतणो जलो, धनुष  
दोढसे देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ जविककमल प्रतिबोधता, सेवे  
सुर नर यक लालरे ॥ दस लाख पूरव आनुवो, तेणवे गणधर  
दक लालरे ॥ श्रीचं० ॥ ८ ॥ होय लाख सहस पचाणवे, मुनि अ  
मणी तीन लक लालरे ॥ असी सहस संका कही, आवक बलि  
होय लक लालरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर बली, आ  
विका चउ लक धार लालरे ॥ सहस ङकाणवै ऊपरै, प्रभुजी  
नो परिवार लालरे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव नृकुटीसुरी, स  
हस साधु परिवार लालरे ॥ संखेखन इक मासनी, पुहता  
मुक्ति मजार लालरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ बुद्ध ॥

॥ जय श्रीसुबिद्ध जिनेसरु, जगपति देनदयाल ॥ समे  
तशिखर मुगते गया, जविजनके प्रतिपाल ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा  
माता सुत, जए सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु  
सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु  
सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणधर परम प्रधान ॥ ल  
ख दो मुनि विंशति सहस, इक लाख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय  
लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लाख सहस,  
श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा  
निधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ५ ॥  
मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह गोर ॥ तीरथ महिमा म  
हियलै, प्रगटी च्यासुं नर ॥ ६ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, दिव सु  
णज्यो अधिकार ॥ जदिलपुर दठरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥  
७ ॥ लंठन सुज श्रीवृद्धनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेत्र  
धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु  
प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ ९ ॥  
एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या नर ॥ सहस तयासी  
दोय लाख, श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्ष चौ,  
श्रावकणी सुविचार ॥ देवो असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानि  
धकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति  
गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

॥ ढाल छठी ॥ धनर संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेशर तात जी, कं  
अनवरण श्रेयांस प्रभूजी, नपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो  
रे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, स्वर्ग लंछन प्रभु पायजी ॥ धनुष असी

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर  
 बहुतर सहस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सह  
 स बलि सहस गुण्यासी, आवक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥  
 अमतालीस सहस बलि चौ लाख, आविका जाणो सार जी ॥ ज  
 क अमर सुरी मांनवी जाणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥  
 न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मा  
 स संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥  
 ५ ॥ द्वि कंपिलपुर तात चूपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्या  
 मादेवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सु  
 कर लंठन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख व  
 डरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस  
 मुनि अरु तय इक लाख, श्रमणी आवक जाण जी ॥ आठ सहस  
 दोय लक्ष आविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ प  
 एमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार  
 साथू परिवारै, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी नाम  
 अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत  
 जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंठन इयेन सो  
 वन सम काया, धनुष पचास प्रमाण जी ॥ तीस लाख वडरनो  
 आयु, गणधर पचवीस आण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ वास्तव सहस  
 मुनीसर सोहे, वासठ श्रमणी हजार जी ॥ ठ हजार लाख दोय  
 आवक, आवकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख व  
 लि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके  
 सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनि  
 वरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिदि  
 ऊपर, पुहता पद निरवाण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दृष्टा ॥

॥ अैसे धर्म जिनेसरू, पुइता पद निर्वाण ॥ सिसरसमेत  
गिरिंद पर, नमोश् जयजाण ॥१॥

॥ दाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, जानुराय सुजाण ॥ राणी  
सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिने  
सर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंबन सुखकार  
॥२॥ ज० ॥ चौतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सदस प्रमां  
ण ॥ श्रमणी वासठ सदसस्थूं जी, आवक दोय लक्ष मांन ॥ ३ ॥  
ज० ॥ च्यार सदस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥  
आवकणी संख्यां कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥  
किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सदस परिवार ॥ समेतसिखर मुं  
गते गया जी, वांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हयणापुर विश्वसेननां  
जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवनं  
जयकारा ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥ मृग लांबन सोवन  
समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, व  
त्रीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ वासठ सदस मूनि वसै जी, इगसठ  
श्रमणी हजार ॥ दोय लाख आवक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार  
॥८॥ ज० ॥ सदस त्रयाणूं आविका जी, तीन लाख परिवार ॥  
गरुडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥९॥ नवसै मु  
नि परिवार स्थूं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमणकर मुगतिमें  
जी, पुइता निजपद देत ॥ ज० ॥ १० ॥ अैसे हयणापुर जलो  
जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंशुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन ल  
नु श्रीमात ॥ जगतपति कुंशु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ वाम  
लंबन पैतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सदस पंचाणव वरस



नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैंतीस गणधर दीपता  
 जी, साठ सहस मुनि जान ॥ ठसै साठ सहस वली जी, भ्रमणी  
 संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनो जी, श्राव  
 क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका सं  
 ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी व  
 ला गंधर्व ॥ कुंभुनाथ मुगते गया जी, माख संलेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५  
 ॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्थुं अब अधिकार ॥ श्री  
 ता सुणज्यो प्रेम धर, आस्थै लाज अपार ॥ १ ॥

॥ दाढ आठमी ॥ देसी विछियानी ॥ हारे लाला श्रीजिनकुशल सूरिसरू ॥ ए देवी ॥

॥ हारे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरो अयोध्या  
 चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला  
 ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंठन नंदावर्त्तनो, तीस धनुषदेहीनो मान रे  
 लाला ॥ कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥  
 ॥ २ ॥ श्रीअ० ॥ इक लाख श्रावक ऊपर, वलि संख्या अधकी जाण रे  
 लाला ॥ सहस बहुत्तर ताननी लक्ष श्राविका संख्या आंगरे लाला ॥  
 श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार  
 रे लाला ॥ मुक्ति गए इश गिर प्रभु, कर मास संलेखण सा  
 ररे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रजावती, मात पिता श्री  
 कुंज राय रे लाला ॥ लंठन कलस पगीसनो, वपु धनुष सोवन  
 सम कायेरे लाला ॥ श्रीमछिनाथ जिनेसरू ॥ ५ ॥ सहस पचा  
 वन वर्षनी, शित गणधर अठावीस रे लाला ॥ नविक कमल प्रति  
 बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ चा  
 खीस सहस मून सरू, भ्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस  
 त्रयासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या तार रे लाला ॥ ८ ॥ श्री म० ॥

श्राविका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सहस  
मुनि परवारखुं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ १० ॥  
राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव  
रण तनु शोभता, जे कपिल लंघन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत  
स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वढर तीस हजार  
रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे  
लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या ब  
हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प  
चोस हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी जली,  
नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति  
महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा  
मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंघन  
कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साध रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने  
सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे  
लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण  
रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल  
क्ष सहस बलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम  
करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता जूमरुले,  
श्याम सिखर समेत मजार रे लाला ॥ जूकुटी यक्ष गंधारी सुरी,  
इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि  
रोमणि सहसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ ढोल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जय१ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस, पारसनाथ जी ॥

सांवरियां साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥  
 जय१ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावै  
 सेवे जे नर तेहनी, पूरै वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी दे  
 स वणारसी नगरी, श्रीअश्वत्तेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्या  
 ता, तेदनां सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंठन नील  
 वरण ठवि, देहि शुभ्र नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे,  
 गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस मुनिवर  
 अरु अमणी, कही अरुतीस हजार जी ॥ भूमंतल विचरे जवि  
 जनक, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चौसठ सहस लाख इ  
 क आवक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख आवकणी सं  
 ख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ बीस जिनेसर मुगते  
 पुहता, महिमा अइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जग  
 में, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ बहरी पाले जे नर  
 जावै, जेठे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सु  
 रतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संपतणी करै जक्ति, सं  
 घपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो  
 सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पामे, जा  
 प्रा करे गढ़गाट जी ॥ साधर्मी बल्ल मुनिजक्ति, पूजा उछव था  
 ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंकर पर चरण प्रभूना, पूजो जविज  
 न जाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उ  
 छाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रक्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां  
 नवनिध थाय जी ॥ तिण ए जविजन जाव धरीने, सुणज्यो म  
 न थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमाधारी,  
 कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसोजाग्य सूरेश्वर, अमृत  
 नयन मुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसार्ये रास रक्यो ए, अ

बृत्तसमुद्भवे सीस जी ॥ वाद्यचंद्र निज मति अनुसारे, सोधो विष्णु  
 ध जगीस जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत् जगणीसै सितमोत्तर, सुदि  
 वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल  
 माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ दाल १ ॥

रुषज प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह  
 जल्लास ॥ पुंरुरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल वि  
 कास ॥ १ ॥ प्र० ॥ प्रइ सम सूधा साधु नमुं नित, जावै श्रमण सुगुरु  
 जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसं  
 त ॥ २ ॥ प्र० ॥ जगत महामुनि प्रथम चक्रीसर, बाहुबल उप  
 शम जंमार ॥ सूर्यसादिक आठ मुनिसर, पांभ्यो विमलाचल ज  
 वपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुषजवंत जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमो  
 लाख असंख, श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूकी कं  
 ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महा  
 बल संजम सिद्धि ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुषीसर न  
 वम अबोह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ब वसुंदर, श्रीमल्लि  
 नाथ पूरबज्जव मित्र ॥ पहुंता परम रुषीसर शिवपुर, पाली श्रीजि  
 न आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लबधि निधि, खं  
 दक सूरिना सीस लय पंच ॥ कार्तिकसेठ सुसाधु कीर्तिधर, श्रम  
 ण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडवंत अक्षोभसु सा  
 गर, प्रमुख आठ अशगर प्रधान ॥ श्रीरुहनेम नेमजिन बंधव,  
 निस्मल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने  
 व्रवयालो, पुरतसेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संब अने अनिरुद्ध रुषीसर,  
 सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमार अनीकजसादिक  
 पट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ दंडण रुषि श्रीथावडा

सुत, सहस्र साधु संजतसु कृपाव ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ दाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस्र श्रमणसुं मुक संजमधरो, पंचसयांसु सेलंग मुनि  
वरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥  
उल्लाखो ॥ संपद करो समदम रिपीसर साधु सारण सोह ए, अं  
तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुद्ध  
नारद मुनि प्रमुख पेंताल ए, दमदंत महाशपि कुंजवारे साधु नमुं  
त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिपजदत्त रतनत्रय मुणी, स,  
महं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांनव प्रणमुं मुनिपती, केलपएली  
बोधक जिनमती ॥ उल्लाखो ॥ जिनमती दालक पूत्र मेहल थिवर  
आणंद रस्कियो, अणगार कासव धर्म जारुयो सोधि सिवपुर स  
स्कियो ॥ कालासदेसी पूत्र आतम अरथ लायक उपसमइ, श्रीपुं  
ररीक महामुनीसर प्रणामिये शुज संवमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंड  
वंडकलची रांकेवली, श्री अयमचो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू  
इमह नमि निगया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लाखो ॥ श्री  
जुवा ए वृपजादि देखी थया वन वडरागिया, संजमतिरि जज मो  
दनिडा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा चार सिद्धा सिद्ध थया  
एकए समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३  
॥ चाल ॥ खंतै कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोइया मुनि चरणे लय ला  
इये ॥ काल उंदार् प्रमुख महामुणी, संजन नुइ जयंती साहुणी  
॥ उल्लाखो ॥ साहुणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया  
॥ श्रीश्रमणजइ सुजइ सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठय  
तीस सुव्रत, साधुसुव्रत सेहरो ॥ चारित्र रिप गुणवंत गोजइ गरुड गरि  
मा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय रुपीसर वंदिये, दसारण  
जइ नमुं इख बंदिये ॥ अर्जुननाली सुख संजमधरो, सुदहप्रह

१० सिवरमणी वरो ॥ उल्लाखो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरगभू कर्मावर्त  
 प्रसिद्धन, कोमिन्न विन्न अनै सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गो  
 तम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाथर ॥ १५ ॥ चाल ॥  
 गरुआ श्रीगुणसागर गार्हदे, प्रब्रवीचंड प्रलभ्यां सुख पाइयै ॥ खं  
 दकुमार सदा अजिनंदिये, नमिह जरह मित्र मन आणंदिये ॥  
 उल्लाखो ॥ आणंदिये मेतार्य सुनिवर जगतसुं समरी करी, रुप इ  
 लापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीयै धरी ॥ अ. इंद नाम निर्ग्रथ निर्मम  
 धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनी  
 सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि १ जसतणो, श्रमण सु  
 दंसण सील सुहामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आइकुमार ए, चित्त चतुर  
 नर चित्त चमकार ए ॥ उल्लाखो ॥ चमकार सार सुजात रुषिवर  
 देवसांनिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणो गाजै सुजिन पालत हि  
 त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥  
 श्रीकपिल रुपि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७ ॥  
 ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषै जुज, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुज ॥ श्री  
 इखुकार नृपति कमलावती, रांणी जूगुसुं प्रेहित सुजमती ॥ उल्ला-  
 खो ॥ सुजमती जेहनी जसाजार्था पुत्र दोय वखाणिये, ए वहुं  
 लेइ चारु चारित्र मुगति पढुता जाणिये ॥ कृत्रिय मुनिसर साधु  
 संजम धर्मरुचि महाव्रती, नियंथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसं-  
 यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कळपो, विधसुं शीतल  
 सिवकमला मिळ्यौ ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं  
 स्यो तप गुण वीर ए ॥ १९ ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहुजइ नं  
 दकुमार ए, आदिक दसे रिप चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥  
 श्रीचंरुद्र सुसीस खंदग कमानिधि कहिये इण कलै, कुरुदत्त सुत  
 तीसग सरोरुद रिप नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुख रिप्र च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अज्ञेकुमार,  
मुनि अज्ञयंकरो, हृदय विदहसु आतम हितकरो ॥ उद्धाखो ॥  
हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधियै, सुनहत्र  
नै सर्वानुज्जति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने  
उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसाखजइ सुधन्न मुनिवर समरंता  
मंगलकरो ॥ १० ॥

॥ ढाल ३ ॥ राग वन्यासिरी ॥

वमवेरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रजव सिध्यंजव  
परगमो, सुजस जसोजद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी,  
नांमे घर नवनिध्व वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ ११ ॥ जग संजु  
तिविजय जयो, जद्रवाहु कृतजद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर  
श्रीधूलजद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ जद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य  
मुनीराय ॥ सीत परीषद जिणसह्या, सारथा२ आतम काज ॥ म० ॥  
॥ १४ ॥ अऊमहागिरि जांणिये, अऊसुद्धि विसाख ॥ संप्रति नृप  
पनिबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ १५ ॥ आरिजलांमि  
यसंसियो, अऊसुजद्र मुनीस ॥ अऊनंगु महिमा निलो, सींहगि  
रो समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि धिवर महामनी, श्रीवयर  
स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, जद्रगुपति निरमाय  
॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरु, श्रीरक्त गुरु दक्ष ॥ पुस  
मित्र गुण गहगह्यो, प्रजु डुरवलका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विंज सा  
धु सुविषइ जरयो, श्रीगंमिल सुविहृष्ट ॥ सूत्रअरथ रतने जरयो,  
कमाअमण देवई ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री  
डुपसै सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल  
॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मजूमि जिके, दुआ होस्यै अणंत  
॥ वर्त्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नजइ गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि रायने, सांहुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक  
रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत लोल लचीस ए, श्री  
विमलनाथ सुरसाव ॥ दिक्षा कळ्याणक दिने, गूथी श्रीमुनिमाल  
॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रलिथामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥  
सूरि विजय राजे सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री  
मतिजइ सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंध वखाणीये,  
सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग  
ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पावे सुख ज्ञरपूर ॥ म० ॥  
॥ ३६ ॥ मंहा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम  
हासिद्ध घरे फले, सदा२ कळ्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल  
का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नं जिन स्तवन लि० ॥

॥ दो० ॥ वरतमान चौवीसी वंदू, मन सूधै नित मेव री माई ॥  
रूपज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रजु सेव री माई ॥  
॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्थ चंड प्रजु प्रणमूं, सुविध शीतल श्रेयांत री  
माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री  
माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी  
पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा  
जेद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ हाळ २ ॥ अह सप सूधा साधु नमुं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमियै, जेहना नांम प्रगट ए जाण ॥  
केवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥  
॥ नि० ॥ सर्वानुजुति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वा  
मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम  
॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारण्य, श्रीजिनेसर सुद्धम



ति मुजगीस, सिक्करं स्यंदन संप्रति नामे, वंदीजे जिनवर चोवी  
स ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ दाल ३ ॥ सफल संसारनी ॥

जे जविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुं  
काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज प्रण  
मीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुसी  
जिन वीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उदाऽ नरिंद ए,  
तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो  
साध ए, चोश्रो स्वयंप्रज्ञू नाम आराधि ए ॥ दृढायुव जीव सिद्धां  
तमें जाणिये, पंचम सर्वानुज्ञू ते प्रमांणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण नाम  
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते ठगो श्यांमि सलहीजिये ॥ संख  
आवक हुस्यै उदय जिन सानमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन  
आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोहल जिणं, सतक आवक  
शतकीर्त्ति दसमो जणूं ॥ देवकीजीव सुगुप्त इग्यारमो, सत्य  
कीजीव ते अमम जिन वारमो ॥ ५ ॥ कालदेवजीव निकपाय  
जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदन नमो ॥ पत्तरमो निर  
मम देव सुलसा कही, रोहणजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥  
समाध जिन सतरमो आवका रेवती, अठारमो शदालजीव संवर  
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर जगणीसमो, कृष्णकोइजीव  
ते विजय जिन बीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो,  
देव बावीसमो अंबज आवक जणूं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत  
वीरज नमो, स्वातबुधजीव ते जइ चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम  
चोवीस जिन जांणिया, प्रवचन सारजदारथी आणिया ॥ केइ पर-  
सिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कहा, साख अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ए॥

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहालो ए देही ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर  
शुगमंधर बाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु  
रुषजानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेष विशाल ॥ वज्रवर चंडानन  
चंडबाहुजी, जुजंग ईश्वर नेमि जाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा  
जड नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीढीपमे विचरे आज ए, नाम  
लियां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन यर्म कीजिये ॥ ए देही ॥

च्यार तीर्थकर सासता, इणहिज अजिधान ॥ रुषजानन चं-  
डानन वारिषेण वद्धमांन ॥ च्यार० ॥ ए ॥ अठ कोमि, अप्पन्न  
लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे ठयासी देहरा, त्रिहुं लोक मजार  
॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोमिया, बिंब प्रेपन लाख ॥  
सहस्र अठावीस च्यारसै, अठयासी जाल ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विजु  
जिणवर नाम ए, समरघा सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम  
कित सुद्ध पाय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चोवीसी वीस विहरमाण चऊ जिणवर सासता,  
संयुत्ता सतरैसै वयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता  
मणितणो पर प्रबल वंठित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण श्रुद्ध प्रणमै  
सदा जिनचंड सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री ठिन्नं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिधाय लि० ॥

जग चूमामणिजून, उसजो वीरो तिलोय सिरि तिलड ॥  
एगो लोगाइचो, एगो चरकू तिहुअणस्त ॥ १ ॥ संवहरमुसज जिणो,  
ठम्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इह विहरिया निरसणा, जए ऊए जव  
माणेशं ॥ २ ॥ जइता तिलोय गहो, निसइह बहुचाई असरिसज

एस्ति ॥ इय जीयंतकराई, एस्ति खमा सबसादूणं ॥ ३ ॥ न चंई  
 ऊइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं  
 वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणउ, पढम  
 गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमउं, विम्हिय हियउ  
 सुणइ सबं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इउंति ॥  
 इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउमेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ जइ  
 सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जइ चंदो ॥ जइय पयाण  
 नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न  
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउं कानं, विहरंति मुणी  
 तहा सोवि ॥ ८ ॥ पम्भूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को  
 ॥ गंत्तीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्तावी  
 सोमो, संगहसीलो अज्जिगहमई य ॥ अविककणो अचवलो, पसं  
 तहियउ गुरु होई ॥ १० ॥ कइमावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं  
 पइं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥  
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करे इ  
 माणं, परिय छइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिण दिस्सियस्स इमग्ग, स्स  
 अज्जिमुहा अऊचंदणा अऊजा ॥ नेउइ आसणगहणं, सो विणउं सब  
 अऊजाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिस्सियाए, अऊजाए अऊदिस्सिउं साहू ॥  
 अज्जिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो-  
 पुरिसप्पन्नवो, पुरिसव रदेसिउं पुरिसजिघो ॥ लोएवि पडू पुरिसो,  
 किंपुण लोएउत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरणो, तइया वाणा-  
 रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किरूववंतीणं ॥ १६ ॥  
 तह वि य सारायसिरी, उल्लहंती न ताइया ताहिं ॥ उयरहिएण  
 ड्के, ए ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म  
 ऊउं इह समत्त घरसारो ॥ रात्रपुरिसेहिं निऊइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नञ्चि ॥ १७ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सस्कियं  
 सुकयं ॥ इह जरहचक्कवट्ठी, पसन्नचंदो य दिठंता ॥ १८ ॥ वेसो विं  
 अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं  
 न मारेइ खज्जंतं ॥ १९ ॥ धम्मं रक्कइ वेसो, संकइ वेसेण दिस्सिंतं  
 मिअहं ॥ उम्मगेण परंतं, रक्कइ राया जणवत्तं य ॥ २० ॥ अप्पा  
 जाणइ अप्पा, जहद्विं अप्पसस्किंतं धम्मो ॥ अप्पां करेइ तं तह,  
 जह अप्पसुद्धावहं होइ ॥ २१ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ  
 जेण जेणं ज्ञावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुद्धासुद्धं बंधए कम्मं ॥  
 २२ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वावविस्सुत्तिं ॥ संव  
 ष्ठमणसीत्तं, बाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २३ ॥ नियगमंइ विग  
 प्पिय विं, तिएण सच्चंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तद्वियं, कोरइ गुरु  
 अप्पुवएसेणं ॥ २४ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणोत्तं गच्छिंतं निरवणा  
 मो ॥ साहुजणस्स गरदित्तं, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २५ ॥  
 ओवेण वि सप्पुरिस्ता, सणकुमारु व्केइ बुझंति ॥ देवे खणपरिहाणी,  
 जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २६ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण  
 वासीवि परिव्रंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥  
 २७ ॥ कहंतं जन्नइ सुखं, सुचिरेण वि जस्स उस्समद्विद्वियेण  
 जं च मरणा वसाणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २८ ॥ उवएस सह  
 ह्सेदिं, बोदिज्जंतो न बुद्धइ कोई ॥ जह वंजदत्तराया, उदाइनिव  
 मारत्तं चेव ॥ २९ ॥ गयरत्तं चंचलाए, अपरिचत्ताइ रायलब्धीए ॥  
 जीवासक्कम्म कलिमल, जरिय जरातो परंतं अहे ॥ ३० ॥ बोत्त  
 णवि जीवाणं, सज्जकरा इति पावचरियाइ ॥ जयवंजा सा सासा,  
 पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३१ ॥ पन्निवज्जिक्कण दोसे, नियं सक्कं  
 च पायवन्धियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३२ ॥  
 इति पोसइ सिद्धा ॥

॥ अथ राईसंधारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोवमाईणं ॥  
महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिजंतं ३, कहियें, अणुजाणह जि  
झिजा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेहिं मंनिअसरीरा ॥ बहु  
परिपुन्ना पोरिसि, राईसंधारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधारं,  
वाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुकुरु पाय पसरण, अंतरं तु पमज्जाए  
जूमि ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवटंतेय काय पमलेहा ॥ दवाई  
उवउगं, कसासनिरुंजणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमान, इमस्स  
देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सबं तिविहेण वोरिरियं  
॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा जस्काण परपरीवानं ॥ अरइ  
रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्चत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरित्तु इमाइसु, स्कम  
ग्ग संसग्ग विग्घ जूआइं ॥ दुग्गइनिबंधणाइं, अठारंस पावहाणाइं  
॥ ६ ॥ एगो इं नच्चिमे कोइ, नाइमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीण  
मणसो, अप्पाण मणुसात्तए ॥ ७ ॥ एगो मे सासनु अप्पा, नाण  
इंसणसंजुनु ॥ सेत्ता मे बाहिरा जावा, सब्बे संजोगलस्सणा ॥  
॥ ८ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग  
संबंधं, सबं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं  
सुत्ताहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥  
चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि  
पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा  
लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ च  
त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव  
ज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥  
अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मच्च देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ता  
णं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि ति पावगं ॥ १ ॥ आ  
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,  
 वोसिरामि ति पावगं ॥ ३ ॥ उवद्याया मंगलं मझ, उवद्याया मझ  
 देवया ॥ उवद्यायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि ति पावगं ॥ ४ ॥ सा  
 हूणो मंगलं मझ, साहूणो मझ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,  
 वोसिरामि ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किक्के सत्त  
 जोणि लस्कान ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लस्कान ॥  
 ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ ति  
 रिएसु हुंति चउरो, चउदस लस्का यमणुएसु ॥ २ ॥ स्वामेमि सव्व  
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मिन्ती मे सव्वज्जुएसु, वेरं मझ न  
 केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंठिअं सम्मं ॥  
 ति विहेण पमिक्कतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा  
 विअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणह,  
 मझह वेर न जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज  
 जमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मझवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति  
 संधारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक संघाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोड्यां महा  
 पाप रे ॥ वयर-विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे भाय  
 वाप रे ॥ नि० ॥ १ ॥ दूर वलंती कां देखो तुस्हे रे, पगमा बलती  
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगमां रे, कहो केम क  
 जला होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संचालो सहुको आपणो रे,  
 निंदानी मूको परी टेव रे ॥ ओमे वणे अवगुणे सहु जरयां रे,  
 केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 आये नारकी रे, तप जप कीछुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम बुटकवारो आय रे ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण प्रदजो  
सहुको तणो रे, जेहमा देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो  
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ नि० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली जाल अपार रे ॥ सु  
जाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैरअङ्गार रे  
॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परि  
माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो  
रण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक  
पासैं आय रे ॥ सु० ॥ ऊज्जी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप  
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊजा  
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम  
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन बाँधयो हुवे रे लाल,  
मुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजालजो रे  
लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आग  
में रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलशुं  
जख्यो रे लाल, जीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम  
वरणा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊ  
तरी रे लाल, साख जरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत स  
हुको थयां रे लाल, सधले थया उबरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम  
खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग  
मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ क  
हे जिन इर्थ सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥ ९  
॥ ए ॥ इति सीतासती सिधाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रुषि सिधाय ॥

॥ श्रेणिक रयवानी चढयो, पेखियो मुनी एं ६ त ॥ वर रू  
पकाते मोहियो, रांय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं  
रे अनाथी निर्मथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए  
आंकणी ॥ इण कोसंबी नगरा वसे, मुज पिता परि गल धन ॥  
परवार परे परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ  
क दिवस मुज वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु  
जूरी रह्या, तोही पखे रे समाधि न आय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी  
गुण मन उरमी, उरमी अबला नार ॥ कोरमी पीमा में सही,  
महिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवेद्य बुलाइया,  
काधला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेइया, पया तोही रे दाह  
नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुज उपशमे, तो लेनं सं  
जमजार ॥ ५म चितवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥  
॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते जणी हुं रे अनाथ ॥  
वीतरागनो धरम बाहरो, कोई नही रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥  
॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे०  
णिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥  
॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि सनय  
सुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिधाय ॥

॥ कर पम्किमणो जावसुं, दोय धनी शुज जाण ॥ लाल  
रे ॥ परजव जाता जीवनें, संवल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥  
कर पम्किमणु जावसुं ॥ ए आंकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे  
णिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंरी सोना तणी, दीये दिन  
प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते बली, एम



दीये इव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुलौ, नौवे तेह लंगार  
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसठो, जेनुं वंदन दोय  
 दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संजारी रे आपणां, ते जव कर्म नि  
 वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर कानसगग गुंजध्यानथी, पच्च  
 रक्षाण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सद्या ये ते वलो, टालो टालो  
 अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीये  
 अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए  
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिधाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठोने समरिजे हो ॥ जवियण मंगलिक सरणा चार  
 ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियमे रा  
 खिजे हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिहंत सिंह साधा तणी हो ॥ ज० ॥  
 केवलि ज्ञाख्यो धर्म ॥ ए चारु जपतां अकां हो ॥ ज० ॥ दूटे  
 आवुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारु मुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए चारु  
 मङ्गलिक ॥ ए चारु उत्तम कहां हो ॥ ज० ॥ ए चारु तहतिक  
 हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ ज० ॥ समरुं वारुं  
 वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघ्न निवारणहार ॥  
 ॥ हि० ॥ ४ ॥ माकण साकण जूतकां हो ॥ ज० ॥ सिंह विज्ञाने  
 सूर ॥ वैरी हुसन चोरठा हो ॥ ज० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥  
 ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर  
 जव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ रा  
 खो सरणाकी आसता हो ॥ ज० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ वरते  
 आनंद सुख सही हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संबोग ॥ हि० ॥ ७ ॥  
 निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी  
 नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोम कढ्याण ॥ शुद्ध  
मनें करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चै पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥  
ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर  
णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मजार ॥ हि० ॥  
॥ १० ॥ संवत् अठारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥  
चोथमछ्त्र इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥  
॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

## ॥ अथ सिंहाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुषीनी सङ्गाय ॥

॥ ढंढण रुषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूंवा  
री लाल, अज्जियह लीधो एहवो हूं० ॥ लेस्युं शुद्ध आधार रे ॥ हूं०  
॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हूं० ॥ न मिलै शुद्ध आधार  
रे ॥ हूंवा० मूल नलै अणसूजतो हूं० ॥ पंजर कीधो गातर रे हूं०  
॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूवै श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सहस्र अठार रे ॥ हूं  
वा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हूं० ॥ मुऊनें कही विचार रे ॥ हूंवा०  
॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हूं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद  
रे हूंवा० ॥ कृष्ण ऊमाहो वादवा हूं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हूं  
वा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिळ्या हूं०, बांधा कृष्ण  
नरेस रे हूंवा० ॥ किलाही मिळ्यात्वी देखने हूं०, आयो जाव वि  
सेसरे हूं० ॥ ५ ॥ ढं० ॥ मुऊ घर आवो साधजी हूं०, ल्यो मोदक ठै  
शुद्धे हूं० ॥ मुनिवर विहरीने पांगुरया हूं०, आया प्रभुजीने पास रे  
हूं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुऊ लवधै मोदक मिळ्या हूं०, कहोने तुम्हे  
किरपाल रे हूं० ॥ लवध नही वड ताहरी हूं०, श्रीपति लवधि  
निधान रे हूं० ॥ ७ ॥ ढं० ॥ एलेवा जुगतो नही हूं०, च्याळ्या परठ-

भ काज रे हूँ० ॥ इंट निवा हे जायने हुं० बूरे करम समाज रे  
हुं० ॥ ८ ॥ दे०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पांश्यों केवल नाण रे  
हुं० ॥ ढंढणं रुषि मुगते गया हुं०, कहे जिनदुर्ष सुजाण रे हुं०  
॥ ए॥ ॥ दे० ॥ इति ढंढण रुषि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धनारुषी सिंहाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन,  
मनकै तो मांनी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना,  
धरमनो रगी मोरा नंदन, आदर्यो तो मन्मथो रे किम परचावसुं  
॥ २ ॥ दस दिस्ती दीते रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनु  
मति देतां रे जीन वहे नही ॥ ३ ॥ वत्तासै नारी हो धन्ना,  
अतहि पियारी मो० ॥ बाणी तो बोले रे मयुर सुहावणी ॥ ४ ॥  
वालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगति चाले  
रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो० ॥  
कोरु बर्त्तासे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय  
पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुहावणो ॥ ७ ॥ व्रत  
अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही ठे रे साधु क  
हावणो ॥ ८ ॥ वर१ जिहा हो धन्ना, गुसनणी शिक्षा मो० ॥ कहाणी  
रे रहणी नही ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आ  
गम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग ठै ॥ १० ॥  
वनवासै रहणा हो धन्ना, परीतह सहणो मो० ॥ कोमल  
केता रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाख्यो हे अम्मा,  
जूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥  
सुख अजिजापी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग  
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमार  
थि मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो परखदा सह सुण्यो ॥ १४ ॥

मैं इम जाण्यो हें अम्मा, वीर बखाण्यो मोरी अम्मा, ए धन जो-  
वन आयु धिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हें अम्मा, ढील न कीजे  
मोरी अम्मा, जो खिशा आवे सु किर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-  
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो  
रे मनमां गद्गद्ही ॥ १७ ॥ ठठ्ठ पारणे हे अम्मा, विगय निवा-  
रण मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो सुरसर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-  
जम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ  
रूना ज्ञाणै ॥ १९ ॥ संजम पाळ्यो हे अम्मा, नव पखवामे मोरी  
अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना  
रूपि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिंहाय लिख्यते ॥

देव दाशव तीर्थकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम-  
तणे वन सुख डुख पाया, सवल हुआ महा निवला रे प्राणी, कर्म-  
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीतरजीने करम अटारया, वरस दिव-  
स रह्या जूखा ॥ वीने बारे वरस डुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखै  
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध  
जुवान नर जेता ॥ सगर हुड महा पुत्रनो डुखियो, कर्मतणा फल  
एला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस देसारे साहिब, चक्री  
सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म कीयो तनु बार रे  
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म दयाल किया हरचंदने, वेची सुतारा राणी ॥  
बारे वरस लग माथे आय्यो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥  
॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चाबी चंदनवाला ॥ चौपद ज्युं  
चहुटामे वेची, करमतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे  
आठमो चक्री, कर्म सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक ज्ञा देखे,  
पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो चक्री, कर्म कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो जविप्राणी,  
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ उपन्न को न जा  
 दवरो साहिब, कृष्ण महावल जाणी ॥ अटवी मांदि मूठ एकलमो,  
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांरुव पांच महा  
 ऊजारा, हारी झोपदा नारी ॥ बारो वरस लग वन रमवमिया, ज  
 मिया जेम जिख्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ वीस जुजा दस  
 मस्तक हूँता, लखमण रावण मारंयो ॥ एकलमै जग सहु नर जीत्या,  
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम  
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या,  
 वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी  
 श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरो कर्म धकाया ॥  
 करमसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सतिव सिरोमणी झै  
 यदि कहियै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हृइ ते नारी,  
 पूरव कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे  
 स्वामी, साचो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकमो, कर्म नारख्यो  
 ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, क  
 रता पुरुष कहावै ॥ अहनि स महिल मसांणमे वासो, जिह्वा जो  
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी,  
 रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये  
 घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंम्या नर करमं,  
 आज्ञ्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिहरष कर जोमीने विनवै, नमो २  
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंज्ञाय सं० ॥

॥ अर्थ सात विसनकी सिंज्ञाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार वि  
 ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै उरक अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन परुयांधकां, पारुव पांच  
 प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पण्यो, खोइ सहू रा  
 जरि० वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस जकण अवगुण घणा, करै  
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गइ  
 निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन  
 तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ क्षीपायण रिपि दहव्यो जा  
 दवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चौथे विसने वे  
 स्थाधर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कथवन्नादिकनो गयो  
 कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेमे  
 कुविसन सांचवै, प्राणी हणिये प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे  
 णिक नृप गयो पहली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ ठेठे  
 चोरीने विसने करी, जीव लहे डुक्क जोर वि० ॥ मुंजदेव रा  
 जायें मारियो, चावो हुंमक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय  
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो  
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥  
 इम जांणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण  
 जव परजव आणंद अतिघणा, कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ॥  
 ॥ सा० ॥ ए ॥ इति सात विसनकी सिंझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिंझाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीगो रे निग्रंथा॥ राति वन  
 मांहि कांउसग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखा  
 णी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जाण ॥ चेमाराजानी  
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत  
 ंठार सबलो पमे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमे  
 बस्यो जी ॥ सौमि वाहर रह्यो दाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ ऊबक जांगी

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण  
 वस्यो जी ॥ श्रेणिक पळ्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतोनर परो  
 जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ जगवंत सांसो जाजियो  
 जी, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां अकां  
 जी, पैसतां नगर मळार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जारें  
 अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत  
 लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो जवत  
 णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिंहाय ॥

॥ जूलो मनजमरा कांइ जमै, जमियो दिवस ते रात ॥  
 मायारो लोत्री प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुं  
 ज काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे  
 नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ जू० ॥ केहना बोरू केहना  
 वाठरू, केहना माय नै बाप ॥ उ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य  
 नै पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्या तो मृगर जेवनी, मरवो पगला रे  
 हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू०  
 ॥ लखपति ठत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी  
 गोखै बैठता, जए जल बल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजल  
 डुख जरयो, तिरवो ठे रे जेह ॥ बीचमें बीह सबलो अठै, करमें  
 वाय ने मेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो  
 पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वाणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार  
 ॥ ७ ॥ जू० ॥ मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न आय ॥  
 वस्त्रं विना जाय पोदवो, लखपति लाकरु माय ॥ ८ ॥ जू० ॥ मह  
 मंद कहे वस्त वोरीयै, जे कुठ आवे रे साथ ॥ अपणों लाज उवा  
 रियै, लेखो साहिब हाथ ॥ जू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिंहाय ॥

॥ राजतणां अति लोभिया, भरत बाहूबल जूजे रे ॥ मूठ  
उपानी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूजे रे ॥ १ ॥ वीरा स्हारा गजध  
की उत्तरो, ब्राह्मी सुंदरी ज्ञासै रे ॥ रुषन जिनेसर मोकली, बा  
हूबलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढ़यां केवल न होई रे ॥  
वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अजिमांनो रे  
॥ लघु बांधव बांदू नही, कानसग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥ ३ ॥  
वी० ॥ बरस दिवस काष्ठसग रह्यो, बेलनियां बीटाणो रे ॥ पंखी  
माला मांनिबा, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी व  
चन सुण्या इसा, चमक्यो चित्त मजारो रे ॥ हय गथ रथ में प  
रिहरया, एण नवि मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन  
वालियो, मूक्यो निज अजिमांनो रे ॥ पांव उपानी बांदिवा, ऊप  
नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखषा, बाह  
बल रुषिराया रे ॥ अजर अपर पदवी लही, समयसुंदर बंदे  
पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिंहाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाढ्या गोचरी, तमके दाजे सीसो जी ॥  
पाय उवराणा रे बेलू परजलै, तन सुकयाल मुनीसो जी ॥ अर०  
॥ १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊजो गोखने दिगो  
जी ॥ खरै डुपहरै रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठो जी ॥ २  
॥ अ० ॥ वयण रंगिले रे नयणो वेधियो, रुषि धंज्यो तिण वारो  
जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, उ रिषि तेनी आंणो जी ॥  
३ ॥ अ० पावन कीजे रुषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी  
॥ नवजोवन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतरो जी ॥  
४ ॥ अ० ॥ चंडावदनी रे चारित चूक्यो, सुख विलसै दिन रातो



जी ॥ इक दिन गोखै रमंतो सोगवै, तब दीगो निज मातौ जी ॥  
 ५ ॥ अ० अरणक३ करती माय किरै, गलियै२ मजारो जी ॥ क  
 हि किण दीगो रे माहरो अरणलो, पूछै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥  
 अ० ॥ नुतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिया  
 रो जी ॥ धिग्२ पापी रे माहरो जीवने, एह में अकारज धारयो  
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिद्धा नषैरै, अरणक अणस  
 ण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते सुनिवरू, मन वंछित फल  
 सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिद्धाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

नाम इलापुत्र जाणियै, धनदत्तसेवनो पूत ॥ नटवी देखी रे मों  
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न ठूटे रे प्राणिया, पूरव नेह  
 विकार ॥ निज कुल ठंन्नी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥  
 ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, उंचो वंस विवेक ॥ तिहां  
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय  
 पग पहरी रे पावनी, बस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतौ,  
 खेले नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर  
 साद ॥ पायतल धूयर घमघर्म, गाजै अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥  
 तिहां राय चिंते रे राजिगै, लुबधो नटवी रे साथ ॥ जो पमै नट  
 वो रे नाचतो, तो नटवी मुज हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दान न आपै  
 रे झूपती, नट जाणै नृप वात ॥ हूं धन वंटू रे रायनो, राय वंछै  
 मुज घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी सुनिवर पेखियौ, धन३ साधु  
 नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवना, मन आयो वैराग ॥ क० ॥  
 ॥ ८ ॥ संवरजावै रे केवली, ततखिण कर्म खयाय ॥ केवल मदि  
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिंहाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै  
 रागीयौ जी, ए संसार असार रे मायनी ॥ अनुमति द्यो मुऊ आज ॥  
 संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वढ तूं केणे जोल  
 व्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ जणौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि  
 हुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरबाहिस जार रे  
 जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुढयो जी, सहिया डस्क  
 अणंत ॥ सासोश्वासैं जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥  
 ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अठै जो, जोवन जरयो  
 रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुख अपार रे  
 जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डस्क न  
 सहणौ जाय ॥ वीरजिनंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कांन हे  
 मायनी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वढ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस  
 आहार ॥ जुंइ पाला नित हौंरुणो जी, जाणसि तुऊ कुमार रे जाया ॥  
 हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत जम्यो जी, धर्म डहेलो होय ॥  
 जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायनी ॥  
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो  
 वनजर बोरू नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजनी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि  
 सुंहाली देहनी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहू कोय ॥ विषय  
 विषम महुरा कहा जी, किम जोगविये सोय हे मायनी ॥ अ० ॥  
 १० ॥ खमिश् मान पसाय करी जी, मै दीधुं तुऊ डस्क ॥ दिन आदेश  
 जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें ड्युं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥  
 तन फाटे लोयण ऊरे जी, डख न सहणा जाइ ॥ वढ सुखी हुवो

तिम करो जी, मैं दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १९ ॥  
 मणि माणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी  
 आठै रमे जी, द्वि अह्न कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥  
 कुमर जणै सुकुली प्रिया जी, बहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो  
 जाणियो जी, जो ल्यो संयमजार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ  
 सिविका तव सजी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उ  
 नव करै जी, चारित्र ल्यो रिपिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम  
 जाणी वैरागियो जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोमी पूनो जणै जी,  
 ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाई निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती भिगसर मास, पहिली परुवा तीन विमास ॥  
 चौथी परुवा वदि वैसाख, चार पुहर असिझाई जाख ॥ १ ॥ जां  
 लगि होली ऊमे वार, धुंवर परुती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो  
 जय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने  
 केस पाखाण, वरसै तां लग असिझाई जाण ॥ जूजै मल्ल मांढोमांहि  
 जांम, तां लग असिझाई तिण ठांम ॥ ३ ॥ जूपति परजव पौहतो  
 होय, जां लग पाट न वैसै कोड ॥ तां लग बोली वै असिझाई, सं  
 हुको सरदइज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक  
 पोहर असिझाई आय ॥ निवल मेह तिम जाणो सही, आठ पहर  
 सबै जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पम्बिवा लग  
 असिझाई वकी ॥ पम्बिवा बीज तीज चांदणी, समीतांज असिझाई  
 गिणी ॥ ६ ॥ आझ नक्षत्र न लागै जांम, गाज बीज असिझाई तांम ॥  
 गाज बीज जो हुवे अकाल, असिझाई वे पुहर संजाल ॥ ७ ॥ चंड्यइण  
 असिझाई जणी, वारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जयन्य प्रकारै आठ विं  
 चार, सूर्यग्रहण पोहर जयन्यै वार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखै जविषण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ,  
 आठ पुहर असिझाई होय ॥ ए ॥ वसतीथकी सातां घर मांहि, नर  
 विहमै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पञ्चो होय मृतकअनाथ, तां  
 असिजाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, बेटी  
 आठ दिवस विहात ॥ सो कर मांहि कही असिजाई, नारी रतु दिन  
 तीन कदाइ ॥ ११ ॥ इमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पमै तिन  
 गाइ ॥ असिझाइ सो कर मांहि, त्रिएह पोहर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥  
 असाढै चौमासै दिने, पन्निकमणा गायंथी गिणै ॥ बार पोहर  
 असिजाई कही, काती चौमासै इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर  
 असिजाई ठै बहू, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कही  
 संखेवि, हरखै पय प्रभू कीजै हेवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकर जेह,  
 च्यार मावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अकरै, तब कबि नाम  
 कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूखी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व  
 ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सहि पालो  
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित  
 शुद्ध पालौ, टालो दोषदया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,  
 च्यार सिद्धाव्रत धरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो जवि  
 षण मनरली ॥ दाखविए गुण परह केरा, दोष सम काढौ बली ॥  
 ॥ २ ॥ मम काढो रे लोनी नर कूनी करौ, जांणी सावय रे अ  
 जक बावीसे परिहरौ ॥ वरु पीपल रे पिलखण नें कटुंबरो,  
 जंवरफल रे रखे तुमें जकण करो ॥ ३ ॥ उल्लाखो ॥ रखे  
 तुमें जकण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम  
 करहा ठंमि परहा, दोष मूल नाटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र

यणीजोजन, प्रथम दुरगति वारणौ ॥ मम करौ व्यालू अति अ  
 सूरौ, रविउदय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब  
 नाम ए, काचागोरस रे मांदि कठोल न जिमिये ॥ एह वैगण  
 रे तुन्न फला सवि ठाम ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविखंरु  
 ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंरुए व्रत नियम लेइ, बेइ फल  
 व्रत जंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज जोजन, चलित रस होय  
 जेहनो ॥ संवर आणी अन्नक ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥  
 गुरु वयण विगतैं वली पूठ्यौ, अनंतकाय वत्तीस ए ॥ ६ ॥  
 अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु नक्षण रे पातिक बोढ्या  
 वै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आदूं वली ॥ वजचूरण रे कंद  
 बहूं कुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै  
 चतुर नर आंविनी ॥ रतालू पिंमालू थेग थोहर, सतावरी लसण  
 कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली टुकवजुलौ, पढ्यंक  
 सूरण वाल बीली मौथ नीली सांजलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे  
 कूपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी  
 रे जमरवृक्षनी ठालनी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलनी ॥ ९ ॥  
 वेलनी तानु ताजा खिलोमा ने खरसुआ, नूय नूफोमा वत्रा  
 कार जाणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तोस बोल प्रसद बोढ्या  
 लहमीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी  
 ते सवि सुख लहे ॥ २० ॥ इति बावीस अन्नक सिजाय सं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सिधाय ॥

॥ संवेगरसमे जीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोइग  
 दलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धन१ गजसुक  
 माल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आकणी ॥ प्रनू  
 पास संयम आदरयौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ १ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा  
 यवा अलजयो, परमै न दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो,  
 पिण दिन जावे रे तो ठेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय  
 कानसग रह्यौ, तिण सांजि प्रभुने पूठ ॥ मुनिवर अवर इम चिं  
 तवै, एहनै साची रै ठै मुंह मूंठ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुज सुता विन  
 अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगमी रचि सिर ऊपरै,  
 चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ  
 धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमै गुणठाणें चढ्यो, मु  
 निवर पांमी रे केवलग्यान ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने अई,  
 ते रयण वरस हजार ॥ बांदवा आवी प्रह सनै, पिण नवि देखे रे  
 प्राणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूठतां प्रभु मांमी करी, रातिनी वी  
 नग वात ॥ हरि देखी हियमो फूटला, तेणें कीचो रे रुपिजीनो  
 घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसन सुधारस सेवतां, पांमियो अवेचलरा  
 ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रष्णचंद्र सिध्दाय ॥

॥ राज बंमी रलियामणो रे, जांणी अग्रिर संसार ॥ वैरागै  
 मन वालियो, कांइ लीधो संजम ज्ञार ॥ प्रष्णचंद्र प्रणमूं तुमारा  
 पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे कानसग रह्यो  
 रे, पग ऊपर पग ढाय ॥ बांइ बैजं उंची करी, सूरज सांमी इष्टी  
 लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन  
 जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध स्वमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डुरमु  
 ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां  
 मियो, जीव पछ्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूठियो रे,  
 एहनी सी गति आय ॥ जगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नर-  
 के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंतै पूठियो रे, सरवारथ सिद्धि वि

मान ॥ वाजी देवनी डुंडुजी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥  
 ॥ ६ ॥ प्रणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावारना शिष्य ॥ रिद्ध  
 र्ष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतह ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उत्पति सिखाय ॥

॥ उत्पत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरजा  
 वासे जीवमो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाजी  
 तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम् नालिका, तिम नामी वै  
 दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥  
 आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर  
 श्रवे तिण मांसयी, ऋतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,  
 तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित  
 डुरगंध ॥ तिण आनक तूं ऊपनो, हिव हूउ अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥  
 नामी वांसतणी जरिये घणी, रूघाल ॥ ताती लोह सलाकतैं, जाले  
 ततकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, ठै नव लख जीव  
 ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी  
 मिढ्यां, प्रांचेंडी जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥  
 उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टो वार ॥ जीव ज  
 घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य  
 तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ वार वरसनी धिति तिहां, उत्कृष्टी  
 जाण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरजे कोइ जीवमो, जंपै जग  
 डीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥  
 महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां  
 पठै, थाथै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै,  
 तिम बांमे नारि ॥ बीच नपुंसक जाणिये, जिनवचन विचार ॥  
 १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणौ इहां, आयो गरजावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मान ॥ ७० ॥ १४ ॥ आठ व  
 रस तिर्यंच रहे, उत्कृष्ट काल ॥ गरजावांसै जोगव्या, इम बहु  
 जंजाल ॥ ७० ॥ १५ ॥ कर्मण काये कर लियो, पहिलो आहार  
 ॥ शुक्र अने स्त्रोणिततणो, नही जूठ लिगार ॥ ७० ॥ १६ ॥ पर-  
 जापत पूरी नही, तिहां विसवांवीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा-  
 रिक मीस ॥ ७० ॥ १७ ॥ पवन अठै उदरै तिको, उपजायै अंग  
 ॥ अग्नि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ ७० ॥ कठन  
 पणै पृथ्वी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचजूत सरिरमें, इम करै प्र-  
 कास ॥ १९ ॥ ७० ॥ बारै मधुरत तां पठै, विलसै नर नारि ॥ गर-  
 जतणी छतपति तिहां, नही अवर प्रकार ॥ २० ॥ ७० ॥ कलल हु-  
 वै दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदथी पेसी वधै, घन मांस  
 कहात ॥ २१ ॥ ७० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमतांलीस टांक  
 ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ ७० ॥ सु-  
 थिर मास बीजे हुवै, दिव तीजै मास ॥ करमतणै वसि ऊपजै, मा-  
 ता मन आस ॥ २३ ॥ ७० ॥ चौथै मासै मातना, प्रणमै सहु अ-  
 ग ॥ हाथ अने पंग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ ७० ॥ पि-  
 त्त रुधिर ठेठे पमै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे-  
 सी सय पंच ॥ २५ ॥ ७० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोमि  
 ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोमि ॥ २६ ॥ ७० ॥ आठमें मा-  
 सै नीपनो, इम सकल सरिर ॥ नुंघै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥  
 २७ ॥ ७० ॥ सोणित शुक्र सलेषमा, लघु ने वरुनीत ॥  
 चात पित्त कफ गरजथी, थायै नर नीत ॥ २८ ॥ ७० ॥ मात-  
 तणी सूटि लगै, बालकनो नाख ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल  
 ॥ २९ ॥ ७० ॥ उमनी छये आहारते, जाय नामौनाम ॥ रोम इंडी नख  
 चख वधे, तिम मीजी ने हाथ ॥ ३० ॥ ७० ॥ सबहू अंगे ऊज



स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरजै सुविचार ॥  
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किए जीवने, आये ज्ञान विजं  
 ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिए ज्ञान प्रसंग ॥ ३० ॥ ३२ ॥  
 कटक करे वैक्रियपणें, जूझी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी  
 करी, मरी सुर पिए आय ॥ ३० ॥ ३३ ॥ ऊँचै मुख गोमा  
 हिये, सहितो बहु पीरु ॥ दृष्टि आगलि वेहुं हाथसुं, रहे मुठी  
 जींच ॥ ३० ॥ ३४ ॥ नर विश वख जलादिके, ऊपजै आ  
 धान ॥ अथवा विहुं नारी मिटियां, कह्यो गरजविधान ॥ ३० ॥  
 ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी डखावास ॥ पुन्य करी तिम  
 नीकलूं, नाउं गरजावास ॥ ३० ॥ ३६ ॥ ऊँच कोमि चांपे सुई, कोइ  
 समकाल ॥ तिएथी गरजै अठ गुणौ, सदे वेदन बाल ॥ ३० ॥  
 ॥ ३७ ॥ माता दूखो दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती  
 ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ ३० ॥ ३८ ॥ गरजयकी डख जख  
 गुणौ, जांमैं जिण वार ॥ जन्म थयां डख बीसैरै, धिग्श मोद वि  
 कार ॥ ३० ॥ ३९ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥  
 पिंम अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लगलेस ॥ ३० ॥ ४० ॥ तु  
 रत रुदन करतो अको, जांमैं जिण वार ॥ नात पयोधर मुख ठवै,  
 पीयै दूध तिवार ॥ ३० ॥ ४१ ॥ दिन२ दीने दीपतो, करै रंग अपा  
 र ॥ काम कोम माता पिता, पूरै सुविचार ॥ ३० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र  
 इग्यारे नारिने, नव नरने जाण ॥ रात दिवस बहता रहै, चैतो चतुर  
 सुजाण ॥ ४३ ॥ ३० ॥ सात धातु साते लचा, वै सातसै ना  
 कि ॥ नवसे नामी पिंममें, तिम नीनेले हाम ॥ ४४ ॥ ३० ॥ संधि  
 एकसो साठ ठै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दंप पेसी पांचसै,  
 ढांकी ठै चरम ॥ ३० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर देहमें, पेसाव  
 सरीप ॥ सेर पांच चरवी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ ३० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त-टांक चोसठ अठै, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्ती-  
 स सलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणयकी  
 यदा, उंगो अधिको आय ॥ व्यापै रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥  
 ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोरुयो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान  
 पान जूषण जला, करे नचनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव बीजै  
 दसके जण्यो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसकै तेहने, जाग्यो  
 कांम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण आंनरु तूं ऊपनो, तिणमें  
 मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोरु ऊपाय ॥ ५१ ॥  
 उ० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटा पोतरा,  
 परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ ठठे दसके प्राणियो, बले परवस  
 आय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥  
 उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल जागो बूढो  
 अयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके मोसलो,  
 खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिर धुलै, करे फोगट वात ॥  
 ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ सालै  
 चचन बहुआंतणो, दिन जुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटप्रज्यो  
 खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाज हुकम हाले नही, दीयो परिजम  
 देह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुरु मिले, पमै मुंहमे लाल ॥  
 बेटा बेटा ने वडू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा  
 ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो  
 जिम जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाळे निर  
 मल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥  
 उ० ॥ कोमि रतन कवनी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पवै  
 पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया  
 कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संज्ञार ॥ ६२ ॥ उ० ॥ चवदै राज प्रमाण ए, वै लोक मर्हत ॥  
 जनम मरण कर फरसियो, ते वार अणंत ॥ ६३ ॥ उ० ॥ आप  
 सवारश्रिया सहु, नही केहनो कोथ ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै,  
 सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां  
 लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगे, होय साहसधीर ॥  
 ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाघो गुरु संयोग ॥  
 अंगश्रकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० श्रीनमि  
 रायतणी परै, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ  
 कियारो नांहि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ जोग संयोग तजी सहु, थ्या जे  
 अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥  
 सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति  
 वये, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलवेयाली अठै, एहं  
 नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनें कह्यो, नही जूठ लिगार ॥ ७० ॥  
 उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांज्ञलि लिये संजमज्ञार ए,  
 परि सिंह केरा सदा पालै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख  
 सकल जोगवि ते लहे जव पार ए, श्रीजिनदर्ष सुसीस रंगै इम  
 कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति उत्पत्ति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अय आत्मनिंघा लिख्यतै ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें  
 प्रवृत्ति, यह रसगृहीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोष धर्मी  
 मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें,  
 कज्जी तूं मिश्रमोहनीमें, कज्जी तूं कामरागमें, कज्जी तो स्ने  
 हरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कज्जी तूं कुगुरुमें, कज्जी तूं कु  
 देवमें, कज्जी तूं कुधर्ममें, कज्जी ज्ञान विराधनामें, कज्जी दर्शन  
 विराधनामें, कज्जी चारित्रविराधनामें, कज्जी मनोदंभमें, कज्जी व

चनदंरुमें, कच्ची कायदंरुमें, कच्ची हास्यमें, कच्ची रतिमें, कच्ची  
 अरतिमें, कच्ची ज्ञयमें, कच्ची सोकमें, कच्ची डुगंठामें, कच्ची  
 रुष्णलेस्यामें, कच्ची नीललेस्यामें, कच्ची कापोतलेस्यामें, कच्ची तुं  
 रुद्धिगारबमें, कच्ची तुं रसगारबमें, कच्ची तुं सातागारबमें, कच्ची तुं मा  
 यासड्यमें, कच्ची तूं नियाणासड्यमें, कच्ची तूं मिथ्यादर्शनसड्यमें,  
 कच्ची तेरे तेरेकाठिया आय फिरता है, कच्ची तेरे बाहिर कर अ  
 ठारे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा डुष्टो, महा  
 डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं  
 हीणदृष्टी, अरे तूं अयोद्धा कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ट जीव,  
 प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामांन, अनंतानु  
 बंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोन्नरी चोकमो, विचारा तेरे स्वपी  
 नही, गुणगणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा  
 दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव  
 जेसा कछ्छोख तेरे उठल रहा है, तैं जो धर्मक्रिया करता है सो शून्य  
 मनसें करता है, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें  
 करी जो क्रिया सो राख पर लीपणे जेसा है, अरे चेतन ! सोगन  
 नही लेवे सो पापी, नर लेकर जांगे सो महापापी, तैं अनंतकाय,  
 अन्नरू, शीलव्रत, जरदा, जांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन  
 लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगा, रे चेतन ! तैं पुजलरे  
 वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर,  
 मेरे नवनिधान, मेरे रसकूपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अ  
 मृतगुटको, वा देवताकूं बस करूं, बादस्याह हो जाजं, राजा हो  
 जाजं, प्रधान हाकम सेनापती हो जाजं, किसी तरे धन उपार्जन  
 करूं, ये बातें तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणगणेवालेकेही लोन्नका  
 त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो कैसें सैरे, हे चेतन ! तूं मनमें विचारता

हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुत्र  
 ल, अरे चेतन ! चौरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा,  
 संसारमें न किसीका तूं हे, नहि कोइ तेरा हे, रे चेतन ! तूं  
 तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणें, केइ वखत पुत्र  
 पणें, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसैं ठगकी बेटी  
 नें अपणी मांसे पूठा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण जो  
 नेगा ? मा बोली-बेटी, करेगा सो जोगेगा, तबनो उसने कहा धिक्  
 हे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,  
 आर्यदेस, आर्यकुल, आर्यकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका  
 धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, नर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसैं क  
 उएकूं उमाणें चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसैं तें चिंतामणि  
 रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-  
 मंवरि कुगुरुनके उपदेससैं चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म  
 आज्ञाप्रमाण जो आ सो तेने खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसैं  
 होय, विष्टामें कृमिपणें तें अनंती वार पेदा जया, मानरूपी गज  
 पर बाहूबल चढ़ा नर संज्वलनमान आ, नर बाह्मी सुंदरी बहिना  
 जैसी समझाणेवालो श्री जव समझै, नर तेरे सो एसा मान, अरे  
 चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं भरतमाहाराजा जिणोके  
 केसीक राजशुद्धि सो केसीक जावना जावतां, धिःकार राज्यनें, धिः  
 कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्तिपदवोकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोकूं,  
 धन्य श्रीतर्धिकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पावते हे, धन्य  
 जो सर्वविरती धर्म पावते हैं, धन्य जो दांन देते हे, धन्य जो  
 सील पावते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो जावना जाते  
 हैं, एसे जावना जावतें नरनादिक केवलज्ञान केवल दर्शन  
 पाया, इस तरें रे जीव तूं उनो नी वरावरी मतकर, वहनो तेसठ

सलाका पुरुष चौधै आरेका जीव तें पंचम कालका ज़रतक्षेत्र-  
 का कोना उनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-  
 ववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों  
 करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गि  
 राया, इग्यारमें गुणठाणेका जीव जुवनजानु केवलीजी, कमलप्र  
 ज्ञाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकुं मिगाय दिया तो तेरी तो  
 विसायतही क्या, आठ करम अछावनही प्रकृती हे प्रजु केसें जीता  
 जाय, मोहकर्म पीठै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-  
 की फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आझांमें रह सदागमसुं परि-  
 चय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकुं पीठी मार, जेसें तें तिर  
 जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तोने गुप्ते गुप्ता,  
 ठकायका पीयर, सात महाजयका टालणहार, आठ मदका ज प-  
 क, नवविध ब्रह्मचर्यको वामका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका  
 उजवालक, इग्यारे अंगका जणणेवाला, बारे उपांगका जणणेवाला,  
 कुरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मु ने  
 प्रजुकी आझा मुजब धर्म पालै, रे चेतन तुजै कब उदै आवेगा, रे  
 चेतन तेरे नदय कहांसैं आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ; धन्य देसत्र-  
 ती पाले जिके प्रजुजीकी आझा पाले, जिके प्रज्ञात नठ सामायक  
 करे, पत्तिकमणो करे, देवदर्शन करै, प्रजुजीकी द्वादसांगी वाणी  
 सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी  
 पोसा, संध्याकुं देवसो पत्तिकमणा जिनाझा प्रमाणै बनावश्यक कर,  
 मुजेज्जी कज्जी नदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा  
 हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती नदय आयगी, सा-  
 मायक मनसुद्धै करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वां  
 चनेकी खप कगे, जेसें जवसायर लीला तरो, सामायकवंदके यह

लक्षण हे, नर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप हे, तुजें पढणें गुणनेकी लगन नही, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया, जो श्रुतज्ञानकी जक्ति करते हे उनोकों ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती हे, केवलज्ञान नर केवलदर्शन पाता हे वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका जर्तार होता हे. दिवस प्रते दै कोई सुजाण सोना खंमी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन तूं इस जरोसे मत झूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंडावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी हे काम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रहै, आरत रौडध्यान मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण ऐसे हे अपना पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवन धरै, साचो थोमो आगम जणो, ते सामायक शुद्धे करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें परायाबुरा चाहता, अपना जला चाहता, वो पराया बुरा या नही चाह्या वो तेनें अपने आत्माकाही बुरा चाह्या, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे गती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा हे, तूं अपने आत्माका गुण विचारे तो अवेदी हे, अफरसी हे, अघाती हे, अलेसी हे, अविनासी हे, तें दिलमें विचारता हे यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन हे, कोण तेरा सज्जन नर कोण तेरा दुस्मन हे, आठ कर्मरूपिया सत्रु हे जिनोकों तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल जस्म कर जिस्ते तेरा गरज सरे, अहोहो में जव्य हूं अजव्यहूं अथवा डुरजव्यहूं, मेरे संसार पोते वहांत दिखता हे, प्रायेतो में अजव्यही दिखताहूं पीठे तो ज्ञानीयोने जाव देखा सो सही, हे रे जाइ तें तो एसी सामायक करता हे, खणे खाज मोमे

करमका, उंचतणा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सि-  
कारेगा जब लेखे लगेगा, उहा—आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मु-  
नि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १. ॥  
इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववन्दनभाष्यादिकसं मंदिर  
जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी विधि श्रीमहा-  
निसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्यसूत्रमें ऐसा लिखा हे ठती शक्ति साधु जिनमंदि-  
रमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका मंरु नर श्रावककूं बेलेका  
मंरु ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घन्टी रात रहे पिठली तब कुठके  
नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या  
मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासैं दिलको  
सावचेत करे, पीठे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुद्धि करके  
सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदोरासरकी पूजा करे,  
पीठे यथाशक्ति अन्ना वस्त्र आजूपण पहरके घोडा हाथी रथ पाल-  
खी सिपाइ नोकर चाकर ज्ञाई बंधु परिवार सभेत पूजाके लायक  
फल फूल प्रमुख संगमे लेकर ज्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता  
हुआ जिनशासनकी प्रज्ञावना करता थका जिनमंदिरमें जावे.  
जिन मंदिरमें प्रवेश करके झोपड़ीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार.  
१० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ बेर निस्तही कहणेका, जिसमें १ निस्तही  
जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीठे संसार घर संबंधी कुठजी  
कार्य विचारणा न करे १: दूसरी निस्तही प्रदक्षणा तीन दियां पीठे  
कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार शंजाल  
रस्कीथी सोजी ठोमे १; ( इसमें इव्यपूजा करणी मोकली रही )



तीसरी निस्तही कहे पीठे निकेवल ज्ञावपूजाही करे, लेकिन इव्य पूजा नही करे. यह प्रथम निस्तही त्रिक कहा. ?

दूसरा त्रिक-ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रनूके दक्षिणावर्तसे तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक-मूलनायकजीके बिंबको पंचांग मिलाके तीन वेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक-प्रनूकी अंग १ अंग २ नर ज्ञाव ३ ऐसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे. अब निस्तही किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसे लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, नर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंडियोकूं वसमे रखे, चलणे नर फिरणेमें उपयोगी रहे, गोतादिक डुसरेका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुबज्जी देवकार्यकों ठोरुके, नर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथा दिक ४ हो सो विकथाको ठोमे, जन्म नर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया ज्ञया खोटे कार्य कों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले, निस्तही किये पीठे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसने मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपनी आत्मासे किया हे उस जीवके ज्ञावसे निस्तही होय, नर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र इव्यनिस्तही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके आठ तहका उज्जल वस्त्रसे मुखकोस बांधे, धूपादिकसे अंग अपणा शुद्ध करे, ज्ञावसे डुनर। निस्तही कहते मूलगुंजारेंमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, नि केवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे, प्रथम १ युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमल अम्बा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसे जगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसे विलेपन करे, शुभवर्ण शुभगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोस गुलाब चंपां चंपेली केवला जाई जूई मोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अंगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड नुज्वल अक्षतोसे प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लोखे—दर्पण १ जडासंख २ चंदमोनेसरावेसंपुट ३ श्रीवत्स ४ भक्तयुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंदावर्त ८ ऐसे अष्ट मंगलकी रचनां करे, पंचरंगे फूलोंसे अष्टमंगलीक पूजे, अष्ट केशर चंदनके हंदा देवे, उत्तम नैवेद्य चढावे, अष्ट खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाग्निगमादि सिद्धांतोंमें लिखे मुजब करे, पीठे अंतरंग भक्तिसे प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जैसे देवेड दानवेड नारद नंदाइराजांकी राणी प्रजावती द्रौपदी रावण प्रमुख केश जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टापदादि तीर्थोंपर तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया तेसे शंकरहित जव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जब चंदनादि पुष्पोसे करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नैवेद्यादिक चढायाजावे सो अंग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो ज्ञावपूजा ३. इव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहाँ ४. अब पांचमा त्रिक—तीन अवस्थां विचारणी. पिंसस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंसस्थ अवस्थाके तीन जेद हे. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, उर केवल अवस्था कों विचारणा सो पदस्थ अवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब ठहा त्रिक—तीन दिशा ओम्के प्रभूके सामने नजर रखे.

उर्ध्व १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३४ बांझ पिठाकी निजर नहीं करे. ६.  
अब सातमा त्रिक-तीन घेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणें  
चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक-वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उ-  
च्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोंके अर्थपर आलंबन रखे सो अ-  
र्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३. ७.

अब नवमा त्रिक-तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा  
२, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनों हाथोंकी अंगुली मिला-  
णी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, कान्तसंग  
मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रख  
णा सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीरराय कहे. ८.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन. जिनवंदन प्रणिधान १,  
मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चे  
इयाई इह संतो तवसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावं  
ति केविताहू ति विहेण तिदंम विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान  
२, जयवीररायसे लेके आज्ञवमखंता तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३.  
एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अग्निगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहने हैं. स  
चित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपने जोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १,  
उर राजचिन्ह मुगट वत्र खमग चमर पाडुका अचितवस्तुजकाजी  
ठोरणा आज्ञापण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, ए-  
कपट उत्तरासण करना ४, जिनविंवकूं देखतेही नमोजुवणबंधुणों  
एसें नमस्कार करणा ५. यह उत्तरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बैठके ज  
गवंतकूं बांड़े, स्त्री बांझ तरफ बैठके जगवंतकूं बांड़े.

अब चौथा द्वार तीत अग्निग्रहका. अग्निग्रह देववांदशामे कहा हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बैठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसें उपरांत बैठके देव वांदे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बैठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन जेद हे. एमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसें नमोब्रूणसें लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचदंरुक समेत थुईकी व्यास गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहौजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहौजे.

अब ठठा द्वार पंचांग प्रणिपात करे, दो गोम. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसें प्रज्ञुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सञ्चित १, दध २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंज ११ दिशि १२, न्हाण १३, जत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम सञ्जाले दिनमें जो चीज अपने अंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सञ्चित वस्तुका प्रमाण इस तरेसें करें मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जले अग्नि वायु वनस्पतिका ठेदन जेदन, तरकारी फल परबल जमीनी तोरी केला मतीरा ककनी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण, तहां धातु वस्तुकी शली तेसे अपणी श्रंगली विगर जो चीज मुमें मालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण तीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे. जैसें गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी धेढवारोटी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कहलाता हे. इस तरे ज्ञात दाल रोटी कढ़ी मांझिया कढ़ तरकारी सब जात पापरु खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकेमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चड़िये सो रखे वाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नाम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे. जैसेके मेवेकी खीचनी तो वह अनेक द्रव्यसे बणी जई हे तोजी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमाण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसे आवककूं चार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ जुर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमाण रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूनी खमान मोजा अपना इतना विराणा ऐसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीना सुपारी लोंग इलायची गोटी जुर बनी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणेकी चीज धारण प्रमाण रखे. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ षष्ठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ ठूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पधनी १ जामा १ कम्बल ३ धोती ४ एक पट्टा उत्तरासन ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहेजे. ऐसैइ खिके ख। मुजब. जो ऐसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपमा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र झूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवमा केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गाम्नी वहली इका बग्घी कोच पालखी घोडा, हाथी ऊंट तामजांम म्याना इत्यादिक सत्र थलवाहन, पाणीमें चलणेवाले मोरपंखी वतक धुमदोर लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी ठालका चमकेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोमे परमलम प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाया सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०

अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातकों तथा दिनकों सूइ मोरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेही मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि निचम. पूरव १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४  
अदिकूण ५ नैरुतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदि  
शि ९ उर्द्धदिशि १० यह दश दिशिका अपने जाणे आणेका  
प्रमाण करे, चिह्नि लिखणी आदमी ज्ञेजणा देशांतरकी चिह्नी  
वांचणी नुसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम. तहां आज दिनमें स्नान २ बेर  
अथवा ४ बेर मोकला लेकिन पाणीका तोल रक्के, घने प्रमुख  
का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा  
नही गिराउं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा ज्ञात नियम. दिनमें ज्ञात २ सेर तथा २  
बेर जीमूंगा अथवा च्यार बेर उपरांत डुविहार या चोविहार  
धारणा प्रमाणे रक्के. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका  
प्रमाण रक्के तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल वारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सामने शुद्ध सपेद वस्त्र  
पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीठे अखंड  
तंडुल मुठे ३ थालमें रक्के उस पर नारेल रुपया या मोहर  
धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पन्तिकमे इच्छाका० सम्य  
क्त सामाइआरोहणार्थ चेइयाइ वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवं  
वण करे. बाधे पासे चावलांको साधियो करे श्रीफल धरे पीठे  
गुरु वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासकप  
करे, वर्द्धमान स्तुतिसे देववंदन करवावे पीठे सतरे शुईमें नवकार १  
एकेकका कानसग करे पीठे शासनदेवता निमित्त च्यार लोगस्त  
का कानसग करे, पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ नवकार  
गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्द्धतु० कहके वना स्तवन कहे पीठे जय

वीयराय कहे इति नंदी विधिः । पीठे स्वमासमण देइ श्रुतसां  
 मायक सम्यक्तसामायक आराइणार्थ काउसगं करावेइ, गुरु कहे  
 करावेमो सम्यक्तसामायक आरोगनार्थ करेमिसाउसगं, ४. लोग  
 स्तका काउसगा करे पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ वेर, नव  
 कार गुणकर गुरुके पास तीन वेर सम्यक्तदंरुक उच्चं गुरु पाठ  
 बोले उसकी मनने धारणा रक्के, सूत्रं अहन्नंजते मुह्याणं सम वे  
 मिष्ठतान् पन्थकमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पज्जिइ  
 अन्नतिठिएवा अन्नतिठिदेवयाणिवा अन्नतीठिपरिग्गहिय अरिहंत  
 चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुर्विअणालित्तएणं आलवित्त  
 एवा तेसिअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पाउंवा  
 तेसिगंधमद्धाइं पेसिउंवा नन्नवरायान्नियोगेणं गणाज्जियोगेणं बला  
 ज्ञियोगेणं देवान्नियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउविहं तंजहा  
 दवउं खित्तउं कालउं जावउं तवदवउं दंसण दवाइं अहिगिच्च खित्तउं  
 जाव जरहमज्जिमखंमे कालउं जावजीवाए जावउं जावउलेणं नव  
 लिज्जामि जावसन्निवाएणं नज्जविज्जामि जावकेगइ, उम्माइवसेणं  
 एसो दंसण पावण परिणामो नपरिवरुइ तावमे एसो दंसणाज्जिग्ग  
 हो, अन्नवराज्जियोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्ति  
 यागारेणं वोसिरइ, पाठे नुं ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एसे अकर श्रीगुरुके  
 पाससें हाथमें लिखोके जिन प्रतिमाकूं वासकेप चढावे, नवकार  
 पढतोअको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरुकूं वांदि, पीठे श्रुतसामायक  
 थिरि करणार्थ सत्तावीस उत्तास प्रमाणे एक लोगस्तका काउस  
 गं करे पीठे प्रगटलोगस्त कहे पीठे सम्यक्तरूप कट्ठपवृक्क पायके  
 अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावजीवं सुसा  
 हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएगहियं, १. पाठे गुरु  
 धर्मदेशना देवे, मिश्रवात्वरूप सम्यक्तेकें प्रांच अतीचार वर्जे, नित्य



चैत्यवन्दन इतनी बेर कहंगा, इतना नवकारे लिख गुणूंगा, फल  
केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चा  
रित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वत्रिभिमें पा  
लूंगा, नित्य पञ्चखाण इस मुजब कहंगा, दिनकी नवकारसी आ  
दिक रात्रिकों डुविहार त्रिविहार चतुर्विहार डेर बाधीस अजक  
चत्तीस अनंतकाय बिदल वगेरे ठोदूंगा इत्यादिक अपनी धारणा  
प्रमाण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप  
सुणे अतीचार नहि लगे ऐसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंभक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं स  
मीधेवेथूलगपाणाइवायं संकप्पितु निस्वराहं पञ्चस्कामि जावज्जीवाए  
एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं त्रिविहेणं मणेणं वायाए कोणं  
नकरेमि नकारवेमि तस्सजंते पक्कमामि निंदामि गरिहामि उ  
प्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंभक तीन बेर उच्चरावे ॥ १ ॥  
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाइवायं जीहाहेयाइहेउअ  
कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं आपणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं  
पञ्चस्कामि दक्खिन्नाए अविसए दव्वणं खित्तणं कालणं जावणं सबणं  
मुसावायं खित्तणं इत्थवा अणत्थवा कालणं जावज्जीवाए जाव  
णं जावगहेणं नगहेज्जामि जावणलेणं नवल्लामि अन्नेणं केणवि  
रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ तावअज्जिगह डुविहं त्रिविहेणं  
अन्नत्थणाज्जेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरइ ॥ २ ॥  
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं  
शयनिगहकारयं सचित्ताचित्त वहुविसयं पञ्चस्कामि वव्वणं खित्तणं  
कालणं जावणं दव्वणं अदिन्नादाणं खित्तणं इत्थवा अन्नत्थवा का  
लणं जावज्जीवं जावणं जावगहेणं नगहेज्जामि जावणलेणं नवल  
ल्लामि अण्णकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ ताव अ

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अन्नं नंते तुम्हारां समीवि  
 सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिप्रसंविज्ञागवयं जहा स  
 तीए पस्विज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुअयं सत्तसिरकावयं ऊवा  
 लसविहं सावगधम्मं उवत्तं पज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह०  
 सबस० वोसिरइ ॥ ९ ॥ षट् साख ठ ठंमी च्यार आगार संयुक्त  
 पाखं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चावण विधि ॥

॥ अथ वीसथानकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करो, वीस थानक रे  
 गणवुं विधि कइउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंतारण  
 गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी धुणउ ॥ ब्रूटक० ॥ धुणउ  
 जविआं बीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउर्व  
 स जिननी, पूंरुरीक आदिइ कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पंचयए  
 स्स, प्रजावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थानकि  
 आचारज जगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ थिठ  
 पूजा करो, नमो उवझायाणं रे ठठइ थानक जचरउ ॥ वस्त्र कंठ  
 र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें, तपि  
 पूजिए ॥ ब्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स झावचत्त सुख  
 करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आद्र फरसुं वाके  
 नमो विनयकारीणं विनय वरुनो कीजिए, इ  
 कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे  
 धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम लीनो, जिनवर प्र  
 धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समादि, मुख सुंदर जासुं, दूर  
 वरचिये ॥ ब्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तइ सूरजरे देजो अविचल  
 पनरमे, नमो वायगस्स विगए, गरकात्त जावनम् ॥  
 सतरमे नमो वेयावचकारीणं, ॥ ३ ॥

निगह दुविहं तिविहेणं अन्नत्थं सहस्सा० महत्त० सब० वोसि  
 रइ ॥ ३ ॥ अहसंजं तुम्हाणं समीवे उद्धारिय वेक्किय जेयं थूलमेहुणं  
 पच्चस्कामि अहागहियजंगएणं दिव्वंतिरिठं माणसियं एगविहं एग  
 विहेणं पच्चस्कामि दव्वं खित्तं कालं जावत्तं दव्वंणं मेहुणं खि  
 त्तंणं इत्था अन्नत्थवा कालंणं जावज्जीवाए जावत्तंणं जावगहेणं  
 नगहेज्जामि अन्न० सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहसं  
 जंते तुम्हाणं समीवे परिगहं पमुच्च अपरिमिय परिगहं पच्चस्कामि  
 थणथन्नाइ नवविहवत्तु विसयं इत्थापरिमाणं उवसंपज्जामि अहाग  
 हियजंगएणं तंजहा दव्वं खित्तं कालं जावत्तं दव्वंणं नवविह  
 परिगहं खित्तंणं इत्था अन्नत्थवा कालंणं जावज्जीवं जावत्तंणं  
 जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न० सह० मह० सब० वोसिरइ ॥ ५ ॥  
 प्रहसंजंते तुम्हाणं समीवे दिसिपरिमाणं पच्चस्कामि तंजहा दव्वं  
 खित्तं कालं जावत्तं दव्वंणं दिसिपरिमाणं खित्तंणं धारणाप  
 णं कालंणं जावज्जीवाए जावत्तंणं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव  
 ० तावअनिगह अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंजं  
 तुम्हाणं समीवे जोगोवजोगयेजोगेणं अनंतकायवहुवीया राइ  
 मुसावा<sup>२</sup> परिहरामि कम्मंणं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया  
 णं जाव<sup>२</sup> खरकम्माइयं रायानियोगंच परिहरामि तंजहा दव्वं  
 रोगाइयं एसोप<sup>२</sup> दव्वंणं जोगाव जोगवयं खित्तंणं इत्था अन्न  
 अन्नत्थणजोगेणं स<sup>२</sup> जीवाए जावत्तंणं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न०  
 अहसंजंते तुम्हाणं समीवे<sup>२</sup> वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंजंते तुम्हाणं समीवे  
 रायनिगहकारयं सचि अववज्ज्जाण पापोपदेश हिंसोपकरण  
 कालं जावत्तं दव्वंणं अन्नत्थदं जहासत्तीए परिहरामि तंज  
 णं जावज्जीवं जाव<sup>२</sup> जावत्तं दव्वंणं अन्नत्थदं खित्तंणं इत्था  
 जिज्जामि असेशकेणावि -

नमो नाण धराणं, नवूं जणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्जत्तीणं  
 रे उगणीसमे ज्ञविया मुणल, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं  
 सुणो ॥ वीसमे आनक रे नमो पञ्चावगाणं कही, संघजगती रे  
 यथासक्ति कीजे सही ॥ त्रू० ॥ सही कीजे वीस उली एक षठ  
 मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पम्कमणे  
 लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाहण धोअण टालिये,  
 आरंज वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु  
 साधवी रे आवक आविकाये सेविआं, तीर्थकर रे तेणे नामकर्म  
 बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, गाणां रे  
 सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ त्रू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा  
 सुपास उदाई नृप बलि, पोष्टिल मुनिवर अने दृढायुष शंख  
 शतक आवक रुली ॥ सुलसा रेवती आविकाये एह आनक  
 फरसिआं, सेवकजन कढ्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥  
 इति वीसआनक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग कैरवो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥  
 वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥  
 ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख के, जेठे सहु जवि चित्त सुख  
 पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके  
 मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रज्जि  
 गंस ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखनियां, मुख सुंदर जगुं, दूर  
 मे० ॥ १ ॥ कानें कुंल दोय जलके, शशि सूरज देजो अविचल  
 मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिजुवन परकाज जलनम् ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद  
अरज सुनीजें, पुरो बाँवित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ तुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हारे में  
खमी पुंकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में  
पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ विन  
अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें मारो ॥ सुजा० ॥  
॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं जव जवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखरुली, मोरी रेन  
दिवस नित लग रहीर ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय जन  
दोस्ती कीनी, ले पीठें ठिठकाय दर्ई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया  
करीने, सिवरमणी तें वर लेई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई  
जविक दसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥  
आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन ज्यो मेरे, आनंद चित्त अब  
जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम विन उर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभु  
वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम  
प्रभु जव जव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

अ. राया. ॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन ज्यो, क्या सोये  
काळतुं या जागरे ॥ रा० ॥ दोय घनी तरुको अब रहियो, ऊठ धरममें  
लउसं जावज्जीव ॥ १ ॥ जिनवाणी नरवीच धार ले, उर जरम  
लिझामि अमोशकेसर ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए  
॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर  
ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ जमत फिरयो संसार जगतमें, मेढो जव  
दी फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ जव जवके प्रभु तुम जगनायक, राखो  
शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड़्यो तेरो, सरण  
अही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कमखानी देशी ॥ जाव धरि धन्य दिन आज सफलो  
गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर जरि विमल  
गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ १ ॥  
पग पग नमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरण तिहां चलत  
आयो ॥ आज धन दीह जागी सुरुतकी दिशा, आज धन दीह  
गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं  
करी, पुण्यजंमार पोतें जरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि  
शिखर, रूपजजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥  
परमात्म परमेश्वर, आत्म परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥  
केवलज्ञान दिवाकर, जांगे सादि अनंत लाल रे ॥ जासक लोकालो  
कको, हाथिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद चंद चक्र  
सरु, सुर नर रहे कर जोरु लाल रे ॥ पदपंकज सेवें सदा, अणहूते  
एक कोरु लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुऊ  
मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, जवजव  
देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उधारण ठो तुमें, दूर  
हरो जवदुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करे देजो अविचल  
सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमं, मन जलाम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनसो अष्टापद मोहो मादसो जी, नाम जपुं निशि  
 दीप्त जी ॥ चत्तारी अष्ट दस दोष वंदीया जी, चिहुं दिशि जिने  
 चौबीस जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पांवर  
 शाला आठ जी ॥ आठ जोजन जुंचुं देहरं जी, दुःख दोहग  
 जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ जरतें जरायां जलां देहरां जी,  
 सो जोंघरां धूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने  
 ऊज जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली  
 ज्ञानीरघु गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे  
 ऊज जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुजने पांखरी जी, आवुं केम  
 हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह नगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा  
 राज ॥ सु० ॥ देखि नदासा अपणा दासा, दीजें कठुक दिलासा  
 राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चामी चटकी जवमाहि जटकी, नाच्यो में  
 विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी,  
 लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत  
 संजाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली  
 वाजे ताली, वात अचंजा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परबपंगारी  
 पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी  
 मन शुद्ध धारी, श्रीअमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥  
 सांजलीने आवे तूम तीरें, जनम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक  
 अरज करुं देणकेणे ॥ रोने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु-  
 गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजप्रद लीन, पूजो प्रणमो-  
 नव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० ( एसा कह  
 गोमे टीकी दीजे ) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणप्रयासकर, निम्मलगु-  
 णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पहधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 लोकालोक प्रकाशक नांणी, जविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर-  
 मानंदतणी नीसांणी, तसु जगंते मुऊ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कु-  
 सुमांजली मेलो नेम, जिनंदा तोरा० ॥ ( एसा कह हाथे टीकी दीजे )  
 ३ ॥ गाथा ॥ जेसिज्जासिज्जंतिजे, सिज्जस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन  
 ठवियमण, सोत्तेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह  
 त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा-  
 ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा  
 तोरा च० ॥ ( एसा कह खांधोके टीकी दीजे ) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म  
 दिद्धिदेसजय, साहूसानुणीसार ॥ आचारजजवज्जायमण, जोनिम्मल  
 आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धारयो, मोक्षतणो  
 कारण निरधारयो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रण-  
 मंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ ( एसा कह  
 मस्तक टीकी दीजे ) ५ ॥ ( पोढे स्नात्रिया चमर ले के प्रजुजीकूं  
 दुलावे ) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर ९ नमिय मनसंग, कल्लाणक वि-  
 हि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थं क-  
 र, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥  
 जम्म समय इगवीस, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज-  
 गीस ॥ ढाल ॥ जव तीजे समकित गुण रम्या, जिनजक्की प्रमुख  
 गुण परिणम्या ॥ तजि इंडिय सुख आसंसना, कर आनक वीसनी  
 सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रजावता, मन जावना एहवी



ज्ञावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, ऐसी ज्ञविदया मन उद्ध  
 सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं, निपजावी जिनपद निरम  
 लूं ॥ आजवंथ विचे इक जव करी, अज्ञा संवेग ते धिर धरी ॥ ३ ॥  
 तिहांथी चवि लहे नरजव उदार, जरते तिम एरवतेज सार ॥ म  
 हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥  
 ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेषे ॥ गजवर  
 उज्जल सुंदर, निरमल वृषज मनोहर ॥ निरजय केसरिलिंद, लख  
 मी अतिह अवीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शसि सुकमा  
 ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश  
 पसूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण  
 सायर ॥ वारमें जुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि  
 खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने ज्ञासे, राजा  
 अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥  
 इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य  
 उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तव रयणी समे, देख सुपने  
 हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांजले  
 सो ज्ञागी ॥ त्रिजुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधान इंद्रा  
 दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 चंडाउलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधे मन आ  
 णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, जवजल तारण  
 प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ जवअरुविय पारग सबवाह, केवलना  
 लाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उलं  
 ट्यो आसाह मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय, बलयादिकमां  
 निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन  
 आणांद कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुहा आवि तब, कर अंजलि

प्रणमिय मढ सत्य ॥ सुख जाये ए कृण आज सार, तिय लोय  
 पहु दीगो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल  
 तापित ननु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या  
 विष चूरण गरुमवान ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समढ, प्रगट्यो  
 तसु प्रणामी हुन सनत्य ॥ इम जंपी सकळव करेवि, तव देव  
 देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंजा गीत गांन, सुरलोक हुन मंग  
 लनिधान ॥ नरहेत्रे आरज वंस गंम, जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥  
 ॥ ७ ॥ पिता माता धरे उच्चव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष ॥  
 सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरणी जनने उमंग ॥ ८ ॥  
 शुन वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंझादिक हर्ष साथ ॥ सुख  
 पांम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइइ थई अतीव ॥ ९ ॥ (एसा पढ  
 चैत्यवंदन करणा पीठे हाथमें साधिया करणा पीठे कलस पंचामृत  
 का लेकर खना रहे ॥ ) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख  
 कार, नरखिच मंमण डुह विहंमण नविक मन आधार ॥ तिहां  
 राव राणा हरख उच्चव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अबधि वि  
 शेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु  
 मारी गावती गुण ठंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आ  
 णंद ॥ हे माय ते जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म  
 निम्मल करण कारण करिस सूर्यकम्म ॥ २ ॥ तिहां नूमिसोधन  
 दीप दर्पण वाय वींऊणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर ज  
 ननि मज्जणकार ॥ वर राखनी जिन पांण बांधी दिये इम आसी  
 स, जुग कोमिकोमो चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उला  
 खानो ॥ जिन रयणीजी दस दिसि उज्जलता धरे, मुन लगनेजी  
 ज्योतिलचक्र ते संधरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताधरे,  
 तिण अवसरजी इंझासण पिण अरहरे ॥ नूटक ॥ अरहरे आसन इंद्र

चिंतें कोन अवसर ए वन्यो, जिन जन्म उन्नवकाल जांणी अतदि  
 आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण जगते ऊ  
 मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते, देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥  
 ॥ ढाल ॥ तव सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह  
 दिराव ए ॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुज अणे, तसु जगतेजी सुरप  
 ति मंदिरगिर गणे ॥ ब्रूट० ॥ गणे मंदिर शिखर ऊपर जुवन जीवन  
 जिनतणो, जिन जन्मउन्नव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥  
 तुम शुद्ध समकित आस्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पां  
 तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांज  
 लजी सुरवर कोमि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांझमी  
 चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी  
 स्वामि वधाविया ॥ ब्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं क  
 तपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीगो मुऊ समो कुण अन्य ए ॥ हे  
 जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उछंग तुमचे वलिय  
 थापिस आतमा पुन्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज  
 करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक  
 विधिजी तव वत्तीस आगत्रि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊ  
 भहे ॥ ब्रूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा  
 दती, अठपरा कोमी हाथ जोमी हाव जाव दिखावती ॥ जय जयो  
 २ तूं जिनराज जगगुरु एम दे आसीस ए, अम त्राण सरण आ  
 धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां  
 म्कवनमें चिहूँ दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥  
 तिहां आणीजी शक्रे निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति  
 आवी रह्या ॥ ब्रूट० ॥ आविया सुरपति सर्व जगते कलश थ्रेणि व  
 णाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औपथ सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अज्जु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर  
 व्यावो सबे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव  
 कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पञ्चमदह आदि  
 दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति  
 अरु कलश कर सहस अघोचरा, उच्च चामर सिंहासण सुजतरा ॥  
 उपगरण युष्फ चंगेरी पमुहा सवै, आगमे जासिया तेम आणी ठवे  
 ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता  
 धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम  
 सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म  
 आरोपता, कलश पाणी मिसे जक्तिजत्र सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे  
 सर्व आव्या वही, शक्र उडंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥  
 दंडोदेवा अणाइकालो अदिठपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥  
 मिञ्चत्तमोहविद्धंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवाहिदेवोदिद्धो २ हि  
 यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पज्जणंति वण जवण जोईसरा, देव  
 वेमाणिया जति धम्मायरा ॥ केविकप्पठिया केविमिच्चाणुगा, केवि  
 वररमणे वयणेण अइञ्जगा ॥ १ ॥ वस्त ॥ तत्थअच्चुय २ इइ आ  
 देस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदञ्चुत  
 रूप सरूप जुय कवण एह पुडंति सामिय, इइ कहे जगतारणो पा  
 रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अज्जिषेस ॥  
 ॥ २ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे  
 न्हाभे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वधते सुज परिणामे ॥ अ  
 च्युत्तादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंजणी  
 पमुहा, इम अज्जिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक ० ॥ गाथा ॥ तबईसा  
 णसुरिंदो, सकंपज्जणेशकरिसुपसान ॥ तुम्हअंकेमहतान, विणमि  
 त्तअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासकिंदोपज्जणइ, साहमीयवञ्चलमिबहुला

देहा ॥ आणाएवंतेणं गिएदह दोउकयत्थाजो ॥ १ ॥ (कलस ढाले)  
 सोहम सुरपति वृषज रूप करि, न्हवण करे प्रभु अंगे ॥ करिय वि  
 लेपन पुष्पमाल ठवि, वर आजरण अजंग ॥ १ ॥ तव सुरवर बहु जय  
 रव कर, नच्चे धरि आणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पांभ्यो, जांज  
 सु द्विव जवफंद ॥ २ ॥ कोरु बत्तीस सोवन उवारी, वाजंते वर  
 नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥  
 आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्यारो  
 धणी अह्यारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख  
 ज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति जगते सहित नंदीस  
 र, करे जिन जक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर,  
 कहता प्रभु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कळ्याणक, इच्छा चित्त  
 मजार ॥ ६ ॥ खरतर गच्छ जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥  
 ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद  
 जिन जगते गायो, जनम महोच्चव उंद ॥ बोधबीज अंकूरो उल  
 स्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा जगते करो,  
 आतम हित काज ॥ तजिय विजाव निज जावमा, रमता सिव  
 राज ॥ ९० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्थे जेह जिणंद ॥  
 संपइ सीमंधर प्रभु, केवलनाण दिणंद ॥ ९० ॥ २ ॥ जन्ममहोच्चव  
 इण परे, आवक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन  
 खंत ॥ ९० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां जव पार ॥ जिन  
 प्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मजार ॥ ९० ॥ ४ ॥ इतिस्नात्रपूजासं०  
 ॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महो  
 दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचि मनाः स्तपयामि वि  
 सुदये ॥ नै ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमङ्गलैन्द्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चं-  
 दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल ज्ञाव युक्तं  
 जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्त्व विकास कृतेर्चयेः ॥  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं केसरचंदनं यजामहे ॥ १ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विक-  
 च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन ज्ञाव समुन्नवेः ॥ सुपरिणा-  
 म प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्त्व मयं हियं जाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं  
 प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चौथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म  
 महेधन दाहनं, विमल संवर ज्ञावसु धूपनं ॥ अशुभ पु-  
 ञ्जल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु मुहर्षतः ॥ ४ ॥  
 ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ जविक नि-  
 र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि-  
 शुद्ध समन्वितं, दधतु ज्ञाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प०  
 दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ षष्ठी अकृत पूजा ॥ सकल मंगल केल नि-  
 केतनं, परम मंगल ज्ञाव मयं जिनं ॥ श्रयंति ज्ञव्यजना इति दर्श-  
 यन्, दधति नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अकृतं  
 यजामहे ॥ सातमी नैवेद्य पूजा ॥ सकल पुञ्जल संग विवर्जनं, स-  
 हज चेतन ज्ञाव विलासकं ॥ सरस जोजन नव्य निवेदनात्, पर-  
 म निर्वृति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी  
 फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफलव्रज ढोकनं ॥  
 विहत मोक्ष फलस्य प्रज्ञो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥  
 ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्थ) इति जिनवर वृंदं ज्ञातः पूजयं-  
 ति, सकल गुणनिधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्त्व  
 मुद्गावयंति, परम सहजरूपं मोक्षं सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 प० अर्थं यजामहे ॥ ( वस्त्र ) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला,  
 सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यहते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वा चर्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ नै ह्रीं श्रीं प० वस्त्रं  
यंजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सत्तरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछै अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रक्तेवीमें कुंकुम तथा  
केसरका साथिया करै पीछै शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलममें  
ढालै मुखकोस बांय उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन बैर नमस्कार कर हाथ  
के धूप देकर रक्तेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती सुनो कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ ज्ञाव ज्ञै जगवंतनी, पूजा सत्तर प्रकार ॥ पर  
सिद्ध कीधी डोपदो, अंग ठवै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति  
सकल जग जागती, हारै अइयो जा० सरसति समरि सुजिंद ॥ सत्तर  
सुविध पूजातणी, पञ्चशिसु परमानंद ॥ १ ॥ गाहा ॥ न्हवण १ विलेवण  
२ वत्थयुगं ३, गंधारुहणं ४ पुष्परोहणं ५ ॥ मालारोहण ६ व  
न्नयं ७ चुन्न ८, पन्नागय ९ आन्नरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय  
वंसुधरं ११, पुष्पं पगरंच १२ अढमंगलयं १३ ॥ धूव नखेवो १४  
गीयं १५, नटं १६ वज्रं १७ तहा जणियं ॥ ३ ॥ सत्तर सुविध  
पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मज्जार ॥ डुपदसुता डोपदि परै, करियै विधि  
विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी नचि  
त-मानी रे, अइयोउ० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुनृत  
मणिकलस कर विविध बांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगव,  
लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारियारि ॥ अ० ॥ जणिय कुस  
मांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन ईड जिम तिम अ  
गारी ॥ अ० ॥ २ ॥ डुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण मुगति  
सोपान ॥ धर्मरूप तरु सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

क्षी पूजा साचवै, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु  
 राणे, करइ सुकृत हितकांम ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र  
 कारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण उढ्योरी मुधारस, तप-  
 त बुजिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रभूकुं विलोक नसि जतन  
 प्रभारजित, करत पखाल सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-  
 म निज वृंजन पुलावत, पंककुवरप जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि  
 तरणि नवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥  
 शिवपुर पंथ दिखावन दीपी, धूमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥  
 ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिढ्योरी सुमति संग, जागी सुदिसा शुभ  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सारंगजरकरतां, आस फली  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पढ पंचामृतसुं न्हवण कीज । डोवे पांवके अंगुठै जलधार दीजै ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणसें अंग जिनविंका प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहै)

रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहै जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर  
 सु धूपित वाससुं ॥ वाससूं हारे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलियै  
 ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा न० ॥ मांहे मृग-  
 मद कुंकुम जेलियै, कर लीयै हारे दे० क०, रयण पिंगणि कचो-  
 लियै ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंवै सिरै रे देवा, जाल कंठ उर  
 छंदरंत रै ॥ डुख हरै हारे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजोयै ॥  
 गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम  
 सुरगिरै, तिम करै हारे देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥  
 ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन,  
 श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे नवोदधि तीर  
 ॥ १ ॥ भिटे ताप तसु देहको, परम शशिरता संग ॥ चित्त खेद सम  
 उपसमें, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउत्र ॥ विलेपन कीजै



जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद  
 यक्ष कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर  
 खंधै सिर जाल कंठ, उर उदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर  
 त विलेपन, तपति वुजित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव  
 ३ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि  
 करो सुललित पूजा, जैसै गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय  
 विलेपन पूजा ॥ १ ॥ ऐसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्ज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥  
 लाज्ज ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गोमती ॥  
 कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हारे  
 अइयो० ॥ कनक मंमि हय लाल पद्मव शुचि, वसन युग कंति  
 अधिवासिया ए ॥ हारे अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्को  
 यथा, करिय पहरावणी ढोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो दे-  
 वनें, वस्त्रयुग पूज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैरागी ॥  
 देवदुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥  
 तूंही हे सबहि हितु तूंही है सुगति दाता, तिण नमि प्रभुजी के  
 चरणो लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहै साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण,  
 देवदुष्य मिस देहु उत्तम वांगूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत  
 पीतां, सब रारु दुख संसय धुरम जांगूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृति-  
 य वस्त्रयुगल पूजा ॥ (ऐसा कह प्रभुजाकूं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासनेपूजा ॥

॥ गोमती रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण  
 वास ॥ कुमति कुगति दूरै हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग  
 सारंग ॥ हां हो रे देवा वायनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो  
अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजै जिन अंग  
जवंगू ए ॥ हा० लाडि जवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अर्ज  
गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौमी ॥ भेरै प्रभुजीको पूजा-आ-  
नंदमेलै, पू० ॥ वासजवन मोह्यो सबजो ए, संपदा जेवै ॥ पू० ॥  
॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण  
तोरां, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन  
राजं तत्ताथेइ, चतुर गति डुरक गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥  
इति चतुर्थी वासहेप पूजा ॥ ( एसा कह चूर्णवास चढावे )

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगै पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार ॥  
प्रभु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥  
चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई  
जूहिका, वज्रसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण नवरि धरै ए,  
अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसैं वर वरे, विधि जिन  
पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कान्हो ॥ सोहे री माई व  
रणें, मन मोहे री माई वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसुम जिनच  
रणें ॥ सो० ॥ विकसी इसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रभु हम सरं  
णै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी, कु० ॥ पंच  
विपै हां० पं० दुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जग  
वंतकी, जविक नरां हारै ज० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठी पूजाए छती, महा सुरजि पुष्पमाल ॥ गुण  
गूंथी आपे गलै, जेम टलै दुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज  
री ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोग पारिध कली

ए ॥ जला पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल  
 गुलाल पामल जिली ए ॥ जलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-  
 गरा वेजला मालती, पंचवरणै गुंथी मालती ए ॥ जलां गुं० ॥ हे  
 माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालती ए ॥  
 जलां स० ॥ २ ॥ इति ॥ राग आसानरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक  
 एधतिनंदै, चकोरकुं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि  
 वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमंदै ॥ दे० ॥  
 ॥ २ ॥ ठढी रे तोरुपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरिषण हारे स०  
 होइ तिम वंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधुकीरत सकल आस्था सुख,  
 जविक जगत हारे ज० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति ठढी  
 तोरु पूजा ॥ ६ ॥ ( एसा कह फूलमाला प्रभुकुं पहिरावे ॥ )

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगै फूल केसरसैं अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवला, सोनै तेम सुगात ॥ चाढो  
 जिम चढतां हुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौरी ॥  
 कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हारे अ० ॥ कुंद  
 गुलावसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी  
 अलंकरीयै, अंग अलंक मिस माननी सुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥  
 ॥ इति ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं० ॥  
 कुंद मचकुंद गुलाव सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ दमणक मरुक पामल अरविंदो, अंस जुई वेजलवाती ॥  
 पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी जान्ती ॥ पं० ॥  
 ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, जैरवी कुगति व्रत तिझाती ॥  
 पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा धूप लेकर खड़ा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेवहारस सार, सुमती पूजा आवमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु ज्ञावसें ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥  
 कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥  
 सुरजि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥  
 ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जव मोरीयो जी देवा, अशुभ करम चूरीजै जी ॥  
 अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तव कुमतीजन खीजै जी ॥ तव  
 सुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री  
 माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र  
 तीर्थकर बांधइ ॥ जला१ गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-  
 ढ्हारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर ज्ञाव घन वरषत, सामेरी  
 मति जागै ॥ जलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूहव गीत समूल ॥ दीजै  
 तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौरी ॥ वस्तु ॥  
 सहसजोयण१, हेममय दंरु ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत  
 घुघरीय बाजै ॥ मृडु समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद  
 ल सयल ज्ञाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न  
 वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥  
 आपै दांन अजंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नटनारायण ॥ जिनराज  
 को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन  
 सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षिणा, क० ॥ सधवधू  
 सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ ज्ञांति वसन पंचवरण बन्यो री,  
 विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू ज्ञात नवमी पूजा नव, पाप  
 नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

( ॥ ए कही ध्वजा चढाईजै ॥ पहली बाजित्र बाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें  
 धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षिणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु  
 पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख धजा विस्तारै ॥ )

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

( एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खड़ा रहे ॥ )

॥ दूहा राग केदारमे ॥ दसमी पूजा आभरण, रचना यथाश्र-  
नेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे  
जिनवरतणै, रयण मुगट ऊलकंत ॥ तिलक जाल अंगद जुजा, श्रवण  
कुंमल अति जंति ॥ २ ॥ राग अथजास गुंमलहार ॥ आसावरी ॥  
पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणैक लाल रसणिया, हीरा  
सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुजग अंक अं-  
जना, मनमोहे रे ॥ ३ ॥ मौलि मुगट रयणै जङ्घ्यो, कानि कुंमल  
हारे अति जुगतै जुङ्घ्यो नर हारू रे, मन वारू रे ॥ जाल तिलक  
वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, दुखहारू  
रे ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ प्रजु सिर सोहै मुगट मणि रयण जङ्घ्यो,  
रय० ॥ अंगद बाहु तिलक जालस्थल, यहुनीको कवण घङ्घ्यो ॥  
॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंमल शशि तरुण मंमल जीपे, सुरतरुसै  
अलंकर्यो ॥ दुखकेदार चमर सिंहासन, उत्र सिर नवरि धर्यो,  
अलंकृत उचित वर्यो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक इयाभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोजतो, फूंदै लहकै फूल ॥ महकै  
परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥  
कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू  
ए ॥ अईयो ० तिलक दमलकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध  
पारुलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिजुवनकूं रुचै, कुश  
मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हारे अ० ॥ गुच्छ चंडोदयं जूवकानन्नयं,  
जालिका गोख चित्तचोरणूं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो  
मन मोह्यो माईरी फूलघर आलंद जिलै, फू० ॥ असत नसत दांम  
वधरी मनोहर, देखत तवही सब डरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसुम मंरुप श्रेष्ठ गुह्य चंदोदय, कोरणी चारु विनाश सजै ॥ इग्या  
रमी पूजा वली हे रामगिरी, विबुध विमान जैसे, तिपुरि जजै ॥  
॥ १॥ फू० मे० ॥ इति इग्यारमी फूलवर पूजा ॥ (फूलवर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरपै बारमी पूजमें, कुसुम वादलिया फूल ॥ हर  
ण ताप डख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग ज्ञीम  
मढहार करखेकी जाति ॥ मेघ वरसै जरी पुष्प वादल करी, जानु  
परिमाण कर कुसुम पगरं ॥ पंचवरणें वण्यो विकच अनुक्रम चिण्यो,  
अधोवृंत नही पीर पसरें ॥ मे० ॥ १ ॥ वास मढके मिलै जमर  
जमरी जिलै, सरस रसरंग तिण डख निवारी ॥ जिएप आगै करै  
सुरप जिम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥  
राग ज्ञीममढहार ॥ पुष्प वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-  
जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥  
गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥  
शुंजत२ मधुकर इम पन्नै, गुं० ॥ मधुर वचन जिनगुण गुणइ ॥ पु०  
॥ २ ॥ कुसुमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीर नही सुमणें ॥ पु० ॥  
समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥  
॥ ३ ॥ बारमी पूज जविक तिम करै, कुसुम विकस हस उचरै ॥  
तसु ज्ञीमबंधन अधरा हुवै, जे करहिजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥  
इति बारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै  
सुमति सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल  
मिह्या, अखरु गुणै जिल्या, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्लेषण  
समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥  
अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, जिनप आगै सुधानक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्ध  
करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वली ते रसमें,  
रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्पण जडासन नंदावर्त पुर्णकुंज, मन्त्रयुग  
श्रीवह तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण  
सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेढहारस घनसार ॥ कर  
प्रजु आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वैलानल ॥  
कृष्णागर कपूर चूर, लोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्क सेढहारस सार, गंध  
वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस जेलियै,  
श्रीवास धूप दसांग अंवर, सुरजि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरलिय दंरु  
कनक मंमति धूपधाणो कर धरै, जववृत्ति धूप करंति जोगं रोग  
साग अशुज हरे ॥ १ ॥ राग मालवी गोमो ॥ सब अरति मथन  
मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ धामधूमावलिय धूसर,  
कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत जविकुं, म  
धूमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विसाल रे ॥  
आरती मंगल माल रे, मालवीगोमी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति  
चवदमी धूप पूजा ॥ ( एसा पढके धूप खेवे ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ जलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥  
जावो अथकी जावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें  
आर्या ॥ यद्दन्त केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण  
वर्ण तान वाद्यै, मात्रा ज्ञाषालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः,  
स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंदुर चारोचारी गीतं गानं सुगीयुषं  
॥ १ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुन अमृतं, तार मंझदि अ  
नाहत तानं, केवल जिय तिय फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

कुमार कुमरी आलापै, सुरज नृपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र.  
 ध्वं धूयो प्रतिमानं, आयति बंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ १ ॥ सबद-  
 समान रुख्यो त्रिभुवनकुं. सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर-  
 मोन शिव श्रीगीतं, पनरमो पूज हरै डुरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ( कुमार कुमरी नाटिक करै ॥ )

॥ दूहा ॥ करजोमी नाटिक करै, सऊ सुंदर सिणगार ॥  
 जवनाटिक ते नहि जमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट  
 काव्यं ॥ जावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा  
 सम रूव वेस वयसो मत्तेज कुंजत्थणा ॥ लावणा सगुणा पिकस्स  
 रवई रागाईआ लावणा, कुमारी कुमरावी जैन पुरज नच्चंति सिं  
 गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अहस्सयं कुमारिकुमरीन सूरियाजे  
 एंदेवेणं संदिठा रंगमंवेपविठा जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति  
 ॥ १ ॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, डागरुदि तत्ताथेइ  
 ॥ अ० ॥ डागरुदि २क थौंगिशन, मुखेतत्ताथेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे  
 णु वीणा मुरज बाजै, सोलही सिणगार साजै ॥ तनन्नन्ननेईय ॥  
 अईयो० ॥ घणण घणण घणणण धुग्घरु घमके, रणससससेईय ॥  
 ॥ अईयो० ॥ १ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी जेंकार क  
 रणी ॥ सोज्जंती कुमरीय ॥ अईयो० हस्तकं हावादिजावै, ददन्ती  
 जमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटिकतणी, सूरियाजे  
 रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगत्ते जविक  
 खोणा, आणंद तत्तेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततधन सुखिरै आनधै, वाजित्र चौविध वाय ॥  
 जगत जली जगवंतनी, सतरमियै सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर  
 मद्दल कंसालो, महुयर मद्दल सुवज्जए पणवो ॥ सुरनारि नंद तूरो,  
 पक्खणइ तूं नंद जिणनाइ ॥ १ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिआ



न्द बोहत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्म  
ल वावन सुरा, तिबल बोले रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥  
जेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैणावंती ॥ जैन  
शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंध परपरिय वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥  
सेव जविक मधुमाधव फेरी, जवनी फेरी नप्पजलंती ॥ कहै  
साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥  
तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ जवि तूं जण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै  
॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, शुय रंगे हम ठाजै  
॥ जवि० ॥ १ ॥ अणदलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सि  
ध आबाजै ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, जणी में जगति हि  
त काजै ॥ जवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंड सूरि खरतर पति, धरम  
वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अठार श्रावण धुर, पंचमि दिवस  
समाजै ॥ ज० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु  
पसायै सुविध हुय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब  
लीला सुख साजै ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति सतर जेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उचरासण करकै तिलक करके रंकेवीमें  
स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दाक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा  
चरणकमलकीमें जावैं बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी  
कैनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष  
सोवनमें काया, मृग लंठन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ च  
क्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै०  
॥ ४ ॥ मंगल आरती जेराहिं कीजै, जन्म को लाहो लीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद  
पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदको पूजामें जो अवस्य चीज चाहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली  
छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रवा धूप चावल गहूँ चणोकीदाल मूंग उडद  
नव प्रकारका नैवेद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्कान खजली मिश्री पतासा  
ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे  
नवनालीकेकलस ॥ ९ रकेवी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप  
नामें रोकनाणा रु?) हानपूजा नारेल समेंत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसें जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करो, तास धरी नर ध्यान ॥

अरिहंतपद पूजा करो, निज शक्ति प्रमाण ॥ १ ॥ काव्य ॥ उपपन्न  
सन्नाण महोमयाणं, सप्पाणि हेरा सणसंठियाणं ॥ सदेसणाणं  
दिय सज्जणाणं, नमो१ होव सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोअंत संत  
प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ थया जेहना  
ध्यानथो सौख्यज्ञाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ क  
र्या कर्म दुममर्म चक्रचूर जेणें, जला ज्ञव्य नवणद ध्यानेन तेणें  
॥ करी पूजना ज्ञव्य ज्ञावे त्रिकाले, सदा वासियो आत्ममा तेण  
कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना ज्ञव्य  
ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाणिहारे समेता, सुरेसै नरेसै स्त  
व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म व्यारे अलग्गा, ज्ञवोप  
अही व्यारे ठे जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकलयाणके सुख पांमै, नमो  
तेह तीर्थकरा मोक्षकामै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं,  
धरम धुरधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वरु  
वीरो जी ॥ तो० ॥ उल्लाखो ॥ वर अखण्ड निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व  
ज्ञाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आत्म ज्ञावे चरण धिरता वास

ता ॥ जिन नांमकर्म प्रज्ञाव अतिसय प्रातिहारज सोजता, जगजंतुं  
 करुणावंत जगवंत जविकजनने शोभता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सी  
 मंथर साद्वि श्रमे ॥ ए देसी ॥ तीजे जव वर आनक तप कर, जि  
 न बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंडै पूजित जे जिन, कीजे तास प्र  
 णाम रे जविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ ज० ॥ जिम चिरकालै नं  
 दो रे ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे  
 ॥ ज० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जे  
 हने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवाळूं ॥ सकल अधि  
 क गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टाळूं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्न ऊपन्ना, जोग करम खिण जांणी ॥ जेइ  
 दीक्षा सिद्धा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ९ ॥ महागोप महामादण कहिये, निर्यामिक सत्सदाद ॥ उप  
 मा एहवी जेहने ठाजै, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु ठाजै, पैत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिबो  
 धै करे जगजनने, ते जिन नमिये उछाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥  
 ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो अको, दबह गुण पर्यायै रे ॥ जेद छेद  
 करी आतमा, अरिहंतरूपी आयै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सां  
 जलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यानि आतमा, रुद्धि मिले सब  
 आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ उँ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान  
 शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टाद्वयं  
 यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अ  
 शुभ करम दूरै टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण  
 माणंद रमालयाणं, नमोऽर्पयंत चक्रयाणं ॥ सम्मग्न कम्मरक्कयका

रगाणं, जम्मंजरा डुस्क निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खयं  
 पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि जय जेण वाम्या ॥ निरावरण  
 जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १५ ॥ त्रि  
 ज्ञागोनदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानंत  
 सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनाबाधअपुनर्जवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥  
 ॥ चाल ॥ सकल कर्ममल कय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अ  
 व्याबाध प्रज्जुतामई, आतम संपत जूपो जी ॥ उल्लाखो ॥ जे जूप  
 आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपर्यो करी ॥ स्वइव्यक्षेत्र स्वका  
 लज्ञावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वज्ञाव गुणपर्याय परणति, सि  
 द्धसाधन परजणी, मुनिराज मानसरइंस समवरु, नमो सिद्ध महा  
 गुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिज्ञाग  
 विसेस ॥ अवगाइन लही जे शिव पुढता, सिद्ध नमो ते असेस रे  
 ॥ १८ ॥ ज्ञ० ॥ पूरब प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग  
 ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ ज्ञ० ॥  
 ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लो  
 कंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥  
 ॥ २० ॥ ज्ञ० ॥ सि० ॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम  
 गुण जास ॥ उपमा विण नांणी जवमांहे, ते सिद्ध दिनु उल्लास  
 रे ॥ ज्ञ० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम,  
 विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध स  
 हज समाधि रे ॥ ज्ञ० ॥ २१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वज्ञाव  
 जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गु  
 ण खाणो रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ उँ ॥ ह्रीं ॥ इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दिव आचारज पदनणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै हरै, सूरै ज्ञाव असेष ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरैणदूरीकय  
 कुग्गहाणं, नमो रसूरिस्समप्पहाणं ॥ सदेसणा दाणसमायराणं, अ  
 स्कंठत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्त्वताजा, जिनेंझग  
 में प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ पद्वर्गवर्गित गुणै शोभमाना, पंचाचारने पा  
 लवे सावधाना ॥ २ ॥ ज्ञविप्राणिनें देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा  
 सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो  
 शुद्धजल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणवत्तीसे  
 धामो जी ॥ चिदानंदरत्नस्वादता, परजावे निक्कामो जी उल्लाखो  
 ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदधन, साध्य निज निरधारधी ॥ वर  
 ज्ञान दरसन चरण दोरज, साधना व्यापारधी ॥ ज्ञविजीवबोधक  
 तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, उ  
 विधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै,  
 मारग ज्ञाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या  
 चो रे ॥ ज्ञ० ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर वत्तीसगुणैकरि सोनै, युगप्रधान  
 जगधोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥  
 ज० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम नवएसे, नहि विकथा  
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे  
 ॥ ज० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पमिचो  
 यण बलि जनने ॥ पटधारी गच्छुंज आचारज, ते मान्या मुनिम  
 नने रे ॥ ज० ॥ २९ ॥ सि० ॥ अत्यमिये जिन सूरज केवल, वंदी  
 जे जगदीवो ॥ जुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो  
 रे ॥ ज० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज जला, महामं  
 त्र गुप्त ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे  
 ॥ वी० ॥ ३१ ॥ नै ह्रीं आचार्यपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चौथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥

जेवज्ञायापद अरचियै, अनुज्ञवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य सुत्तजेषु  
 वित्प्रारणतप्पराणं, नमोश्वायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणस्सिमु  
 णं, सवप्पणावज्जियमञ्जराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिगुणध्या,  
 हाया, नमूं वाचकात्यक्तमदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादिर, कहि  
 ने, जिके सावधानें निरुद्धाजिधानें ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्चरित्रंवि  
 णौघा, प्रवादिहिपोच्छेदनेतुल्यसिंधा ॥ गुणीगच्छसंधारणेआपूरूपैस  
 उपाध्यायतेदंदियेचित्प्रचूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुअप्रतीत सरू  
 अऊव मदवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयंअकिंचणा, तवसंयमरजी ॥ चाल ॥  
 जल्लावो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुप्तगुप्ता, सुमति सुप्रता शुक्ता जाव प्रग  
 द्वादवादं तत्वसाधक, आत्मपरविज्ञंजनकरा ॥ जवच सुखकारण  
 रसासन, बहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदांसु २॥ढाल॥शुद्ध  
 कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिद्धायामीजै तेह नमीजै,  
 तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो मल उपशम कय न  
 ज्ञ ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांननि सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,  
 जवत्रिएहै जे लहै शिवसंपद, नमियैते ॥ सि० ॥ पांच वार उपश  
 ॥ मुखशिष्यनीपायेजेप्रज्जु, पाहण एक वार कायक ते सम्यक्,  
 कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजा ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नाण प्र  
 जकुपर सरिला गणचित्तक, अवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे  
 नमतां, नावै जवज्जय सोणन बलित रे ॥ ज्ञ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥  
 नरस समवयणै, अहितत्यो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श  
 वलि, जिनज्ञासन शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज्ञ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥  
 तपसिज्ञायै रत स्वगादिक गुण, खंयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते  
 आतमा, जगबंत्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ नै ही  
 ठकपदे अष्ट अष्ट ड्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सतम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आ

हतिमर मुनिरपदं वंदता, निरमल आवे देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूषं स  
 कुम्भहाणं संजमाणं, नमोऽशुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं,  
 रंरुवत्तोरमाणां दपयठिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूंवरणा  
 में प्रौढ सा नीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुता, त्रिगुतेनदाकाम  
 लवेसावधाना ॥ ४१ ॥ बलोवाह्यअच्यंतैरग्रंअटाली, दुइंमुक्तिनेयो  
 सूत्र आलै ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निक्का  
 शुद्धजल्पा ॥ ४३ ॥ जी ॥ जवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी  
 धामो जी ॥ चिजे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,  
 ॥ निक्काम निररणी ॥ धीर आसन ध्यानं अन्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै  
 ज्ञान दरसन चरणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन प्र  
 तत्वसोधक, सयल ॥ ४४ ॥ ढाल ॥ जिम तरुफूवै जमरो वेसें, पीना  
 विघ्नत पगुण आदरा ॥ ते अथातम संतोपे, तिम मुनि गोचरी जाय  
 मारग जाखै साचौ ॥ ४५ ॥ पांचंडीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु  
 चो रे ॥ जण ॥ २६ ॥ सि० ॥ सीलंगना धोरी, अचल आचार च  
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नहिं, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ज०  
 ॥ ज० ॥ २७ ॥ सि० ॥ जे दिये सा पाले, वारे विध तपसूरा ॥ ए  
 यण वलि जनने ॥ पटबारी गन्धुंज आं अंकूरा रे ॥ ज० ॥ ४७ ॥  
 नने रे ॥ ज० ॥ २८ ॥ सि० ॥ अत्यमिये ॥ चढतै वानै ॥ संजम  
 जे जगदीवो ॥ जुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आं ॥ ज० ॥ ४८ ॥ सि०  
 रे ॥ ज० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचाररौचै रे ॥ साधु सु  
 त्र शुज ध्याती रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज ४९ ॥ ३१ ॥  
 ॥ वी० ॥ ३१ ॥ नै ह्रीं आचार्यपदे अष्ट इव्यं यजामः

॥ अथ चौथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोचिती परतीत ॥



ते सम्यग्दर्शन सदा, आदर्शियै शुभ्र रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिगु-  
 चतत्तेरुद्वेगस्त, नमोऽ निम्नलदंसणस्त ॥ मिष्ठतनासाइसमु-  
 गमस्त, मूलस्तसधम्ममहाडुमस्त ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिष्ठ्या,  
 टलेजेअनादीअवैजेकुपष्ठ्या ॥ जिनोकैहुइंसहजथीशुद्धध्यानं, कहि  
 यैदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि-  
 धित्रंजवारणबकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैकयतेहहोवे, तिहांआपरूपैस  
 दाआपजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दर्सन गुण नमो, तत्त्व प्रतीत सरू-  
 पी जी॥जसु निरधार स्वजाव वै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥  
 जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टले, निज शुद्ध सत्ता जाव प्र-  
 टै अनुजव करुणा उल्लै॥अहु मान परणित वस्तु तत्वे अहव सुखकारण  
 पणै, निज साध्य दृष्टै सरब करणी तत्त्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध  
 देव गुरु धर्म परीक्षा, सदहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजै,  
 सम्यग्दर्शन नाम रे॥ ज० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम कय उ-  
 पशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अजंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,  
 जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश-  
 म लहीजै, कयउपसमीष असंख ॥ एक वार कायक ते सम्यक्,  
 दर्शन नमीइ असंख रे ॥ ज० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नाण प्र-  
 णण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे  
 ण लहिये, समकित दरसन बलिन रे ॥ ज० ॥ ५६ ॥ सि० ॥  
 मसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श-  
 ते कित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज० ॥ ५७ ॥ सि० ॥  
 जगढाल॥समसंवेगादिक गुण, खंयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते  
 जाज अनिमा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ उं ह्रीं  
 ॥ दश पदे अष्ट इयं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

हं दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमाह ॥ आ



राधीजै गुन मनै, दिन२ अधिक उवाह ॥ १ ॥ काव्य ॥ अन्नाण  
 सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगा  
 रगस्स, सत्ताणसवत्थपयासगस्स ॥ होइजेहथीज्ञानगुणप्रबोधै, यथा  
 वर्णनासैविचित्राविबोधै ॥ तिणैजाणीयेवस्तुषट्ठव्यज्ञावा, नहोवै  
 विकटानिजेन्नास्वज्ञावा ॥ ५९ ॥ होइपंचमत्यादिसुग्यानजेदै, गुरु  
 पासथीयोग्यतातेहवेदइ ॥ वलीझेयहेयान्नपादेयरूपै, लहैविचमांजे  
 मध्यानेप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ जठर नमो गुण ज्ञानने, स्वपरप्र  
 काशक जावै जी ॥ परयाय धरम अनंतता, जेदाजेद स्वज्ञावै जी  
 ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक कोथवास विलासता,  
 मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धताधन लंठना ॥ स्याद्भावसं  
 गी तत्त्वरंगी प्रथम जेद अजेदता, सवि कळप ने अखिकळप वस्तु  
 सकल संसय जेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जह अजह न जे विण ल  
 हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान  
 ते सकल आधार रे ॥ ज० ॥ ६२ ॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान ने पीठे अहिंसा,  
 श्रीसिद्धातै जारखुं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान अ निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चा  
 खुं रे ॥ ज० ॥ ६३ ॥ सि० ॥ सकल क्रियातुं मूल ते अध्या, तेहनुं मूल  
 जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित २ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये  
 रे ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सि० ॥ पांचज्ञानमाहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाश  
 क तेह ॥ दीपकपर त्रिभुवन उपगारी, बलि जिम रवि शशि मेह  
 रे ॥ ज० ॥ ६५ ॥ सि० ॥ लोक ऊरध अथ तिर्यग् ज्योतिष, वैमानि  
 क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुरु गुप्ती  
 रे ॥ ज० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म धा, कय  
 उपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान मोधता  
 जायै रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ नैं हँ प० ज्ञानपदे अष्ट ङ्ग यजा  
 महे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहां ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊमेद ॥ पूजत  
अनुन्नवरस मिले, पातिक होय उठेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिया  
खंमिअसक्कियस्स, नमो२संजमदीरिअस्स ॥ सप्पावणासंगविवट्ठिअ  
स्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जायस्स ॥ बलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निरा  
संसताघाररोधेप्रसंगै ॥ ज्ञवांजोधिसंतारणेयानतुल्यं, धरुंतेहचारित्र  
अप्राप्तमल्यं ॥ ६७ ॥ होइंजासमहिमाथकीरंकराजा, बलिघादशां  
गीज्जणीहोइताजा ॥ बलिषापरूपोपिनिष्पापयायै, अईसिद्धतेकर्मने  
पारजायै ॥ ६८ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण बलि३ नमो, तत्त्वरमण  
जसु मूलोजी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकल सिद्धिअनुकूलो जी ॥  
उल्लाखो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व धिरता दममयी, शुचि  
परम खंति मुनींद संपद पंच संखर उपचयी ॥ सामायकादिक जे  
द धरमें यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्ज्वल काम  
कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही  
यतिने अजिरांभ ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजै तास प्रणाम  
रे ॥ ज्ञ० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे षट्खंम सुख ठंमी, चक्र  
वर्त पिण वरिज, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरि  
ज रे ॥ ज्ञ० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद  
नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते बारू, वरिज ज्ञान आनंद रे ॥  
ज्ञ० ॥ ७३ ॥ सि० ॥ बार मास पर्यायै तेहनें, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥  
शुक्ल२ अज्जिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ ज्ञ० ॥ ७४  
॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र  
नांम निरुक्ते ज्ञाख्युं, ते बंदू गुणगेह रे ॥ ज्ञ० ॥ ७५ ॥ सि० ॥  
॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निजस्वप्नावमांहि स्मृतो रे  
॥ लेस्या शुद्ध अलंकरयो, मोहवने नवि जमतो रे ॥ वी० ॥ ७६  
॥ नुं ह्रीं ५० चारित्रपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ट प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन  
 ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल घरिये ध्यान ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कन्म  
 हुमोन्मूलनकुंजरस्त, नमोऽतिवतवोवरस्त ॥ अणोगलदीणनिबंधण  
 स्त, दुसज्जअत्थाणयसाहणस्त ॥ ७४ ॥ इयनवपयसिद्धिंलद्धि, विज्जास  
 मिद्धं, पयमियसरवगंहीतिरेहसमगं ॥ दिसिवइसुरसारंखोणिपीढाव  
 थारं, तिजयविजयचक्रंसिद्धचक्रंनमामि ॥ ७५ ॥ त्रिकादिकपणें कर्म  
 कपाय टालै, निकाचितपणें वाधिया तेह बालै ॥ कह्यो तेह तप  
 बाह्य अन्यंतर उ जेदे, कमायुक्ति निर्हेत दुर्घ्यान ठेदे ॥ ७६ ॥ होइ  
 जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांठकपणें कर्म आवरण शुद्धि  
 ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतै, होइ सिद्ध सीमंतनी जिम संके  
 ने ॥ ७७ ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नवज्जव सिव  
 जावै देव नर जवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रज्ञा  
 नै, सवि डुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ७८ ॥ ढाल ॥ इच्छा  
 जेधन तप नमो, बाह्य अन्यंतर जेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व  
 ता, पर परणति उछेदे जी ॥ १ ॥ उल्लाखो ॥ उछेद कर्म अनादि  
 संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुज योग संग आहार टालो जाव अ  
 क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व सावै सर्व संवरता करी, निज आ  
 त्मनत्ता प्रगट जावै करो तपगुण आदरी ॥ ७२ ॥ ढाल ॥ इम न  
 वपद गुणमंरुलं, चउ निक्केप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स  
 म्यग्ज्ञानें जाणै जी ॥ उल्लाखो ॥ निरधारसेती गुणो गुणानो करइजे  
 बहुमान ए, जसु करण ईहा तत्त्वरमणें आयै निरमल ध्यान ए ॥  
 इम शुद्धसत्ता जलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अक्षय अनंत म  
 हंत चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ७३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख  
 कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लद्धिविज्जा सिद्धि मंदिर ज  
 विक पूजो मन रखी ॥ उवझाय वर श्रीराजसारह ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥८४॥ ढाल ॥  
जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म  
खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम नि  
काचित पिण कय जायै, कनासहित जे करतां, ते तप नमियै ते  
ह दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही  
॥ बहु लद्धि, होवै जास प्रजावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र  
, नमियै ते तप जावै रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव  
सुख मोटुं सुरनखर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो  
बंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां  
हि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न  
मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद  
शुणतो तिहांलीनो, हुं तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोप्र  
खंमै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ  
कारोधन संवरी, परणित समता योनै रे ॥ तप ते एहिज आत्मा,  
वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो,  
जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावै थिर हूँ, परजावै मत  
राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे रुद्धि दा  
खी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणज्यो, आतमराम बै साखी रे ॥  
वी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य बै जिन कहा, नवपद मुख्यते जाणो रे  
॥ ए हतणै अविलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल  
वारमी एहवी, चोथै खंमे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय  
न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ उँ हँ प० तपपदे अष्ट इव्यं  
यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसंढालण विधी ॥

॥ नव स्त्रात्रिया केसरसैं तिलक करे, हांथके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साथिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव  
कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढ़ावे यथाक्रम अष्ट व्र  
व्य चढ़ावै ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढ़ावे, आचार्यपदमें चिणोकी  
ढाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, वाकी च्यारपद  
में चावल चंदनलेपित गोटा चढ़ावे, श्वेतधजा चेत्रीपूनम आसोजीपूनम बगेरोंमें करै,  
नमो सिद्धार्थ इत्यादि नवपदो के न्यारेरे कह के चढ़ावे, गटे मुजव पटे पर नव सा  
थिया कर वीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजव यथाक्रम चढ़ावै ॥

॥ ओली करणवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा  
तथा उछाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेप यजामहे कहणा. एसें नवपदो की  
चाल ओर उछाला पद वासक्षेप चढ़ाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल डुङ्कृत  
दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरेश्वरणां  
यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं  
यजामहे ॥ २ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसरवारिणा, निखल  
जाड्यरुजातं पदारिणा ॥ सकल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकु ॥ ३  
॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत् व  
ट्पद वृंदकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥  
३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्मलै, प्रवर मौ  
क्तिक पुंज वडुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं प० अक्षतं यजा  
महे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहुविधैश्वरुज्जिर्वटकेयकैः, प्रवर  
मोदकपुंज सुखर्जकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे  
॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कं  
चनजाजन संस्थितै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि० दीपं य  
जामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरि  
ताखिल दिक्षुसुधूम्रकः ॥ सकल मं० ॐ ह्रीं श्री० धूपं यजामहे  
॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटै, सुसुखदैः

किल श्रीफल चिर्जटै ॥ सकल मं० ॥ नै ह्री श्री० फलं यजामहे  
 स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्वरुप्रदीप  
 क धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ नै ह्री श्री श्रीजि० अर्घं यजा  
 महे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरी  
 जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब  
 दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पमंती धारा, जयवारण तूही सुख  
 कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परछा पूरक तेरी, दूर हरौ सब दुर्म  
 ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चौथी सुगलपूत जियदायक, सुरवर हुक  
 म धरै ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिए तारी, संघ स  
 कलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ ठी पांजोवज विदारी, विद्या  
 पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साथी,  
 सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती  
 कीजै, मनवंवित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलान खर  
 सर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ९ ॥  
 इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसे दिन १० इस सूतक ॥ पुत्री जन्म हो  
 नेसे दिन १२ वार सूतक ॥ नर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके  
 एक मासको सूतक ॥ पुत्र होके मरण पाये, तो दिन १ एक सूतक ॥  
 परदेशे मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, जैष, घोमी,  
 सांड, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कले  
 वर घर बाहिर लड़ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी,  
 नेष्टायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ नर जितना महिनाको गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥  
 अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १९ बार  
 दिन देवपूजा न करे. नर मृतकके सूतक में घरका जो  
 मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥  
 नर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. नर जो मृत  
 कको वुवा होवे, सो ५४ चौबीस प्रहर पन्तिक्रमण न करे ॥ जो  
 सदाका अखंड नियम होवे, तो समताजाव रख के संवरपणामें  
 रहे. परंतु मुखसे नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं. स्थापना  
 जीके हाथ लगावे नहिं. नर जो मृतकको वुवा न हो तो मात्र  
 आठ प्रहर पन्तिक्रमण न करे ॥

जैनके जब वच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीठें दूध पीणो  
 कढ्ये. गायके वच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीठें दूध पीणो कढ्ये.  
 बकरीको दूध ८ आठ दिन पीठें पीणो कढ्ये ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन ज्ञानादिकको न वुवे. ९ चार दिन  
 प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक का  
 रणें तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीको रक्त चलता दीसे, जिसका  
 विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीठें  
 स्थापना पुस्तक वुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा  
 न करे, साधुको पन्थिवाजे. ऋतुवती तपस्या करे, सो तो सफल  
 होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न  
 होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सू  
 तक होवे, उहां १९ बार दिन तक साधु आहार पाणी न बहेरे.  
 सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देव  
 पूजा न करे. निशीथमूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत  
 कवालेका घर दुर्गन्धनिक कहा है.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीठें, जैषके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीठें, गाजर, गधेमा, घोमीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीठें, क्षर नारीके मूत्रमें ८ चार प्रहर पीठें, संमूर्च्छिम जीव नपजे इत्थादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा है. विशेष विचार शास्त्रांतरसें जागृता ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असव्यायकी विमत कहते हैं ॥

१ धूंधारी पने, तासीम असव्याय जाणवी.

२ सवीदिस्सामां ससी छाया तथा अरएय संबंधी रज नमे, निरंतर पने तो दिन ५ तीन उपरांत असव्याय.

३ मेह परसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असव्याय.

४ जाना धांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अमे न रहे तो असव्याय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जालगें होय, तां सीम असव्याय. अमे जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असव्याय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असव्याय होय.

७ चैत्र शुद्धि पांचमहूर्ती पन्निवा लगें असव्याय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजजहावणठं काजस्स रग करुं ? इठं. अचित्त रज्ज जहावणठं करेमि काजस्स रगं. पठी लोगस्स उद्योगरेना चार काजस्स रग करवा.

८ आशोशुद्धि पांचमने दिने छिप्रहरणी आरंजीने पन्निवा लगें असव्याय.

९ दश दिग्वाहें प्रहर १ एक असव्याय.

१० अकालें गाजतां प्रहर ९ बे सीम असव्याय.



- ११ अकालें बीज उब्कापात होय तो प्रहर ? असद्याय.
- १२ अजवालीये पक्षें समी सांज, पम्बो, बीज, त्रीज, इयारी असद्याय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.
- १३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर ? एक असद्याय.
- १४ जूमिकेंपे प्रहर ८ आठ असद्याय.
- १५ चंडग्रहणें प्रहर १२ वार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असद्याय.
- १६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ वार असद्याय.
- १७ आसाढ चनुमासा पम्किमण गथादूती प्रहर १२ वार असज्जाय.
- १८ कार्तिक चनुमासे पण प्रतिक्रम्या पीठें पम्बो लगे प्रहर वार असज्जाय.
- १९ मांडोमांडे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असज्जाय.
- २० कलह युद्ध जां लगे हुवे, तां लगे असज्जाय.
- २१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यांपर्यंत असज्जाय.
- २२ फागण चनुमासे रजपर्वी ज्यां लगे रज नमे, अने उपशमे नहिं, तां लगे असज्जाय.
- २३ दंभको मार पम्ते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असज्जाय.
- २४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगे उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥
- २५ नगरमांडे प्रधान पुरुष विहमे, तो अहोरात्र असज्जाय.
- २६ उपाश्रयशी सात घरमांडे जो कौड पुरुष विहमे, तो अहोरात्र असज्जाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो तां अणज्झरे एढ्ये ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असद्याय.

२८ तिर्यचना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो माहे अहो-  
रात्र असद्याय.

२९ मनुष्यना रुधिर पमवाथी हाथ १०० सो माहे अहो-  
रात्र असद्याय.

३० मनुष्यनां अस्थि, हांत, दाढ पमे हाथ १०० सो माहे  
सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे अके दिन ३ त्रश असज्जाय.

३२ आर्जा नक्षत्र आव्वा पीठें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे,  
बीजे, मेह वरसे, तो असज्जाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असद्याय. अने दीकरीने प्रस  
वे दिन ८ आठ असज्जाय.

३४ कालग्रहण विणकी जणवो गुणवो नहिं. ग्रहर १२ बार  
असज्जाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्तिकवदि १, मागशि  
रवदि १. ए चार दिवसें सदैव असज्जाय अने सूत्रनी असज्जाय  
तो ग्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने ग्रहर ॥

॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल ग्रहर ८, राब ग्रहर १२, धील ग्रहर २०, गळी  
ग्रहर २४, दहिं ग्रहर १६, दूध ग्रहर ४, कांजीबर्मा ग्रहर २४,  
घोमवर्मा ग्रहर ४, तळ्यां वर्मा ग्रहर ४, पूमी ग्रहर ८, रोटी ग्रहर  
४, तथा ६. बाजरा ऊष्ण ग्रहर १२, जवार ऊष्ण ग्रहर १२, बा  
जरीकी खीचमी ग्रहर ८, जवारकी खीचमी ग्रहर ८, चावलकी

खीचनी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८,  
 वरसाले आटो दिन ५, पक्कान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्कान्न  
 दिन १५, वरसाले पक्कान्न दिव ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन,  
 वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५,  
 सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले  
 फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, व  
 रसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी त्रीजोश  
 प्रहर ८, पाणीकी नसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेवकी तली घूघरी प्रहर  
 २०, तथा २४, वही प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४,  
 तथा ६, रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए  
 कीये परिमाण उपरांत च्लितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको  
 खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन और पूजन  
 विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते ॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक  
 करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली नर कांकण दोश मंत्रा-  
 य के बाँधै ॥ ( नमो परमेष्ठि नमस्कारं ) इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आ-  
 त्मरक्षा करावै, पीठै एक आलीमें १०, एक आलीमें ए, फेर एक  
 आलीमे फेर ए, एसें २८ नागरवेलका पान रखै, जिसपर पुष्प अकृत  
 नैवेद्य फल रोकड्य यथाशक्ति धरै लुञ्जी पंचामृत फूल पुष्पमाला  
 अकृत नेवद्य तरेर के गीले नर सूकेफल अनर गुलाबजल केसर  
 कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखे, फेर स्नात्रपूजा की आ-  
 पना रखे, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीठै दसदिग्पाल  
 के पट्टे ऊपर जलका गींटा देकर वासकप करे ॥ एकेक दिग्पालके  
 केसरकी टीकी देकर पुष्प चढाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेल-  
 का पान चढावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ नैऋत्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इहग्रस्मिन्जं  
 बूदीपे दक्षिणज्जरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो  
 न्वे आगच्छ१ बलिगृहाण१ उदयमन्युदयं कुरुस्वाहाः नैऋत्याय न  
 मः इति इन्द्राह्वानपूजा ॥ ( पूर्वदिशि जल चंदनादि अष्ट द्रव्य च  
 ठावै ) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायुधाय सवा  
 हनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबूदीपे दक्षिणज्जरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे  
 अमुकचैत्ये अमुकपूजामहो न्वे आगच्छ१ बलिगृहाण२ उदयमन्यु  
 दयं कुरुस्वाहाः नैऋत्याय नमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ नैऋ  
 त्याय सायु० सवा० सपरिच्छदा अस्मिन्जंबु० दक्षिण० अमुकन०  
 अमुकचैत्यै० अमुकपूजा० आग० बलिगृ० उदयम० स्वाहा नैऋ  
 त्याय नमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैऋताय दिग्पाल पूजा ॥ नैऋताय  
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० दक्षि० अमुक पूजामहो न्वे  
 आग० बलिं० उदय० स्वाहा नैऋताय नमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दि  
 ग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० अमुकपू०  
 आ० बलिं० उदय० स्वाहा नैऋत्याय नमः ॥ पश्चिम० ॥ ५ ॥ अथ वा  
 यव दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द०  
 अमुकचैत्यै० अमुकपूजामहो न्वे० आ० बलिं० उदयम० स्वाहा  
 नैऋत्याय नमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ नैऋतेरा  
 य सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमु  
 कपूजामहो न्वे आ० बलिगृ० उदय० स्वाहा नैऋतेराय नमः उत्तर  
 दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ नैऋत्याय सायु०  
 सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० बलिं० उद० स्वाहा  
 नैऋत्याय नमः ॥ ईशानकूल ॥ ८ ॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥  
 नैऋत्याय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्यै

अमुक पू० आ० वलि० उदय० स्वाहा नैब्रह्मणेनमः ॥ उर्ध्वदिशि०  
 ॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ नैनागाय सायु० सवा० सप०  
 अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्यै अमुकपू० आ० वलि०  
 उदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ १० ॥ अथोदिशि अष्टङ्ग्य चढावै ॥  
 ऊपर कसूंमल वस्त्र बांधै मौलीसे, पीठै ॥ नैदशदिग्पालायनमः  
 ॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकमङ्ग्य समेत नागरवेलका पांन आदि  
 सर्व ङ्ग्य चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक  
 दीपक आगै धरै ॥ इति दस दिग्पाल पूजमविधिः ॥

॥ अथ नव ब्रह्म पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ नैनमोआदित्याय सायुधाय सवाहना  
 य सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणऋतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक  
 चैत्यै अमुकपूजामहोद्यवे आगच्छ २ वलिपूजांगृहाण २ उदयमन्युदयं  
 कुरु २ अत्रपीठेतिष्ठ २ स्वाहा नैसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि  
 अष्टङ्ग्यचढावै ) ॥ १ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ नैचंडाय सायु० सवा० स  
 प० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि ५०  
 उदय० अष्टपीठेति० स्वाहा नैचंडायनमः ॥ २ ॥ अथ मंगल पूजा ॥  
 नैनमोन्नोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु०  
 अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे उदय० स्वाहाः नैन्नोमायनमः ३ ॥  
 अथ बुधपूजा ॥ नैनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अ  
 मुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० वलि० उदयम० अत्रपी०  
 स्वाहा नैबुधायनमः ॥ ४ ॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ नैनमोबृहस्पतये  
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुक  
 पूजाम० आ० वलि० अत्रपी० उदय० स्वाहाः नैबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥  
 अथ शुक पूजा ॥ नैनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जंबू  
 हो० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलिगृ० अत्र

पीठे उदयम० नंशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥

नैनमोशनिश्वराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन०  
अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ१ उदयम०  
स्वाहा नैनैश्वरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ नैन

मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै  
त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० नैराहवेनमः॥८॥  
अथ केतू पूजा ॥ नैनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्

नजं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे  
तिष्ठ२ उदय० स्वाहा ए नैकेतवेनमः ॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपर लाल  
वस्त्र मोलीसे बांधे पीठे नागरवेलके पान आदि अष्टद्वय रोकन द्वय

समेत सांभने जेट धरे फेर ऐसा कहे ॥ नैनवग्रहायनमः ॥ च्यारों तरफ  
नवदीपक वा एक दीपक सांभने धरे इति मवग्रह थापन पूजनविधिः

॥ बाये तरफ मंरुलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे बाजू दसदिग्पाल  
की थापना करे ॥ जिस महोच्चवमें इनोकी पूजा कराणी उस महो

च्चवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल  
सें पवित्रपणे बनायाजया सधवस्त्रीके या पुरुषके हाथसें पांचरंग

के धानके बाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा  
मालपूवा पांचरंगके लड्डु इत्यादि खाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें

सब द्रव्य एकठो करै नुर घृत खांन अक्षर गुलाबजल पंचरंगे फूल  
यहज्जी बाकलोंमें मिलावे पीठे गुरु ३ तीन बार मंत्रके तीन बेर  
बाकुलो पर वासक्षेप मालै, ) अथ वासक्षेप मंत्र ॥ नैहांहीसवोंप  
इवंबिं वस्यरक्षस्वाहा नैणमोअरिहंताणं नैणमोसिद्धाणं नैणमोआ  
यरिआणं नैणमोउवज्जायाणं नैणमोलोएसवसाहूणं नैणमोआगास  
गामीणं नैणमोचारणलद्धीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड  
गंधर्व जरक रक्कस पिशाच न्यूअ माइणप्पज्जइउ. जिणघरनिवासिं

णा सन्निधियाय तेसबेविलेवण ध्रुवपुष्पफलवश्वसणार्हिं वलिपद्मि  
 ङ्गता तुष्टिकराज्वंतु पुष्टिकरा संतिकराज्वंतु सबंजणंकुर्वंतु सबजि  
 णाणं संहणप्पजावज पसन्नजावतणे सबत्थरसंकंतुकुर्वंतु सबडुरियाणी  
 नासंतु सवाशिवसुवससंतु संतितुष्टिपुष्टिलिवसत्थयणकारिणोज्वंतु  
 स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासुदेवकुं मंत्रके बलवाकुलमें  
 मालके सुद्ध करे ॥ पीछे आधा बलवाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके  
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखठोने. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर  
 इग्यारे स्त्रात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाज खों  
 लकर बलवाकुल लेके पूर्वकी तरफ खड़ा रहे, २ दूसरा केसरकी  
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा ड्रेता, ५ पांचमा धूप  
 धाणा, ६ ठण दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नववा  
 जलका कलश, १० दसवा बलवाकुलकी घाली, ११ इग्यारवा मंग  
 लवाजित्र. इस तरे सब स्त्रात्रिये एकेक दिशाकी तरफ खड़ा रहे.  
 जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करचूके तब क्रमसें जल चंदन फूल वा  
 कुलादिक चढ़ावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो  
 स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ ( ऐसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ  
 बलवाकुल चढ़ावै ) ( अग्निकूशके सांध्यने ) ॥ सदावह्निदिशो  
 नेता पावकोमेपवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥  
 ( ऐसा कह वाकुलादिद्रव्य चढ़ावै ) ( दक्षिणदिशकी तरफ ) ॥  
 दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिपवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥  
 ( बलवाकुल चढ़ावै वाजित्र बजावै ) ( नैऋतकूणकी तरफ ) ॥  
 यमापरांतरालोको नैऋतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥  
 ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ ( अथ वायव्यकूण ) ॥ हरिणोयाहनंयस्य  
 वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तर दिशि )  
 ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रजुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥  
 ( ईशान कूण ) ॥ सितेदृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविजुः संघस्य०  
 वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशि ) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म  
 वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ उर्ध्वदिसि ) ब्रह्मलोकवि  
 ज्ञोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि  
 ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ थोर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ नैनमोइंजाय पूर्वदिग्धिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र

नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणादे अमुं रुन  
 गरे अमुकचैत्ये अमुं रुमहोद्यवे सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥

पूर्वदिशाकी तरफ नैनमोइंजाय नमः ॥ १ ॥ ( अग्नि कूण ) ॥ नैनमोअ

ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०

सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ इति ॥ ( दक्षिणदिशि ) नैनं

मोअय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण

सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वा

हा ॥ इति ॥ ( नेरुतकूणे ) ॥ नैनमोनेरुताय खरुगहस्ताय

सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष २ गच्छ २

स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशि ) ॥ नैनमोवरुणाय पश्चिम

दिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०

सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ ( वायवकूणे ) ॥

नैनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०

सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥



( उत्तरदिशि ) ॥ नैनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्टायकाय नरवाहनाय  
गन्दाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ१ स्वा  
हा ॥ ७ ॥ इति ॥ ( ईशाणकूले ) नैनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय  
ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाह  
लि० गच्छ१ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( उर्ध्वलोके ) नैनमोत्रह्मणे रा  
जहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०  
अमु० सर्वोपद्रवाहलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ ( अधोलोके )  
नैनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०  
अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाहलि१ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ ( इस  
तरे पढे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढै ॥ यथा ॥ शक्राद्या  
लोकपालादिशिविदितिगता शुद्धसङ्गर्मशक्ताः, आयातास्त्रात्रकाले क  
लुषहृतिरुते तीर्थनाथस्यजक्त्याः न्यस्ताशेषापशद्याविहितशिवसु  
खाः स्वास्पदंसांप्रतंते, स्त्रात्रेपूजामवाप्यस्वमतिरुतमुदोयांतुकढ्याण  
ज्जाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, भंज्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वैकम  
तंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि  
पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीठै यथाश  
क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश  
दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्नानिया मंत्रितजलसें स्नान करे ( जलमंत्र ) ॐ ह्रीं अमृतेअमृतोज्ज्वे अमृतवर्षणी अमृतंश्चाव यश् स्वाहा ( इस मंत्रसें जलमंत्रे पीठे ) ॐ ह्रीं अमलेविमले विमलोज्ज्वे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशुचिज्जवाभिस्वाहा (इस मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीठे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्राँः॥ (सात वेर इस मंत्रसें वस्त्र शुरू कर पहिरे पीठे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्राँ अर्हते

नमः ) इस मंत्रसें सान वेर गुरु पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै. ( पीठै ) नै हूँ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वडगु २ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे नैकवलीकः कः स्वाहा ॥ ( इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके बांधै नर जब मंमलजीके व्यासं तरफ मौलीमेंढल बांधे सोजी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सामने हाथ जोमके बैठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससें तीन वेर पढ़के गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन वेर नवकारमंत्रसें मंत्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंमलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्य कराणी चाहियें. पीठै मंदिर्जीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टङ्ग्य चढ़ावै. पीठै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढ़ावै, अतर चढ़ावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकङ्ग्य इत्यादि सर्वङ्ग्य ( नैक्षेत्रपालाय नमः ) ऐसा बोलता हुवा चढ़ावै. पीठै मंमलजीके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढ़के जल चंदनादि सर्व ङ्ग्य चढ़ावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढ़के ऊपर लालवस्त्र मोलीसें बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढ़ाके दीपक करै. पीठे बायें तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढ़के इसी मुजब पूजा करै. ) पीठै सर्व स्नात्रिया कूं १७ स्तुतीसें देववंदावै.

अठारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पहली इरियावही पम्किमें चार नवकारका कानसग कर लोगस्स कहे. नीचे बैठके दहिणागोमा धरतीपर रख के मावागोमा नमीभूत करके चैत्यवंदन करै.

नमोऽस्तु० कहके अरिहंतचेश्याणं० वंदणवन्ति० अन्नन्तु० १  
 एक नवकारका काजसग करै. नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंहिन  
 मनादेव शुईकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्नन्तु० एक  
 नवकारका काजसग इस शुईकी दुसरी गाथा कहे. पुस्क  
 रवरदी० वंदणवन्ति० एक नवकारका काजसग० शुईकी तीसरी  
 गाथा कहे. सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका  
 काजसग शुईकी ४थी गाथा कहे. पीठै बैठके नमोऽस्तुं कहके खमा  
 हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाजसगं वंदण  
 व० अन्नन्तु० १ नवकारका काजसग कर० ॥ रोगशोगादिजिर्दोपै रं  
 जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ ( ततः  
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाजसगं० १ नवकारका काजसग )  
 ॥ श्रीशांतिजिनप्रकाय प्रव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांति  
 मपनीयते ६ ( ततः श्रीशुतदेवतानिमित्तं० ) सुवर्णशाखनीदेयात्  
 द्वादशांगीजिनोद्भवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥ ( ततः श्री  
 ज्ञानदेवताआराधनार्थं० ) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ ( ततः  
 क्षेत्रदेवतानिमित्तं० ) यासांक्षेत्रगतास्सन्ति १ गाथा कहे ॥ ए ॥  
 ( ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं० ) अंबानिहितमिंवामे सिद्धबुद्धसम  
 न्विता सितोसिंहेस्थितागौरी वितनोत्तुसमीहितं ॥ १० ॥ ( ततः श्री  
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं० ) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुड्मे  
 पद्मतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ ( ततः श्रीचक्रेश्वरीदे  
 वतानि० ) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निप्ता चिरंचक्रेश्वरीदेवी  
 नंदतानिवन्नाञ्चमां ॥ १२ ॥ ( ततः श्रीअम्बुमादेवतानि० ) खड्गखे  
 दककोदंरु वाणपाणिस्तमित्युतिः तुरंगममनाम्बुमा कड्याणानिकरो  
 तुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुवेरदेवतानि० ) मथुरापुरीसुपार्थ्व श्री  
 पार्थ्वस्तूपरकका श्रीकुवेरानगरारूढा सुतांकावतुवोज्ञयात् ॥ १४ ॥

( ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि ) ब्रह्मशांतिसमांपाया दृष्या  
दीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्त्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥

( ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि० ) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-  
दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ ( ततः श्रीशक्रा  
दिसमस्तदेवतानिमि० ) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः  
देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ ( ततः श्रीसिद्धायि  
का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको कान्ठस्सग्गकर स्तुति  
कहे ) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु  
चक्रेचापेपुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके देवै चैत्यवं० नमोत्तु०  
जयवीयराय पर्यंत कहै ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठा विधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी वत्ती जगाके घृतका दी  
पक करै, इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंर रखै ( पीठै ) सो  
ने चांदी वगेर के कलसमें अबोटजल जरके सोनवाणी करै, हाथमें  
कलस लेके सात नवकार गुणै॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु  
स्वाहा ॥ इस मंत्रसें सात बेर जलको मंत्रके मंमलजीके च्यारों तर  
फ धारा देवे, ऊपर जरा ठींटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीठै)  
नवतारी मौलीसूत्रका साढातीन आंटा मंमलजीके बाहर करदेवे,  
पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मौली तथा मंडल मरोमाफली चारुं तरफ  
वांघे (पीठै) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ ॐ आं ह्रीं श्री अर्हतेनमः ॥  
इस मंत्रसें मंत्रके मंमलके ऊपर केसरका ठींटा देवे ( ऊपर ) चा  
वलोंको साधियो करै, टीकीदेवे, मंमलके अगामी साधिया चाव  
लोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर जेट धरै, ( पीठै )  
केशरचंदन लेकर मंमलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क  
रै ॥ (पीठै) वासुदेव पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ जूगसीजूतधात्रीविश्वा

धारैनमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंमलजूमि तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासकेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं त्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मंमलपीठकी पूजा करे (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन बेर मंमल कों वधावे. नीचे चावलोंका साधिया करके रुपिया नालेर आपना कों धरे ( पीठै ) स्नात्रिया मंदरके ज़ीतरसे प्रतिमाजी लायके त्रि गनेके सिंहासण पर मंत्र पढके आपन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐ नमोअर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्ठिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय च तुषष्टिसुरासुरेण्डसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति षष्ठं स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ बेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंमलप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सुरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एकरकेवीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्कतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै ( यथा ) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायांजिनेश्वरान् आविर्भूतोद्धतद्वोधा नात्रतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजैसमस्ता, तिशयैकदेतून् श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं त्रयोनमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने २ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीठै रकेवीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ८ मांणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान् सम्यक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान् निदयेज्जक्तिनिर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रे गतितः प्रणष्टः दुष्टाष्टकर्माभिमिश्रशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्यजेशांतिकरान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धे त्रयोनमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रैकबीमें पीला गोटा,  
 पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि  
 सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै ( यथा ) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण  
 स्मिन्दलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंस्तगुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू-  
 रीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैःकानेवा-  
 रणार्थं मन्त्र्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीज्योनमःस्वा-  
 हा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य आपना पूजा करै इति ॥ पीठै)  
 हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालरु, ४ इंद्रनील, २५ मरकतप-  
 न्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे. उपाध्याय पद पूजा पढे ( यथा )  
 द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान्  
 पवित्रेष्वश्विमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशांत्यै पठंतियेन्या-  
 न्यपिपाठयन्ति अध्यापकस्तांनपराण्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूज-  
 यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्योनमः स्वाहा ( पश्चिमदि-  
 शाकी तरफ उपाध्यायपदकी आपना पूजा करै इति ॥ पीठै )  
 स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उरुदकालरु, ५ राजपट्ट, २७  
 अंरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै ( यथा )  
 व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्द्वारान्  
 साधुवासीससुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा-  
 दंशधाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्प-  
 रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुज्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥  
 ( उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी आपना पूजा करै इति ॥  
 पीठै ) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य  
 हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढै ( यथा ) जिनेंद्रोक्तमनश्चक्ष, ल-  
 क्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमग्रनंशुद्धं, न्यस्तमीशानसद्वले ॥ ११ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः ( ईशानकूर्णमें दर्शनपदकी

आपना पूजा करै इति ॥ पीठै ) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा,  
 श्वेतवस्त्र, चावलोकालक्षु, आदि सर्व द्रव्य ले खम्हा रहै ॥ काव्य  
 पढै ( यथा ) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाग्नेयप  
 त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १९ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानायनमः  
 स्वाहा ॥ ७ ॥ ( अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी आपना पूजा करै ॥  
 इति ॥ ) फेर ) रकेवीमें ७० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वे  
 तवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खम्हा रहे. काव्य पढै ( यथा ) सामायि  
 कादिजिज्ञेदै, श्रारित्रचारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थ, पत्रैहनेरु  
 तैक्रमात् ॥ १३ ॥ नै ह्रीं श्री सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा ( नैरु  
 तकूणकी तरफ चारित्रपदकी आपना पूजा करै इति ॥ ८ ॥ )  
 पीठै ) रकेवीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व  
 द्रव्य लेके काव्य पढै ( यथा ) द्विधाद्वादशयज्ञिन्नं, पूतेपत्रतपस्व  
 यं ॥ निधाययामिजक्तयात्र, वायव्यांदिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ नै ह्रीं  
 श्री सम्यग्तपसेनमः स्वाहाः ( वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी आ  
 पनापूजा करै इति ॥ अथअर्थ ) निःस्वेदत्वादिविद्यातिशयम  
 धतनन्श्रीजिनेद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्तादिप्रकृष्टाष्टकयुगान्नृदाचार  
 साराश्वसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरह्याप्रवचनरचनासुंदराण्यदिसंज्ञं,  
 स्तत्सिद्धयैषाठकानांयतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्थं  
 अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्हदादिजिः ॥ स्वाहांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्त  
 ये ॥ १६ ॥ नै ह्रीं श्री अर्हं अतिआजसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चा  
 रित्र तपसेज्यो ह्रीं श्री अर्हं परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव  
 परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुज्यंनमः ( इति मूलामंत्र )  
 इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो बीचमें चार दिशिमें चार विदि

सोमे ऐसे अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंजुलके मध्य प्राग  
में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करवै ( पीठै ) दूसरे वलयमें  
चूनीके आकार १६ कोठा होय ( जिसमें ) एकेक कोठाके अनं  
तर आठ कोठोंमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करै ( ओर ) एकेक  
कोठा बीचमें खाली रहा है उसमें अनाहतपद नै हौं एमो अरि  
हंताणं ) ऐसा पद स्थापन करै ( पीठै ) एक रकेवीमें मिश्री ल-  
वंग ( तथा ) एक रकेवीमें मोटी दाखां ले के खना रहे. अनाहत  
पदमें मिश्री लवंग चढावै ओर आठ वर्गमें दाखां चढावै ( यथा )  
( नै हौं एमो अरिहंताणं ) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई  
उ ऊ रु ऋ नृ ए ऐ न औ अं अः ( नै हौं स्वर वर्गायनमः )  
( इहां ) १६ दाख चढावै १ ( नै हौं एमोअरिहंताणं ) मिश्री  
लोंग ३ क ख ग घ ङ ( नै हौं व्यंजनकवर्गायनमः ) १६ दाख  
चढावै ४ ( नै हौं एमोअरिहंताणं ) ५ च ठ ज ञ त्र ( नै हौं  
त्रवर्गायनमः ॥ ६ ( नै हौं एमोअरिहंताणं ) ७ ट ठ ढ ण  
( नै हौं टवर्गायनमः ) ८ ( नै हौं एमोअरिहंताणं ) ९ त थ द  
ध न ( नै हौं तवर्गायनमः ) १० ( नै हौं एमोअरिहंताणं ) ११  
प फ ब ज्ञ म ( नै हौं पवर्गायनमः ) १२ ( नै हौं एमोअरिहंता  
णं ) १३ य र ल व ( नै हौं यवर्गायनमः ) १४ ( नै हौं एमो  
अरिहंताणं ) १५ श ष स ह ( नै हौं शवर्गायनमः ) १६ पहिले  
अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोलै १ दाख चढावै सब ९६  
( नै हौं ) य र ल व १ श ष स ह १ इण दो वर्गोंमें ६४ चौसठ  
दाख चढावै इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ ( अब तीसरा वलयमें ) चार दिश चार विदिशिमें आठ  
परमेष्ठिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके  
बीचमें वलाका तीन २ देवे तीनुं वलाकामे २४ खाना होय एके



क खानेमें ९ दोय ९ दोय लब्धिपद स्थापन करणेतें चोवीस घरौ  
में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें ( नै ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा ) एसा  
८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावै, नर लब्धिपदका नाम बोलेके खा  
रका ४८ चढावै ( यथा ) नै ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ नै ह्रीं  
अर्हणमोउहिजिणाणं ॥ २ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोपरमोहिजिणाणं ॥  
॥ ३ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोसबोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोअ  
णंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोकुब्बुद्धीणं ॥ ६ ॥ नै ह्रीं  
अर्हणमोवायबुद्धीणं ॥ ७ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥  
नै ह्रीं अर्हणमोआसोविसाणं ॥ ९ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोदिठिविसाणं ॥  
॥ १० ॥ नै ह्रीं अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोस  
यंसंजुळाणं ॥ १२ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ नै ह्रीं अ-  
र्हणमोबोहिबुद्धीणं ॥ १४ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥  
नै ह्रीं अर्हणमोविजलमईणं ॥ १६ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोदसपूवीणं ॥ १७ ॥  
नै ह्रीं अर्हणमोचउदसपूवीणं ॥ १८ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोअवंगनिमत्तकु  
सलाणं ॥ १९ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोविजवणइठ्ठिपत्ताणं ॥ २० ॥ नै ह्रीं  
अर्हणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोचारणलद्धीणं ॥ २२ ॥  
नै ह्रीं अर्हणमोपप्पासमणाणं ॥ २३ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोआगासगामी  
णं ॥ २४ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोस-  
प्पियासवाणं ॥ २६ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ नै ह्रीं अ-  
र्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोसिद्धायणाणं ॥ २९ ॥  
नै ह्रीं अर्हणमोअयवयामहाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरितीणं ॥ ३० ॥  
नै ह्रीं अर्हणमोअगातवाणं ॥ ३१ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोअस्कीणमहाण-  
सियाणं ॥ ३२ ॥ नै ह्रीं अर्हणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ नै ह्रीं अर्हण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोत्तततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ-ह्रीं अ  
 र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ  
 -ह्रीं अर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरपरिक्रमाणं ॥ ३९ ॥  
 ॐ-ह्रीं अर्हणमोघोरबन्धयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोआमोसहि  
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ-ह्रीं अ  
 र्हणमोजह्नुसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोविष्णोसहिपत्ताणं ॥  
 ४४ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोसबोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोम  
 णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हणमोवधणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ-ह्रीं अर्ह  
 णमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ-ह्रीं अर्हअरुचाललब्धिपेदज्योनमः ॥ इस  
 तरे लब्धिपदका नाम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका  
 चढ़ावै ॥ ( पीठे ) मंरुलजीके गलेमें -ह्रींकारजी स्थापन किया हे  
 ( जहांसे ) साढातीन नवलाका मंरुलजीके चोतरफ देके नीचे  
 ( क्रों ) ऐसा अक्षर लिखा हे ( जिसके ) प्रथम वलयमें आठ दि-  
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दामिमफल चढ़ाव  
 ( यथा ) ॐ-ह्रीं अर्हत्पाडुकाज्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढ़ावै ॥ ॐ-ह्रीं सि  
 ङ्घपाडुकाज्योनमः ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं आचार्यपाडुकाज्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ  
 -ह्रीं गुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं परमगुरुपाडुकाज्योनमः ॥  
 ५ ॥ ॐ-ह्रीं अष्टगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतगुरुपाडु  
 काज्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ-ह्रीं अनंतानंतगुरुपाडुकाज्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ  
 -ह्रीं अष्टगुरुपाडुकाज्योनमः स्वाहा ॥ इस तरे ठेके वलयमें ८ दा  
 म्म चढ़ावै ( पीठे ) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८  
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढ़ावै ( यथा ) ॐ-ह्रीं जयायै नमः  
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ-ह्रीं जंजायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ-ह्रीं विजयायै नमः  
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ-ह्रीं शंजायै नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रीं जयंत्यै नमः  
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रीं मोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रीं अपराजिता

धैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ मुँह्नीअंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ ( इसी  
 तरे ) सातमें बलयमें ८ नारंगी चढ़ावै ( पीठे ) आठमें बलयमें  
 १६ बिद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्ग लपेटी १६ सुपा  
 री चढ़ावै ( यथा ) मुँह्नीरोहण्यैनमः ॥ १॥ मुँह्नीप्रज्ञसैनमः ॥ २॥  
 मुँह्नीवज्रशृंगलायैनमः ॥ ३ ॥ मुँह्नीवज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ मुँ  
 ह्नीचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ मुँह्नीपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ मुँह्नी  
 काल्यैनमः ॥ ७ ॥ मुँह्नीमाहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ मुँह्नी  
 गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ मुँह्नीगंधार्यैनमः ॥ १० ॥ मुँह्नीसर्वास्त्र  
 महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ मुँह्नीमानव्यैनमः ॥ १२ ॥  
 मुँह्नीवैरोह्यायैनमः ॥ १३ ॥ मुँह्नीअनुतायैनमः ॥ १४ ॥ मुँह्नी  
 मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ मुँह्नीमाहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे  
 आठमा बलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढ़ा के पूजा करै पी  
 ठे नवमें बलयके बायें तरफ शासनदेवीयां ॥ १४ की स्थापना  
 कर पूजा करै ॥ १४ पूंगीफल चढ़ावै ( यथा ) मुँचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १॥  
 मुँअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ मुँडुरितायैनमः ॥ ३ ॥ मुँकाल्यैनमः  
 ॥ ४ ॥ मुँमहाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ मुँश्यामायैनमः ॥ ६ ॥ मुँशांतायैनमः  
 ॥ ७ ॥ मुँनृकुट्टियैनमः ॥ ८ ॥ मुँसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ मुँअशोकायैनमः  
 ॥ १० ॥ मुँमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ मुँचंदायैनमः ॥ १२ ॥ मुँविदि  
 तायैनमः ॥ १३ ॥ मुँअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ मुँकंदप्पाययिनमः  
 ॥ १५ ॥ मुँमिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ मुँबलायैनमः ॥ १७ ॥ मुँधार  
 ण्यैनमः ॥ १८ ॥ मुँधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ मुँनरदत्तायैनमः  
 ॥ २० ॥ मुँगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ मुँअंविकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्माव  
 त्यैनमः ॥ २३ ॥ मुँसिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ इहिणे त  
 रफ १४ यक्षराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढ़ावै ॥  
 ( यथा ) मुँब्रह्मशांत्यैनमः ॥ २४ ॥ मुँपार्थायैनमः ॥ २५ ॥ मुँगो

मेधायनमः ॥ २२ ॥ नैऋतकुट्यैनमः ॥ २१ ॥ नैऋतारणायनमः ॥  
 २० ॥ नैऋतवेरायनमः ॥ १९ ॥ नैऋतहराजायनमः ॥ १८ ॥ नैऋतगंध  
 र्वायनमः ॥ १७ ॥ नैऋतरुमायनमः ॥ १६ ॥ नैऋतकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥  
 नैऋतातालायनमः ॥ १४ ॥ नैऋतएमुखायनमः ॥ १३ ॥ नैऋतकुमाराय  
 नमः ॥ १२ ॥ नैऋतहराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥  
 नैऋतअजितायनमः ॥ ९ ॥ नैऋतविजयायैनमः ॥ ८ ॥ नैऋतमातंगायनमः  
 ॥ ७ ॥ नैऋतकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ नैऋततुंबुरुयैनमः ॥ ५ ॥ नैऋतयक्षनाय  
 कायनमः ॥ ४ ॥ नैऋतत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतमहायक्षायनमः ॥ २ ॥  
 नैऋतगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीठे चार दिशामें ४ द्वारपालकी  
 स्थापना कर के पीला बलवाकुल चढावे ( यथा ) नैऋतकुमुदायनमः  
 ॥ १ ॥ पूर्वदिशि ॥ नैऋतअंजनायनमः ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि ॥ नैऋतवामनाय  
 नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ नैऋतपुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥  
 पीठे चार विदिसकी तरफ चार वीरपदमें काले बलवाकुल चढावे  
 ( यथा ) नैऋतमाणज्जायनमः ॥ १ ॥ नैऋतपूर्णज्जायनमः ॥ २ ॥ नैऋत  
 पिलायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ( इस तरे दसमें बल  
 यमें आठ दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीठे पूर्ण कल  
 सके आकार ऊपरसे कियाजया सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठि  
 काणे नवनिधान पढ़ै तब सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति  
 रोकनाणा मालके स्थापन करै ) ( यथा ) नैऋतसर्पकायनमः ॥ १  
 ॥ नैऋतपांडुकायनमः ॥ २ ॥ नैऋतपिंगलायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतसर्वरत्नायनमः  
 ॥ ४ ॥ नैऋतमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ नैऋतकालायनमः ॥ ६ ॥ नैऋत  
 कालायनमः ॥ ७ ॥ नैऋतमाणवायनमः ॥ ८ ॥ नैऋतशंखायनमः ॥  
 ९ ॥ ( इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीठे  
 कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें बंगली  
 का आकार किया है ( जहां ) नैऋतविमलस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ एसा

कहके चढ़ावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के बायेंनेत्रके पास बंग  
 लीमें ( नैऋतपालायनमः ) ऐसा बोलके चढ़ावै २ ॥ पीठै तीसरा  
 कोइलाफल ) हाथमें ले के नीचे पीँहिके दक्षिणे तरफ बंगलीमें )  
 नैचक्रेश्वर्येनमः ( ऐसा बोलके चढ़ावै ॥ ३ ॥ ( पीठै ) चौथा को  
 इलाफल हाथमें ले के नीचे पीँहिके बाये तरफ बंगलीमें ( नैऋत  
 सिद्धिचक्राधिष्टायकायनमः ) ऐसा बोलके चढ़ावै ॥ ४ ॥ ( पीठै )  
 दसूँ दिशामें इँडादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै, वणसकेतो अ  
 पणा २ वर्ष मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि इत्य चढ़ावै अथवा सर्वकों  
 एक इत्य सर्व समान चढ़ावै ( यथा ) नैऋतयनमः ॥ १ ॥ कनक  
 वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकइव्य अ  
 दि सर्व इव्य चढ़ावै ॥ ( अग्निकूणे ) नैऋतयनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्ण  
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ ( दक्षिणदिसि ) नैऋतयनमः  
 ॥ ३ ॥ काळे वर्णका वस्त्रादि इव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ ( नैऋतकूणे )  
 नैऋतयनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ( पश्चि  
 मदिश ) नैऋतयनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व इव्य चढ़ावै ५ ( वा  
 यव्यकूण ) नैऋतयनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य च  
 ढावै ॥ ६ ॥ ( उत्तरदिशि ) नैऋतयनमः ॥ ७ ॥ सपेदव  
 र्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ ( ईशानकूण ) नैऋतय  
 नमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥  
 ( अयोदिसि ) नैऋतयनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इव्य  
 चढ़ावै ॥ ९ ॥ ( उर्ध्वदिशि ) नैऋतयनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका  
 वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्था  
 पन पूजन करै ॥ ( पीठै यंत्रके पीँडीके स्थानक नव कोठा किया  
 गया है जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै ( यथा ) नैऋतयनमः  
 लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १ ॥ नैऋतयनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ उँजोमायनमः ॥ ३ ॥ लाल  
लरंगवस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ३ ॥ उँबुधायनमः ॥ ४ ॥ मृंगेरंग  
का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ४ ॥ उँबृंहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण  
वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ५ ॥ उँशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ सपेदवर्णनंदोल  
वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ६ ॥ उँशनेश्वरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग  
का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ उँराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग  
का वस्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ उँकेतवेनमः ॥ ९ ॥ ठीटरंग व  
स्त्रादि द्रव्य चढ़ावै ॥ ९ ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा  
करै. पीठै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढ़ावै चैत्यवंदन कर घुड़ क  
हकर नवपद स्तवन कहै ॥ पीठै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर  
वासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठै यथाशक्ति साथ  
मी वास्तेख्य करै ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये  
( जब ) कोइ श्रीमंत उलीकी तपस्या करै तब तो ठए महीने मं  
गल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण  
जये बाद उज्जव के साथ मंगलपूजा कराके नव२ उपगणोसें उ  
द्यापन करै. जलजात्रादि अष्टाईमहोज्जव कर धर्मशालासिणगारै  
( फेर ) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च  
ढ़ावै. रुद्धिरहित जावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढ़ावै ( उँर ) पंचा  
यती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा  
अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इति उद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणजस्वामीसर्वज्ञाय  
नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्व  
 ज्ञा ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा ॥  
 ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा ॥ १० ॥  
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा ॥ १२ ॥  
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा ॥ १४ ॥  
 श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ श्री  
 अमरकेतुसर्वज्ञा ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥  
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ स्तमेन्द्रनाथसर्वज्ञा ॥ २० ॥  
 श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा ॥ २२ ॥ गर्जेन्द्र  
 प्रज्ञसर्वज्ञाय ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त  
 सर्वज्ञा ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा ॥ २६ ॥ रुक्मनाथसर्वज्ञा ॥  
 ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय ॥ २८ ॥ नेमिन्द्रसर्वज्ञा ॥ २९ ॥  
 अजितन्द्रसर्वज्ञा ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा ॥ ३१ ॥ श्रीराजे  
 श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा ॥ २ ॥ नीलकांति  
 सर्वज्ञा ॥ ३ ॥ पूंजकेसीसर्वज्ञा ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥  
 ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व ॥ ७ ॥ मुनिमू  
 र्त्तिसर्वज्ञा ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञा ॥  
 ॥ १० ॥ दुक्तितनाथसर्वज्ञा ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा ॥ १२ ॥  
 महल्लनाथसर्वज्ञाय ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय ॥ १४ ॥ वल्लभमृत  
 सर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ पूर्णमेन्द्रसर्व  
 ज्ञाय ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा ॥  
 ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥ २१  
 ॥ २२ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञाय ॥ २३ ॥ श्रीज्ञानुनाथसर्वज्ञाय ॥

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञजलसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५ ॥  
 श्रीजलप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥  
 श्रीरुषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुमंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री  
 वज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीभूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीती  
 र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ घातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीभूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥  
 श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीषेण  
 नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व  
 ज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ ९ ॥ श्रीभूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥ ११  
 ॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥  
 श्रीतीर्थभूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंडसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसमा  
 धिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंडसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथ  
 सर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर  
 सर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २२ ॥ श्रीज्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २४ ॥ श्रीकपिनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥  
 २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ ३० ॥ श्रीलहस्राज्ञसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजगद्विरुषिकसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीपापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥  
 श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीज  
 गत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम



हेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरज्योतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार  
 चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरपेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ  
 सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलज्जद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०  
 ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय  
 नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय०  
 ॥ २१ ॥ श्रीचंद्रारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंद्रातणसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥  
 श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा  
 यशसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीज्योतिर्नाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना  
 थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ श्रीपुष्पकेतु  
 सर्वज्ञायनमः ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसमन्तकेतुस  
 र्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितीयमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र  
 नाभसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीवयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥  
 ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री  
 वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलज्योधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजी  
 मनाथसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुज्जसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीजङ्गुप्तसर्व  
 ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुद्गसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व  
 ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा०  
 ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेष्ठसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ।  
 ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मज्योतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ।  
 २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥

नागेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र  
ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध  
मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

( जंबुद्वीपेऽजरतक्षेत्रे जिननामानि ) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा०  
॥ १ ॥ ( धातकीखंमेप्रथमजरते० ) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥  
( धातकीखंमे द्वितियजरतेजिननांम ) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥  
॥ ३ ॥ ( पुष्करार्धेप्रथमजरतेजिननांम ) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४  
॥ ( पुष्करार्धेद्वितियजरतेजिननांमः ) प्रज्ञावकनाथसर्व० ॥ ५ ॥ ( जं-  
बूद्वीपेऽएरवतक्षेत्रेजिननांम ) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ ( धात  
कीखंमेप्रथमएरवतेजि० ) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ७ ॥ ( धातकीखंमे  
द्वितियएरवते ) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ ( पुष्करार्धेप्रथमएरव  
तेजिनना० ) आग्नाहिकसर्वज्ञाय० ॥ ९ ॥ ( पुष्करार्धेद्वितियएरवतेजि० )  
श्रीवल्लभसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका  
गुणना संपूर्ण ॥ १६ स्थांम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५०  
श्वेत. सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ त-  
त्पद नामी कंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥ १ ॥ वार्द्धकासरदातणो,  
नर धरि समरण शक्ति ॥ सद्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु  
चि ज्ञक्ति ॥ २ ॥ ठे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाज ॥  
पूर्वापर ज्ञवि तेहनें, विजय नामको लाज ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु  
प्रतिदिशा, कथनामें युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि  
श्वावीस ॥ ४ ॥ खंरु धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन  
गिरि युग ठे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जं

णिये, द्वीप सकल गुणखांश ॥ अर्थ ज्ञाग जमु उत्तमें, गिरि युग  
 जलद समान ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरौ वत्तीस  
 ॥ थारो गणित अनुक्रमें, षष्ठ्युत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एह अढाइ  
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, ज्ञाष्यो  
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचरथा जे जिनरा  
 य ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (ढाल  
 पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज ॥ अ  
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ ज्ञविकजन ध  
 रज्यो धर्म सनेह ॥ टेरे ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां  
 णी गुण पैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥  
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि  
 चरथा महियल बोधता जी, विजय मजार सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥  
 पंचर जरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता  
 रता जी, समस्यां संपति आय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन  
 वरू जी, अतुल सकल गुणखांश ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी,  
 अकल कला द्युतिवांश ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी,  
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम जललह ज्ञाधरू जी, कनकवर  
 ण वत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत युक्त पय जलकणा जी, सम सित  
 विमल प्रकाश ॥ ज्ञविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्चा  
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, बीस प्रमित  
 जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुजातमां जी, धरिये ज्ञाव विशाल ॥  
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण दुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥  
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त  
 पविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ  
 नुमोदता जी, ते लहे दिव-शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत् मूनि सर लोक नारद चंद्र ज्येष्ठ पशुर ए, वदि सप्तमी रवि  
दिने हितवह्मन्न कथनधर भूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-  
न्न जैनचंद्र सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद्र कपूर ए  
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती-मतिज्ञानावरणीरहितायश्री  
सिद्धान्तनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धान्तनमः २, अवधि  
ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणीरहितायश्रीसि  
द्धा० ४, केवलज्ञानावरणीरहितायसि० ५, ( दर्शनावरणकर्मकी नव  
प्रकृती ए )-चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण  
र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ९, निष्कर्म  
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच  
ला० १३, शीणद्धी० १४ ॥ ( वेदनीकर्म की प्रकृति २ )-सातावे  
दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, ( मोहनी  
कर्म की प्रकृती १८ )-सम्यक्तमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय  
१८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु  
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २१, अनंतानुबंधिलोत्तर०  
२३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या  
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोत्तर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो  
धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,  
प्रत्याख्यानीलोत्तर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर०  
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोत्तर० ३५, हास्यमोह  
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह  
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुःखमोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०  
४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ ( आयुर्कर्मकी प्रकृति ।

४ )-देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ ( नामकर्मकी प्रकृति १०३ )-द्वेयगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, ऐकद्वीजातिर० ५३, वेइंड़ीजातिर० ५४, तेइंड़ीजातिर० ५५, चौरेंड़ीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीर० ५८, वैक्रियशरीर० ५९, आहारकशरीर० ६०, तेजसशरीर० ६१, कर्मणशरीर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदास्किबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककर्मणबंधनर० ६८, वैक्रियबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकर्मणबंधनर० ७०, आहारकबंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककर्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकर्मणबंधनर० ७५, वैक्रियतेजसकर्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकार्पणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कर्मणकर्मणबंधनर० ७९, तेजसकर्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कर्मणसंघातनर० ८५, वज्ररूपज्ञनाराचसंघयणर० ८६, रूपज्ञनाराचसंघ० ८७, नाराच ८८, अर्थनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुञ्जसंस्थानर० ९६, हुंरुक्संस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरहि० ९८, तीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरज्जिगंधर० १०३, उरज्जिगंधर० १०४, तिक्तसर० १०५, कटुकसर० १०६, आम्लसर० १०७, कषायसर० १०८, मधुरसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, ज्वारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुक-  
 मालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया०  
 ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्येचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वी  
 र० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुजविहायोगति १२२, अशुज-  
 विहायोगतिर० १२३, पराधातनामकर्मर० १२४, ऊत्सासनामकर्म  
 र० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अ  
 गुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनाम  
 कर्म १३०, उपधातनामकर्मर० १३१, व्रतनामकर्मर० १३२, बाद  
 रनामकर्मर० १३३, पर्यासिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म  
 १३५, धिरनामकर्म १३६, शुजनामकर्म १३७, सौज्ञाग्यनाम  
 कर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०,  
 यशनामकर्म १४१, आचरनामकर्म १४२, सूद्धमनामकर्म १४३,  
 अपर्यासिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अधिर  
 नांमकर्मर० १४६, अशुद्धानांमकर्मर० १४७, दौर्ज्ञाग्यनामकर्मर०  
 १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयश  
 नांमकर्मर० १५१, ( गोत्रकर्मकी प्रकृति २ ) उच्चैर्गोत्र १५२, नी  
 चैर्गोत्र १५३, ॥ ( अंतरायकर्मकी प्रकृति ५ ) दानांतरायकर्मर०  
 १५४, लाज्जांतरायकर्मर० १५५, जोगांतरायकर्मर० १५६, उप  
 जोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥  
 ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयमीरो गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंजव जिनराज ॥  
 मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकुं  
 दय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदा  
 नंद विदधन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयमि विस्ता

२ ॥ वरणं जविजन हितजनी, प्रवचने अनुसार ॥ ३ ॥ (ढाल ॥  
 ॥ रामचंदेके बाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नामे जिन कह्या  
 री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आत्मगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंडाण  
 आवर्ण, वेदनी मोह बूरो री ॥ आजखो नाम कर्म, कर्मांतराय चूरो  
 री ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय,  
 तीस कोमाकोमि जणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, वीस को-  
 माकोमि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, हिव मोहनीय शुवे री ॥  
 ॥ ४ ॥ सत्तर कोमाकोमि सागर मान जण्यो री ॥ ए उत्कृष्ट  
 स्थिति जोरु, केवली काल गण्यो री ॥ ५ ॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म,  
 अंतरमुहुर्त्तपणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री ॥  
 ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनी कर्म वेदे री ॥ बारे महूरत  
 मान, शास्त्रानुसार सुदै री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंच ञेद  
 जुदां री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो ञेद नदारी ॥ ८ ॥ दर्शना  
 वरण नव ञेद, आयु ब्यार विवे री ॥ मोह कर्म अमवीस, सौ त्रिक  
 नाम सघे री ॥ ९ ॥ एकलो अष्टावन्न, उत्तर प्रकृति कही री ॥  
 अष्ट करमना जाण, सर्व विकल्प सही री ॥ १० ॥ ढाल ॥ नण  
 दल बुमले जोवन जिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण  
 वे, दर्शनावरण प्रतीहार, जविण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधु  
 लिप्ता अलिधारानी परे, वेदनी कर्म सुदार ॥ जविय ० ॥ १ ॥ म  
 दिरावाक समान वे, मोह सुजट महाराण, जवि ० ॥ खोमे बंदीखान  
 सारखो, आयुकर्म प्रमाण ॥ ज० क० ॥ २ ॥ चीतारे सम नाम कहीजे,  
 गोत्र कुंजार समान, ज० ॥ श्रीघर जंमारी सम दाख्यो, अंतराय  
 कुण्यान ॥ जवि० क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए जावना, वीर वेदे व्या  
 ख्यान, ज० ॥ कर्म संसार स्वरूप वै, अकरम सिद्धि सुधान ॥ ज  
 वि० क० ॥ ४ ॥ मित्र सासादन मित्रा रिति, देसदिरिति प्रमत्त,

ज्ञ० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सबीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज्ञ० क०  
 ॥५॥ अपूर्व अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सप्त बंध, ज्ञ० ॥ सुहुम  
 संपराय दशम ठाणें, विन मोहायु षट खंध ॥ ज्ञवि० क० ॥ ६ ॥  
 उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, ज्ञ० ॥ अयोगी गुण  
 चवदमें, नही बंधत कर्म द्वार ॥ ज्ञ० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु  
 कल्या, मिथ्यात अविरत जोय, ज्ञ० ॥ क्रोध प्रमुख कषायओ, यो  
 ग युगत च्यार होय ॥ ज्ञ० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म  
 स्थिति पद लेय; ज्ञ० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति वेद ज्ञेय  
 ॥ ज्ञवि० क० ॥ ९ ॥ कम्मपयमी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार,  
 ज्ञ० ॥ बंध सत्ता उद्दीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ ज्ञवि० ॥ क०  
 ॥ १० ॥ इकसो अठावन थया, चञ्चलजत्त तप सार, ज्ञवि० ॥ त  
 प उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ज्ञवि० ॥ क० ॥ ११ ॥  
 अष्ट ज्ञानोपगण ज्ञला, अष्टगंगल वृद्ध आल, ज्ञवि० ॥ घात्संख्य  
 चञ्चविह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज्ञ० ॥ क० ॥ १० ॥ इच्छा  
 रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज्ञ० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम  
 लही, शिवरमणी जरतार ॥ ज्ञ० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिन-  
 चंद सूरि मुणिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचने  
 स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद  
 फाल्गुन द्वादशी, उवजाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित्त  
 नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयमी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे जिनवर ममी, पंच परमेष्ठि सार ॥ परम  
 मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर  
 आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरवतणों,  
 नव निधि सिद्धि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट खंड



टलै, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अमसठ वरण विख्याति,  
 सात गुरु अकर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप,  
 जाये अस्कोरे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर छीपार्द्ध,  
 सिद्धावट गांम, पासे परवत कंदरा ए ॥ चोमासी पञ्चकांण, करने  
 तिहां रह्या, दमसार नामे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ जील जीलणी बेअ,  
 मन सुध जावसुं, नवकार मुनि पासे जणी ए, बीजे जव राज-  
 सिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रत  
 नपुरी यसोज्ञइ, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी धणूं ए ॥ अति  
 आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुणवहु जणूं ए ॥ ५ ॥  
 एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धर्यो ए ॥  
 नवकारने परजाव, सबल संकट टढ्यो, सोनापुरसो तिण कर्यो ए ॥  
 ॥ ६ ॥ ढाल १ ॥ चरणकरणधर मुनिवर बंदिye ॥ ए देशी ॥ श्री  
 नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुज्ज गामो जी ॥ सेठ सु-  
 ज्जद्र तणी सुता श्रीमती, आविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥  
 मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम  
 न मूके हणिये मन धरी, कलसमें झूक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥  
 साप फीटीने फूलमाला अई, महियल महिना एहो जी ॥ पिउने  
 कुटंब सद्गुं प्रतिबूझ्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
 क्षितिप्रतिष्ठित बलराजा तिहां, इक दिन बूगो मेहो जी ॥ नदीपूर  
 बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद  
 लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर जह करे  
 नरने तिहां, दे बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी  
 जिनदाससेठनी, आवक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार जण बीजोरो  
 अह्यो, बूझ्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमर्ण  
 खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया

जज्ञ नामे नारि सुहाया ॥ चंरुपिंगल चोरयो नृप हारा, गणिका  
 ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूखो  
 दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पढतावे, चोर समीपे  
 ठानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रजावे वंठित  
 सीधो, नृपने घर सुत अइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥  
 ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिशंदाससेठ, तिहां किण हुंरुक पापनी डेठ ॥  
 एकदा चोरी करतां जाळ्यो, राजा हुकमें सूखी घाळ्यो ॥ ४ ॥  
 हुंरुक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार  
 दीधो उषगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणो ॥ ५ ॥  
 चंपानगरीमें जे कीधूं, सुजज्ञ सनी निकलक प्रसीधूं ॥ श्रीनवकार  
 प्रसाद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥  
 नरतनृप जावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावति पूनिम करी ए, बीजल  
 वांथी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपानी चलावियो ए,  
 अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाठरूया एक चारतो ए,  
 नदिय प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो  
 ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चार करी हवे ए, वली करया पाप  
 अनेक, न० ॥ ठुटकरबारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥  
 ॥ ४ ॥ संत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ ती  
 र्थकर पद ते लदे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिनर  
 अधिकी संपदा ए, मनवंठित सुख आय, न० ॥ दयाकुसल वाचक  
 वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका  
 चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुक्लदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे, जिस पदका  
 जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ॥ १००॥

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ एमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥  
 २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आचरियाणं ॥ उपवा-  
 वास ७ ॥ ४ । एमोउवझायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । एमोलोए  
 सबसाहूणं ॥ उपवास ६ ॥ ६ । एसोपंचनमोकारो ॥ उपवास ७ ॥  
 ७ । सबपावप्पणासणो ॥ उपवास ७ ॥ ८ । मंगलाणंचसव्वेसिं ॥  
 उपवास ७ ॥ ९ । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ६ ॥ एसें नवकार  
 भंत्रका ६७ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वरुनवकार अथवा ऊपर  
 लिखा सो स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति नवपदका  
 उच्चार करे, चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रज्ञावसें अनेक  
 सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुज्जप्ताव सवि जिनतणा, पंच कड्याण  
 दिण जणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणै पस्सि पंचमि दिणै,  
 नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण  
 सुरजवणथी वारसै, पनुमपह जम्म वलि दिक्क तसु तेरसै ॥ वीर  
 सिवमां वसै पस्सि दिव ऊजलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार  
 सि मिले ॥ २ ॥ ज्ञास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि  
 यो, सोइ ठै रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे सं-  
 यम आदरयौ, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वरयौ ॥ सिर वरयौ  
 मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति  
 पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसै वलि  
 मल्लिजिणने जम्म दिक्क सुनाणीया, वलि मल्लि दिक्का नाण ठै  
 अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संज्ञा  
 विचै, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण ज्ञाविचै ॥ ते परि सवि रे गीता-  
 रथ सदगुरु लहै, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सदहे ॥ सदहे

सहूयै ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कळयाणक  
 चउदसि जनम संजवनों शुणौ ॥ पूनिमें संजव दिस्का पांमी दया  
 धरि जगजोवनी, हिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिस्का  
 पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेर  
 सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशोतल थयो के-  
 वली, पोसह सुदि रे ठठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ  
 नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अजिनंदनें केवल पूनि  
 में धम्मे वसें ॥ माहाइ ठठे पनुम चवियो बारसें शीतल थयौ,  
 वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥  
 अम्मावसि रे दिवसें नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुद्धे हिव  
 अनुक्रमे ॥ सित बीजे रे अजिनंदन वासुपूजनों, कळयाणकरे ज  
 नम ठांण अनुक्रम मनो ॥ अनुक्रमे मानों बिहू बीजे विमल धरम  
 सुजामिया, श्रीविमल दिस्का चउथि अठमि अजित उतपति पांमि  
 या ॥ नवमिये दिस्का अजित पांमी बारसें अजिनंदनें, श्रीधर्मनाथे  
 सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥ ६ ॥ ज्ञास ॥ फागुण वदि ठठे सुपास  
 केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंड्रपत्तु नाणें जुत्तो ॥  
 नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुवय नाण  
 जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिङ्गस तणो चवदस वसु  
 पुङ्ग, जम्म हुज अम्मावसें ए तसु संजम रङ्ग ॥ सुकल बीज चउथि  
 अठमिये अर मद्धि संजव, चवण सुबारसि मद्धि मुगति सुवय वय  
 उज्जव ॥ ८ ॥ ( ढाल फागनी ) चैत्र पढम पश्चि चउथि नाण च  
 वणं पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥  
 वलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव  
 कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत अने सं  
 जवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नाण वलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसजिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना  
ह केवलसिरि पायो ॥ १० ॥ ज्ञास ॥ हिव वैसाख वंदेपनिवा दिन,  
कुंथु सिद्ध शीतल बीजें दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ ठठे, श्रीशी  
तल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम  
अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतह, जनम हुतं श्रीकुंथु  
जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अजिनंदन उत्तम, ध  
रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम  
तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सांमे पायो, गायो धरि आ  
णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा  
मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पस्कि  
ठठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि मुगति  
सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुतं ए ॥ धरमनाथ  
सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास  
जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥  
ज्ञास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि सिरि  
विमल ॥ मुक्क नवाम नमि वय गहण, सेय ठठै चवण ॥ वीरनो  
अठमि नेमि मुक्क चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, ठ सय वर साधु  
कर परवरयो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमदणि मुग  
ति रमणी वर्यो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज मु  
गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविउ अणंतनाह अठमि नमि जा  
मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुतं अह निम्मल बीजै, सुमति  
चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म जणीजै ॥ १६ ॥ ठठे सुनिवर ने  
मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ सुनिसुवय पूनिमरयणि, चविउ गुं  
णमणि वास ॥ १७ ॥ ज्ञास्व वदि सत्तमें संति ससि चवण जव  
रकय, अठमि चविय सुणस नवमि सुदि सुविध सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसरं गच्छ ॥ हरेण अम्मावेमो  
 ए, नांणी नेमीसर ॥ १७ ॥ पुनिम नमि जिणवरं चविय, इण  
 पर वारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कळयाणक रासि  
 ॥ १८ ॥ जिणं चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दि  
 ने, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनै ॥ कळयाण नीते  
 कोमि पांमी अनुक्रमे सिवसुख लहे, ए हेतु आंणी सुगुरु नांणी  
 एह कळयाणक कहे ॥ १९ ॥ इम पांच जरते ऐरवत्त करि एक  
 दिन जिनवरतणा, दस कळयाणक हुवे इण दिन सुर करे उच्चव  
 यणा ॥ जिम हूआ ते तिम वली होस्ये पंच कळयाणक सदा, श्री  
 पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २० ॥ इति श्रीपंच  
 कळयाणक स्तवनं ॥

॥ अथ रुषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताकर संलक्ष० यह रुषिमंडल स्तोत्र धूप  
 दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रजात समय सुणें. रुषिमं  
 दलमें जो मूल मंत्र हे सो शुद्ध दिन शुद्ध घटी हाथमें फल  
 फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके वि-  
 नय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ७००० आठ हजार जाप  
 आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो  
 आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणा  
 करै. ऊजमणेके दिन एकसो आठ घेर सुणै. पीठै शक्ति होय तो  
 विधि संयुक्त रुषिमंडल स्थापन करायके पूजा करै. विशेष जक्ति  
 करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुजक्ती करे, साहमीवञ्चल करै.  
 विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ रुषिमंडल सुणणेवाले पूजणेवा  
 ले जव्यजीवके घरमें कच्ची उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उछाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट यत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

झषज चरण अंगूठमों, दायक जवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का  
 नसग रह्या, विचर्या देस विदेस ॥ खमां२ केवल लह्यो, पूजो  
 जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥  
 कर कंमे प्रजु पूजना, पूजो जवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दीय  
 अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, जुजावले जवजल तर्या, पूजो खंध म  
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ ना  
 जिकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल  
 उपशम बले, बाढ्यो राग ने छेष ॥ हेम दहे वनखंमनें, हृदयक  
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतूल,  
 मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तर्थकर पद  
 पून्यथी, त्रिजुवन जन सेवंत, त्रिजुवन तिलक समा प्रजु, जाल  
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिखा गुण ऊजली, लोकांतिक जगवंत ॥ व  
 सिया तिण कारण विजु, शिरशिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव  
 तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध जगवथी, कहे शुज  
 वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन उहा ॥

### ॥ शिक्षा दोहा ॥


जीवमा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमैं  
 परजा नमैं, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे,  
 विन कुंज न होय ॥ ज्ञानि बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न  
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे  
 गुरुवाणी वेगला, रमवमिया संसार ॥ ३ ॥ जावे जिनवर पूजिये,  
 जावे दीजे दांन ॥ जावें जावना जाविये, जावें केवलज्ञान ॥ ४ ॥  
 पांच कोमीनें फूलने, पांम्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व  
 रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदों के नव चैत्यवन्दन, नव स्तवन तथा नव थुई ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवन्दन ॥

जय२ श्रीअरिहंत जानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक  
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्धात शुभ्र केवलै, कय  
कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसैं, जयो वर अविन्यासी ॥  
॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद  
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिं नाम-  
तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री  
तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं जंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥  
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥  
वादरकायें मन वच जोग, तनु२सैं फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुद्ध  
मकायतें मन वच रोक, निज दीर्थ ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥  
संझी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि  
समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥  
॥ ३ ॥ एपां योगथी समयें एक, होना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥  
समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥  
वेदसमेनाहारता पाथ, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें  
गुणमें गुण समै देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥   
इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल  
ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणो करि पूरो जी ॥ तंजै जव  
थानक आराधी गोत्र तीर्थकर नूरो जी, बारे गुणां करि एहवा अ  
रिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥



॥ अथ सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत जागी ॥ पुढ पञ्चपसंग  
सैं, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण  
निरागी ॥ चेतनजूपें आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवलें  
दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वज्ञाव ॥ सिद्ध जये तसु हीरधर्म,  
वंदे धरि गुप्त ज्ञाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थारे महिलां ऊपर मेह झरोखें वीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हारा लाल ही० ॥  
जुत्कष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै  
जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलैं गुण श्रेणिता,  
म्हा० दलैं० ॥ १ ॥ ह्रस्वाकर पंच काल रहै ते योगमें, म्हा०  
र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे  
नगरझासैं अक्रिय होयने, म्हा० अ० ॥ पुढ पयोग असंग स्वज्ञाव  
अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इहु गुण नव परमाण योजन लहैं  
कही, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाज्ञास निरालंबन सही, म्हा०  
नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मही प-  
क्षथी हीन जणी सिद्धांतमें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपञ्चारा नाम  
सिद्धासैं जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें जाग अलोककुं स्प-  
र्शने, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल वत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा०  
प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासैं हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥  
मिलिया एकमेंनंत अवाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि  
रम्य सिरिही जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म  
नगेहमें, म्हा० घ० ॥ कुशल जये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा०  
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद थुई ॥

अष्ट करमकुं धमन करीने गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्यावाधे सादि अनादि चिदानंद चिदरासी जी ॥ परमात्मपद पूर-  
ण विलासी अध घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टय शिव  
पद ध्यावो केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद शुद्धि ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद चैत्यद्वंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥  
प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥ १ ॥ रुज्वादिक जि  
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ जवकूपें पापें परत, जगजन  
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं  
वंदे हीरधर्म, अष्टोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वींदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खरुगथी जेणे, हणयो क्रोध सुजट सम द्वेणे हो, गण  
पति गुणपेखी ॥ टेरा ॥ मान महा गिरि वयरे, अति शोभन महव वयरे  
हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दंजरूप विसवेली, वर अज्जवकीलै ठेलो हो ॥ ग० ॥  
मुर्खावेलथी जरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन  
नाग मद दीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा  
मल्ल ताज्यो, पुण वैराग मुगरे पाज्यो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोस गंध  
वस कीनो, धर उपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेद्या,  
सुरवर पिण जिण पिषेद्या हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस कृति गुणथी लीणो,  
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी  
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद शुद्धि ॥

॥ पंचाचारकुं पालै उजवाळै दोष रहित गुणधारी जी, गु  
ण ठत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन  
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, कमा सहित जे संज  
म पालै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति शुद्धि ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

॥ धन धन श्री नवजाय राय । सठता धन नंजन । जिन  
वर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण नं  
जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय लोयसों ।  
जत्थय सुय मंजण ॥ १ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसें पद  
तुर्य । तिनपेँ अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिखा अलगा रहोनें ॥ ए देखी ॥

॥ हुयने ३ दूरी हुयने, चेतन जाबै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं  
मुऊ पास क्यूं आवै, दू० ॥ तुऊनें कुण वतलावे, दू० ॥ ए आंकणी  
॥ तो संगै निज पंचेडोनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी  
खयजवसमसें, जावेडी मंराणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इयै ते परजाते  
कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण क  
में उपदेश ॥ दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं संका, तेरे संगे ला  
गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में ज्यो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥  
उप कहिये हणियो जविधानो, अधियां लाजत आय ॥ आधीनांमन  
पीरानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर  
आगम, सूत्रसें ते नवझाय ॥ तत् सेवाते हणि सठताकूं, चेतन  
कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद शुद्ध ॥

॥ अंग इग्यारै चवदै पूरब गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र  
अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूर  
आगम पूरा नय निहोपै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी  
पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद शुद्ध ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवन्दनं ॥

॥ देसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुद्ध  
शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्ततें,

जये अंतरजामी ॥ मानस इन्द्रिय दमनचूत, समदम अजिरामी  
॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण जरयो ए, पंचम पद मुनिराज ॥  
तत्पदपंकज नमत हे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मालनर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकषाया जगजन कहे, धारै चनुगति वसनसें रोस हो,  
मुनिंदजी ॥ राग हीण जय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो  
मुनिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० ठै पूरब कोरु हो  
मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो  
मु० ॥ २ ॥ स्त्यानहीनिद्रा नदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच  
लानिझमें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि  
ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो  
पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥  
॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथै, सा० साधन पर वर जीव हो मु०  
॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु जवतु जगतीव हो मु०  
॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद शुद्ध ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बयालीस टालै जी,  
षट् काथा गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच म  
हाव्रत सूधा पालै धर्म शुद्ध उजवालै जो, रूपकश्रेणि कर कर्म  
खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुगल परियट्ट, अष्ट परमित संसार ॥ गंठिजेद  
तव करि लहै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ दायक वेदक शशि असं  
ख, नवसम पण बार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवै शिव  
दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लब्धन अजिरांम ॥  
दरसनकुं गणि हीग्धर्म, अहतिस् करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके वाग आंदो मोहि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साथ ज्ञायो री ॥ धर्म जिन  
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज सप्तम  
नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥ २ ॥  
मिथ्या तापे तप्त, बोधही बांध लहेरी ॥ उपशम कायक ठेद, ई  
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपार, फुल अस्ताव क  
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद  
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें  
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपसुत्ततत्त सूधा सरथै समकित गुण उजवाले जी,  
जेद ठेद करि आतम निरखी पशु टाळी सुर पावै जी ॥ प्रत्या-  
ख्याने सम तुल्य ज्ञाख्यो गणधर अरिहंत मूरा जी, ए दर्शनपद  
नित ५ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि  
लापसैं जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जवं गुण पज्जवि  
उहि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप ज्ञाण, इक के  
वल ज्ञाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम  
पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर जाषित आगम ज्ञणिया, तत्व यथास्थित गमिया  
जी ॥ म्हारे जगजन तारू ॥ ते उत्तम वर नाण कहायै, जविजन  
अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जहाजहा कुपंथ सुपंथा, पे-  
यापेय अर्थथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें  
जेश विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय ठै इंडी सारू

तेण परोक्त विचारू जी ॥ म्हा० ॥ जही मण केवल हें वारू, जीव  
प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयेविजस्त बलें जग जाणें,  
लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजै जासु पसायें,  
थारो शुभ्र अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशमं  
हेयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें जवि  
जन हरखे, निसदिम कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद शुई ॥

मति श्रुति इंडी जन्तित कहियै लहियै गुण गंजीरो जी,  
आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि मं  
नपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो  
पूजो जविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति शुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्त पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुभ्र  
जाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि  
कर्म निकंद ॥ सुमति पंचतीन गुप्ति युत, दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इखु  
कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरितकूं हीर  
धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अजं निर्गुणी, चिंदाज्ञास निरसंग ॥ सुग्यानी  
साजलो ॥ टेर ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०  
॥ १ ॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण जाव ॥ सु० ॥ कृत्वां जो  
गसुधामता, लब्धा संख स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो  
गमें, वृद्धि लहे जगमानं ॥ सु० ॥ मध्ये वसु संमयें लहे, अंते द्वौते  
जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥  
सु० ॥ प्राप्ता घस्र प्रकारता, सप्त पृथ्वीका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तडो  
धन रूपी जलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद

धर्ममें, कुशल जवतु अजिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवर्न ॥

॥ अथ चारित्रपद युई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, बारे  
जावना सूधी जावै सागर पार ऊतारै जी ॥ खट खंम राजकूं दूर  
तजीनें चक्रो संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित वंदौ आतम-  
गुण हितकारै जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीरुषजादिक तीर्थनाथ, तजव सिव जाण ॥ बिहिं अं  
तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स  
ही, आदिक लब्धि निदान ॥ जेदें समता युत खिणें, दृग्धन कर्म  
विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद जलो ए, इच्छारोध सरूप ॥ वंदनसें  
नित हीरधर्म, दूर जवतु जवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस जेद जण्या जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजे  
रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण जेव सिद्धितणा  
वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स  
मता सहितें जिनतें ज्ञारी, जखी कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे  
शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकलें कर्म कचौरा, दहे तप पावकका जोरा  
रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हें रुद्धि, देव नरनी  
फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप  
जानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्त पसायें लहिये  
वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति डुकर फुन  
साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इच्छा  
रोधन रूपी कहियै, तपपदही चैतन वहिये रे ॥ म्हा० ॥ पाठक  
श्रीहीरधर्म रूपासे, नवपद कुसलाकूं जासे रे ॥ म्हारे शि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ तप पद युई ॥

इन्द्रारोधन तप ते ज्ञाख्यो आगम तेहनो साखी जी, इव्य  
ज्ञावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण  
परणित पेखी तेहिअ तपगुण दाखी जी, लबधि सकलनो कारण  
देखी ईश्वर सें मुख ज्ञाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ श्रुतिविंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमद्वृषज्ज सर्वज्ञ, वृषज्जांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाहा,  
नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ जुगस्यादौ त्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न  
यत् ॥ जनन्या मरुदेवाबाः, बावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति वृषज्ज  
स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांठन शालिना ॥ जितसत्रु  
महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवं-  
स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥  
इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनुपतेर्वर्यात्, संजवः संजवाज्जिधः ॥  
सेनाया नंदनो हेम, वणों गंधर्व लांठनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य,  
ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पूंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥  
॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्धं, वीतरागं जग-  
त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, प्लवगांकं हिरण्यज्ज ॥ ७ ॥ अजिनंदन  
नामानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया जक्तया, सनालोकेज्जि  
नंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेघाज्जिध धरि त्रोल, तन  
यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण नृदेम, मरीचिर्मंगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं  
सुमतिनाथेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्ग  
सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र  
सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराज्जिव नृपोद्भूतः, पद्म लक्षणा  
धारकः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव संकीर्णं, उस्तरे पततां नृणां ॥  
त्राणाय सततं देव, पद्मप्रज्ज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज्ज



स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वान्निघोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकजृत् ॥  
 प्रतिष्ठ नृप संजात, श्रामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र  
 इव गंजीरः, कर्माणां ह्येदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं  
 नौमि सदा विभू ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंद्रप्रज्ञ प्र  
 ज्ञोकांतं, चंद्र लक्षण संयुतः ॥ तमापतिष्ठ विज्ञान, तमोव्यूह वि  
 नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोन्नव ॥ लक्ष्मणा  
 पुत्रमां स्वामि, नव केवल बोधजृत् ॥ १६ ॥ इति चंद्रप्रज्ञ स्तुति ॥  
 ( अत्राद्यश्चत्रबंधः श्लोकः ) ॥ संस्तुतोबोवदत्वाश्रु, सुरासुरनरेश्वरैः  
 ॥ सुविधिर्वीरितशर्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीकननीरा  
 मा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांघिनः  
 ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ( चामरबंधाविमौ ) ॥ श्री  
 मंढीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णवदेह, श्रीवत्सांक्षां  
 कधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांजोज, सेवकानांवपुर्नृतां ॥ प्राक्कृ  
 तं वृंजनव्यूहं ॥ डुष्टंशंजोद्यदेविजौ ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु  
 तिः ॥ विष्णुर्वैशार्कवदेवो, विष्णुपुत्रोदिरण्यजः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोज  
 स्त्रं, खड्गलांघिनजृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्व, श्रेयांसश्रे  
 यसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदं परं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां  
 स स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवर्त्तिरामीहा, जवतांश्चदि ॥ ऊटितिष्ठे  
 दितुंचित्ते, ज्ञोज्ञव्याः प्राप्तुमकारं ॥ २३ ॥ तदाजजध्वमेनंहि, वासु  
 पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तजं ॥ २४ ॥ इ  
 ति वासुपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमद्दिमलनाथेन्द्र, कृतवर्मसमुन्नवः  
 ॥ गूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चंद्रवर्द्धिमलज्ञान,  
 त्वदंयस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६  
 ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपूत्रस्य, सुयशःसिंह  
 सेनयोः ॥ देवस्यश्वेनचिह्नस्य, वर्धनान्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इन्द्राद

योपियस्यांतं, गुणानांलेजिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, कमोवकुं  
 नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक,  
 भानुवंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रज्ञसर्वज्ञ, धर्मनाथान्निधेश्वरः ॥ २९ ॥  
 तवागोपिपुरश्चारी, नृतलेयात्यशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सतः  
 संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी  
 सं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥  
 ॥ ३१ ॥ तंश्रीमन्नातिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां  
 वृष्टिं, विबुद्धाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्री  
 युतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यज्ञ ॥ सूरिभूपतिसंजात, ङागल  
 क्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंभुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं  
 पापसंदोहं, जवांतरकृतंघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंभुनाथ स्तुतिः  
 सुदर्शननृपोद्भूतं, नंदावर्त्ताकसंयुतं ॥ अंजोजवन्निरालेपं, देवीपुत्रसु  
 वर्णजं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यप्रभुतयाजिनं ॥ चरी  
 कर्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८  
 ॥ कुंजप्रज्ञावतीपूत्रौ, नीलवर्णौघटांकनृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त,  
 नासनाद्विदितःसदा ॥ ३७ ॥ उत्रत्रययुतोजाति, देवयोविष्टपत्त्रये  
 ॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरणेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिना  
 थ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्मल  
 क्षणानृद्धर्म, दायकस्यामलहृये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक  
 र्मारिमंरुल ॥ देहित्वंमेव्ययीजावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ  
 ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयभूपाल, कुलोत्तंसहिर  
 ण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकनृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते  
 पंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वयं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र  
 संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव  
 र्य्ये, समुद्रविजयोद्भवे ॥ हरिवंसहरौशंजौ, शंखाकिकमलप्रज्ञे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीस्त्रेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्र  
त्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४ ॥ इति नेमनाथ स्तुतिः ॥ २२ ॥ अश्वसेना  
कञ्जूपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनदितायेन, कमठस्याजिमान  
ता ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास  
नचिन्हाय, नीलवर्णायसंज्ञवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥  
श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्क, त्रिशलेयजगत्मणे ॥ महानादध्वजाद्वैत, क  
ल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थकृद्दीर, मोहेज्जहननेमृगात् ॥  
त्वन्नक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः  
॥ २४ ॥ इति श्रीकृष्णकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः ॥

अथ नवपदजाके उलीके देववन्दनमें कहणेका चैत्यवन्दन प  
हली लिखा है ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी तम सहु मंत्रमां, नवपद अजिरामी रे लोय ॥  
अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥  
अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी  
रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी  
रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल कथ करी, थया सिद्ध  
नरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो ज्ञवि ज्ञावधी, जे आगम  
अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण उत्तीसे सोजता, सुंदर  
सुखकारी रे लोय ॥ अहो सु० ॥ आचारंज तीजै पदै, वंदू अविकारी  
रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप डु विध  
आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चौथे पद पाठक नमो, संवेग  
समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा,  
पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमें, प्रणमं  
वरुजागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें उलखै,  
श्रुत अज्ञ आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ ठेठे गुण दरसल नमो, आ-

तम शुभ्र ज्ञावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण  
सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक  
दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चां  
रित्रपद नमो, परज्ञाव निवारी रे लोय ॥ अ० ५० ॥ स्वत्यादिक  
दस धर्मनो, जेह ठे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ए ॥ नवमे  
वलिं तपपद नमो, बाह्याज्यंतर जेदे रे लोय ॥ अ० बा० ॥ बांध्या  
काल अनंतना, जे कर्म उठेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए  
नवपद बहुमानथी, ध्यावै शुभ्र ज्ञावै रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप  
श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥  
आसू चैत्रुक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥  
नव नली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥  
॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परै, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० ॥  
व० ॥ श्रीजिनलान्न कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० ॥  
अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध  
अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ जविक मन धारज्यो रे ॥  
धारज्यो नवपद ध्यान ॥ ज० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गण  
धरू रे, गुण बत्तीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दा  
प्रमिसुविलास ॥ ज० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोभता जी,  
समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥  
॥ ३ ॥ संबर साधना चरण बै रे, तप उत्तम विधि दोय ॥  
नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ ज० ॥ ४ ॥  
मन त सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनु  
जैव कारणे जी, नितप्रति नमत कड्याण ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्वान धरो रे, जविका न० ॥ मन वच काया कर  
एकंते, विक्रमा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणो  
रा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जं  
कार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अरुसिद्ध नवनिधि मंगलमाला, संपत्ति  
सद्गज वरो रे ॥ लालचंद याकीबलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरस्रजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद  
महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो  
अपणो आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लंगाय रे ॥ जी० ॥ करम  
निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन  
को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद आय रे ॥ जी० ॥ इय  
जिन जए आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत  
सिद्ध नर आचारज, उवजाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व  
साधू मंगल ए पांचू, याहीसैं दिख रमो२ ॥ जि० ॥ दर्शन ज्ञान  
चरण तप उत्तम, याहीसैं दिख दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज  
जज नवपदकुं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार  
जगतमें, नर द्वार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणामुं सिद्धचक्र सुज जाव, हिव कारज सि  
द्धिनो लाधो एह ऊपाय ॥ तुज नाम पसारैं आरति व्याधि पुलाय,  
जग तुज अनुग्रहणी सुख संपत्ति मुज आय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न  
मिथै सिद्ध सूरौ उवझाव, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

हुग विधि चारित्तै वुध विध तप मन ज्ञाय, ये नवपदं ध्यावता नि  
रूपम शिवसुख आय ॥ १ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री  
गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारें ज्ञाण्यो एह विचा  
र, जविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अ  
नुसंगी चक्रेसरि सुखकार, सेवकर्ने आपे सुख संपति परिवार ॥  
दिव निद्रि उवंध करि चारित्रनंदी मन ज्ञाय, जिनचंद सूरीसर  
स्वरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति शुई ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

( प्रथम ) आसो सुदि ३ अथवा चैत्र सुदि ३ सें उली सरू  
करे, कज्जी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वढी होय तो ८ सें  
सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध  
करके मांमणादिकसें चित्रित करे, पीठे पट्टे पर सिद्धचक्र आपके त्रि  
काल पूजा करै. प्रज्ञातसमें राईपम्किमणा करके पीठे वस्त्रोंकी  
पम्किमणा करै. जहां सिद्धचक्रकी आपना हे उहां आयके पांचे  
शक्रस्तवे देव वांवे, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव  
चैत्यवंदन करै, वासक्षेप पूजा करे, पीठे केसरचंदनसें पूजा करै.  
गुरु पात आयके अष्ठुठिनमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका प  
त्त्रस्काण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसें  
जुन गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु  
णोंको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोमे इच्छा  
मिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ६ ज्ञानमंजुल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ७ कुंडुजि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ८ वज्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- ११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥ इति द्वादसअ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नचूसलियेणं कहिके १२ लोगस्तका काजसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पञ्चखाण पार के आंबिल करै, पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीठै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदै, गुणनो ( १००० ) ॥ जँ हँ एमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै, श्रीपालचरित्र सुणे, पूरा पहर दिन रहणैसँ तीसरी बेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदै, पीठै फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पञ्चस्काण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रति क्रमण करै, आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगेरे करके पीठै पन्निक्मणा करै, ( सोणे के वखत ) पहले इरियावही परकमके चैत्यवंदन करै, फेर राइ संधारा गाथा सुणें ॥ निज नही आवे जहां तक नव गुल स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रजात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग दे इस वास्ते गेहूंकी रो-

टीसैं आबिल करै ॥ लै हूँ एमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार गुणना करै, सिद्धपदका ८ गुण हे, ८ नमस्कार गुरु करावै सो लिं॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥

२ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥

३ अव्याबाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥

४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥

५ अक्षयस्त्रिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥

६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥

७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥

८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नब्रूसलि ८ कहेके आठ लोगस्सका काउसग करै, एक लोगस्स प्रगट कहे, फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रज्ञात कर्त्तव्य करै, आचार्यपद पीले वर्ण हे इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करै ॥ लै हूँ एमो आयरि आणं ॥ इस पदका दो हजार जाप करै, आचार्यके ३६ गुण हे, वत्तीस नमस्कार गुरु करावै सो लिख्यते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

२ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥

३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥

४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

५ गांजीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥



- ७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- ११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १५ क्लमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १६ मृडगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- १९ द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
- २५ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- २६ असरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- २७ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- २८ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- २९ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- ३० अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥
- ३१ आश्रव ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ जावना जावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंशत् आ०

॥ यह उत्तीस नमस्कार करके अन्नबूससि० कहके उत्तीस

३६ लोगस्सका काउसग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पूर्वोक्त करणी क्रमसें करै. इति तृतीय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नुँ हँही णमो नवज्ञायानं ॥ इस पदका २, हज़ार जाप करै. हरेमूंगका आंबिल करै. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥

२ श्रीसुयगमांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

३ श्रीगणगंगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०

४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

५ श्रीजगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

८ श्रीअंतगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

- १३ आश्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
- १५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २२ अविध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २३ प्राणायामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २५ लोकविंडुसार पठनगुण यु० ॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः ॥

इस तरे २५ नमस्कार करै, खम्हा हो के अन्नबूँ कहेके २५ लोगस्सका काउसग करै, प्रगट लोगस्स कहेके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

जुँ हँही एमो लोए सब साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुण-  
ना करै, साधुपद काले वर्ण हे इस वास्ते जम्ह के बाकलोसैं आं-  
धिल करै, सर्व साधुपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै ॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

- १ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
- २ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

- ५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ७ पृथ्वीकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- ८ अग्निकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- ९ तेजकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १० वायुकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- ११ वनस्पतिकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १२ त्रसकाय रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १३ एकैन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १४ बेइन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १५ तेइन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १६ चोइन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १७ पंचैन्दीजीव रक्तकाय श्रीसा० ॥
- १८ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥
- १९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥
- २० शुभ्रजावना जावकाय श्रीसा० ॥
- २१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥
- २२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥
- २३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
- २४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
- २५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥
- २६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥
- २७ मरणांतनुपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥

इस वजे २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्सका कानुसंग करे,  
प्रगट लोगस्स कहिके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करै, यह पंच पर

मेष्टि पदके सत्र गुण मिलाएँ १०८ होता है, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हैं ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं एमो दंसणस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करै, दर्शनपद सपेद वर्ण है इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, सम्यक्तके सरसठ गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसदर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थ ज्ञानृसेवनारूप सद् ॥
- ३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद् ॥
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सद् ॥
- ५ शुश्रूषारूप सद् ॥
- ६ धर्मरागरूप सद् ॥
- ७ वैयावृत्तरूप सद् ॥
- ८ अर्हविनयरूप सद् ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सद् ॥
- १० चैत्यविनयरूप सद् ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सद् ॥
- १२ धर्मविनयरूप सद् ॥
- १३ साधुवर्ग विनयरूप सद् ॥
- १४ आचार्य विनयरूप सद् ॥
- १५ उपाध्याय विनयरूप सद् ॥
- १६ प्रवचन विनयरूप सद् ॥
- १७ दर्शन विनयरूप सद् ॥
- १८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सद् ॥
- १९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूप सद् ॥

- ३० संसारे जिनमत स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥  
 २१ शंकादूषण रहिताय सद० ॥  
 २२ कांक्षादूषण रहिताय सद० ॥  
 २३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद० ॥  
 २४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सद० ॥  
 २५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद० ॥  
 २६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सद० ॥  
 २७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सद० ॥  
 २८ वादीप्रज्ञावकरूप सद० ॥  
 २९ नैमित्तिकप्रज्ञावकरूप सद० ॥  
 ३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सद० ॥  
 ३१ प्रज्ञाध्यादिक विद्याभूतप्रज्ञावक सद० ॥  
 ३२ चूर्णग्रंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सद० ॥  
 ३३ कविप्रज्ञावकरूप सद० ॥  
 ३४ जिनसासने कौसलता भूषण सद० ॥  
 ३५ प्रज्ञावनाभूषणरूप सद० ॥  
 ३६ तीर्थसेवाभूषणरूप सद० ॥  
 ३७ स्थैर्यताभूषणरूप सद० ॥  
 ३८ जिनसासने भक्तिभूषणरूप सद० ॥  
 ३९ उपशम गुणरूप सद० ॥  
 ४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥  
 ४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥  
 ४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥  
 ४३ आस्तिका गुणरूप सद० ॥  
 ४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद० ॥

४५. परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद्व० ॥  
 ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद्व० ॥  
 ४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥  
 ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥  
 ४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥  
 ५० राजान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद्व० ॥  
 ५१ गणान्नियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५२ बलान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद्व० ॥  
 ५३ सुरान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद्व० ॥  
 ५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्व मूलमिति चिंतनरूप सद्व० ॥  
 ५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्धारमिति चिंतन श्रीसद्व० ॥  
 ५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्व० ॥  
 ५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्व० ॥  
 ५९ चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद्व० ॥  
 ६० चारित्रधर्मस्य ज्ञानमिति चिंतनरूप स० ॥  
 ६१ चारित्रधर्मस्य सन्निभमिति चिंतनरूप स० ॥  
 ६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद्व० ॥  
 ६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद्व० ॥  
 ६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥  
 ६५ सचजीव कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥  
 ६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०  
 ६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥ —  
 ॥ इस वजे समस्त नमस्कार कर खमा होके अन्नबू कदके

६७ लोगस्सका कान्ठसंग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीठै  
पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ठ दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै.  
ज्ञानपद उज्ज्वल बर्ण, तंडुलका आबिल करै, इकावन जेद ज्ञानपद  
के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंडी व्धंजनावग्रह मतिज्ञानाव नमः ॥
- २ रसनेंडी व्धंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेंडी व्धंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रेंडी व्धंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणेंडी अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंडी अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
- ११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
- १२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
- १३ घ्राणेंडीईहा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
- १५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
- १६ मनेकरीईहामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंडीअपाय मति० ॥
- १८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥



- २० चक्षुरिन्द्रियपाय मति० ॥  
 २१ श्रोतेन्द्रियपाय मति० ॥  
 २२ मनैनापाय मति० ॥  
 २३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २४ रसनेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २५ घ्राणेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २६ चक्षुरिन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २७ श्रोतेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २८ मनोधारणा मति० ॥  
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३२ असंज्ञी श्रुत० ॥  
 ३३ सम्यक् श्रुत० ॥  
 ३४ मिथ्या श्रुत० ॥  
 ३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥  
 ३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥  
 ३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥  
 ४० अगमिक श्रुत० ॥  
 ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥  
 ४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४९ वद्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ रुजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पं० ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खना होके अन्नवू० कहके एका  
वन लोगस्सका काजसग करै, एक लोगस्स प्रगट कहके पारे, पीबै  
पूर्वोक्त करणी करे, इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे,  
चारित्र पदका उज्ज्वल वर्ण है, इसीसे तंडुलका आंवल करे, सत्तर  
जेद चारित्रपदके चित्तवके नमस्कार करे,

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राथ नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृडुताधर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्मरूप चारित्रे० ॥

- ११ संयमधर्मरूप चारि० ॥
- १२ सत्यधर्मरूप चारि० ॥
- १३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
- १४ अकिंचनधर्मरूप चा०
- १५ वंजधर्मरूप चारि० ॥
- १६ प्रण्वीरकासंयम चारि० ॥'
- १७ नुदगरकासंयम चारि०
- १८ तेजुरकासंयम चा० ॥
- १९ वाजुरकासंयम चारि० ॥
- २० वनस्पतिरकासंयम चारि० ॥
- २१ वेइंद्रीरकासंयम चारि०
- २२ तेइंद्रीरकासंयम चारि० ॥
- २३ चौइंद्रीरकासंयम चारि० ॥
- २४ पंचेइंद्रीरकासंयम चारि० ॥
- २५ अजीवरकासंयम चारि० ॥
- २६ प्रेकासंयम चारि० ॥
- २७ उपेकासंयम चारि० ॥
- २८ अतिरक्तवस्त्रज्जक्तादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
- २९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
- ३० मनसंयम चारि० ॥
- ३१ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ कायासंयम चारि०
- ३३ आचार्य वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ उपाध्याय वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ।
- ३५ तपस्वी वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥

- ३६ लघुशिष्यादि वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा०॥  
 ३७ गिलाणसाधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३८ साधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३९ श्रमणोपासक वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा०॥  
 ४० संघवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४१ कुलवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४२ गणवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४३ पशुपंरुगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४४ स्त्रीदास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरूप चारि०॥  
 ४७ कुरुयंतरसहित स्त्रीदावज्जाव सुणन वर्जन ब्र०  
 ४८ पूर्वस्त्रीसंज्ञोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०  
 ४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५१ अंगविज्ञूपावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५२ अणसण तपोरूप चा०  
 ५३ उणोदरी तपोरूप चा० ॥  
 ५४ वित्तसंखेवरूप चा० ॥  
 ५५ रसत्याग तपोरूप चा० ॥  
 ५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ॥  
 ५७ संलेखणा तपोरूप चा० ॥  
 ५८ प्रायश्चित्त तपोरूप चा० ॥  
 ५९ विनय तपोरूप चा० ॥  
 ६० वेद्यावच्च तपोरूप चा० ॥

६१ सिज्जाय तपोरुप चा० ॥

६२ ध्याम तपोरुप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रज्ञेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै, खमा हो के अन्नबूससि०  
७० लोगसका कानसग करै, एक लोगस प्रगट कहे, पूर्वोक्त क  
रणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नैं हँ एमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै,  
तपपदका उज्ज्वल वर्ण इस वास्ते चावल्लोका आंबिल करै, पञ्चास्  
ज्ञेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपज्ञेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यज्जणोदरी तपज्ञेद तपसे नमः ॥

४ अर्ज्यंतरज्जणोदरी तपज्ञेद त० ॥

५ इव्यतपवृत्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

८ जावतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

१७ कायकिलेस तपन्नेद तप० ॥

१० रसत्याग तपन्नेद तप० ॥

११ इंद्रिकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥

१२ स्त्री पशु पंरुकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त० ॥

१३ आलोचन प्रायश्चित्त तप० ॥

१४ पक्कमण प्रायश्चित्त तप० ॥

१५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ॥

१६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥

१७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥

१८ तप प्रायश्चित्त त० ॥

१९ नेद प्रायश्चित्त त० ॥

२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥

२१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥

२२ पारंचिय प्रायश्चित्त त० ॥

२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥

२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥

२५ चारित्र विनयरूप त० ॥

२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥

२७ वचन विनयरूप त० ॥

२८ काय विनयरूप त० ॥

२९ उपचारक विनयरूप तप० ॥

३० आचार्य वेयावच्च त० ॥

३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥

३२ साधू वेयावच्च त० ॥

३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥

३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥

३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥

३७ संघ वेयावच्च तप० ॥

३८ कुल वेयावच्च त० ॥

३९ गण वेयावच्च तप० ॥

४० वायणा तपसेनमः ॥

४१ पृच्छना तपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥

४४ धर्मकथा तपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त तपः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥

४७ धर्मध्यान चिंतन त० ॥

४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥

४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥

५० अन्त्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद ज्ञेयाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै. खमा होके अन्नबूससि० इत्यादि कहेके ५० लोगस्तका काउसग करै. एक लोगस्त प्रगट कहे. पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेंकों गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घनी देखेके अन्ना वस्त्र आभूषण पहरेके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधेके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकड़्य लेके नवकार गुणता जया गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

धीठै प्रमोदवत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखी हे ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंमल करै. सिद्धचक्रजी के चौ तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे, पहिले गढ़में अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद९ के रंग मुजब गुण प्रमाणसें रत्न चढावे नर पंचवर्णके फूत्र, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणेश रंग मुजब धीतुरेसे नरके चढावै पंचरंगी ए धजा चढावै, दूसरे बलयमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावै. तीसरे बलयमें ४८ ठूहारा चढावै, नव निधानोंकी जगे नव बने फल चढावै, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्वान्न रंगरंगे चढावै. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. नर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ५ ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करै. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करै, नवपद जीकी पूजा पढाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजि न्र बजावै, महा. महोन्नव उदार चित्तसें करै, मंगलझीप आरती प्र मुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब इसमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारै. तप पारणकी विधि आगे लिखी हे तथा उद्यापनमें ग्यानज्ञतिके कार ए ए पूरा ए बीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव जिल मिल ए रुमाल ए मोरा ए मिजासणा ए आपना ए चंद्रआ ए पूठीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज बणवावे, शक्ति नही होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावै. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुभखेत्रमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥



॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ४ से लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम है. उत्तमताका कारण ऐसा है—वारे महीनोंमें तीन अष्टादश महोत्सव आते हैं जिसमें चैत्र आसोजकी अष्टाई तो सास्वती है. आठमसेपूनुम तक इन दोनों महोनोमें व्यासुं निकायके देवता नर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर छीपमें जाते हैं; (पुन्याहं२) कहते जये अष्ट इवसें पूजन करै, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें जक्ति करै, पीठै नवमें दिन अपणे २ जन्मकुं स फल मानते जये अपणे २ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अष्टाई आसाठ चोमासेकी ( १४ ) पीठै ( ४१ ) दिन जाणैसें संवत्सरी पर्व साचवणेकुं ( ८ ) दिन तक अष्टादश महोत्सव करै. लेकिन यह अष्टादश सास्वती नही कही, कोइ बखत व्यासुं निकायके देवता ए कठे होकर नहीजी जावै, पहली पीठैजी करलेवै ॥ यह नवपदज की जुली शाश्वती अष्टादशमेंही की जाती है, नवपद माहात्म अधिकार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उद्धार करके जयजीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जगद्गुरुस्वामीनें इसको सिद्ध करा, इस वास्ते जयजीवोको यह तप प्रमाण है, नर जो जिवी अपनी अपनी कुयुक्तिये लगाकर खंरुन करते हैं सो तीर्थकरका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें जमेंगे. सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया है, हे गोतम बीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हैं नर उन सूत्रोंमेंसें एक हरफकेजी यथार्थ अर्थकुं तोरुके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा ( सूत्रनाम किसका है ) ॥ सुतंगणहररइयं, तदेवपत्तेयबुद्धरइयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अजिन्नदसपूविणारइयं ॥ १ ॥ ( अर्थ ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियों का रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा जयेकुं जगवानने सूत्र कहा है. सूत्र १, पयना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम जगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थे वाचक है इस वास्ते जइवाह उमास्वातिवाचकादिकोके बनाये निर्युक्त वेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोम पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अर्जी जंमारोमे मौजूद है ॥

॥ अथ अष्टापद नली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि ( ८ ) से लेकर पूर्णमासी तक ( केइयक जव्यजीव ) अष्टापदजीकी नली करते हैं ( जिसमें ) पत्तिकमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी नली तुल्य करै. ( इतना विशेष है ) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः ( इस पदका ) २००० गुणना ( वा ) बीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १९ लोगस्सका काजसगग करै, आत्रिल ( वा ) एकात्तलोका पञ्चस्काण करै, पीठे पूणमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी आपना करै, मंमल रचै, सो विधि लिख्यते हैं ॥

पूर्व

१ । २ ।

त्रिवेदिकमध्य

असोकवृक्ष

उर्ध्वः

( चत्तारि दस्किणाए, पञ्चिमन

अठउत्तराए ॥ दस पुवाए दो अठा,

वंयमि वंदे चउवीसं ॥ १ ॥ पुवा,

इं नसजमजियं ॥ दस्किणन सं

जवाइ चत्तारि, पञ्चिम सुपासमा

इ, धम्माइ दसउत्तरन ॥ २ ॥ )

इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम

यथाक्रमसें चोवीस कोठे मंमल

में बणाणा. इहां कांकणमोरे मो

ली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके

मंमलवत् जाणना. नवग्रह दश

दग्पाल आपना करे. पीठे एक

काव्य पढे के एकेक कोठेमें एक

१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५

कतर

— ४ — ५ — ६ — ७

जल

७८९१०१११२१३१४१५

पश्चिम

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर बरक चढ़ा सुपारी चढ़ावे।  
 एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनामजयजिनेश्वरं, नंदायत  
 सितांशुकः ॥ यथाकुमुदतीनेता, नंदायतसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं  
 श्रीं अर्हं ऐं श्रीरूपनदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठस्वाहा ॥ १ ॥  
 उपाध्वमजितंजक्त्या, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्योधितंज्ञान, कंद  
 धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥  
 श्रीशंजवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंतारवनान्मुक्ति, समयं  
 तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंजवस्वामी० ॥ ३ ॥  
 येजिनंदनतेतीर्थ, राजपादसज्जाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा  
 दसज्जाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजि० ॥ ४ ॥ पूजि  
 तांहीदयीमुक्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनादः, कांतारा  
 जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रज  
 सुदृष्टीनां, जूरिशोभातपोदयाः ॥ इत्यात्तमांसिपूपेव, जूरिशोभात  
 पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रज० ॥ ६ ॥ सुपाश्वे  
 तत्श्रुतंश्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्पकोप  
 क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्थ० ॥ ७ ॥ जवांश्वद्र  
 प्रजेण, यैरजाजिसमुन्नतः ॥ यैरजाजिसमुन्नतः ॥ ८ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेत्वद्विभिंप्राप्य, प्रमाद्यंत  
 समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ ॐ  
 ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वाये, देवसंपन्न  
 केवलं ॥ अपिमुक्तिर्नवेत्तेपां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं  
 अर्हं ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूजाजां, परमोक्षगतिर्नवा  
 न् ॥ अनंतान्सत्वविश्रांतं, परमोक्षगतिर्नवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 अर्हं ऐं श्रीयांस० ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वर्णी, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर  
 स्वंचिरदंमोदं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वये, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ अपि  
 दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीवि  
 मल० ॥ १३ ॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र  
 योलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअनं  
 त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजि  
 न्दुर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥  
 ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनां देहि, सारंगविदधेधृतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक,  
 सारंगविदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥  
 कुंशुनायस्तुपंधानं, विधुतारोवृषादृतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि  
 धुतारोवृषादृतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीकुंशु० ॥ १७ ॥  
 येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोअरनायकुधीर्नव्या, व  
 नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअर० ॥ १८ ॥ नां  
 ह्रिपद्मसुनःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेजियतेमद्धे, प्रतिपन्न  
 सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमद्धिस्वामी० ॥ १९ ॥  
 श्रीसुव्रतजिनाधीश, मङ्गमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, मङ्ग  
 मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥  
 देव्योपित्वद्रुणोज्ञा, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्जक्त्या,  
 सहामांदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीनमि० ॥  
 ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्ष, शंमितादानवारणा ॥ श्रीने-  
 मेजनतांराध्य, शंमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं  
 ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकृत, महाहारतरंगिताः ॥  
 नाट्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री  
 पार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ वि  
 ब्रन्नमेषुनिस्सीमां, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं  
 ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठस्वाहाः ॥ २४ ॥ पीठे

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीठै बलवाकुल दंके दिग्पाली  
को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व ९ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक  
जया हे, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरष गुरुमुखसैं समझके जल  
जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एसैंही शक्तिवन्त  
श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवन्तके कल्याणक जो जो  
होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधी-  
श्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसैं लेकर नि-  
र्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महो-  
त्सव पूजन करणा चाहिये, इससैं धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें  
परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रोपूनमपर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हे॥

प्रथम चावलके पूंजसैं सेतुंजयपर्वतकों स्थापन करै ( तिस्र  
पर ) पट्टा रखके श्रीपुंरुरीक गणधर ( वा ) श्रीऋषभदेवस्वामीका  
विंव स्थापन करै, अकृत मोतियोंसैं पर्वतको बधावै, केसरचंदनसैं  
पर्वतको पूजै, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रद-  
क्षिणा देवे (पीठै) पूजन सरू करै (यथा) दश (१०) बीस (२०),  
तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुष्पदामेणलदर्श ॥ चउठठठअठम,  
दसमदुवालय कलाञ्च ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसैं पूजनका  
अधिकार लिखते हैं, एकाग्र चित्तसैं अष्टमंगलीक आगे रखके  
श्रुद्धोदकसैं मूलप्रतिमाको न्दवण करावै, पीठै श्रीसंघ खन्ना होके  
( १० ) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला  
चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेख इत्यादि,  
सब चीज उत्कृष्टसैं दस १ जघन्ये नारेख १ सुपारी १० नर फल

फूल यथासंज्ञव चढ़ावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध  
 गिरी गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके पांचे शंकरस्तवे देव वांदै, १० ख  
 मासमण देके ( श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः ) इस पदका  
 १० वेर नमस्कार करै. पीठै ( श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक आराधनार्थ करै  
 मि कान्तसगं अन्नबूसति० ) कहके १० लोगस्सका कान्तसग करे  
 (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उहव होय वखत कम रहे तब  
 एक लोगस्सका कान्तसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका  
 स्तवन कहे ) पीठै अनेक प्रकारका वाजित्र वजावै ॥ इति प्रथम  
 पूजा विधि ॥ अब इसी तरै ( वीस । तीस । चालीस । पच्चास ।  
 यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा ( इतनाहो विशेष हे ) दूसरी  
 पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०  
 की जगे ३० की विधि करै, चौथी पूजामें १० की जगे ४० की  
 विधि करै, पांचमी पूजामें सब विधि ५० की करै, तथा ( सिद्ध  
 क्षेत्र श्रीपुंमरीकाय नमः ) इस पदका दो हजार गुणनो करै, उ-  
 त्कृष्टसे पांचूं पूजामें जुदीर धजा चढ़ावै, जघन्यसे पांचूं पूजा किये  
 पीठै १ धजा चढ़ावै । यह तप गुरुके मुखसे लेके जघन्य १ वर-  
 स, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त  
 तपस्था करै, गुरुके मुखसे उपदेश सुनै, संपूर्ण तप हुयां पीठै  
 सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुनक्ती करै, सा-  
 हमीवह्वल करै ( यह ) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरुषभदेवस्वामी  
 के प्रथम गणधर श्रीपुंमरीकजी पांच कोमी साधू साथ अहय  
 सुखको प्राप्तजये. ( इसवास्ते ) जरत प्रथम चक्रवर्तीने चैत्री  
 पूनमको आराधन करके ( यह ) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि-  
 या, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसे इस जवमें अनेक सुख  
 संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, नर

आधिभ्याधि सोग संताप सब दूर होय, परन्तुमें देवादिक रुद्धि प्राप्त होय, कीलकर्म होणेंसे अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रपूनम स्तवन लिख्यते ॥

( ढाल ) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसानलै, पुंरुगिर रे गार्हस हूं सुज ज्ञानलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीज जो मुख दु वै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ ( उल्लाखो ) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण वै अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण ज्ञापियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरैराखियै ॥ १ ॥ ( चाल ) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरै चक्रवर्ति जरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंरुरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ ( उल्लाखो ) गुण जलो अनु क्रम आदि जिनवर पास संजन शिवपुरो, पुंरुरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुप्तै संचरी ॥ पण कोमि साथे विमलगिरिवर मुग ति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंरुरीक कहाव ए ॥ २ ॥ ( चाल ) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आरा ध्यां फल हुवे वणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै आनक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सहो ॥ ( उल्लाखो ) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म ध्यान मने धरै, बहु ज्ञाव ज्ञतै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी कौ ॥ ज्ञावना ज्ञावै तेण दिवसै पंचकोमि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ ( चाल ) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे आवक निरती सरदही ॥ चउथ ठेठे रे अठम दसन डुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम एमुज मन वसै ॥ ( उल्लाखो ) मन वसै पूजकपूरथूपै मासखमण फले वली, सामन्न

धूपै परकनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जैम  
 गुरुमुख सुणीअवै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंकी सुणो जवि  
 यण सादरा ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तंडुलरासि विमलगिरि आपी, तसु  
 ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंरुकीकनी  
 आपी निवेरो ॥ ५ ॥ सेतुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल  
 दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा  
 वौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरै करि आठ ॥  
 प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥  
 ऊजा अई नवकार गुणंता, दसर जैती तिलक करंता ॥ माला  
 पुष्प पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप उरकेवो ॥ ८ ॥ ( ढाल )  
 शक्रस्तव पांचे देव वांदै, जघन्यना वंदण पाप बैदे ॥ दसे नमस्का  
 र करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेइ सेती ॥ ९ ॥ आराधिया  
 काजे कानसग, जिणे किये जांजै कर्मवग ॥ लोगस्तज्जोय दसे  
 चखाणु, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज  
 एह, इसी परै बीज। ज्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै,  
 एक चित्त सूधै शुज पुन्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करी  
 जै, एकेक पूठै अथवा गिणिजै ॥ महुचरे आरति मंगलेवो, पठा  
 प्रजु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ ( कलश ) इम करिय पूजा यथा  
 योगै संघपूजा आदरो, साहमोवहल करो जविका जवसमुइ ल।  
 लावरो ॥ संपदा सोहग तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहू लहै, आअमर  
 माणिक सीस सुपरै साधुकोरति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त० ॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विवि लिख्यतै ॥

स्तवन पहली वरु स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुज  
 धमी शुजदिन गुरुके पास नंदीश्वरतपग्रहण करे. नंदीश्वरदीपके चारु  
 दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेकार्ये अमावस २ ( ५२ ) वावन उपवास



करै, जिस दिन जो मादाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, सो लिखते हैं ॥ १ श्रीरुषज्जाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषैणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) च्यार नामकूं ४ वेर ऊलटा, ४ वेर सुलटा गिणो ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेंसें एक उली होय, ४ उली करणेंसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै, नंदीश्वरद्वीपका मंमल वणावै, पूजा करावे, इत्यादि महोन्नवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीवन्नल करै, मंमलकी विधि एकेक दीसीमें (१३) तेरे २ पंहामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसां में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमें १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनविंव थापे, इनकी पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे, क्रमसें एकेक काव्य पट्टके जल चंदनादि अष्ट द्रव्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैशाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिती वैशाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे, इस दिन श्रीरुषज्जदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीठें वारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती जया, उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीवारे कोमि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान २ ऐसी उदघोषणा ४, देवडुंडुनी वाजित्र ५, ऐसे पांच द्रव्य प्रगट किये, श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालम नई. इस दानके प्रज्ञावसे श्रेयांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त जया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणसे वस्त्र आभूषण पहरेके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पोछे गुरुके मुखसे एकासणादिकेक पञ्चस्काण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटुंब समेत जीमें, नर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वको जो ज्ञव्यजीव सेवन करते रहेंगे उनोका तपतेज हमेसां बढ़ता रहैगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ठ कृष्णत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उचम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें ढांटे. इस शांतिपूजाके कराणसे मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कर्त्री श्रीसंघमें प्राप्त न होय ( अथवा ) किसी आवकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. ( इससे ) आधि व्याधि अहादिककी पीमा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, ज्ञव्याश्चतुर्मासकमन्दनानि ॥ १ ॥ ( अर्थ ) ज्ञो ज्ञा एतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंथलानि अलंकारभूतानि विद्यन्ते ॥ अहो जग्य प्राणी जीवो यह  
सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंथल हे, अ  
र्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव  
सामायक पम्किमणा पोसा करै, कोइ जगवानके मंदिरमें नाना-  
प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पालै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ  
नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपनी शक्तिसे वण  
आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईजी प्रकारसे धर्मका  
उद्योत करणा चाहिये. जिससे सब श्रोसंधने कल्याणमाला प्रगट  
होय, नर चोमासी ( १४ ) के दिन सब मंदिरमें दर्शन करणों  
जाणा, पांच शक्रस्तवसे देववाँदै, पीठै गुरुके पास जाके चोमासे  
पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन  
लेवै, सांजकूं चोमासी पम्किमणा करे. इस मुजब काती चोमासे  
फागुण चोमासे कौंजी सेवन करै ॥ इति चतुर्मासपर्वधिकार,

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ जग्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे १  
की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चौमासेपर्वका उद्योत करते  
हैं, इस माफक सब जगे तरे २ की पूजा कराणी चाहिये. नर देस  
देसमें श्रावणमास इस महीनेमें केइ २ तरेकी तपस्यायें करती हे.  
जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसे  
उद्धरण करके संक्षेपविधिसे इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ वुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमह १, एकासण १, नीवी १, आंखिल १, उपवास १,  
( यह १ नली ) इस तरे पांच नली करै. तपोदिन २५. ऊजमणें  
२५ लाडू चढावै ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १; आंखिल १, उपवास १, इस तरे

उत्ती च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लहू चढावै ॥ इति  
कषायजयतपः ॥ ३ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उत्ती ३ करै. तपो  
दिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३. ऊजमणें ज्ञा  
नपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें  
स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें  
गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अहम १, उठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलवाणो १, इति  
१, नीवी १, आंबिल १, यह एक उत्ती. इसी तरे उत्ती आठ करै.  
तपोदिन ८८. ऊजमणें रूपेका वृद्ध, सोनेका कुहाना करायके ग्यान  
खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूत्रतपः ॥ ७ ॥

जाइवा वदि चउथलें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकास  
णा अथवा बिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकारें  
कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे जरै, संवत्तरिके  
दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव  
आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अक्षयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा  
नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै ( श्रीवासुपूज्यस्वामी  
सर्वज्ञायनमः ) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्त  
वन सुणै. ( सो स्तवन आगे लिखेंगे ) ऊजमणें ज्ञानके उपकरणसँ  
ज्ञानजक्ति गुरुजक्ति करै. इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुद्धिपद्धके पांचमके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करै, अंबिकादेवीकूं वेस चढ़ावै ॥ इति अंबिकातपः १

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त  
उपवास करै, इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दिन  
१६. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमणें  
सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौ-  
भाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पनिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसैं पूनम पर्यंत (१५) उप-  
वास करै, जो तिथि झूले सो तिथि नर करै, ऊजमणें एकसो बीस  
लक्ष मंदिर चढ़ावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपत्तितपः ॥ १४ ॥

वरसातका चार मास नर पोष, चैत्र, चढ़ षट मास टा-  
लके ठोटी पांचमतप सरू करै, अंधारी नजवाली पांचम मास ५  
लग एकासणादि तप करै, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति ठोटी  
पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै, उपवास  
के दिन देव वांइणादिक क्रिया करै, ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोप-  
करण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढ़ावै, सत्तरजेदी पूजा  
करावै, साहमी बखल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पनिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाश-  
णादि तप करै, अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै, इस-  
तरै वरस १ तप करै, ऊजमणें चावलसैं असोगवृक्ष लिखके पूजा  
करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण  
वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीअष्ट

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोपवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंने लोकनाल वणाके सांते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धक्षेत्र ( उसकों ) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इस तरे आठे वरसे आठ पावनी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय, ऊजमणें अष्टापदपूजा करावै, पकवान फल सर्व चौबीस चढावै ॥ इति अष्टापदपावनीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै, ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लक्ष्मि देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा बीस एकासणा करै, ऊजमणें अखंमिति धी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंमितिदशमीतपः ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, जीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै, ऊजमणें ११ अंशकी पूजा करै ॥ इति श्रीश्रृंगारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै ( प्रथम तेले ) सिखरणसे पारणा ( दूसरे तेले ) सारेका पारणा ( तीसरे तेले ) लापशीका पारणा ( चौथे तेले ) लक्ष्मसे पारणा ( पांचमें तेले ) खीरसे पारणा, पारणे प्रथम साधुकों वहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १,  
एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावै तो  
सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाज होय ऊगमेमें जीत होय॥  
इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥  
उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १, उपवास  
१, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १.

एवं दिन १० पूनमसें सुरू करै. पारणै साधु पण्डितानै, ग्यानपूजा  
करै ॥ इति दालिङ्हरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंडिये उपवास १, बेइंडिये ठठ १, तेंडिये अठम १,  
चौरेंडिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, ठक्कायें चतुर्दसम १, तप करै.  
ऊजमणें सुखनीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति ठक्कायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

ठठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अठम पांच करै ॥ इति पुत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै॥ इति जर्तारसुखतपः ॥ ३४ ॥

॥ नीवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६ ॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणकी आवक  
एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोके उपगारार्थ शास्त्रोंसे उद्घा  
र करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा  
सादमीवचल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुभकैत्रोमें अपना धन

खेरच करै, धर्मका उद्योत करै ॥ इस तपस्याके प्रज्ञावसें इस जन्ममें संसारसंबंधी दुःखदालिङ्ग दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परजन्ममें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय. ( किंबहुना ) इति वृत्त कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ ज्ञात्वा महिमेभ्यो मिति ज्ञात्वा सुद ४ तथा केन मतकी अपेक्षासे ५ तिथिर्को संवत्सरी नामसे पर्व प्रसिद्ध है ( प्रथम इस संवत्सरी पर्वकी महिमा कहते हैं ) जैसे जगत्त्रमें अनेक मंत्र हैं पर नवकार समाप्त कोई मंत्र नहीं १, तीर्थोंमें से श्रृंगजय समान कोई तीर्थ नहीं २, पंचदानमें अन्नयदान सुपात्रदान समान कोई दान नहीं ३, गुणमांहे विभवगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष नियम ६, तपमें उपशम तप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा जल ९, अलंकारमांहे चूनामणी १०, ज्योतिषोंमें चंद्रमा ११, तेजोमांहे सूर्य १२, गजमें एरावण १३, बैत्यमांहे रावण १४, तुलसीमें पंचवट्पत्रकलशोर १५, वृक्षफलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे नंदन १७, काष्ठमांहे चंदन १८, साहसिकमें विक्रमादित्य १९, न्यायवंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२, शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, वाजित्रमें जंघा २६, स्त्रीमांहे रंजा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता में कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक ही चीज उत्तम होती है. इस तरे सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संवत्सरी ( दूसरा नाम ) श्रीपर्युषण पर्वको जगवंत श्रीमाहावीर स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अब श्रीपर्युषणपर्वके आणसें प्रथम श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हैं ॥ संवत्सरी प्रतिक्रमण



करै १, लोच करावै २, तैलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें जगवंत  
 की जावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावै ५. यह पांच कारण  
 के वास्ते श्रीतीर्थकर गणधरोनें पर्युषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब  
 शुद्धश्रावक संवहरी पर्व आराधन करणोकूं आठ दिन अठाइ महो  
 नव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी  
 जक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागर  
 ण करावै, प्रजातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा  
 योग्य सत्कार सन्मान करै, पीठै पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र  
 आभूषण पहरेकें सुगट उत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रम  
 हाराजका रूप बनाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मं  
 गलीकरचित्त आलमें पुस्तक धरके अपने दोनुं हाथमें आल धरके दोनुं  
 तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आभूषण पहरेके चमर ढालै, अनेक प्रकारके वा  
 जित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन  
 करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिण  
 खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके आगे रखै. श्रीसं  
 घके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपमह  
 वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोवी जमजूजा इत्या  
 दिक सबका आरंज गोसावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाम सुपारी  
 नाखेरादिक की प्रजावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिसें  
 पूजा करै, चौदसके दिन संवहरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे हो  
 कर सर्व मंदिर दरसन करणोको जावै ५, सचित्तका परिहार करै  
 ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउठ, उठ, अठमादिक तप करै ८, अपने ९  
 वित्तके अनुसार जन्मकल्याणकका नव करै १०, अठपहरी पोसा  
 करै १०, संवहरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ  
 सें खमावै १२, पारणोके दिन पोसह णिकपणोवाले साधमीजाइ,

योंकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संवहरी दान देवै, साहमी  
 वडल करै १४. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसे  
 आराधन करेसे आठ जवसे मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता है ( नर )  
 केइयक जव्यजीव अत्यंत शुभ जाव धरतेजये अठमादि तप कर  
 के युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते है नर सुणनेवाले प्रमाद निडा वि  
 कथा ठोरके अठमादि तप करके एक चित्तसे शुद्धजाव रखके इक  
 बीस बेर सुणते है, सो जव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे जव सि  
 द्विस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोत्सव जो जव्य  
 जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रजावीर है, अपनी लक्ष्मीसे  
 धर्मका उद्योत करते है. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते है नर  
 नमस्कार करते है ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह  
 कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसे उद्हरण कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा  
 अध्यायन है. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीजद्रवाहु  
 स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंत विषय है. जैसे  
 सर्व नदीके बालू के कण होय उससे जी एक सूत्रके अनंत विषय है.  
 इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हज्जार जीज करके कहे  
 तोजी महात्मका एक अंस जी कह सकता नही. ऐसा इस पर्वका  
 महात्म जाण जो जव्यजीव शुद्ध जावसे सेवन करेंगे सो अनेक तरे  
 से रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्य कों प्राप्त होंगे. नर परजवमें देवादिक  
 रुद्धि पावके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मित्ती आसोज सुदि ७ से लेके आसो  
 ज सुदि १५ तक नवपदजी की नली तथा अष्टापदजीकी नली  
 विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहजी लिखो है उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मित्ती कार्तिक वदि अमावस है सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कवसें जया  
 सो लिखते है. चौबीसमें तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु  
 साध्वी साथ विचरते थेके अंतकी चोमाली मध्यमपावापुरीमें आ-  
 यके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व बात जग्यजीवोंके सामने निरु-  
 पण किया, फेर अपना अंत समय जाए के हस्तिपालराजाके शु-  
 क्कशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देख  
 के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं जेजा. पि  
 ठामी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंर देसना देते  
 जये बहुतर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि  
 ठली दो घन्टी रात रह्योसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त जये. जिस समय  
 जगवंतका निर्वाणकल्याणक जया उस समय चोसठ इंद्र देवताग  
 णके आणे जाणेसें वना उद्योत जया, नर जो राजा पोपथमें बैठे  
 जयेथे सो जावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके इव्य-  
 उद्योत किया. एकमके प्रज्ञात समें देवतोका आणा जाणा नर व  
 चन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न जया, दूजके दिन  
 सुदर्शना बहिन अपने जार्ई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमा  
 या, शोक दूर कराया जिससें जार्ईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह  
 दीवाली पर्व वना उत्तम है. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना  
 करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥  
 श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः  
 ॥ इस एक२ पदको १००० गुणानो करै, उपवास करै, रात्रीजागर  
 ण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाण  
 कल्याणकका अधिकार सुणै । गौतमरास सुणै. इत्यादिक उदार  
 चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उन्नव करणा चाहियै ॥ दिवा  
 लीका स्तवन पूर्वे लिखा है सो पढ़ै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व जन्मजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करना चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ भी नहीं है. सर्व तत्त्वमें ज्ञानके समान कोई तत्त्व नहीं. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोई उपाय नहीं. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, और कोढ़ादिकरोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्म के क्षय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जैसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साधिया करै, फल फूल प्रमुख चढ़ावै, पांच बत्ती का दीपक चढ़ावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढेके वासुदेव कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढ़ावै तथा पूजा विटांगणादि चढ़ावै. ( ज्ञानपूजा लिखते है ) नमंतिसाभंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविदेयपूषिं ॥ तृतीयचित्तमणिदामएहिं, मंदारपुष्पसवेहिनाणं ॥ १ ॥ तद्देवसद्वामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुष्पेहिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सदाज्जायज्जवस्कथाय ॥२॥ यह गाथा पढेके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीठे ज्ञानपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के । इरियावही पम्किमें । लोगस्स कहे । वेठके । मुंहपत्ती पम्किहे । अणूजाणह मेमिजग्गहं (इत्यादिक) दो वांदणा देवै, पीठे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञास ज्ञानु

निरमल सुखकारण, सम्बगदर्शन पुष्टहेतु जवजलनिधि तारण ॥ सं  
 यमतप आनंदकंद अज्ञाण निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापि  
 त जिन वारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म पणति पन्निबोद्धण,  
 साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोद्धण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर  
 मिथ्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रज्जुता परगासण ॥  
 ॥ २ ॥ मति श्रुति अबधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, जेद प-  
 चास कायोपसमिक एक कायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहां  
 डुग परतह दीसत, सकल प्रतह प्रकाश ज्ञास भुव केवल अपर  
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञाशै, बाहिर  
 अंग प्रधान खंघ गणवर सुप्रकाशै ॥ शाखाश्रीनिर्युक्ति ज्ञाप्य पन्नि  
 शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचां  
 गो सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदो अनुयोगद्वार शाख मा-  
 नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुजव उपगारी, अज्यासो आग-  
 मं अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत  
 अवाधै, देवचंड आणा सहित नयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोद्दा  
 मणो सकल मोक्ष सुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमा  
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । एमो  
 त्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत्तु सिद्धा० । कह-  
 के ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवी  
 यराय० कहै, वंइणव० अन्नबू० कहके एक नवकारका काजसग  
 करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिख्यते ॥ देविंदवंधियपएहिंपरुवि  
 चाणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपं  
 चमीए, पूयातवोगुणरयाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके  
 ( ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काजसगं ) नस्सुत्तरी० अन्नबू०  
 कहके ? लोगस्सका काजसग करै, ( पारके ) बोधागाधं० ( इत्या-

दिगाथापढके ) पीठै ॥ आज्ञाविबोदियनाणें । सुयनाणंचेवउहिना  
 णंच ॥ तहमणपज्जवनाणें । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा  
 कहके । इच्छामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा  
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,  
 समस्त लोकालोकजास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरै पांच  
 नमस्कार करै, धिरता होय तो ( ५१ ) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार  
 करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै  
 ॥ पीठै ( जे ह्रीं एमोमाणस्स ) इस पदका २००० गुणना करै. कम  
 धिरता होय तो इग्यारे अंगकी सिझायों पढै वा सुणें, सो लिखते हे॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीलानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ  
 चरांग रे ॥ सुगणनरा ॥ वीर जिनंदे ज्ञापियो रे लाल, नववाई जाल  
 नवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जानं वारंवार रे ॥ सु० ॥  
 विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०  
 ब० ॥ १ ॥ सुयखंध दोष बै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०  
 ॥ उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगोस रे ॥ सु० ब० ३ ॥  
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अद्वार हज्जार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप  
 दने ठेहमे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० ब० ४ ॥ गमा अनंता  
 जेहमां रे, बलिलि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परितो बै इहां  
 रे लाल, आवर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबद्ध निकाचित  
 सासता रे, जिनप्रणीत ए ज्ञाय रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम नलसे  
 रे लाल, प्रगटे सहज स्वज्ञाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण आवक  
 वारू आविका रे, अंगे धरिय नल्लास रे ॥ सु० ॥ विधिपूर्वक तुमे सां  
 जखो रे लाल, गीनारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिद्धांत  
 सहिन्नानिलो रे, ऊतारे नव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० व० ८ ॥ इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांजलो, मनोहर  
श्रीसुगमांग ॥ मोरासाजन ॥ त्रिणसे तेसठ पाखंमीतणो, मत खंज्यो  
धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे  
हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी सादर, मानु सुधा रे  
समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग ठे जेहनो, ए तो सूत्र  
गंजीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुत अरथ जाणे सहू, कीर नीर धनु तीर ॥  
मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंध दोय ठे, वलि अध्ययन तेवीस  
॥ मो० ॥ उदेसा समुदेसा जिहां जला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो०  
मी० ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण जरया, पद ठसीस हजार ॥ मो० ॥  
संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहगो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ ग  
मा अनंता पर्याय बली, जेद अनंत जिय मांहि ॥ मो० ॥ गुण  
अनंत त्रस परित्त कह्या, आवर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥  
निबद्ध निकाचित्त जे सासय कमा, जिम पणत्ता रे जाव ॥ मो० ॥  
जापी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मी०  
७ ॥ करिये जगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चै लहिये रे मुक्ति ॥  
मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥  
मो० मी० ८ ॥ ८ ॥ इति सूयगमांग सिद्धाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ढाणांगसूत्रसिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी ॥ ए चाल ॥ बीजो अंग  
जलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीढाणांग ॥ मोरो मन मगन अयो ॥  
हारे देखीर जाव, हारि जीवाजीव स्वजाव ॥ मो० ॥ मवल जगत  
करी ठाजतो रे जि०, जीवाजिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह  
अंग मुऊ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंव ॥ मो० ॥

गुहिर ज्ञाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २  
 ॥ कूट शैल सिखरी शिला रे जि०, काननमें बलि कुंरु ॥ मो० ॥  
 गह्वर आगर इह नदी रे जि०, जेहमें अठे रे नंदन ॥ मो० ॥ ३ ॥  
 दस ठाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त  
 जेहनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सि  
 लोक निजुत्तुं रे जि०, संगहणी पमिवित्त ॥ मो० ॥ ए सहु सं-  
 ख्यातां जिहां रे जि०, सुशतां नलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय  
 खंध इक राजतोर रे जि०, दश अध्ययन नशर ॥ मो० ॥ नदेशादिक  
 वीस ठै रे जि०, पद बहुतर हज्जार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशा  
 सन तणो रे जि०, सुणे सिद्धंत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंड कहै  
 ते हुवे रे जि०, परमारधरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० गा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगमूत्र सिज्ञाय ॥

॥ ढाल ॥ थारा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे बीजली ॥ एचाला ॥  
 चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा  
 नृपांग करो सोजा वणी, हो लाल करो सो० ॥ अरध मागधी ज्ञावा  
 साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित ज्ञाव कुसुम परि-  
 मल व्यापा घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव  
 समासयी, हो लाल जी०, लहीयै एहथी ज्ञाव विरोध कांड नथी,  
 हो लाल वि० ॥ ज्ञांगा तीन स्व समयादिकना जालीये, हो लाल  
 यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥  
 एकअकी ठै सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्र  
 माणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकत  
 णी संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि ठै एहना  
 सही, हो लाल ठै० ॥ ३ ॥ सुयखंड अध्ययन नदेशादिके जला, हो  
 लाल न०, संख्यायें एक एरु प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद



एक लाख चौमाल सहस तेजतरा, हो० स०, पदनें अग्रउदय सं-  
ख्याता अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ ज्ञाप्य चूर्ण निर्युक्ती करी सोहे सदा,  
हो० करी०, सुणतां जेह गंजीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥  
जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर  
कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं  
माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिण्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो०  
सू० ॥ जिम मालती लहे जूंग करीनेन विरहे, हो० क०, इश्वर  
शिर सुरगंग तजी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-  
अंतणो जुगते वनो, हो० त०, साकर सेलमी डाख थकी पिण  
मीठनो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो,  
वि०, एहना सुणने ज्ञाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंथोमानी ॥ पंचम अंग जगवती जाणिये रे, जिहा जिन  
वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकळ्या रे, मानुं पर  
तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगमी रे, जेहनी  
वै उदाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांदिता  
अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंथ एक अति  
जलो रे, एकलो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हज्जार उद्देसा जेह  
ना रे, जिहां किण प्रश्न ठत्तीस हज्जार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय  
लाख अरथे जरया रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालो  
क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥  
करिये पूजा अने परजावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥  
सुणिये सूत्र जगवती रागसूं रे, तो होय जवसागरनो त्याग रे ॥ पं०  
५ ॥ गोतम नामे इय चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम  
रे ॥ कीजे साधु तथा साहमीतणी रे, जगति युगति मन आणो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विधसुं ए सूत्र आराधतां रे, इण जव  
सीजे वंठित काज रे ॥ परजव विनयचंड कहे ते लहे रे, मोहन  
सुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७ ॥ इति श्रीजगवतीसूत्र सिद्धाय सं० ॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लाग़ा राजाजीरै मालियै ॥ ए देशी ॥  
ठठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना ठै अरथ अनेक नइं  
रु हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातनी जी ॥ श्रवणे  
सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंरु हो ॥  
म्हा० १ ॥ जंबुद्वीवपन्नत्ती उपांग ठै जेहनो जी, इण मांहे जिन  
पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शातिरस अ  
नुजवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर न  
द्यान चैत्य वनखंरु सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने  
तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह  
लोक परलोक रुद्धि विशेष मुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परि  
त्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥  
म्हा० ॥ संलेहण पञ्चस्काण पादपोषगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ  
कुल उत्पत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलान्न वलि तंत ते अंतक  
त्या कही जी, धर्मकथाना दोय ठै खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना  
नगणीस अध्ययन ते आज ठै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबं  
ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ नंठकोमि तिहां सकल कथानक ज्ञापिया जी,  
ज्ञाप्या वलि नगणीस नदेस हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हज़ार जला  
पद एहना जी, एह थकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥  
विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल  
होय हो ॥ म्हा० ॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंडने जी, सो मांहे  
मिन्नै जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि० ॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विठियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांजलो, उपासकदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्राणी, एतो जव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुखबंध एक वै, अध्ययन उद्देस विचार रे ॥ दस संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक आवकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वांचतां, गीतारथ पामे रीऊ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस आवक तो इहां ज्ञापिया, पिण सूत्र जणयो नही कोय रे ॥ ते मोटे शुद्ध आवक जणी, एक अरथ नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपियै, निस्संक पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंड कहै स्युं अयो, जो कुमती करस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिंहायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आवठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड के वली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आवठ ॥ १ ॥ कर्म के विन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां ज्ञासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आवठ ॥ २ ॥ सकल निक्षेप नय जंगथी जी, अंगना जाव अजंग ॥ सहिज सुख रंगनी तळिका जी, कळिका जास उवाग ॥ आवठ ॥ ३ ॥ एक सुखबंध इण अंगनो जी, वर्ग वै आवठ अजिराम ॥ आवठ उद्देस ठे वली जी, संख्याता सहस/पद ठाम ॥ आवठ ॥ ४ ॥ आवठम

१ पाठमें जी, एहवोअ ठे रे मीठास ॥ सरस अनुजव रस  
 १ जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे  
 जी, निरविषयी सुण्यां आय, जिम माहा विष विषधरतणो  
 नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती  
 जा, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंड इण सुत्रना जी,  
 तुरत लहै अजिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतर्गमदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग  
 अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुजने आई हो ॥ श्रायक सूत्र सुणो  
 ॥ सूत्र सृणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥  
 आ० १ ॥ जसु कळयाणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥  
 आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥  
 आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिमर अंतरगति जीजै  
 हो ॥ आ० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥  
 ॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया  
 हो ॥ आ० ॥ नगरादिक ज्ञाव वखाण्या, ते तो ठै अंगे आया  
 हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू  
 रे ॥ आ० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥  
 आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥  
 आ० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगानं हो ॥ आ० ॥  
 ६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥  
 आ० ॥ कवि विनयचंड कहे साचो, श्रुत रंगै सहुको राचो हो ॥  
 आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिज्ञायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रणव्याकरण सिज्ञाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम प्रधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रणवाकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि  
दानंद फल पामे ॥ आवो० गुणना जाग तुमने सूत्र सुणाउं ॥  
पुष्पकली ज्युं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग  
पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगु  
ष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रणवादिक अति रूमा ॥ ते वै अष्टोत्तर सत्  
ए तो, सूत्र मध्य मणिचूमा ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां  
आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लवधि जेद  
सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुखबंध एक वै दसमे अंगै, पणयालीस  
अङ्गयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा  
॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र मुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥  
माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥  
सूत्र मांहि तो मारग दोयवै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै  
ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल कमखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो,  
तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूलि  
का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुभ किंपाक सम  
डुकृतफल भोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल भो  
गवी स्वर्गमांजे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० २ ॥ दोयश्रुत  
खंधने वीश अध्ययन बलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस  
संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल ब्रमर चित्त गुंजै ॥  
सु० ३ ॥ सरस चंपकलता सुरजि सहने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि  
माटे ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-  
चल खाटै ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेउं कारणअवै, डुकृतने  
सुकृत जोवो विचारी ॥ डुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारियै गुण संजारी ॥ सु० ५ ॥ म करं रे म कर निंद्या नि-  
गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधै ॥ नारकी प्रकृत तज  
सहज संतोष जज, लाग श्रुत सांजली धरमबंधै ॥ सु० ६ ॥ सुख  
ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागै ॥ चिरजयो  
वीर शासन जिहांसूत्रा, कवि विनयचंद्रगुण ज्योति जगै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में शुण्या, सहेली ए ॥  
आज अया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥  
जाव्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-  
णी ॥ पसरी अंग इग्यारनी, स० ॥ मुऊ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू  
ते हरखे करी, स० ॥ अनुजव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी  
आंजलै, स० ॥ कुश बूढा कुण बाल कि ॥ तो ते फल लहे फू  
स० ॥ स्वादे अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी  
स० ॥ अहम्मदावाद मजार कि ॥ जास करी ए अंगनी,  
॥ वरत्या जय२कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,  
॥ वरषारुतु नजजास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥  
अई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,  
॥ श्रीजिनचंद्र सूरीस कि ॥ खरतरगहना राजिया, स० ॥  
राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रहखनिधान जो, स० ॥  
तिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग  
र सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ रांग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप  
सुगुरु वताई, पांचु जेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन  
केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूस दंसनकी,

करमें धन ल करी ॥ सक्रिय संजम करतामुं मिल, सिद्धि रसान  
धरी ॥ मे० २॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सरलानन्द दरी,  
बाल कहै अब विसरत नांही, पल दिन एक घरी ॥ मे० ३॥ इति पद ॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो  
॥ आंकणो ॥ अरण्ये श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रे श्रीगणेशरगुरु  
ज्ञाण्यो; तडुजयथी जे मुनिवर आख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग  
जाव सकल जाणे, नय एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार  
ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग वै अति रूपा, ठ छेद  
पयना नहि कूना, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूना ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां  
निरयुक्ती सूत्रे संगी, बलि ज्ञाप्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे  
कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै,  
संवेगपखी बलि सरदहियै, ए त्रिण विन जवमारग कहियै ॥ श्रु०  
५ ॥ जेहनी अनुपेदा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै,  
आराध्यां निज अनुजव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे,  
गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते कृपाकल्याण सदा पावै ॥  
श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महोनेमें निति कार्तिक सुदि १४ के दिन सब  
मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक  
धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजव  
जाणना ॥ इति कार्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सैं सेत्रंजरास सुणें, निवी वा,  
एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पढिकमणा करै, देववंद-

नादि करै, ( नै हँ ) श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः ॥) इस मंत्रका जाप करे १०८ बेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी यात्रा करणेंको जावै, कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अठाई महोत्सव करै, विस्तारसैं देववंदनादिक विधि करै, ( ५१ ) बेर सेत्रुजरास सुखे ( नै हँ ) श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः ) इस पदसैं २१ जेती देवै. ( कदास ) सिद्धगिरी जाणेंकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंठा होय उहां महोत्सव संयुक्त दर्शन करणेंको जावै, पूजादिक सब विधि करै, उन्नत कर के वा चउत्पन्नत करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुभक्ति करै, सा हमीवह्न करे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेंसैं सर्व अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्रावण वारखिछ प्रमुख दस कोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त जए, जिससैं इस दिन जो धर्मकृत्य करणेंमें आता हे उसका नि-  
 श्रे दशकोमि गुणा फल होता है ॥ इस नरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुतरा तीर्थ नही. संवत १९३२ की सालमें मेरा चतु-  
 मास मुंवाईमें था. उहांसैं कार्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंवोके दरसन करके गिणती देखणेंमें आई सो बारे हज्जार तीनसैं अठ्ठावनकी संख्या मिली, नर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अन-  
 न्त साधु अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत ज व्यी जीव होंगें सो शुद्धनावसैं इस तीर्थको सेवेंगें, जो सेवते हे सो धन्य हे. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तीर्थआसातनाकारी देवद्रव्यजदक जतीसाधु जो संवेगपदी गीतार्थोंके छेपी एसी वक वृत्तिसैं जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसैं अन्य देसांतरी जात्रार्थी जव्यजीवोंका धन उगणेंकी वृत्तिसैं तीर्थ सेवन अनन्त सं-  
 सारका जवन्नरण समजके वर्जना, एसैं डुरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपञ्च-



खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगन्ती न  
करणा. शुद्धजावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी  
॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं  
हे, जो रे बहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते  
दि० १ ॥ अदन्तुत जुंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आ  
दिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ जोली जगत जली परे हे, जो रे ब०  
॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० १ ॥ नाही निरमल नीरसुं  
हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर जरिय कचो-  
लमी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रुमी  
रायणठांहमी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां  
जगनाथ समोसरया हे, जो० ॥ पूरब निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥  
इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥  
चोमासे रह्या होय जिनवरा हे, जो रे० ॥ अजित जिनेसर शांती  
॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिखा हे, जो रे० ॥ अदन्तुत  
उलकाजोल, मो० ॥ सिद्धवरु सेत्रुंजैनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये  
नित रंगरोल ॥ मो० ६ ॥ इण मुंगर दीठा थकां हे, जो रे० ॥  
ऊपजै परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर ठांहमी हे, जो रे० ॥ कहे  
नित जिणचंद ॥ मो० ते० ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचिंझप्रभु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो से-  
त्रुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापफल दूरै टलै रे, तूटे  
करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरब निनाणू समोसरया रे, प्रथम  
जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसरया

तेवीस रे ॥ नमो० १ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए  
 हिज ठोम रे । काल अनंत वलि सीऊस्यै रे, साधू अनंती कोमि  
 रे ॥ नमो० २ ॥ अनंत कड्याणक जूमिका रे, महिमावंत महंत  
 रे ॥ सास्वतो तीरथ ए सहो रे, अतिशय जास अनंत रे ॥ नमो०  
 ४ ॥ कोमि जवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे ॥ से-  
 त्रुंजै सनमुख चालतां रे, पगर ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥  
 धन दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्युं सेत्रुंजे केरी वाट रे ॥ ठहरी  
 यथाविध पालस्युं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पगर  
 जव अवतिषणा रे ॥ पगर याचकदान रे ॥ प्रेम जगत साहमीतणी  
 रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-  
 दती मंगलसाल रे ॥ मणि मोतीयमे वधावस्युं रे, रजत सोवन जर  
 थाल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे, करस्युं पाव-  
 न मोरी काय रे, जगति जुगति जुहारस्युं रे, नाजिनंदन जिनराय  
 रे ॥ नमो० ९ ॥ द्रव्य जाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे ॥  
 जावै जावना जावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥  
 रत्नत्रयी जमती जली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ जवजव त्रमण  
 निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन  
 मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो  
 रे, उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नाथ धूलेवा सुपसा-  
 यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो-  
 यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धाचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीमानी ॥ अंग ऊमाहों मोने अतिघणो, जेटवा  
 विमलगिरिंद रे पंथीमा ॥ नाजिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु-  
 देवानंद रे पंथीमा ॥ वहिलुं बोले रे पंथी म्हारा वहिलुं बोले रे ॥

सेतुंजो ठे कितनी दूर रे पंथीमा ॥ वडि० १ ॥ पालीताणो नगर  
 तोहामणो, स्त्री ललतासरनी पाल रे पंथीमा ॥ जिहां अंबला रे  
 वरुला घणा, फुक रही चंपलारी माल रे पंथीमा ॥ वडि० २ ॥  
 धन ते पंखी पारेवमा, सेतुंज वसिया जे मोर रे पंथीमा ॥ कुमा  
 हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते दोर रे पंथीमा ॥ वडि० ३ ॥  
 ३ ॥ सेतुंज वाटे जी चालतां, जीणीर कुमे खेह रे पंथीमा ॥  
 मैला आवे संयना कापमा, निरमल आवै देह रे पंथीमा ॥ वडि०  
 ४ ॥ उंचो देहरो आदिनायनो, आगल चोक विसाल रे पंथीमा ॥  
 जिहां मिलर घणा मानवी, गावै प्रभुनुण माल रे पंथीमा ॥ वडि०  
 ५ ॥ बल केंसर जर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीमा ॥  
 फूवाइंदो सोइ प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अजंग रे पंथी-  
 मा ॥ वडि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माइंग, जयजै पवन आनंद रे  
 पंथीमा ॥ मोने जेटणरो जी कोन ठै, प्रेम वणे जिनचंद रे पंथी-  
 मा ॥ वडि० ७ ॥ इति श्रीतिळाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरव निना  
 णूं वार सेतुंज गिर, रूपन जिनंद समोसगियै, सेतुंजगिर यात्रा०॥  
 कोनिसहस्र जव पातक तूटै, सेतुंज लामे मग जरये ॥ विम०  
 जात्रा० १ ॥ चोथ ठह दोय अढम नपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥  
 विम० जा० ॥ पूंरुकीक पद जपियै हरपै, अव्यवसाय शुभ धरियै ॥  
 वि० जा० २ ॥ पापी अजब नीजर न देखै, हिलक पिला जयरि  
 यै ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूधकी परह-  
 रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचिन परिहारी, गुरु साथे  
 पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पम्किमणा दोय विधमुं कीजै, पापपुन-  
 ख विप हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकाल ए तीरय मोटो, प्रवइण

सम जवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवता, पदम कहै  
जव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ जाव धर धन्य दिन आज सफजो गिणयो,  
आज में सजन आनंदपायो ॥ जा० ॥ हर्ष धर निजर जर निम-  
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ जा०  
॥ १ ॥ पगर उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोष चरण जिहां  
चलत आयो ॥ जा० ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज  
धन दीह में सुजस गायो ॥ जा० २ ॥ डर डरगते टरो जात्र  
विधसुं करी, पुन्यजंघार पोते जरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सु-  
रगिरसिखर, रुषज जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिति मिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-  
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन मेढसें कल्याणक जये हैं सो  
लिखते है. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कल्याणक श्रीमद्वि-  
नाथस्वामी के जये, श्री अरयनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री  
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान जया. एतें इस जगतक्षेत्रमें वर्तमान  
चोवीसीके पांचकल्याणक जये. इस तरे पांच जगत, पांच एरवत  
में, चोवीसीके पांच २ कल्याणक मिलाएसें पच्चास कल्याणक जये.  
अतीत, अनागत, वर्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसे कल्याणक जये.  
इस वास्ते यह दिन वरुा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास  
करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह  
की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. ऐसे  
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे  
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग ज्ञा-  
वसैं सुणैं, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढ़ेवालोंको सहाय देवै,  
तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसैं  
करै. ( समवसरण बैठा जगवंत ) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे  
लिख्या हे सो पढे वा सुणै. पीछै न्यापनमें पेंतालीस आगमकी  
पूजा करै. यथाशक्ति साहमीबहुल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत

२४ जिन पंच क-

ल्याणक नमः ॥

॥ प्रथमः ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिअर्हतेनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिनाथायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४

चिन पंच कल्याणक ॥२॥

२१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमह्विअर्हतेनमः

१९ श्रीमह्विनाथायनमः

१९ श्रीमह्विसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४

जिन पंच कल्याणक ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत

२४ जिन पंच कल्या

णक नमः ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुभ्रंकरअर्हतेनमः

६ श्रीशुभ्रंकरनाथायनमः

६ श्रीशुभ्रंकरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीसत्तनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते वर्त्तमान २४

जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेन्द्रसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीगुणनाथअर्हतेनमः

१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः

१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीगंगीलनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते अनागत २४

जिन पंच कल्याणकनाम ॥६॥

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

- ६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः  
 ६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः  
 ६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीउदयनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतोते २४ जि  
 नपंचकल्याणक० प्रथा॥७॥

- ४ श्रीमृडुसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः  
 ६ श्रीव्यक्तनाथायनमः  
 ६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीकलाशतनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन  
 पंचकल्याणक । ८ ।

- २१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः  
 १ए श्रीयोगनाथअर्हतेनमः  
 १ए श्रीयोगनाथनाथायनमः  
 १ए श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः  
 १८ श्रीअयोगनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन  
 पंचकल्याणकनामः ९

- ४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हतेनमः  
 ६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः  
 ६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

- ६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः  
 ६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः  
 ६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीविशिष्टनाथायनमः

धातकीखंडेपविमभरतेअतोत  
 २४जिनपं०ना०द्वितिया॥१०॥

- ४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीहरिज्ञअर्हतेनमः  
 ६ श्रीहरिज्ञनाथायनमः  
 ६ श्रीहरिज्ञसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीमगधाधिनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान  
 २४पंचकल्याणकना० ॥११॥

- २१ श्रीप्रयत्नसर्वज्ञायनमः  
 १ए श्रीअक्षोभअर्हतेनमः  
 १ए श्रीअक्षोभनाथायनमः  
 १ए श्रीअक्षोभसर्वज्ञायनमः  
 १८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनाग-  
 त २४ जि०पं०क० १२

- ४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीधनदअर्हतेनमः  
 ६ श्रीधनदनाथायनमः  
 ६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीपौषनाथायनमः



६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः  
 ६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीनारसिंहनाथायनमः  
 धातकीखंडेपूर्वएवतेवर्त्तमान२४  
 जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥  
 २१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः  
 १९ श्रीसंतोषितग्रहतेनमः  
 १९ श्रीसंतोषितनाथायनमः  
 १९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः  
 १८ श्रीकामनाथायनमः

६ श्रीवशिष्नाथायनमः  
 ६ श्रीवशिक्सर्वज्ञायनमः  
 १ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः  
 १ श्रीरार्द्धपूर्वएवतेवर्त्तमान२४  
 निपंचक०नाम ॥ २३ ॥  
 श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः  
 श्रीसायकाक्षग्रहतेनमः  
 श्रीसायकाक्षनाथायनमः  
 श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः  
 श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

धातकीखंडेपूर्वएवतेअनागत२४ करार्द्धपूर्वएवतेअना० २४  
 जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥ जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीचंद्रदाहग्रहतेनमः  
 ६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः  
 ६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीरविराजग्रहतेनमः  
 ६ श्रीरविराजनाथायनमः  
 ६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीप्रथमनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएवते  
 जिनपंचक० नाम

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४  
 जिनपंचक०नाम॥२८॥

४ श्रीपुरुषसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीअवबोधग्रहतेनमः  
 ६ श्रीअवबोधनाथायनमः  
 ६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीविक्रमनाथायनमः

४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीकुटिलग्रहतेनमः  
 ६ श्रीकुटिलनाथायनमः  
 ६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः



खंडेपश्चिमएवतेवर्त्मान२४  
नपंचकल्याणकनामा॥२॥

१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीहरअर्हतेनमः

१ ए श्रीहरनाथायनमः

१ ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः

१० श्रीनंदिकेशनाथायनमः

पातकीखंडेपश्चिमएवतेवर्त्मान०२४

जिनपंचकल्याणकनामा॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः

६ श्रीअसौचितनाथायनमः

६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः

७ श्रीधर्मैंद्रनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुण

॥ अथ विधि ॥ ॥ १

एनेसें मेढसें मावा होती हे. १

थोमे जवोंमें अनंतसुखको प्राप्त इति

॥ अथ पोष मास मध्येति

॥ पोष महीनेमें मिति पंधर

पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीपान

इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परमअ

नाथस्वामीका अधिकार सुणे, का

हां श्रीपार्थनाथस्वामीका नाम

करणको जावै, जो कच्ची यात्रा

पुष्करार्द्धेपश्चिमएवतेवर्त्त०

२४जिनपंचक०ना०२९

१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः

१ ए श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः

१ ए श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः

१० श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमए०अना०

२४जिनपंचक० ॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः

६ श्रीविसोमअर्हतेनमः

६ श्रीविसोमनाथायनमः

६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीआरणनाथायनमः

नतंपूर्ण ॥

४ श्रद्धयाणककी एकेक मावा गु

६ श्रीजीव शुद्धचित्तसें गुणोंसे तो

६ श्रीब्रह्मार्गशार्प मास मध्ये प० ॥

६ श्रीव्रतधर लिख्यते ॥

७ श्रीनिर्वा, सो पोषदसमी नामसे

॥पुष्करार्द्धपूर्वका जन्मकल्याणक है,

जिनपंचक है, इस दिन श्रीपार्थ

४ श्रीअष्टाहिा पञ्चस्काण करै, ज

६ श्रीवशिक्क होय जहां जात्रा

जा सकै तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय जहां महोत्सव संयुक्त दरसन करणैको जावै, जलयात्रादि महोत्सव करै अष्टोत्तरीस्नात्र करवै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करवै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसँ अनेक तरैके उत्सव करै, और (पास जिनेसर जगतिलो ए ) वा ( वाणी ब्रह्मा वादिनी० आदिक ) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणै. इस पर्वका सेवन करणैसँ आधिभ्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरैसँ रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यको प्राप्त होंगे ॥ ( स्तवन पासजिनेसर जगतिलो ) सुणै वा पढ़ै सो जर (वाणी ब्रह्मा०) पढ़ली लिखादे॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिति माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सँ पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषभदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक है, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनको उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगे चढ़ावै, बीचमें १ वरु मेरु, चारुंदिस ठोटा चार मेरु, एसँ पांच मेरु चढ़ावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढ़ावै । आगे चारुं दिश तरफ चार नंद्यावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरदेजेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढ़ावै. पीबै श्रीरुषभदेवस्वामी ( पारंगतायनमः ) इस पदका दो हजार गुणना करै, जर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणैके दिन करै. अतिथिसंविज्ञाग करै पारणा करै. इस तरै १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीबै शक्ति मुजबं उत्सवसँ ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधभीवहल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ अथ अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पूत्र प्रिंगलरायकुमार गोमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणकै

तपस्या करी, तपस्याके कारणसे पांगलापणका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण जयां पीवै तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमंड, १३ स्वर्णमंड, १३ रूपैमंड प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संयसमेत तीर्थोंकी यात्रा करी, तेरे वेर साधमीं वात्सल्य किया, बहोत तरेसें ज्ञान जक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमे चवदे पूर्वकों पढके सर्व कर्मोंका क्य करके अनंतसुखकों प्राप्त जया. जो जव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस जव उर पर जवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ काल्पुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाळगुनमहनेमें मित्ती फाळगुन सुद १४, सोतीलरे चोमासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आपादचोमासे तुड्य करै, सो पहली लिखा हे ॥  
अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ अमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामी वारे महीनोंमें ६ वने पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, १ जुली, १ पर्यूपण. जिसमें जुली २ का उर पर्यूपण का एवं ३ अठाईका महोत्सव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जिसमें जी जेसा बीकानेरमें खरतर गठवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उज्जव हाथीके होदे वने आमंत्रसें होता हे वा वरघोसा पुस्तकका मुंडमें जी होता हे. लेकिन हस्त्यारूढ नही. उर कार्तिक महोत्सव अन्यत्र जी बहोत जगे होता हे लेकिन कलकत्ते जेसा महोत्सव स्वमतमें तथा परमतमें कहाइ जी जारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षिणमें मल्लेवार तक हम गये, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा कासी पटना तक में नही देखा. जगणीसें वावनके वर्षमें हम यह उज्जव कलकत्तेमें देखा था, उर फागुणमहोत्सव मकसूदावाका बहोत अवा होता

हे, जगणीसमें सुमतालीसमें देखा था. दुसरी जगे नही कहाँ ज़ी देखा, लेकिन किसी ज़ी धर्ममहोत्सवमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय सो अज्ञा नही. एक तो जगवंतके समवसरणके संग आजकलके ज्ञान्यवानलोक धूपके रुस्सें रेतीके रुस्सें आप तो जाते नही फकत बेसमझ अदम्योंको जेजदेतेहैं, वो लोक कूदते नाचते जागते समवसरणकों उगालादेते लेजातेहैं उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्यक्तीजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसें धर्मकाममें उद्योग करतेहैं उनका दोनुं जव सफल हे. वोही महोत्सव लायकतारीफके हे इस वास्ते आत्मार्षी धर्मज्ञ पुरुष हे सो होसका चोमासापर्वका ज्ञाणके सर्व जगें जगवंतके धर्मका उद्योत करतेजये शुजध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्मरूपी काष्ठको जलाके होली करते हैं, पीठै सुबोधजलसें स्नान करके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हैं. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हैं. इव्यें जर ज्ञावै. सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥

॥ इस फाटगुनमहीनेमें चौदश पूर्णमासी के दिन केशवक अज्ञानीजीव विवेकविकल जयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त जयेथके लकरु ठाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमासा धर्मपर्वका विराधना करते हैं. दूसरे दिन मलमूत्र रेतीसें क्रीमा करते हैं, खोटे वचन बोलते हैं, गधे पर चढते हे, अनेक जीवोंकों दुःख देते हैं, ऐसे जीव वीतरागकी आज्ञा ठोरुके ज्ञान जरमोंकी कुलमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हैं, दूध ठोरु पेसाब पीते हैं. ऐसे पुड़ष निकेवल कर्मका सघन बंधन करकै दुर्गतिकों उपार्जन करते हैं, अनर्थदंरुसें अनंत जव संसारकी स्थिती बांधते हैं. इसवास्ते आत्मार्षी ज्ञान्यजीवोंकों ज्ञावहोली करणा चाहियै. सो इस मजब-प्रसंगके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोलै, रात्रीजागर-

ण करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोत्सव निकालै, नानाप्रकारका  
 नाटिक करै, साहसीवृत्त करै, साधर्मिजाई आपसमें नाना-  
 तरेकी क्रीडा करै ॥ आगे राजालोक जी वसंतरुतु आणेशें मदन  
 महोत्सव करणेंकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गु-  
 लाबसे सहरके लोक बगीचोंमें क्रीडा करते थे, इत्यादि लेख तो  
 शास्त्रोंमें बहोत जगे वांचणेंमें आया हे, लेकिन मलमूत्र राख धूमसैं  
 खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, जंम चेषा करणी, कुल  
 मर्याद भंगणा, वनेरोकी लज्जा भोगणी, ऐसा कृत्य उत्तम पुरु-  
 षोंके करणे लायक नही. यह क्रीडा वाममार्गीयोकी चलाइ जई  
 हे. इसकों प्रवृत्त जयें प्राये दो हजार वर्ष करीब जया. पीछे स्वामी  
 शंकराचार्यकूं यह बात सम्मत जई तबसैं धीरेऽ अज्ञानी जीव ए-  
 ककी देखादेख बहोत लोक करणे लगगये, लेकिन ऐसी कर्त्तव्यता  
 किसी जी शास्त्रमें नहीं देखणेंमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी बात  
 हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोत्सवका काम होता हे उस वख-  
 त तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, नर होलीके दिनोंमें मा-  
 तापिता जई बहिन सबोंकी लज्जा भोगके बहोत दिलमें खुसव-  
 खती मानताजया पागलके माफक ज्ञानोंकी तरे बकते फिरता हे.  
 कोइ वैस्याउका नाच होता होय उहां तो हजारूं रुपये खरच कर  
 देतेहे. मनमें फूलते हैं हमने वना नाम किया. तत्व नजरसे देखे  
 नर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुजगतीके पाये पूरे-  
 मजबूत बंध करणेंमें आये. ऐसी लज्जाभोगके जिनमंदिरका महो-  
 त्सव करो, सत्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उधोत करो, ऐसी  
 होली खेखो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे, द्रव्य नर जावे  
 होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ । तो प्रसन्न होयगें,  
 नर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो ॐ दोष धारण करेंगें नर

सच्ची वातकूं कुयुक्तियोंसें जूठी उधरावेंगे, नर मध्यस्थ विचारवंत तो  
 ऐसा कहेंगे यह वात सच्च है. कितका पर्व किसका खेल, निकेवल  
 इसमें अनर्थ दंभ लगता है, लेकिन हम इकेला क्या करें, ज्ञाइव-  
 षोंको ऐसा करते देख हमजी करते हैं, हमसें रहा जाता नहीं.  
 परंतु यह प्रया बंध हो जाय तो अच्छी है. इस वास्ते है ज्ञव्यजी-  
 वो इसमें समुदाणी कर्म बंधता है. ठोमे सो घन्य है. नरकके जाते  
 का संग नहीं करणा. जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी  
 करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत नर वात तक नहीं करते  
 उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख डुतरेको बचना चाहिये.  
 काम वो करणा जिसमें दोनों जवमें लाज होय. इस डव्यहोलीके  
 खेलमें वमीर लमाइयां होजाती है. मेमता सहर हालीके ख्या-  
 लसें पुष्करणे नर जोजकोंकी लमाइमें तमाम नजाम होगया.  
 नर परजवमें अरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा है.  
 उस नावत जो जो कठोर लवज लिखा है उसकूं वांच विवेकी मेरे  
 पर गुस्सा नहीं लावेंगे. जो कुठ लिखा है सो पूर्वाचार्योंके वचना-  
 नुसार लिखा है. हितोपदेश समझके ठोरणेका प्रयत्न करेंगे. मेरे  
 तो नवकारमंत्रके अरुसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु है. जि-  
 समें जी सर्व जीवायोनिसें मित्रता है. कम या ज्यादा जो कुठ  
 अपशब्द लिखा होय तो मित्रामिडकम ॥१॥ इति फा० ॥ ५० ॥

॥ अरी भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग गाल ॥ दोरी खेलीयै नर वृद्धन एसो दाव  
 ॥ हो० ॥ दयामिर्द्ध अति जली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-  
 थाणो अति जलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १ ॥ लेस्या मा-  
 दल जाव रुफ रे, को मान होय ताल ॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी  
 नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० १ ॥ सुमताकेसर घोलिये रे, दमवाको

ठिककाव ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥  
हो० ३ ॥ ऐसा साज वणायकै रे, रूपनदेव गुण गाय ॥ श्रीजि-  
नचंद्र इम खेलतां, वारी जव २ पातिक जाय ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिने-  
सरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मननोहन, अंगिया सोहे केस-  
रकी ॥ ज० १ ॥ त्रिजुवन ज्योति अखंनित तनकी, स्यामवटा  
जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ज्ञानी, करुणा  
कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ बनाय वाय ज्युं वादल, जीत  
करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवासा बुदरे जिन जाया,  
राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल स्वपा-  
ये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहै जिनचंद्र मेरे प्रभु  
पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान  
गुलाल अवीर बनावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत  
रूप धरम जिनवरको, शुध कामा कहै करजोरी ॥ म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥  
संजमदूती कान लगी जव, शिवनारी पर चित दियो रे ॥ या० २ ॥  
मोह ठोर गिरनार सिधाए, नव जव नेह अलग कियो रे ॥ या०  
३ ॥ तुम हो तीन जुवनके साहिव, सुरनर कहै तुने चिरंजीयो  
रे ॥ या० ४ ॥ वार १ मेरो वंदना होयज, चंद्र कहै मन  
हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै अरज मेरी, इ० ॥  
इह संसार गहर तरु सिंधु, जमर पनत जिहां जव फेरी ॥ इ० १ ॥  
क्रोधादिक बहु मगरमछ हे, ग्रहत जंतु न कान देरी ॥ इ० २ ॥  
एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण तेरी ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो ड़खकी वेरी । ६० ४ ॥ परम  
कामागुण दायक लायक, अनुपमकीरत जग तेरी ॥ ६० ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः होरी ॥ सांवरो सुखदाई, जाकी बिब वरणी न जाई  
सा० ॥ श्री ॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिजुवन बाई ॥ समे-  
तैसिखरगिरि मंरुण प्रजुको, देख दरस हरखाई—हृदय मेरो अति  
हलसाइ ॥ सां० १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगट्यो, आज आनंद वधा  
ई ॥ तीन जुवनको नायरु निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई—सफल  
मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रजुके दरस सरस विन पाये, ज-  
वण जटक्यो में जाई ॥ अब प्रजु चरण सरण चित चाहत, बाल  
कहै गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत निर-  
खी ॥ ने० ॥ जवण संचित पाप करम सब, देखत दूर पुलाई, सु-  
मति वधारण कुनति विमारण, ज्ञान विमल जलसाइ ॥ आ० १  
॥ वामानंदम अति ठबि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनद-  
याल दयाकर दीजै, आनंद हरख सदाइ ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ ऐसैं फागुण मस्त महीने च-  
लोरी, देखो स्याम सखी मोपै होरी ॥ ऐसैं० ॥ ब्रजकी सखी सब  
वनण निकली, खेलत मिलण होरी ॥ मारे गुलाल अश्वीरमुठोजर, अप-  
ने प्रीतस रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सजी वनणके,  
सधुरर रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतमर  
गौरी ॥ च० ए० २ ॥ रस अनरस रास, रसे रस, सरस दरस  
प्रजु मोरी ॥ प्रो ॥ तजी लुमता ममता मन, बाल कहै कर जोरी ॥  
च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्यामसैं कहियो मोरी, ने० ॥  
तमुडविजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपूज तनु



सावलो रूमो, कित गयो मो-चित चोरी-अरज नहीं लीनी मोरी  
 ॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये वल दल जोरी ॥  
 तोरणसैं रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी जुरी-मदन महा रिपु  
 तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं दरस विन देखे, रहि हे मुख  
 कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमतीसखियनसैं, विनती करै करजारी-  
 लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे जविक मन थिर करकै, हो०  
 ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अदीर जमावो जोखी जरकै ॥  
 हो० १ ॥ ग्यान ध्यान रुफ ताल बजावो, गुण गावो प्रभु हित धरकै  
 ॥ हो० २ ॥ अनुभव अतर फूलैल मंगावो, वास दिसोदिस महम  
 हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रजधूस जमावो, ज्युं तेरा पाप सब-  
 ल अरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रभू नज विलं-  
 व न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संजारी जर पिचकारी, हारै तूं  
 तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल जर  
 जोरी, हारै तूं तो खेल वसंत घर रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग  
 आचूषण अंगै, हारै तूं तो जावना वाया पहिर रे ॥ हो० ४ ॥ नी-  
 रंजन प्रभुना गुण गावो, हारै तूं तो आत्म अनुभव वर रे ॥  
 हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हारै तूं तो गूँजत मन  
 मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पासजिनेसर, हारै तूं तो ज-  
 गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ अजिनलान कहै प्रभु संगै,  
 हारै तूं तो अनुपम जव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूप मचाई, आज सुमतासंग  
 खेलेंगे होरी ॥ वा० ॥ जिनशासनव्रतरंगमहिलमें, दीपकधोय बनाई  
 ॥ आ० वा० १ ॥ सरधासखी कृमा मृडना मिल, रुजुता मुक्ति सुहाई ॥

नर अनेक सुमति सखी ब्रजमें, अनुभव रंग रंगाई ॥ आ० वा० १ ॥  
 जाव सौच तप दान शीलसव, निज गुण बंधु सदाई ॥ जिन गुण  
 गान संगीत निरत धुनि, जक्ति जिणंद बढ़ाई ॥ आ० वा० ३ ॥  
 खेलत संजम फाग मिलै सब, षाल आणंद बढ़ाई ॥ अब कुमता  
 संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ समकित विन जीव जगत जटक्यो, स० ॥ चतुरा  
 सी जव जमतां २, नरजव पायो सो दिख खटक्यो ॥ स० १ ॥ गर  
 जावास नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥  
 पुन्य संजोग मिटवौ कुल आवक, ग्यान प्रकाश जयो घटको ॥  
 स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासें तेरो मन अट  
 क्यो ॥ स० ४ ॥ तुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूयो शिवपु  
 रकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रभु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें  
 नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ बिसरे मत नाम प्रभूजीको, वि० ॥ प्रभूजीको ना  
 म चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १ ॥ ना-  
 ज कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन जुवत सिर हे टीको ॥ वि० २  
 ॥ चतुर कुशल चित घोलसुं राव्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको  
 वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने० ॥  
 बहुत हठासुं व्याह रचायो, जीव देख क्या आणी रे ॥ व० ने० १ ॥  
 सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने०  
 २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोमै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व०  
 ने० ३ ॥ जनधरभूषण कहै जविजननै, सहु जगमें जस लीनो रे  
 व० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ़ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेले ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल जर्यौ, दिशि दूजी गिर  
 वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोनतो, तिण माहे खेले नेमकु  
 मार ॥ ग० १ ॥ फूल्या केवना केतकी, विच फूल्या मरुआमचकुंद  
 ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहै खैले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥  
 आंवा मोर्या बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै  
 पवन दक्षिणतणी, स्यामजमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३ ॥ आं  
 व पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमहुसर अजू  
 नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हलधर गोपि मिली,  
 विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सांसी जलजरी, मुख ऊपर ठां  
 टे यडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समजायो जोरें य-  
 डुनाथ ॥ रिद्धरष वाचक कहै, वात सांभजे निवादेवी मात ॥ ग० ६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो जाग री, नेमनाथ वर  
 पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजू रुद्रज जिणंद, जिण  
 मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको ठत्र धर्यो सिर ऊपर,  
 गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ,  
 फूल चढ़ाजं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरतो, मुख  
 बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि बीनती, जवर  
 दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐली होरी तो हो रही चंपानगरमें, फा-  
 गणके दिन आये ॥ ऐ० १ ॥ वासुपूजजीके नवल मंरुपमें, होय रंही  
 हो सुखदाए ॥ ऐ० २ ॥ केसर घोरी जरिय कचोरी, प्रभुजीके आं-  
 गियां रचाए ॥ ऐ० ३ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल  
 ठरुआए ॥ ऐ० ४ ॥ विंधव शांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित  
 लाए ॥ ऐ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, व० ॥

निविम डुरित नर शिखर नि डुरकी, नवसागर तारण तरकी ॥  
 व० १ ॥ तीन जुवन तीरथ तारागण, सोजा लहिय निशाकरकी  
 ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी  
 ॥ व० २ ॥ परमात्म पद प्रतिबिंब तनको, बंढित पूरण सुरतरु-  
 की ॥ व० ॥ वर सोरठ मंमल मंमनकी, सकल करम रज जल-  
 धरकी ॥ व० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाम्नेय जिनेसर-  
 की ॥ व० ३ ॥ ए गिरि बुढ़याचल परि जिनकी, डुनि दीपै जेम  
 दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-  
 रुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन जु-  
 वन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषभ  
 लंठन सोजाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रभुकी मोहनमूरति, देखत  
 परमानंद नरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रभुकी निरंतर, पदतल  
 नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, नव  
 एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रभु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ०॥  
 त्रिगढमें विराजमान, डुंडुनि सुणत कान ॥ अपठर मिल करत  
 गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ लिंगासण विराजै साम, जीत  
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥  
 ऐ० २ ॥ तीन ठत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्प धार ॥ गहिर अ-  
 सोक सार, नामंमल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग,  
 द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संजवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥  
 हारे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला  
 ॥ सं० ॥ बाता तीन जुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता  
 दीजै साहिव मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात नयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज  
 लंठन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाखा ॥ सं० २ ॥ साठ  
 पूरव लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोढन वरण  
 सेवे दुरितारी, सावन्ही नगरी सारी हो लाखा ॥ सं० ३ ॥ समेत  
 सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्राक्षिक मिल  
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाखा ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण  
 सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होष्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा  
 चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाखा ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस बिखावो रसिया,  
 सा० ॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥  
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसि  
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमोसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि  
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं  
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर  
 सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाज्जनंदनकूं करुं जुहारा,  
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु तिर धरियां  
 ॥ सा० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे जव हारो रे ॥  
 जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त  
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या०  
 १ ॥ पूरण पुन्य नदयथी पायो, नरजव सफल जमारो ॥ जवि  
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥  
 जवहुख जंजननाथ निरंजन, नाम लीये निततारो ॥ ममता तज सम  
 ता संग जेखी, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें  
 रंग वर्धाई, घरइ मंगलाचारो ॥ रथ महोन्नव रचना रची इद, मुख

जय२ सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद्ध विचारी,  
सेवक सुगुण संनारो ॥ प्रभु पंकजकी हिव सरणा ग्रही, जवसा  
यर पार नतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली  
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर  
सैल जैसे चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो,  
मोसें प्रीत लगाइ आमनी ॥ आ० ॥ तौरण आय चले मोहि गोमी,  
कोन चूक थोपै काढी जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजुंगी  
नव जव केरी, प्रीत वणी जैसी इंधु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-  
जुल पहली प्रीतमसेती, बाख कहै नई सुमति गामिनी ॥ आ०  
म० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लख्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥  
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, बहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥  
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥  
हिल मिल आप परम रस आखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०  
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदभुत वान ॥ हो०  
रं० ४ ॥ सुमति अबीर उभाय जगतमै, वैठै शिवपुर आन ॥ हो०  
रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर आन ॥  
हो० रं० ६ ॥ ऐसा खेल नविकजन धारै, वंछित पावैदान ॥ हो०  
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥  
मनमृदंग वजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान  
गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुदाग ॥ हो० ॥ समकित  
केसर चीर रंगान, पहिरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-  
मत ठांमी, च्यारु गतिसैं जाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एसा खैल जविकजन  
धरै, पावै जवजल प्राग ॥ हो० ॥ चेतनता सुद होय जगतमें,  
समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धाय२, डुरजनकी लाज  
मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अवीर उमावो, कमा  
करो रंग लाय २ ॥ डु० हो० १ ॥ शोल संजमव्रत पान भिठाई,  
ध्यान धरुंगी में गाय गाय२ ॥ डु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह  
उमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ डु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अ-  
रंज वीनती, सरण गद्दी में तेरी जाय२ ॥ डु० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे जरी, शिवपुरकी  
वात पूवूं कवकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर,  
परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रंग जस्यो रंग शी-  
वपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रुपन बैठै अलवेसर, मारो गुलाल  
मुठी जरकै ॥ बावो० ॥ मुठी जरकै पसली जरकै, बावो० ॥ चू-  
आ२ चंदन डुर अजरजा, केसरका मटका जरके ॥ बावो० १ ॥  
रतनजमित शिर ठत्र विराजै, अंगी जमाव जमी जरकै ॥ बावो०  
२ ॥ बांदै बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा०  
३ ॥ नाजिराया मरुदेवीको नंदन, रमिथे जवि आदीसरसें ॥ बा०  
४ ॥ आदिखान हेदास तुमारो, तार लीयो अपणे करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुनः होरी राग टण्डो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे,  
जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ जवःडुख वारण शिवसुख कारण,  
देखत जवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंद-  
न, प्रणमुं रुपन जिनंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान  
तुमारो, जिम चातक दिख चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥  
देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे बै अति नीको ॥ द० १ ॥ बी-  
स कोसर्था दरसन दीगो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥  
बीसे टूँके बीस गोमटनी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब  
जिनवरके शरणे आयो, रसतो पावो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ ६०

॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-  
घयात्रा करणसैं पाष कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि  
सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रुषन जिनेश्वरजीको  
दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै  
नाथ निरंजन, जवश्का डुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि  
जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूही रंग रे ज तूही है, संजम रंग  
मोहि रंगदै ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अना-  
दिको, सो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-  
द्धि तेरी में देखी, सो अब मुऊकुं सऊदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥  
ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो० ४ ॥  
जूथरदास कहै समकित दे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो० ५ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रंगमंरुपमें, खेलत संत  
वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अवीर विलसंत ॥  
॥ मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी ठूटत, समता सखिय मिलंत  
॥ आगम लहर फूली फुलवामी, मुनिवर ब्रमर गुंजंत ॥ मे० २  
अंग आनूषण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना ग-  
हिर कसूंवा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदभूत पंच माहा  
व्रत वागा, पहिरे तन संहंत ॥ कहै जिनचंद प्रजुकी कृपासैं, नी-



रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग मन्थो जिनद्वार चालो खेलिये होरी,  
रं० ॥ पासं प्रभु दरवार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन ब्यार रे, चा०  
कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥  
कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥  
लाल गुलाल अबीर उमावत, पासजीकै दरवार रे ॥ चा० ३ ॥  
जर पिचकारी गुलाबकी ठिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥  
ताल मृदंग वीण रुफ बाजै, जेरी जुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥  
सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥  
॥ रत्नसागर प्रभु ज्ञावना ज्ञावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेमजीसैं कहियो मोरी, सामरेसैं कहियो  
मोरी ॥ तोरण आए किण जरमाए, ठोरु चलै अजिमाणी ॥ हां  
रे लाला ठो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी-  
दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीलो मुंहसैं कहियो,  
ना करिये सोधाणी ॥ आठ जवोकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं  
ज्यानी—श्याम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें  
बेह लागी, राजुल गुलकी वामी ॥ वीनती सुणकै अमर पद दीजै,  
रंग विजय सुख दानी—आवा जर गमन ठिदानी ॥ सा० ३ ॥ ६०॥

॥ पुनः होरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें बसै रंग, जिन०  
॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान सुलाल अबीर अरगजा,  
सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुजव लहर फुली फु-  
लवामी, दिन२ बढ़ते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा  
अंग अनोपम, शुद्ध ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद  
चिंतामणि चित धर, तुजसुं अविहर रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ ॥ ६०॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वण हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रजूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी ज्ञाव  
 अन्नंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी ज्ञांत जली हे, वुंठियां  
 नव२ रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर केवमा  
 संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध  
 सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोजत है, सौरंग वास  
 सुगंध ॥ श्रीचिं० ३ ॥ त्रिजुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥  
 श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ है सकल सुरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ ज्ञावना ज्ञावो जिनगुण गावो, अमर घणै नवरंग  
 ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चिन ध्यावो रे, वंठित फल पा-  
 वो ॥ चिं० ॥ सकल जदिक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण  
 गावो रे ॥ वंठित० १ ॥ अवीर गुलाल लाल संग लावो, जर२ मु-  
 ठियां नवावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं ठिककावो, ज्ञा-  
 व शुक्ल जल ज्ञावो रे ॥ वंठि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुहप ब-  
 नावो, दीपक ज्योति दीषावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ दरस सरस  
 करके सुख पावो, पुण्य जंमार जरावो रे ॥ वंठित० चिं० ३ ॥ वा-  
 जित्र वाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंठित० चिं०  
 ॥ अमरसिंधुर आनंद बवावो, जिनजीर्ण लयलावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी जीज  
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांही, गावत आगम राग ॥  
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति  
 सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगानें, पहिरुं मन  
 वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत ठोरुं, ज्यारों गति  
 सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ ऐसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै,  
इण विध खेले फाग ॥ पिया में ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-  
जी, नेम ० ॥ मे हूं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥  
हो ० ने ० १ ॥ हम हे केतकी तुम हो २ जमरा, फिर वासना लीजीये  
॥ हो ० ने ० २ ॥ मैं हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना  
कीजीये ॥ हो ० ने ० ३ ॥ नेम राजुल मिल सुगति सिधाए, रूपचंद पद  
दीजीये ॥ हो ० ने ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, कर्म कटै ज्युं शुद्ध  
ध्यानसें ॥ आ ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिठाएयो, ममता मिट  
गई सारी जानसें ॥ कर्म क ० आ ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार  
सम, नास ज्यो सब ज्ञानज्ञानसें ॥ कर्म क ० आ ० २ ॥ परमातम  
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल ध्यानसें ॥ कर्म ० आ ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-  
मरसकी क्यारी ॥ लाल ते ० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,  
नयन जये अविकारी ॥ निझ सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण  
निवारी ॥ लाल ते ० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत  
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे हुसिया-  
रो ॥ लाल ते ० २ ॥ ऐसा लज्जन हे नयनोंमें, क्युं पाये जव पारी,  
योही विचार करो दिल अपने, होत कर्मसें जारी ॥ लाल ते ० ३ ॥  
धर्म विना कोई सरणा नही हैं, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै  
प्रभु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार जम्यो, द ० ॥ चो-  
रसी लख योनिमें जटकत, लहि मानवजव युंही गम्यो ॥ द ०  
१ ॥ पुन्य वदय श्रावक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत जयो ॥ द ०

३॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो॥  
 द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो  
 ॥ द० ४ ॥ कहत कमाकट्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप  
 शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत ठोसो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो  
 ॥ म० । अबीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे  
 ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी  
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया  
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊज्जी अरज करत हे, एक वार  
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं सुगत सिधाए,  
 पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें  
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो  
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-  
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवच्छ लंछन जनम जदिलपुर, कुल  
 इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेन धनुष शरीर सुसोजित,  
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरब आयु  
 कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत  
 प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके  
 साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है  
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥  
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥  
 ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनिनायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३  
 ॥ जय२ होमकुसल गुरु जंपै, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासैं संयही, अति सुगम ज्ञाप प्रकाश करतां ज्यज्जन मन गहगही ॥ निधि वाण नंद सुचंद्र विक्रम साध सुदि पूनम सही, श्रीवृद्धत्वरतर गच्छ पाठक रामगणि विधि इम कहौ ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंत के कल्याणक के हे सो सर्व ज्यजीवों के सेवन करणे योग्य है, लेकिन कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही ( ओर विशेषमें ) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले ज्यजीवों के अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासैं पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

५ श्रीसंजवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

१५ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः

१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनेमनाथजीपरमेश्विनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः

११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

११ श्रीनिमिनाथजीसर्वज्ञायन०

पौषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

१४ श्रीसंजवनाथजीअर्हतेनमः

१५ श्रीसंजवनाथजीनाथायन०

- ११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥
- १२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः ६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
- १३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः ए श्रीशान्तिनाथजीसर्वज्ञा०
- १४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय० ११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
- माघकृष्णपक्षे ॥ ५ । १४ श्रीअज्जिनंदनजीसर्वज्ञा०
- ६ श्रीपद्मप्रभुजीपरमेष्ठिने० १५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०
- १२ श्रीशीतलनाथजीअर्ह० माघशुक्लपक्षे ॥ ए
- १२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः २ श्रीअज्जिनंदनजीअर्ह०
- ११ श्रीरूपपद्मदेवजीपारंगता० २ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
- ३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायम० ३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०
- फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १० ३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
- ६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ४ श्रीविमलनाथजीना०न०
- ७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता० ८ श्रीअजितनाथजीअर्ह०
- ७ श्रीचंद्राप्रभुजीसर्वज्ञायन० ए श्रीअजितनाथजीनाथा०
- ए श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने० ११ श्रीअज्जिमंदनजीनाथा०
- ११ श्रीरूपपद्मदेवजीसर्वज्ञायनमः १३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०
- १२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५
- १२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः २ श्रीविमलनाथजीपरमेष्ठिने०
- १३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः ११ श्रीसुतो शारीपरमेष्ठि०
- १४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः ८ श्रीसंजवनाथजीपरमेष्ठि०
- ३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः १२ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
- चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५ १२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०
- ४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने० चैत्रशुक्लपक्षे । ८
- ४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ३ श्रीकुंभुनाथजीसर्वज्ञा०
- ५ श्रीचंद्राप्रभुजीपरमेष्ठिने० ५ ॥ १० ॥ तनाथजीपारंग०

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः

८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०

वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९

१ श्रीकुंथुनाथपारंगतायनमः

२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०

५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनमः

६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०

१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०

१३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०

१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०

१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०

१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०

ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥

८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०

ए श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०

१३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०

१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०

१४ श्रीशांतिनाथजीन०

आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

४ श्रीआदिनाथजीपरमे०

७ श्रीविमलनाथजीपार०

ए श्रीनमिनाथजीनाथा०

श्रावणकृष्णपक्षे । ४

३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०

७ श्री अनंतनाथजीप

५ श्रीसंज्ञवनाथजीपारंग०

५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०

ए श्रीसुमतिनाथजीपारंग०

११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०

१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः

१५ श्रीवद्वप्रज्ञजीसर्वज्ञाय०

वैशाखशुक्लपक्षे ८

४ श्रीअज्जिनंदनजीपरमे०

७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०

८ श्रीअज्जिनंदनजीपारंग०

८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०

१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०

११ श्रीविमलनाथजीपारंग०

ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥

५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०

ए श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०

१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०

१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०

आषाढशुक्लपक्षे ३

६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्टि०

८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०

१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०

श्रावणशुक्लपक्षे ५

२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०

५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

८ श्रीनमिनाथजीअर्ह०

ए श्रीकुंभनाथजीपरमे०

भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

७ श्रीचंझप्रभूजीपारंग०

७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०

८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०

आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २

१३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०

३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घर। गुरुके पास पंच कल्याणक

तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पञ्चस्काण

करै, तीन टंक देववंदन करै, पस्त्रिकमणा करै, जिस दिन जो मा-

हाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै, उर पहली

लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुनै या पढ़ै, जहां ज-

गवंतकी कल्याणक भूमि होय उहां वरें महोत्सवसैं संघ समेत

यात्रा करणैको जावै, उहां विधि संयुक्त सर्व जगवंतोंके पंच क-

ल्याणकका उत्सव करै, जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीम-

हावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उत्सव करै ॥ अब २३ जगवंतकी

अपेक्षार्थें पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षार्थें षट् कल्याणक संक्षेप उत्सव

विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणकको (परमेष्ठिनेनमः) कहियै, इस

दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायकै च्यवन कल्याणादिकका

उत्सव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं (अर्हतेनमः)

कहणा, इस दिन जलजात्रादिकका महोत्सव करके अष्टौ-



क्षत्री स्नात्रादिकं करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कल्याणकर्कों  
 ( नाथायनमः ) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृ-  
 क्षादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उन्नव करै, घृत गुग्गु वस्त्रा-  
 दिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कल्याण-  
 कर्कों ( सर्वज्ञायनमः ) कहणा. इस दिन समोसरणमें जगवंतर्कों  
 विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उन्नव करै,  
 वस्त्र आभूषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ नि-  
 र्वाण कल्याणकर्कों ( पारंगतायनमः ) कहियै. इस दिन निर्वाण  
 कल्याणकके ज्ञावगर्भित उन्नव करै, लहू चढावै ॥ ५ ॥ और ठग  
 गर्भपहार कल्याणकका उन्नव करणा होय तो ज्यवनकल्याणकके  
 उन्नव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कल्याणकका उन्नव करै.  
 तपस्या पूर्ण होखेलें पंच कल्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुभक्ति  
 करै, साहमीबन्ध करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो  
 ज्यजीव करेंगे सो अनंत सुखर्को प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक  
 तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशो ॥ जंबुद्वीप सोहामणो,  
 दक्षिणभरत उदार ॥ राजग्रही नगरी जली, अलिकापुर  
 अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय  
 ॥ मनवंछित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राजकरै  
 तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, शील-  
 गुणें अजिराम ॥ श्री० ३ ॥ श्रावण उज्ज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश  
 ॥ माताकुक्षि सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पदम  
 पद अरुमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोन्नव सुर करै, त्रिभुवन  
 हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंठन काढवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री०  
 ६ ॥ परणी नार प्रज्ञावती, जोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख  
 जोगवै, पूरै वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आ-  
 वि जंपै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम जार  
 ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधर निरमल ध्यान ॥  
 च्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९ ॥ (ढाल १ ॥  
 सुख कारण जवियण ॥ ए देशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया च-  
 लिया सुरनर कोमि, प्रभुना पदपंकज प्रणमै बेकर जोमि ॥ बेकर  
 जोमि मञ्जर गोमि समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रि-  
 गमो उत्रत्रय ऊलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म  
 प्रकासै, वारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन उल्लासै ॥ १० ॥ त-  
 पने अधिकारै पखवासो तप सार, पनवाथी कीजै पनरह तिथी  
 ऊदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उप-  
 शम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपोजै वांदी देव उल्लास ॥ तप ऊजमणै  
 रजत पालणो सोवन पूतलो चंग, मोदकथाल देहरै मूंकी जिन  
 वर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अदुरव दर्शनी जेम, म-  
 नवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति व-  
 छन्न जरतार, जस कीरत सोजाग वनाई महियल महिमा जाण  
 ॥ परजव मुगति फल लहियै, ए तपने प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी  
 चतुर्विध संघतणो अधिकार, जरवठ प्रमुख नगरादिक करिया वि-  
 हार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्तिक-  
 सेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सदस वरष आ-  
 ऊखो पालै जग दया सार, श्रीसम्मेतंशिखर परमेसर पुहता मुग-  
 ति मजार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक शुणिया त्रिभुवन ताय,  
 मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय

जगतगुरु जयजंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरा-  
मर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीत,  
वाचक समयसुंदर इम पन्नणै पुरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुज्जदिन गुरुके पास तप ग्रहण करके सुद (१) प-  
निवासें पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं  
होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पनिवा १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज, ऐसे  
अनुक्रमसें पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी  
के पांच कढ्याणक जावगर्भित स्तवन पढ़ै. गुरुका संयोग होय  
तो गुरुके पास सुणै. ( श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस  
पदका १००० दो हज़ार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी  
तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी है उस मुजब विवेकी  
जोब सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणसें उत्तम फल  
मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पञ्चकाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर जगवंत ॥ त्रिगद्वै  
वैठा जिनवरू, परषद वार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण  
समे, पूवै श्रीजिनराय ॥ दस पञ्चस्काण किंसा कह्या, कीयां कवण  
फल आय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥  
श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांजल गोयम ताम ॥ दस पञ्चस्काण कियां  
अकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी  
१, साढपोरसी पुरिमद्ध ४ ॥ एकासण नीवीकही ६, एकलठाण देवट्टि ॥  
श्री० ४ ॥ दात ७ आंबिल ए उपवास १० ही, एहिज दस पञ्च  
स्काण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करुं वखाण ॥ श्री०  
५ ॥ रतनप्रज्ञा १ सर्करप्रज्ञा २, वालुक तीजी जाण ॥ पंकप्रज्ञा

४ तिम धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतमं ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥  
 नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम  
 वस ते सही, ऊपजै तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ ठेदन जेदन  
 तामना, जूख तृषा बलि त्रास, रोमर पीसा करै, परमाहम्मो  
 तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल जर नहीं जिहां  
 सुख ॥ किया करम जे जोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥  
 इक दिनरी नवकारसी, जे करै ज्ञाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो  
 आनखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी,  
 ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप बलि पावला, निरमल होवे  
 जी काय ॥ श्री० ११ ॥ ( ढाल १ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो  
 ॥ ए चाल ) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥  
 ज्ञावसुं जे पोरसी करै, डुरगति ठेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि  
 जै नारकी, वरसैं एक हज्जार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहु-  
 त पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥  
 करम हणें सहस एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४ ॥ डुरगति  
 मांहि नारकी, दस हज्जार प्रमाण ॥ नरक आयु खिया एकमें, सा-  
 ठपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमद्ध करै नित जीव जे, नरके  
 ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमद्ध करम खपाय ॥  
 सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा  
 करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोमि वरसां  
 लगै, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां ज्ञावसुं, डुरगति हणे  
 सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोमि जीव नरकमें, जितरो करै करम  
 दूर ॥ तीतरो एकलठाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात  
 करंता प्राणियो, सो कोमि परिमाण ॥ इतरा वरस डुरगति तणा,  
 ठेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोमो

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, ज्ञाव आंखिल अधिकार ॥ सु०  
 २१ ॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मजार ॥ उपवास  
 करै इक ज्ञावसुं, तो पामे मुगति मजार ॥ सु० २२ ॥ (हाल ३॥  
 केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके क-  
 रता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ ठठम तप करतां थकां, सही  
 नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही,  
 जीव लहै तिहां डुक्क रे ॥ ते डुख अठम तपहुंती, दूर करी पामे  
 सुक्क रे ॥ गो० २४ ॥ ठेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ  
 रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो०  
 २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर  
 करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय वि-  
 शेषे फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे ज्ञला,  
 करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं  
 करै, चवदह पूरव होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां  
 वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै  
 जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै ज्ञव पार रे ॥  
 गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनं  
 त ज्ञवाना पापथी, ठूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती  
 पापी तरया, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें,  
 शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपना फल सूत्रे कह्या,  
 पञ्चस्काणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिण बै घणा, करतां ठेदे  
 जय वेद रे ॥ गो० ३२ ॥ (कलशः) ॥ पञ्चस्काण दस विध फल  
 परुण्या महावीर जिणदेवए, जे करै ज्ञविअण तप अखंनित तासु  
 सुर पय सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि  
 दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंड तप विधि

ज्जणे ॥ ३३ ॥ इति दस पञ्चस्काण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पञ्चस्काण तप विधिः ॥

॥ यह दस पञ्चस्काणके स्तवनमें खुलासा दस पञ्चस्काणके जेद नर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजब उत्तम पुरुषोने रचना करीहै, इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनको पढ़के तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, नर किसीके दश पञ्चस्काण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पञ्चस्काण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढ़ै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक उद्यापन करै, इस तपस्याके प्रज्ञावसें डुरगतिबंध दूर करके अच्छी गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, जाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल जेठियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवियै, धर कर शुज्ज परिणाम लाल रे ॥ तीजै जव सेव्यो थको, बांधे तीर्थकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मज्जार लाल रे ॥ सुणजो जवि तुमे ज्ञावसुं, चित्तसें करिय जच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुज्ज महुरते, उचरोजै ससनेह लाल रे ॥ वी० ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ जव-ज्ञाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ९ अरु, विनय १० नमूं जलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ बंज १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञातने १८ श्रुत जणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, बीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥  
 एक ढली पट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर  
 नवी करणी पमै, पिठली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥  
 ठठ अठम उपवाससुं, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर  
 आराधियै, देव वांदै निज जक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-  
 रण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदै  
 सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर  
 पाठक पदै, साधु चारित्र मुजगण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदै सही,  
 सात आनक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-  
 दा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पन्निकमणो दोय टंकही, करियै  
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक ढली करो  
 वीत लाल रे ॥ बीसाबीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल  
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित  
 धार लाल रे ॥ काजसगने परदक्षणा, मुख जणियै नवकारलाल  
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद जक्ति  
 लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवै, दिन२ बढ़ती शक्ति लाल रे  
 ॥ वी० १३ ॥ मृतक जनम रतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल  
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०  
 १४ ॥ सावज्ज त्यागपणो करै, सोक न धारे चित लाल रे ॥ शील  
 आचूषण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १५ ॥ जेठ  
 आसाढ वैशाखमें, भिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे  
 मांहिनै, व्रत ग्रहिये बरुजाग लाल रे ॥ वी० १६ ॥ तप पूरण  
 हुवां अकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारीनै,  
 उठव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १७ ॥ बीस२ गिणती तणा,  
 पुस्तक पूरा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवाद्

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कौधी विध चित्त  
 लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा जणी, उहिज मोक्ष उपाय  
 लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आझा धार  
 चित्त मजार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार  
 ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंड वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी  
 शशि गढ खरतर जणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि  
 दित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक जली दो  
 महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदास ठ महीनेमें पूरी नही कर  
 सके तो वो जली गिणतीमें नही. ऊर फेर नइ करणी परती है.  
 एक जलीके वीस पद हे ( तहां ) कोइ वीस दिनमें वीस पद  
 जुदा गिणते हे, कोइयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हें, दूसरै  
 वीशों दिनमें दूसरा पद, एसे वीशों पदकी वीश जली करै. तिहां  
 पदाराधनेके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधै. वीश  
 अठमसे एक जली होय ( एसे ) वीस जली ४०० से अठमसे आ  
 राधै. और उससे कम शक्ति होय तो ठहले आराधै. उससे कम  
 शक्ति होय तो चोविहार उपवास करिके आराधै. उससे हीन शक्ति  
 होय तो त्रिविहार उपवास करिके आराधै, उससे हीनशक्ति आंत्रिल  
 ( न तथा ) त्रिविहार एकाशना करिके आराधै. उसमें जो शक्तिवान  
 होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति  
 दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति  
 सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, शिवर  
 पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, ऊर तीर्थपद  
 में ७, यह सात स्थानक पद तो पोसह करेकी आराधै, जो इतनी



ज्नी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार  
 वोमै, सो शक्ति ज्नी नही होय तो यथाशक्ति तप करकै आराधै,  
 अपणी हीणता ज्ञावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप  
 नही गिणै जावै, स्त्रियां ज्नी ऋतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके  
 दिन पोसह सहित करै तो व्होत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो  
 सके तो तपके दिन उज्जय टंक पम्क्कमण करै, तीन टंक देववंदन  
 करै, दो हज्जार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, जूमि शयन  
 करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोळै,  
 सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे  
 तो पारणेके दिन जिनज्जक्ति करकै पारणा करै, जो तपके दिन पो-  
 सह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनज्जक्ति करै करावै, ज्ञावना  
 ज्ञावै तथा तपके दिन तप पदके गुण जेद प्रमाण संख्यासैं काज-  
 सग्न करै, इतनाही तज्जुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै,  
 उस पदका गुण याद करकै उदात्त स्वरसैं स्तवना करै, हर्षित रहै॥

॥ अथ बीस स्थानक गुणना और काजसग्नका प्रमाण लिखते है॥

( एमो अरिहंताण ) १००० गुणना लोगस्स १२ का काज-  
 सग्न ॥ १ ॥ ( एमो सिद्धाणं ) २००० गुणना लोगस्स १५ का का-  
 जसग्न ॥ २ ॥ ( एमो पवयणस्स ) ३००० गुणना लोगस्स ७  
 का काजसग्न ॥ ३ ॥ ( एमो आयरिआणं ) दो हज्जार गुणना  
 लोगस्स ३६ का काजसग्न ( एमो थेराणं ) दो हज्जार गुणना  
 लोगस्स १५ का काजसग्न ॥ ५ ॥ ( एमो उवज्जायाणं ) दो ह-  
 ज्जार गुणना लोगस्स १५ का काजसग्न ॥ ६ ॥ ( एमो लोए सब  
 सादूणं ) दो हज्जार गुणना लोगस्स २७ का काजसग्न ॥ ७ ॥  
 ( एमो नाणस्स ) दो हज्जार गुणना लोगस्स ५ का काजसग्न  
 ॥ ८ ॥ ( एमो दंसणस्स ) दो हज्जार गुणना लोगस्स १७ का

कान्तसग ॥ ए ॥ ( एमो विणयसंपसाणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्स १० का कान्तसग ॥ १० ॥ ( एमो चारित्तस्स ) दो ह-  
 ज़ार गुणना लोगस्स ६ का कान्तसग ॥ ११ ॥ ( एमो बंजवय  
 धारीणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्स ए का कान्तसग ॥ १२ ॥  
 ( एमो किरिआणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्स २५ का कान्तसग  
 ॥ १३ ॥ ( एमो तवस्तीणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्स १५ का  
 कान्तसग ॥ १४ ॥ ( एमो गोयमस्स ) दो हज़ार गुणना लोगस्स  
 १७ का कान्तसग ॥ १५ ॥ ( एमो जिणाणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्स १० का कान्तसग ॥ १६ ॥ ( एमो चरणस्स ) दो हज़ार  
 गुणना लोगस्स १२ का कान्तसग ॥ १७ ॥ ( एमो नाणस्स ) दो  
 हज़ार गुणना लोगस्स ५ का कान्तसग ॥ १८ ॥ ( एमो सुअना-  
 णस्स ) दो हज़ार गुणना लोगस्स १० का कान्तसग ॥ १९ ॥  
 ( एमो तिब्बस्स ) दो हज़ार गुणना लोगस्स ५ का कान्तसग करै  
 ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों जुलीमें सर्व पदके उच्चव महो-  
 च्वव प्रज्ञावना ऊजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते  
 इतनी शक्ति नहीं होय तो एक जुली तो विशेष उच्चवादिक संयुक्त  
 करणी चाहियै. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि  
 संक्षेप मात्रसें लिखी हे. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें  
 वीशों पदकी जुदीर विधि गुरुके मुखसें समझके करै. जो गुरुका  
 संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखकै वीस स्था-  
 नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़ै, वीस  
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अर्पणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोप-  
 करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते  
 लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

साहमी वल्ल कैंर, इत्यादिक इवै नुर जावै विधि संयुक्त शुद्ध  
जावलेँ जो ज्ञव्यजीव यह बीस स्थानक पदकों सेवन करेंगे सो  
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करके तीसरै ज्ञव अनंत सुखकों प्राप्त  
होंगे, इत्यलंविस्तरेण ॥ इति बीस स्थानक तप नुलो विधि सं० ॥

॥ अथ बीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोएंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥  
ज्जवत्तोजविन्धयणेवारणाणं, एमोवोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हज्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनैङ्गपूजा ॥ अथ  
सिद्धपूजा ॥ लोगगजागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणि-  
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मरक्खकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥  
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥  
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुस्कंथयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-  
णदयागिहस्स, एमो२ संघचउविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः  
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूंसिंधुराणं, सुरीसराणं-  
सुणिबंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं ॥  
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-  
त्तसंयमपतितज्जविजन अतिहथिरकरताज्जत्ता ॥ अवगुणअडुषित  
गुणविज्जुषित चंडकिरणसमोज्जत्ता ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ  
रुचिरधाराधरा, ज्जवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोश्रिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ षष्ठ पद ॥ सवोहिवीजंकुरुकार-  
णाणं, एमोश्वायंगावारणाणं ॥ कुवोहिदंतीहरिणोसराणं ॥ विग्घो-  
धसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ  
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-  
णं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, एमो२ होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ  
ह्रीं श्रीं सम्यग्साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ वदवपज्जा

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिहत्तअन्नाणतमोहरस्स,  
 णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ नुँ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥  
 ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारवि-  
 दारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥  
 ९ ॥ नुँ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-  
 पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंडुपादामलताचणस्स ॥ सुध-  
 म्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ नुँ ह्रीं  
 श्रीं सम्यग्विनयैनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-  
 म्मोघकंतरदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुह  
 कारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ नुँ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-  
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-  
 सुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सब्बयाज्जुषणज्जुषणस्स,  
 नमोहिशीलस्सअदूसणस्स ॥ नुँ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचैयनमः ॥ १२ ॥  
 अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्वाणविज्जुषणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसु-  
 पोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥  
 १३ ॥ नुँ ह्रीं श्रीं सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥  
 लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानो-  
 कुहडुहवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ नुँ ह्रीं श्रीं सम्यग्गतव-  
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविज्जाकर-  
 स्स, डुवालसंगीकमलाकरस्स ॥ सुलद्धासाजयगोयमस्स, नमोग-  
 णाधीस्सरगोयमस्स ॥ १५ ॥ नुँ ह्रीं श्रीं गौतमायनमः ॥ अथ  
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्ससत्तातिसयासयाणं, सुरा२धी सर-  
 वंदियाणं ॥ रवींडुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंहिनमोजिणाणं  
 ॥ १६ ॥ नुँ ह्रीं श्रीं जिनेज्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद  
 ॥ सव्विंदियापारविकारदारी, अकारणासेसजणावेगारी ॥ महाज-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्री  
 सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारहें ज्ञानपदपूजा  
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमंरुणस्त, संदेहसंदोहविवर्णस्त ॥ मुक्तीउपादा  
 नसुकारणस्त, नमोहिनाणस्तजसोधणस्त ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्री  
 सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव  
 ह्नीवनवारणस्त, सुबोद्धिवीजांकुरकारणस्त ॥ अणंतसंसुद्धगुणाल-  
 यस्त, नमोदयामंदिरतत्रयस्त ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्श्रुतयै  
 नमः ॥ १९ ॥ अथ बीसमें तीर्थपद ॥ तुज्यंनमःसकलविश्ववशं  
 कराय, तुज्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुज्यंनमःत्रुवनमंरुल  
 मंरुनाय, तुज्यंनमोस्तुजिनपंकविवर्णनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्री स  
 म्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥ २० ॥ ध्वजासमेत अष्ट इव्य चढावै (पीठै)  
 ६४ इंद्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधमेंझायनमः १ ॥ ॐ इशाणें  
 झायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंझायनमः ३ ॥ ॐमाहेंझायनमः ४ ॥  
 ॐब्रह्मेंझायनमः ५ ॥ ॐलांतकेंझायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंझायनमः ७  
 ॥ ॐसहस्रारेंझायनमः ८ ॥ ॐप्राणतेंझायनमः ९ ॥ ॐअ-  
 च्युतेंझायनमः १० ॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ११ ॥ ॐसूर्येंद्रायनमः १२ ॥  
 ॐचमरेंद्रायनमः १३ ॥ ॐवर्लींद्रायनमः १४ ॥ ॐधरेंद्राय  
 नमः १५ ॥ ॐजूतानेंद्रायनमः १६ ॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः १७ ॥  
 ॐवेणुदालींद्रायनमः १८ ॥ ॐहरिकांतेंद्रायनमः १९ ॥ ॐहरिस्त  
 हेंद्रायनमः २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः २१ ॥ ॐअग्निमाण  
 वेंद्रायनमः २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनमः २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः  
 २४ ॥ ॐजलकतिंद्रायनमः २५ ॥ ॐजलप्रज्ञेंद्रायनमः २६  
 ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः २८ ॥  
 ॐवेलवेंद्रायनमः २९ ॥ ॐप्रज्ञजनेंद्रायनमः ३० ॥ ॐघोषें  
 द्रायनमः ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ नैमहाकालेन्द्रायनमः ॥ ३४ ॥ नैसरूपेन्द्रायनमः ॥ ३५ ॥  
 नैप्रतिरूपेन्द्रायनमः ॥ ३६ ॥ नैपूर्णज्ञेन्द्रायनमः ३७ ॥ नैमाणज्ञेन्द्राय-  
 नमः ॥ ३८ ॥ नैजोमेन्द्रायनमः ॥ ३९ ॥ नैमहाजीमेन्द्रायनमः ॥  
 ४० ॥ नैकिन्नरेन्द्रायनमः ॥ ४१ ॥ नैकिंपुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४२ ॥ नैसत्पुरुषे-  
 द्रायनमः ॥ ४३ ॥ नैमहापुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४४ ॥ नैअमितकार्येन्द्रायनमः ॥  
 ४५ ॥ नैमहाकार्येन्द्रायनमः ॥ ४६ ॥ नैगीतरतीन्द्रायनमः ॥ ४७ ॥ नैगीत-  
 यरेन्द्रायनमः ॥ ४८ ॥ नैसन्निहितेन्द्रायनमः ॥ ४९ ॥ नैसामानि-  
 केन्द्रायनमः ॥ ५० ॥ नैधात्रेन्द्रायनमः ॥ ५१ ॥ नैविधात्रेन्द्रायनमः  
 ॥ ५२ ॥ नैरुपिन्द्रायनमः ॥ ५३ ॥ नैरुषिपालतेन्द्रायनमः ॥ ५४ ॥  
 नैश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५५ ॥ नैमहेश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५६ ॥ नैवत्सेन्द्रा-  
 यनमः ॥ ५७ ॥ नैदिसालेन्द्रायनमः ॥ ५८ ॥ नैहास्येन्द्रायनमः ॥  
 ५९ ॥ नैश्रेयसेन्द्रायनमः ॥ ६० ॥ नैहास्यस्तेन्द्रायनमः ॥ ६१ ॥  
 नैपदगेन्द्रायनमः ॥ ६२ ॥ नैपदगपतेन्द्रायनमः ॥ ६३ ॥ नैमहाश्रे-  
 येन्द्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइन्द्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-  
 देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ नैरोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ नै-  
 प्रज्ञसैनमः ॥ २ ॥ नैवज्रशृंषलायैनमः ॥ ३ ॥ नैवज्जाकुर्शयैनमः  
 ॥ ४ ॥ नैचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ नैपुरुषदत्रायैनमः ॥ ६ ॥ नैका-  
 ल्यैनमः ॥ ७ ॥ नैमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ नैगौर्यैनमः ॥ ९ ॥ नै  
 गंधार्यैनमः ॥ १० ॥ नैमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ नैमानव्यै-  
 नमः ॥ १२ ॥ नैवैरोढ्यायनमः ॥ १३ ॥ नैअवुप्तायैनमः ॥ १४  
 ॥ नैमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ नैमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षो-  
 रुश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-  
 पारी चढावै ॥ ॥ नैब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ नैपा-  
 र्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ नैगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ नैनृकुट्यैनमः  
 ॥ २१ ॥ नैवरुणायनमः ॥ २० ॥ नैकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ नैय-

कैंडायनमः ॥ १८ ॥ नैगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ नैगरुमायनमः ॥  
 १६ ॥ नैकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ नैपातालायनमः ॥ १४ ॥ नैप-  
 ण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ नैकुमारायनमः ॥ १२ ॥ नैयक्षराजाय-  
 नमः ॥ ११ ॥ नैब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ नैअजितायनमः ॥ ए ॥  
 नैविजयायनमः ॥ ८ ॥ नैनातंगायनमः ॥ ७ ॥ नैकुसमायनमः ॥  
 ६ ॥ नैतुंबुर्यैनमः ॥ ५ ॥ नैरुक्तायकायनमः ॥ ४ ॥ नैत्रिमुखा-  
 यनमः ॥ ३ ॥ नैमहायकायनमः ॥ २ ॥ नैगोमुखायनमः ॥ १ ॥  
 इति १४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ १४ यक्षणी नाम लि० ॥  
 नैचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ नैअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ नैदुरितार्यैनमः  
 ॥ ३ ॥ नैकाजिकायैनमः ॥ ४ ॥ नैमहाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ नैश्या-  
 मायैनमः ॥ ६ ॥ नैशांतार्यैनमः ॥ ७ ॥ नैभूकुट्यैनमः ॥ ८ ॥  
 नैसुतारकार्यैनमः ॥ ए ॥ नैअशोकायनमः ॥ १० ॥ नैमानव्यैनमः  
 ॥ ११ ॥ नैचंमायनमः ॥ १२ ॥ नैदिदितायैनमः ॥ १३ ॥ नैअंकु-  
 शायैनमः ॥ १४ ॥ नैकंदपार्यैनमः ॥ १५ ॥ नैनिर्वाण्यैनमः ॥  
 १६ ॥ नैबलायैनमः ॥ १७ ॥ नैधारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ नैधरणप्रियायैनमः  
 ॥ १९ ॥ नैनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ नैगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ नैअं-  
 विकार्यैनमः ॥ २२ ॥ नैपदमावत्यैनमः ॥ २३ ॥ नैसिद्धायकायै-  
 नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ नैनैसर्पका-  
 यनमः १ ॥ नैपांडुकायनमः २ ॥ नैपिंगलायनमः ३ ॥ नैसर्वरत्नायनमः  
 ४ ॥ नैमहापद्मायनमः ५ ॥ नैकालायनमः ६ ॥ नैमहाकालायनमः  
 ७ ॥ नैमाणवायनमः ८ ॥ नैशंखायनमः ९ ॥ इति नव  
 निधान पदे ए कलश चढावै ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥  
 नैविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ नैक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ नैचक्रेश्व-  
 र्यैनमः ॥ ३ ॥ नैधरणेद्रायनमः ॥ ४ ॥ नैपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥  
 नैशंखायनमः ॥ ६ ॥ नैअसंभवेनमः ॥ ७ ॥ नैयमायनमः ॥ ८ ॥

ॐ नैशताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ वायव्यै नमः ॥ ६ ॥  
 ॐ कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ नागाय नमः ॥ ९ ॥  
 ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥ १ ॥  
 ॐ चंद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्योत्स्नाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ बुधाय नमः ॥ ४ ॥  
 ॐ शुक्रेस्पतये नमः ॥ ५ ॥ ॐ शुक्राय नमः ॥ ६ ॥ ॐ शनैश्चराय नमः  
 ॥ ७ ॥ ॐ राहवै नमः ॥ ८ ॥ ॐ केतवै नमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह  
 नाम ॥ इहां बीस स्थानक मंडल पूजनकी विधि विशेष लिखी  
 है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंडल प्रतिष्ठा  
 बलबाकुलादिककी संपूर्ण विधि नवपद मंडल पूजामें लिख आएं  
 हे उस मुजबद्दी करणी । फेर विशेष विधि कराणी होय तो वि-  
 द्वाजन गुरुकों पूढे करणी ॥ इति बीसस्थानक मंडल पूजा वि० सं० ॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुऊ सानिध कीजै, जुलो  
 अक्षर जगति जणी समझाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणी ए  
 जिएरा गुण गांठ, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पांठ ॥  
 १ ॥ दक्षिण जरते अंगदेस ठै चंपानयरी, मघवा राजा राज्य करै  
 तिण जीता वयरो ॥ पाटतणी राणी रूवनी ए लखमी इण नामै,  
 आठ पूत्र जाया जिएं ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे  
 कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठों पूत्रां ऊपरां ए तिण लागै प्यारी  
 ॥ वाधै चंडतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी धाय  
 माथ पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवनी ए घर अंगण वैठी,  
 दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विच एहवी-  
 ए नही दूजी नारी, रंजना पडमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥  
 ॥ पुरुष न दीषै कोइ इसो जिएने परगानं, आंख्या आगल साल  
 वधै तिण चखन न पांठ ॥ देशना राजवी ए ततखिण तेभाया,



सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक  
 राजातणो ए वै कुमर सोजांगी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेती  
 लागी ॥ ऊजा देखै सकल लोक चढिया केइ पाला; चित्रसेनरे कंठ  
 ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार,  
 रक्षियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व  
 खत कन्यारो जानो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर  
 लाओ ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥  
 घर आया परणी करी ए हरखयो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र  
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस  
 लीधो ॥ ८ ॥ ( ढाल-प्रजु प्रणमुं रे पास जिणोत्तर थंजणो ॥ ए  
 देशी ) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुख मांही रे  
 केतलो काल बही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हुवा जला,  
 चढते पख रे चंद्र जिती चढती कला ॥ ( उछालो ) चढती कला  
 हिव राय वैठो पास वैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै क्री  
 मा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,  
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ ( चाल )  
 इक कामण रे गोख चढी छे पनी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे  
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण  
 अधिकेरो दुख हुं ॥ ( उछालो ) दुख हुवो देखी रोहिणी हिव  
 कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा  
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देखयो नही, मुऊने त-  
 मासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ ( चाल ) इण वचनै  
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए  
 दुखणी रे पूत्र मुओ तमपन करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै-तरै ॥  
 ( उछालो ) जाणै तरै तूं बात दुखनी-गरवगहली कामनी, इम

कड़ी राजा हाथ जालियो तेहना बालकजणी ॥ सातमा जूयथी  
 तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र  
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै  
 करी, थयो मुरठित रे रोवै अति आंख्या जरी ॥ पमतो सुत रे  
 सासणदेवत जालियो, कंचनमयरे सिंहासण वैसारियो ॥ ( उल्लाखो )  
 वैसारियो कर जोम आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ  
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो जूपतने अचंजो देख ए कारण  
 किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूठियै सांसो इसो ॥ १३ ॥  
 ( चाल ) चिंतवतां रे चारतिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो  
 एने तिसै ॥ सुण देशना रे पूठे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी  
 धूरवज्रव बालकतणो ॥ ( उल्लाखो ) बालकतणो जव जूप पूठै  
 कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो वली  
 ॥ श्रीगुरु पासे पाठलै जव रोहणी तप आदर्यो, तपतणो सगते  
 साधुजगते तुम्ह जवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ ( चाल ) कहै राजा रे  
 रोहणितप किम कीजियै, विधि ज्ञाखो रे जिम तुम पासे लीजियै  
 ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन  
 राजाजणी ॥ ( उल्लाखो ) राजाजणी विधि एह जंपै चंड रोहणतप  
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा-  
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे  
 कीजै तजी आलस अंगसुं ॥ १४ ॥ ( ढाल-वीर सुणो मोरी बीनती  
 ॥ ए देशी ) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो  
 एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥  
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृद्ध अशोक ॥  
 गुणनो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त०  
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आवे मंगलीक ॥

विधसुं पुष्पक पूजियै, ते पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ ॥  
 सेवा कीजै साधूनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोपीजै  
 साहमी, मनरंगे हो करष पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूं-  
 वना, भिस लेखण हो जिलमिल सुजगीस, नवरुवाली वीटणा,  
 गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण  
 दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै,  
 ते पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (हाल-धरम करो जिनवर  
 तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे  
 रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थकर पाले रे ॥ ५० ११ ॥  
 इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीयो रे ॥ चित्रसेन ने  
 रोहणी, मन सूधै संजम लीधो रे ॥ ५० २२ ॥ आठै पूत्रे आदरी,  
 दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै, धरमतणी  
 मति जागे रे ॥ ५० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल  
 शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित  
 लाया रे ॥ ५० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तवियो शिव-  
 पुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिवतणी, हिव पुन्ये सेवा पामी रे  
 ॥ ५० २५ (कलश) ॥ इम गगन डुगमुनि चंद्र वरसे ( १७२० )  
 चोथ आवण सुदि जली ॥ में कही रोहणतणी महिमा सुगुरु सु  
 ख जिम सांजली ॥ वासुपूज्य अमने थया सुप्रज्ञान चित्तनी चिंता  
 हली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्था फली ॥  
 २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करै, रोहणी न-  
 कत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन  
 करै, आगे अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढ़ावै, देव वंदना-

दिक करकै धर्मोपदेश सुणै ( श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः )  
इसका दो हजार गुणना करै, एसें सात वरस तप करणेंसें सुख  
शोभाग्य बधेगा, पूत्रादिकका शोक संताप न होगा, विशेष अधि-  
कार स्तवनसें जाणना ॥ इति रोहण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्मासी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय  
॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ वलि १  
वांछु वीरजी सुहामणा ॥ १ ॥ जावठ जंजण सेव्यां सुख करै,  
गातां नव निधि आय ॥ बारै वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै  
सहु पाप ॥ व० २ ॥ बे कर जोमी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनशासन  
राय ॥ नाम लियांथी नव निधि संपजै, दरिशाण डुरित पुलाय ॥  
व० ३ ॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणियै, एक कीयो ठम्माश ॥  
पांचे ऊणा ठ वलि जाणियै, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुत्तर  
माशखमण जग जीपता, ठ दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो  
दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ जइ महाजइ-शि  
वगति जाणियें, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि  
कियो, नहि कीयो चोथो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रति  
मा वारमी, कीधा बारै जी माश ॥ दोयसें वेला जिनजीरा जा  
णियै, इण गुणतीस विवास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिन  
जीरा जाणियै, तीन गुणतोस पचास ॥ एहमें स्वामी केवल पा  
मिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इन वीर जि  
नवर सयल सुखकर अतहि डुकर तप करी, संयमसु पाली कर्म  
टाली स्वामी शिव रमणी वरी ॥ सेवक पजणें वीर जिनवर चरण  
बंदित तुमतणा, संसार कूप पमंत राखो आपो स्वामी सुख घणा  
॥ ९ ॥ इति ठम्मासी-स्तवन ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसँ उत्कृष्ट उ  
म्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संघयण बल पराक्रम  
के हीनपणोंसँ इकसार उम्मासी तप नहिँ कर सकतेहैं तोनी उम्मा  
सीके १८० उपवास करणेंसँ जघन्य उम्मासी तपके फलकों जीव  
प्राप्त होताहे. नर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन उम्मासीतपका  
स्तुति, इस स्तवनमें वीरप्रभूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है.  
( श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः ) इसका २००० गुणना करै. वीर  
प्रभूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणेंको जावै, शुद्ध ज्ञावना  
ज्ञावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञाव लघुकर्मों  
जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति उम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उल्लट धरी दीजीयै ॥ ए देशी ॥ त्रिभुवन नाय  
क तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुज  
पदपंकज सेव रे ॥ त्रिभु० १ ॥ प्रथम भूपाल प्रभु तूं अयो, इस  
अवसरपणी काल रे ॥ तुज सम अवर न को प्रभु, तूं प्रभु दीनदयाल  
र ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥  
धर्म प्रज्ञापक प्रथमतूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर  
अरि जे आतमतणा, काल अनादि थिति जेह रे ॥ ते तप शक्तिर्यें तें  
हएया, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ ताहरी शक्ति कुणं  
कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ छद्दश माशनो तप कर्यो, तेह  
अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो,  
आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम  
सरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसै साठ उपवास ते, ते इण पंचम  
काल रे ॥ अवसर आदरै कम विना, ते पिण ज़वि सुविसाल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणे अनुसार रे ॥ पन्तिक  
मणादिक जावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त स  
माधि शुद्ध जावथी, धरे ताहरो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै,  
कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ९ ॥ काल अनादि संसारमें, ज  
न्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम  
हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरजव पुण्यथी, वलि ल  
ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्वनी रुचि अइ हे मुजै, हिव मिट्यो म  
नतणो जर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ जव२ एक जिनराजनो, सरण हो  
ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवै परिहार  
रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमार्ग सुविशाल रे  
॥ जव२ जे मुज संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥  
श्रीजिनशासन तप कह्यो, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ धन२ जे नर  
आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना  
जिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में शुण्यो धन दिन  
आजनो मुज मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि  
नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौजाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय वि-  
मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारै माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बारै माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थकर श्रीरुषजदेवस्वामी उत्कृष्ट बारै माशी तप  
स्या करी. इस वास्तै जव्यजीव बारै माशी तपस्याका जाव लायकै  
( ३६० ) तीनसेसाठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन  
देवदंननादि क्रिया करै, बारै माशी तपका स्तवन सुणै ॥ ( श्री  
रुषजदेवस्वामीनाथायनमः ॥ ) इसका १००० गुणना करै.  
तपस्या पूर्ण होनेसे सिद्धगिरी यात्रा करणको जावै. शक्ति माफक  
उद्यापन उच्च करै. इस तपस्याके प्रसाद जव्यजीवोके कजी दुख

दौनाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज बढना रहै ॥ इति वारैमा.  
जी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ इहा ॥ प्रथमं प्रथमं जिनैसरु, श्रुद्ध मने सुखकार ॥  
लब्धि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रभव्याक  
रणे प्रगट, जगवतीसूत्र मऊार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारु लब्धि  
विचार ॥ २ ॥ आंखिल तप कर ऊपजै, लब्धां अठावीस ॥ ए  
हिव परगट अरथसुं, सांजलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल  
संसारनी ॥ ) अनुक्रमे देव अधिकार गाथातणे, लब्धिना नाम-  
परिणाम सरिया जणे ॥ रोग सह जाय जसु अंग फरस्यां सही,  
प्रथम ते लब्धि वै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उपव  
समा जाणियै, बीय वप्पोसही लब्धि वखाणियै ॥ श्लेष्म उपव  
सारिखो जेहनो, तीजी खेछोसही नाम वै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना  
मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथी जछोसही नाम तेहनो ठवै ॥ केश  
नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नही रोग सव्वोसही ते कही  
॥ ६ ॥ एक इंडिय करी पांच इंडियतणा, जेद जाणे तिका नाम  
संजिणना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लब्धि-  
ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ ( ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए  
चाल ॥ ) हिव आंगुल अडियै ऊणो मानुषहेत्र, संझा पंचेडि तिहां  
जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंति जाणे थूल प्रकार, ते रुज्जु  
मति नामे अठम लब्धि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषहेत्रे संझा  
वंत, पंचेडिय जे वै तसु मन वातां तंत ॥ सुखम परजायें जाणे  
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुज नाम ॥ ९ ॥  
जिण लब्धि प्रजावें ऊमी जाय आकाश ॥ ते जंघाविज्ञाचारण  
लब्धि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिलमैं खेहं आय, ए लब्धि

इंग्यारमी आसीविस कहिवाय ॥ १० ॥ सहूँ सूखम बादर देखै  
 लोकालोक, ते केवल लबधी धारमियै सहूँ थाक ॥ गणधर पद ल  
 हियै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरब जाण  
 ॥ ११ ॥ तीर्थकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र  
 वर्त्तिपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अठारमी आखा  
 वासुदेव विस्तार ॥ १२ ॥ मिसरी घृतकीरै मेढ्याजेहसवाद, एहवी  
 लहै वाणी जगणीशम परसाद ॥ जणियो न विजलै सूत्र अरथ सुविचा  
 र, ते कुष्ट कबुद्धी बीसम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एकै पद जणियां आ  
 वै पद लख कोम, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोम ॥ एकै  
 अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक  
 ॥ १४ ॥ ( ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥ ) सो  
 लह देशतणी सही रे, दाहक सगति बखाण ॥ तेह लबधि तेबीस-  
 मी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥  
 आगमने अधिकार, च० ॥ बारू लबधि विचार ॥ च० ॥ एआंकणी  
 ॥ १५ ॥ चवद पूरबधर सुनिबरू रे, उपजंता संदेह ॥ रूप नवो रचि  
 मोकले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेस्या अगनमी  
 रे, उपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले  
 स्या सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगति सुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै  
 रूप ॥ सदगुरु कहै ठावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप ॥ च० १८  
 ॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीजानै केइ लाख ॥ तेह अस्कीणम  
 हानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्कीसनी  
 रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीशमी  
 नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेस्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार  
 ॥ जगवतीसूत्रमें ज्ञाषियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥  
 पन्नदणा आहारनी रे, कलपसूत्रगणधार ॥ तीनइ इकर मिली रे,



वांरुं आठ विचार ॥ च० १२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, बाकी ल  
वधां वीश ॥ सांजलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीस ॥  
च० १३ ॥ ( कलश ) संवत सत्तरैसे ठवीसे मेरुतेरस दिन जलै,  
श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसानलै ॥ वाचना  
चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन  
जणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ १४ ॥ इति १८ लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अष्टाईस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुद्ध दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै, अन  
क्रमसें २८ उपवास करै, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका उ  
पवास होय उसही नामका गुणना करै. तप पूर्ण होणेसे शक्ति  
मुजब नद्यापन करै. इस तपस्यासें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा  
आनंद रहै. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोरी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री  
वर्द्धमान, चरम तीर्थकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री  
गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदै पूर  
व नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे जाणिया ए ॥ ते हिव सुगुरु पसा  
य, वरणविस्त्युं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व  
उत्पाद १, दूजो अग्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति,  
नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥  
॥ ३ ॥ ठठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अठम गिणो  
ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ९, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो  
कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कळयाण ११, प्राणायु बारमो  
१२, क्रियाविशाल तेरम जणो ए १३ ॥ विंडुसार १४ इण नाम,  
चवदे ए कहा, साख अकी में संग्रहा ए ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥ ) उत्पाद पूर्व सोहामणो,  
 कोटी पद परिमाण ॥ षट ज्ञाव प्रगट है ते जिहां, त्रिपदी ज्ञाव  
 विनाण ॥ १ ॥ सर्व इव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो  
 पूर्व अग्रायणी, त्रिंशुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनी,  
 संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, ज्ञापी तीजै तेह ॥ ३ ॥  
 चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाख-  
 नी, सप्तजंगी स्यादाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो  
 जोरु ॥ मत्यादिक पण जेदसुं, पद संख्या इक कोरु ॥ ५ ॥ सत्य-  
 प्रवाद ठगो कहूं, ज्ञाषुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोरुनी,  
 ज्ञाषी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम इव्य  
 सुज्ञाव ॥ ठवीस पद कोरु जेहना, सूत्रै आण्या ज्ञाव ॥ ७ ॥ कर्म  
 प्रवादतणो द्विवै, प्रगटपणें अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना,  
 कोरुनी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहूं द्विवै, नामे प्रत्याख्या-  
 न ॥ लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ९ ॥ अति-  
 शय गुण संयुत ज्ञणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपमं  
 सातसै, कोरुनी वरस लख जान ॥ १० ॥ कढ्याण नाम इग्यारमो,  
 ठवीस कोरु प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव क-  
 ढ्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, ठप्पन्न लख इग कोरु, प्राण  
 निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आण्यो जोरु ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक  
 जे क्रिया, ठंद क्रिया सुविशाल ॥ पद संख्या नव कोरुनी, तेरमी  
 क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारविंडु चवदमो, नामे अरथ नि-  
 दाल ॥ पद संख्या इग कोरुनी, लाख पचवीस संजाल ॥ १४ ॥  
 लोकप्रत्यय देखण ज्ञणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सहस्र अरु  
 तीनसै, उर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरब संख्या ए कही, गुण-  
 मालाश्री देख ॥ आगे बुधजन सोभज्यो, वाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

( हाल ॥ यीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल ) सूत्रे गुंथे गणधरा,  
 अरथै अरिदंत ज्ञाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिमं  
 नासै रे ॥ १ ॥ वाणी रे जिएंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, तत्व  
 रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय  
 तजी करी, ग्यान जगत जर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरै,  
 प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी,  
 श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजोग  
 प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अकृत लेश ऊजला, गुंढली सुंदर कीजै रे ॥  
 नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद  
 पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै,  
 चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण थयां, ऊज-  
 मणो दिव कीजै रे ॥ घर सारू धन खरचने, नरजव लाहो लीजै  
 रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरब नास प्रमाणो रे ॥ नव-  
 करवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव  
 जुहारने, आरती मंगल कीजै रे ॥ सनात्रपूजा बलि साचवी, तत्व  
 सुधारस पीजै रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, डुरगति का-  
 रण वेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अक्षयगति वेदै रे ॥  
 ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि जणी, आगम वचने जोइ रे ॥  
 ज्ञवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं जवभ्रमण न होई रे ॥ वा० ११ ॥  
 ( कलश ) इम सयल सुखकर गछ खरतर तपै रवि जिम क्रांत ए  
 सौजाग्यसूरि सुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृत्तंत ए ॥ संवत अठारै  
 बरस विभूं नयर श्रीबालूचरै, ए स्तवन जणतां श्रवण सुणतां स-  
 यल मनवंडित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १२ पूरब तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके १४ उपवास करे, जिमं दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे ( २००० ) गुणना करै, स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम और विधि सर्व लिखी हैं इस मुजब विवेकी जीव गुरुओं समझें करै. यह तपस्याके करनेसे ज्ञानावरणादि कर्मका कथोपशम होय, शुद्ध ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेल ॥ बालक हित ज्ञानी बगसियै, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुद्ध परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ ( ढाल ॥ वीर जिणोसर उपदिसै ॥ ए देशी ) कमला जिम कुंरुणपुरै, नृजवल नरपति नीमो रे ॥ पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम० १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरै माशै रे ॥ दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशै रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रंजना रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ बंजना रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिमा पूजै शांतनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदमुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उवजायाधिप श्रीनिषदनो, नल लिखियो निलामै रे ॥ आनंदसुपंथ आवतां, पूरब पुन्य उधामै रे ॥ प० ५ ॥ मङ्गम रयणी तम जरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि जाले तेज दिनमणी, जाग्रत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै, पूढियै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसंह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पावता, टालता दुस्सह सबला रे ॥ संजम शुद्ध संजालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ८ ॥ छुहा ॥ मणि तेजै मुनि तरुण्ये, रथ अकी स्त्री जरतार ॥

देवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पा-  
 वन अथा, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परजव तिलक है, कदि  
 ये श्रीमुनिराय ॥ १० ( दाक्ष-जरत नृप जावसुं ए ॥ ए देशो ) ॥  
 मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना  
 ए ॥ कर्म शुजाशुज परजवै ए, इह जव फल निपजाय, करम  
 गति वंकी ए ॥ ११ ॥ उहिनाण जव प्रागनो ए, नृप सुणे निर  
 मल जाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जा  
 एयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२ ॥ चोअ प्रमुख  
 नृप चूपसुं ए, किरिया शुद्ध करी एह, जलै चित जावसुं ए ॥  
 ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवोस, रयण कंवर ज  
 ष्या ए ॥ १३ ॥ तिलकसुं पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम  
 सफलो गिणे ए ॥ जगवन तप विधि जाधियै ए, नज कहै बोध  
 वरीस, पीहर पट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए,  
 पट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए ॥ चोअ दोय जिन वीरना  
 ए, अजितादिक वावीस, आणा गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोपअ  
 त्रीस तीने अथा ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥  
 अथापन संघ जक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, मूधै मन साधियै  
 ए ॥ १६ ॥ सुण वाणी समकित ग्रहै ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित  
 ऊमाहीयो ए ॥ इण पर जे जवि आदरै ए, थायै चरम शरीर, मूत्र  
 सुख शासतो ए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता जविक  
 ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो  
 शिवधरां ॥ आगमे आखै सूरिय साखै सुगुरु जाषै सुण अथा, शुद्ध  
 ध्यावै जविक जावै विजय विमल जिनवर कया ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुज दिन गुरूके पास तिलकतपस्या ग्रहण करकै तीस

उपवास करै. प्रथम श्रीरुषभदेवस्वामीके ४ उपवास करै, जब  
( श्री रुषभदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना  
करै. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब ( श्रीमहावी-  
रस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना करै. और श्री  
अजितनाथस्वामीको आद लेकै ( २२ ) बाईस जगवंतोका बाईस  
उपवास करे. जब उन २ जगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना  
करे, और सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर ज्ञाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, जवि.  
प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जा-  
य ॥ ज० वी० १ ॥ कोम वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावै,  
फल तास ॥ ज० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें,  
न सुहाय ॥ ज० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो-  
पायो मल्लिनाथ ॥ ज० ॥ रूप पराव्रत कीया घणा रे लाल, आ-  
षाढजूति गणिका साथ ॥ ज० वी० ३ ॥ च्यार कषाय ठे मूलगा  
रे लाल, उत्तम सोले जेद ॥ ज० ॥ इम जव २ जमतो थको रे  
लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ ज० वी० ४ ॥ एकासन व्रत जे करे  
रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ ज० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे  
लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ ज० वी० ५ ॥ आंबिलनो फल बहु  
कह्यो रे लाल, उपजै लबधि अपार ॥ ज० ॥ उपवास करतां ज्ञा  
वसुं रे लाल, पामे जवनो पार ॥ ज० वी० ६ ॥ इम दिन शोले  
तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥ ज० ॥ देव गुरु पूजा करै  
रे लाल, मन वंछित फल आय ॥ ज० ॥ नर सुर रिद्धि पिण जो-  
गवे रे लाल, निश्चै मुगति जाय ॥ ज० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, यह च्यार कषायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलेन ४, इस  
मुजब एकेक कपायके च्यार प्रेदकरणेसँ १६ होते है, इनकों दूर कर  
लेकों प्रथम एकाशणा १, निवि २, आंखिल ३, उपवास ४, इस  
अनुक्रमसँ १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणसँ यथा  
शक्ति उद्यापन करै ॥ इति शोखिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरुके पास शुद्ध दिन पैतालीस आगमतप ग्रहण करै, २  
दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रम  
सँ उपवास वा एकाशणा करै, जिस दिन जो आगमका तप  
होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणे,  
पढ़नेवालोंकों साहाय करै, अपना शक्ति मुजब सर्व ठिकारो ज्ञान  
की वृद्धि करै ( प्रणमं श्रीगुरु पाय ) इत्यादि ज्ञानके स्तवन  
सुणे, सो आगे लिखा है, एसँ तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणसँ  
पैतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगरण  
चढ़ावै. इस तपस्याके करणसँ मुखपणा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञान  
की प्राप्ती होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

- |                             |                              |
|-----------------------------|------------------------------|
| १ श्रीआचारांगजीसूत्रायनमः   | २ श्रीसुयगमांगजीसूत्रायनमः   |
| ३ श्रीठाणांगजीसूत्रायनमः    | ४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय०     |
| ५ श्रीजगवतीजीसूत्रायनमः     | ६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा० |
| ७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा०     | ८ श्रीअंतगमदशाजीसूत्रा०      |
| ९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा० | १० श्रीप्रश्नआकरणाजीसूत्रा०  |
| ११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥   |                              |

॥ अथ बारै उपांग नाम ॥

- |                         |                           |
|-------------------------|---------------------------|
| १ श्रीउववाईजीसूत्रायनमः | २ श्रीरायपत्नीजीसूत्रायन० |
|-------------------------|---------------------------|

- ३ श्रीजीवाग्निगमजीसूत्राय०      ४ श्रीपन्नवर्णाजीसूत्रायनमः  
 ५ श्रीजंबूद्वीपपन्नतीसूत्राय०      ६ श्रीचंदपन्नतीसूत्रायनमः  
 ७ श्रीसूरपन्नतीजीसूत्राय०      ८ श्रीकप्पियाजीसूत्रायनमः  
 ९ श्रीरूप्यवर्णिसियाजीसूत्राय०      १० श्रीपुष्पियाजीसूत्रायनमः  
 ११ श्रीपूष्पचूलियाजीसूत्राय०      १२ श्रीवन्दिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

- १ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः      २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः  
 ३ श्रीदसाश्रुतस्कंधजीसूत्राय०      ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः  
 ५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय०      ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयन्ना नाम गुणना ॥

- १ चोसरणपयन्नाजीसूत्रायन०      २ संथारपयन्नाजीसूत्रायनमः  
 ३ श्रीतंडुलपयन्नाजीसूत्रायन०      ४ श्रीचंदाविज्ञियासूत्रायनमः  
 ५ श्रीगणविज्ञियासूत्रायनम०      ६ श्रीदेवविज्ञियासूत्रायनमः  
 ७ श्रीवीरशुवोजीसूत्रायनमः      ८ श्रीगन्नाचारजीसूत्रायनमः  
 ९ श्रीज्योतिष्करंजीसूत्राय०      १० श्रीमहापञ्चरकाणजीसूत्राय०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

- १ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः      २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०  
 ३ श्रीसूत्रनिर्युक्तीजीसूत्रायन०      ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्राय०  
 ५ श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय०      ६ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ प्रैतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसै श्रीतीर्थपति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ  
 प्रकाशै गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति  
 रचै, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपै सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥  
 ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करै गणधार ॥ पंचांगी युत वि-  
 स्तरै, नय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ उपम काल दुर्जिहसे, जूले बा-  
 रम अंग ॥ कंठ पावसे, लिखत कर, रचना रची अजंग ॥ ४ ॥



खंडिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चौरासी आगम  
 लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषसैं अब मिलै, आगम  
 पैतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥  
 ( ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी ) ॥ आचारांग पहि-  
 लो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगमांग दूजोअवै जी,  
 पापंभी निरधार ॥ जगतगुरु ज्ञाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाणा  
 ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस ठत्तीस जल प्रश्नो  
 जी, जगवई अंग विद्वात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता ज्ञानी जी,  
 दस आवक व्रतधार ॥ दसानुपासक सातमो जी, अंग कह्यो निर-  
 धार ॥ ज० ३ ॥ अंतगरु केवली जे थया जी, वरणन अष्टम  
 अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥  
 अंगुष्ठादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल  
 ज्ञाषिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अठार सहस आ-  
 चारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ण संख्याते पद हुवे जी,  
 ठाण डुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोणिक  
 अंवरु रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांजल जविजन चूंप ॥  
 ज० ७ ॥ सूरियांज पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ इव  
 ज्ञाव बिहुं जेदसूं जी, रायप्रभू चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो  
 अजिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाजिगम तीजो कह्यो  
 जी, सुर कृत बहु विध ज्ञाव ॥ ज० ९ ॥ पन्नवणामें जाणज्यो  
 जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुण  
 धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नर्त्ता बिहुं जाण ॥ कप्पिया  
 कप्पवर्णिसियाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया  
 जाणीये जी, वन्हिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिठाणज्यो  
 जी, सांजलता सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ खयाली लाल,

અણવટ રંગ લાગો ॥ એ દેશી ) ॥ ઘેદતણા પ્રાયશ્ચિતના જી, ઘેદ ઠેઠે એ  
 જાણ ॥ વૃહત્કલ્પ વિવહારમેં જી, જ્ઞાણો જગવંત જ્ઞાન ॥ સુજ્ઞા  
 ની લાલ ફણસું નિત રાચો ॥ રાચો ૨ રે જીવિક દિલદાર, ફણસું  
 નિત રાચો ॥ સુજ્ઞા ૦ ૧ ॥ મહાનિશીથે જ્ઞાણિયો જી, જિનપૂજા  
 વિહું જેદ ॥ શ્રાવક ઇચ્છે જાવસૂં જી, મુનિવર જાવ ઝમેદ ॥ સુ  
 જ્ઞા ૦ ૨ ॥ જીતકલ્પ વલિ નિસીત ઢે જી, ઝર દશાશ્રુતસ્કંધ ॥  
 દશ પયત્તા જાણિયે જી, ચૌસરણ સંયાર પ્રબંધ ॥ સુ ૦ ૩ ॥ તંડ  
 લવયાલી ચંદાવિજ્ઞયા, ગણવિદ્યા અજિધાન ॥ દેવવિજ્ઞયા વીરધુવો  
 જી, ગઢાચાર નિધાન ॥ સુ ૦ ૪ ॥ જ્યોતિકરંમ, મહા પચ્ચંસ્કાણ  
 જી, વ્યાર સૂત્રઢે મૂલ ॥ આવશ્યક દશમીકાલિક જી, ઉત્તરધ્યયન  
 અમૂલ ॥ સુ ૦ ૫ ॥ વ્યારે અનુયોગે કરી જી, રચના સૂત્રે જાણ ॥  
 તેદ ન્યાય નિકેપથી જી, અનુયોગદ્વાર પ્રધાન ॥ સૂ ૦ ૬ ॥ દ્રવ્યાનુ  
 જોગ ઠેઠે દ્રવ્યની જી, ચર્ચા વિધિ વિસ્તાર ॥ ચરણ કરણ અનુયો  
 ગમેં જી, મુનિ શ્રાવક આચાર ॥ સૂ ૦ ૭ ॥ ગણતાનુયોગ ગણના  
 કરી જી, પૃથ્વી નિરી વિમાણ ॥ વર્મમૂલ ઘનમૂલથી જી, જાણો  
 ચતુરસુજાણ ॥ સુ ૦ ૮ ॥ ધર્મકથા અનુયોગમેં જી, ધર્મકથા દૃષ્ટાંત  
 ॥ એ વ્યારોં વિસ્તારોયા જી, પેંતાલીસ સિદ્ધાંત ॥ સુ ૦ ૯ ॥ (ઢાલ  
 તીસરી ॥ સાંગાનેર વિરાજે ॥ એ દેશી ) ॥ સુણ ૨ ગોતમવાણી,  
 હંમે વીર વેદે ગુણખાણી રે, જીવિયાં આગમસું મન લાવો ॥ મન  
 કલ્પિત વાત મ ગાવો રે ॥ જ ૦ આ ૦ ૧ ॥ નંદીસૂત્ર ચિરનંદો, યામેં  
 પંચજ્ઞાનને વંદો રે ॥ જ ૦ આ ૦ ॥ જ્ઞાનના જેદ વલાણ્યા, મતિ  
 અઠાવીસે આણ્યા રે ॥ જ ૦ આ ૦ ૨ ॥ શ્રુત ચંવદે વીસાં જેદે, એમિ  
 ય્યામતને ઘેદે રે ॥ જ ૦ આ ૦ ॥ અવધિજ્ઞ અસંખ્ય પ્રકારે, મનપર્ય  
 વ હુય જેદ ધારે રે ॥ જ ૦ આ ૦ ૩ ॥ કેવલ એક પ્રકારે, એ સર્વ  
 વિધિ નંદી જાણે રે ॥ જ ૦ આ ૦ ॥ એતો સદુ આગમની નૂંદ, સ્યા-

द्वाद गंगनी वूद रे ॥ ज्ञ० आ० ४ ॥ अंग नपांगनी टीका, कर्ताने  
 नमूं निरञ्जीका रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअजय  
 देव बलिहारी रे ॥ ज्ञ० आ० ५ ॥ मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि  
 कने सिर नामी रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ सामान्य विशेषे ज्ञाखी, निश्चय वि  
 वहार वै सांखी रे ॥ ज्ञ० आ० ६ ॥ उत्सर्ग वचन ठेकेड, अपवाद  
 वचनने लेख रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंठित स  
 गला साधो रे ॥ ज्ञ० आ० ७ ॥ ( ढाल ४ ॥ मंगल कमला कंद ए  
 ॥ ए देशी ) ॥ पैतालीस आर्गमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो  
 हित ज्ञणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपथी कर्म  
 जाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति ठते उपवास ए, आंबिल निविधी न  
 खास ए ॥ एकासण अथवा करै ए, इम पैतालीस दिन आचरे ए  
 ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक  
 मण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३ ॥ नजमणो  
 हित चित करे ए, गुरु ज्ञक्ति चित्तसुं आदरे ए ॥ ज्ञक्ति करै साहमीतणी  
 ए, जे पढय पढावै ते ज्ञणी ए ॥ ४ ॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए,  
 तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमथा  
 लवै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ ( कलश ) शुभ नंद सर । नधि चंद्र  
 वरयै माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर वीकानेर सुंदर वृहत्खरतर  
 गण धरो ॥ गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक रामगणि रुद्धिसार ए, इ  
 म करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयप्रकार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै. ११  
 दिन उपवास वा एकसिणा करै. जिस दिन जो गणधर माहारा  
 जंका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोंका नाम गुणनो ॥

१ श्रीइंझूतिगणधरायनमः २ श्रीअभिज्ञूतिगणधरायनमः

- ३ श्रीवायुजूतिगणधरायनमः      ४ श्रीव्यक्तजूतिगणधरायनमः  
 ५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय०      ६ श्रीमन्मिहस्वामीगणधराय०  
 ७ श्रीमोर्यपूत्रजीगणधरायनमः      ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०  
 ९ श्रीअचलजीगणधरायनमः      १० श्रीमेतार्थजीगणधरायनमः  
 ११ श्रीप्रज्ञवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर जगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान दांडसांगीके रचना करणेवाले ज्ञेये, इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै, गणधरपदकी आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होणेसे गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी ज्ञति करै, यथाशक्ति परमान्न भोजनसे साहमी बद्ध करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥

प्रथम ५ साधियां करै (नमंतसामंत) यह गाथा पढ़के शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियावही पम्किने, एक लोगस्सका काजसग करै, पार कै प्रगट लोगस्स कहै, नीचा बैठकै मुंहपत्ती पम्किने है, दो वांदणा देवै, स्थापनाजी को खमासमण देई (जगवान अमुक तप गहणत्थं चेश्यं वंदावेहं) एसा कह चैत्यवंदन करै, एमो-  
 न्नुणं इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्नबु० कह ४ पुई कहै, चौथी गाथा कहकै नीचा बैठके एमोनुणं कहै, फेर खमा होके (श्रीशांतिनाथस्वामी आराधनार्थ करेमिकाजसगं अन्नबु०) कहकै १ लोगस्सका काजसग करै, पार कै नमोर्हतसिद्धा० कहकै (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ स्त्रैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाज्यर्चितां हृथे ॥ १ ॥ यह पुई कहकै (शांतिदेवताआराधनार्थकरेमिकाजसगं अन्नत्थु०) कहै, एकेक नवकाराका काजसग करै, पुई पढै, (शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिदिशतुमे गुरुः ॥ शांतिरेव सदातेषा,

येषांशांतिर्गृहे २ ॥१॥) पीठे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी जुवनदेवता-  
 की स्तुति कान्तसंग एकैक नवकारका करके अनुक्रमसें कहे. पीठे  
 शासनदेवताका कान्तसंग एक नवकारका करै (यापातिशासनं जैनं,  
 संद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ सान्निप्रेतसमृद्धर्थ, जूयाञ्चासनदेवता ॥१॥ )  
 पीठे समस्त वैयावृति कर आराधनार्थ करैमि कान्तसंग अन्नबु०  
 एक नवकारका कान्तसंग करै, पार कै (श्रीशक्रप्रमुखायद्वा, जिन-  
 शासनसंस्थिताः ॥ देवान्देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षंत्वपायतः) यह  
 शुई कहकै नीचा बैठके नमोत्युणं कहै, जयविराय पर्यंत चैत्यवंदन  
 करै, फेरं खमासमण देके (जगवन् अमुक तप ग्रहणं करैमि  
 कान्तसंग) एक लोगस्तका कान्तसंग करै, पार के प्रगट लोगस्त  
 कहै, खमासमण देके ३ नवकार गुण. फेर खमासमण देकै  
 (इच्छकार जगवन् अमुक तप ग्रहण दंभक उच्चरावो जी) गुरु कहै  
 (उच्चरावेमो) पीठे (अहसंजंतेतुह्माणंसमीवे अमुकतवंउपसंपञ्जा-  
 चाणंविहरामि ॥ तंजहा दवन् कालन् जावन् दवन्णं अमुकतवं  
 खिन्नणंइत्तावा अन्नबुदा कालन्णं जावपरिमाणं जावन्णं जाव-  
 गहेणंनगहिज्जामि जावबलेणंनठलिज्जामि सन्निवाएणंनज्जविज्जामि  
 जावअस्सेणवा केणइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेपरिणामोनप-  
 रिवज्जइ तावमेएसतवो अन्नबरायान्नियोगेणं गणान्नियोगेणं बलान्न  
 योगेणं देवान्नियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तोक्तारेणं अन्नत्थणाजोगेणं  
 सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहि वत्तियागारेणं वोसिरामि॥)  
 जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ बेर यह  
 पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो आपनाचार्यजी समझै तीन बार यह  
 पाठ पढ़ै, पीठे गुरु कहै ( हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तडुज्जयेणं सम्म-  
 धारणीयं गुरुगुणेहिंबुद्धाहि नित्यारगपारगाहोहि ) एसो गुरु कहै.  
 पीठे खमासमण देके गुरुमुखे पञ्चखाण करै अथवा गुरु नहीं होय

तो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करै इरियावही पम्किमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पम्किहै २ वांङणा देवै ( इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्नुप्पेअम्हं अमुक तप पारावेह ) गुरु कहे ( पारावेमो ) इच्छामिख-मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्समणत्वं करेमि कान्तसग्गं अन्नत्तू० कहेके १ नवकारका कान्तसग्ग करे, स्तुतिकी गाथा कहे, पीठै एमोत्तूणं कहे, बैठकै जगवन् अमुक तप करतां अविधि आशातनायें करी जो कोइ दूषण लागो होय सो मन वचन कायायें कर मिच्छामिउक्कमं. और ज्ञानज्जत्ति इव्यसें जावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होणा. गुरु कहे ( नि-वारगपारगाहोह ) पीठे पच्चरकाण करै, अमुक तप आलोयण नि-मेत्तं करेमि कान्तसग्गं अन्नत्तू० कहेके ४ लोगस्सका कान्तसग्ग करै, प्रगट लोगस्स कहे, पीठै उपगरण पात्र ज्जत्त पानादिकसें साधुज्ज-त्ते करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढेवाले तथा पढा-गेवाले विद्यागुरुकी ज्जत्ति करै, साहमी बहल करै, पहरावणी करै, पीठे याचकोंका दान सन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, बैठी परखद बारजी ॥ अमृ-त वचन सुणी अति मीठा, पाने हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणो २ ॥ श्रावक उपधान बह्या विन, किम सुजै नवकार जी ॥ उत्त-म अध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एइ ज्ञेयो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २ ॥ महानिशीत सिद्धांत मांहे पिया, उपधान तप विस्तार जी, अनु-त्तम सुद्ध परंपर दीसे, सुविहित गह्व आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप उपधान बह्यां विन किरिया, तुह्व अलप फल जाण जी, जे

उपधान बह्यां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-  
 नी आण विरायै, जमस्यै जव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अघज्या  
 घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता  
 आदेश निरदेश, काम सैरै नहि कोय जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ इक धेवरने  
 खांते जरियो, अतिघणो मीठो आय जी ॥ एक श्रावक उपधान वेह  
 तो, धन३ ते कहिवाय जी ॥ सु० ॥ ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो  
 तप पहिलो वीसरु जाण, ऽरियावहीनो तप बीजो वीस  
 रु आण ॥ इण बिहुं उपधाने निश्चै नाण मंमाण, वारे उपवासै  
 गुरु मुख वे वे वाण ॥ ८ ॥ पैत्रीसरु त्रीजो एमोत्रुणं उपधान,  
 त्रिण वायण उगणोस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चो  
 थो चोकरु एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ए ॥ पांचमो  
 लोगस्त तप अढावीसरु नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रि  
 ण ठाम ॥ पुस्करवरदी तप ठो ठकरु सार, साढात्रण उपवासे  
 वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान म  
 ल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै वलि  
 गुरुमुख सरस रसाल, गठनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥  
 माल पहरण अवसर आणी मन उठंग, घर सारु वारु खरचै धन  
 बहु जंग ॥ अति उठव कीजै रातीजोगो दिख खोल, गीत गान गवा  
 वै पावै अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान,  
 विधिसों जे वडै, ते सूयो किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद,  
 जीव जतन करइ, पूंजि२ पगलां जरै ए ॥ १३ ॥ न करै  
 क्रोध कयाय, इम३ हसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥  
 नाणे घरनो मोह, उत्कृष्टी करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥  
 पहुर सीम सिझाय, करि पोरसि जशी, उंचै स्वर बोलै नही ए ॥

मन माँहें जावै एम, धन २ ए दिन, नरञ्जव मोहि सफल सँदी ए  
॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती वहै, पहिरै माल सोहामणी  
ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अति-  
धली ए ॥ १६ ॥ परञ्जव पामे रुद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसवद्ध  
नाटक पमै ए ॥ जानै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती  
पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ ( कलश ) इम वीर जिनवर जुवन  
दिनयर माता त्रिसला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम जवि-  
य जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनी  
सरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर जणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥  
इति सात उपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्याह्न समे सु-  
हागणस्त्री चांदी आदिके आलके अंदर कुंकुमका साधिया करकै  
ऊपर चावलोंका करै, पांच सुपारी १ नालेर धरकै माला पधराके  
सुहागणस्त्री अपणें हाथसँ सिर पर धरै, पीठें सब संघ समेत गीत  
गाते वाजित्र वाजते गुरु पास आवै, सधवस्त्री गुंदली करै, और  
स्त्रियां गहुंली गावै, पीठें गुरु उर्ध्व सासँसँ वर्द्धमान विद्यासँ मंत्रकर  
वासकेपसँ माला प्रतिष्ठित करै, यथा ॥ उँहँीणमोअरिहंताणं ।  
उँहँीणमोसिद्धाणं । उँहँीणमोआयरियाणं । उँहँीणमोउवझायाणं ।  
उँहँीणमोलोएसबसाहूणं । उँहँीणमोअरहउ जगवउ वद्धमाणसा-  
मिस्त ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सबबसिद्धिए उँहँी ठः ठः ठः  
स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीठें वाजित्र वाजते स्वस्थानके  
आवै, बाजोठ पर आल रस्कै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै,  
श्रीफलादिककी प्रज्ञावना करै, पीठें मालाग्राहक प्रज्ञात समे प्रति-  
क्रमण करकै पमिलेइण देववंदनादि करकै जिनपूजा करै, पीठें



मुहुर्तकी वखत बाजिब्रादि उज्जव संघ समेत गुरु पास आवै, पाच श्रीफल रोक डव्य हाथमें लेके पढ़ले जो नांदकी थापना करी दे-नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वसी ठवणी पर मोलीसे लपेटके आपे सो उस नांदके च्यारों खूणो पर च्यार साधिया कुंकुं नर चावलोका करके नारेल नर रोक मोहर वगेरे जेट करै. साधियों पर अछे विदामादि फल चढ़ावै. पीठे मालाग्राहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरुके संग इरियावही पम्किमे. पीठे आवक खमासमण देके आवकमुहपत्ती पम्किहै, फेर खमासमण देके इच्छकारजगवन् तुझे अम्मं संघपति मालाआरोहावणि देववंदा मणि वासनिक्षेप करो. तब गुरु वासक्षेप करै. पीठे फेर खमासमण देई तुझे अहं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेइ, आवक इच्छं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम खमासमण देके इच्छा० जगवन् चैत्यवंदन करुं. गुरु कहे करेइ. पीठे गुरु चैत्यवंदन बोलै. आवक एमोबुणं कहे अरिहंत चेइयाणं क० कहके एक नवकारका काजसग करै, नमोईत्सिद्धा० कहके गुरु स्तुति कहै. यथा ॥ अहंतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोनरैः । अप्पेइसकला जेहि । रहंसासहसोव्यते ॥ १ ॥ पीठे लोगस्सज्जो० सबलोए० वंदणव० अन्नबु० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. उमितिमंतायं । शासनस्थनतासदायदंहीच । आश्रियंतेश्रियांते । जवतोशजिनापातु ॥ २ ॥ पीठे पुस्करवर० वंदन० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. नवतत्त्वयुतात्रिपदी । मिश्रेतारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकी र्त्तिविद्या । नद्यास्याज्जैनगीज्जीयात् ॥ ३ ॥ पीठे सिद्धाणंबुद्धाणं० ततः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काजसगं वंदणव० अन्नबु० कहके एक लोगस्सका काजसग करै, नमोईत्० स्तुति कहै ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदा ।  
 सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं०  
 एक नवकारका० पारके नमोर्दत्तसि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजो  
 पांगासदास्फुरदुपांगा । जवतादनुपहतमहा । नमोपहाद्वादसांगीव ॥  
 ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काजसगं अन्नबु० कहके  
 १ नवकारका० नमोर्दत्तसि० ॥ वदवदतीवागवादनी । जगवतिकःश्रु  
 तगमेबु । रंगसरंगमितिवर । तरणीस्तुज्यंनमश्तिहः ॥ ६ ॥ ततः  
 शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नबु० १ नवकारका० स्तुति॥  
 उपसर्गविलयवियन । निरत्तीजिनशासनावनैकरता । हतमिहसमिही-  
 तत्कृते । स्थुशासेनैदेवताजवतु ॥ ७ ॥ पीठै समस्त वेयावञ्चकरा-  
 णं शंतिकराणं सम्मदिदिसमाहिकराणं अन्नबु० १ नवकारका का-  
 जसग स्तुति०॥ संघत्रयेगुरुगुणोघनिधोसुवैया । ब्रत्यादिकृत्यकरणैक  
 निवद्धकं । तैशांतयेसहजवंतुमुरासुरीजिः । सष्टृष्टयोनिखिलविघ्न  
 विधातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोबूखं जावंतिचे०  
 नमोर्दत्तसि० कहकै स्तवन कहै ॥ नैमितिनमो जगवत । अरिहंत  
 सिद्धाचारियजवजाए । वरसवसाहूमुणिसंघ । धम्मतिज्यपवयण  
 स्त ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतहजगवइ । सुयदेवयाइसुहयाए । सिव  
 संतिदेवयाय । सिपवयणवदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमनेरइया ।  
 वरुणोवायुकुवेरईसाणा । वंजोनागुत्तिइशम । मवियसुदिसाणपाला  
 ण ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासवाणंतहयपंचण्हं । तहलोगपा-  
 लयाणं । सुराई गहाणयनवन्हं ॥ ४ ॥ साहंतस्तसमरकं । मज्झमिणंचेव-  
 धम्मणुवाणं । सिद्धिमविग्गंजु । जिणाणंनवकारज्जणियं ॥ ५ ॥ इति  
 स्तवनं ॥ जयवीराय कहै पीठै जगवान आगे परुदा करके मालाग्राह  
 क गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनार्थे वांढे, पीठै खमा होके कहै इच्छकार  
 ज० तुझे अहं संघपति मालाआरोहावणी उद्देसावणी नंदीसुत्र

संज्ञलावली कान्तसंग करावो. गुरु कहे करेह. इष्टं. संघपतिमाला  
 आरो० उद्दे० करेमि कान्तसंगं अन्ननु० कहके ? लोगस्तका का०  
 प्रगट लोगस्त कहे, गुरुजी कान्तसंग करै, पीठै मालाग्राहक खमा  
 समण देइ इच्छाकार जगवन् नंदीसूत्र संज्ञलावो, तब गुरु खमा  
 होकर हाथमें वासकपे लेके तीन नवकार सुणावै, नित्यारगपार  
 गाहोइ कहके मस्तक पर वासकपे करै, पीठै श्रावक खमासमण  
 देके इच्छा० संघपति माला उद्देसन्, गुरु कहे उद्देसन्. फेर श्रावक  
 इच्छामि० इच्छाका० किंजलामी, गुरु कहे वंदित. पवेइ, खमासमण देके  
 इष्टं तुह्ये अहं संघपति माला उद्दिन इच्छामो अणुसंतिं उदिदि२ ख  
 मासमणाणं इत्येणं सुत्तेणं अत्येणं तदुज्जयेणं जोगकरीजाहि गुरु  
 गुणबुद्धीजाहि नित्यारगपारगाहोइ. फेर खमासमण देइ तुह्याणं  
 पवेइ संदिसइ साधुणंपवेमी, गुरु कहे पवेइ. पीठै खमासमण  
 देके तीन नवकार गुणता जया नांदकुं तीन प्रदक्षिणा देवे वासकपे  
 चढावै. गुरु ? प्रदक्षिणा देवे. पीठै मालाग्राहक मूहपत्ती परिलेहै,  
 खमासमण देके इच्छाका० तुह्याणंपवेइयं संदिसइ जगवन् कान्तसंग  
 करेमी इच्छामी० इच्छाका० जगवन् तुह्ये अहं संघपति माला उद्दे  
 सामणी आरोहावली करेमिकान्तसंगं अन्ननु० कहके ? लोगस्तके  
 कान्तसंग प्रगट लोगस्त कहे पीठै खमासमण देके वेसणो संदिसाउं  
 दूजै खमासणे वेसणो वाउं, पीठै खमासमण देके जो विधि करत  
 अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायार्थ करी नि  
 इति नांदकी क्रिया ॥ पीठै मालाग्राहक जगवानके नव अंग नव र  
 थिया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करै, मुंडुर्त्तकी वखत मंदरजी  
 बाहिर जमीन खुदी होय तो जगवानके सनमुख सर्व संघ आय  
 ग्यसा रहे, पीठै मालाग्राहक गुरुके पास आके नव अंग पूजा करे, न  
 कपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्ते जेठ धरै. पीठै गुरु उर्ध्वभासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणै, पीठै जो माला पहिरावै जिसको माला पहिरायेवाला यथाशक्ति पहिरामणी करै. माला पहिरायेवाला उर्ध्व-  
श्वासें करी संघपतिकों माला पहिरावै, दोनुं जणें ८ दिन तक सच्चित्त  
कुशीलादिकका गुरु पास पञ्चखाण करै, पीठै मंदरजी पर चढ़ाए-  
की थजा सो संघपति थालमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्र-  
दक्षणा देकर गुरु पास चासकेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर  
चढ़ावै, पीठै सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवै, साधमी वात्स-  
ल्य करै ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुछ तो शास्त्रोके लिखतमें कुछएक दे-  
देखलेमें आई जो परंपरा सो लिखते हैं ॥ उपधानवाला श्रावक  
विगयोमेंसें एक घीहीज लेता है उर विकृती नहीं लेता १, उप-  
धानमें तीस विगयोंकी नीवीतोंमेंसें एकही नीवीता लेणा का-  
रणयोगसें खांन वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कट इव्यादिक नही  
लेणा ३, घी तेलका वधारचा साग ज़ी नहीं लेणा धूंगारचा हुवा  
लेणा ४, हरासाग नीलोती नहि लेणा ५, तलाहुवा प्रापर सीरा  
वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरषणेवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसें  
स्त्री शुद्ध होती है अन्यथा नही ७, अन्न पुरषणेवाली स्त्री फटावस्त्र  
अथवा कारीलगावस्त्र नहि पहरे ८, नोजन करणेकी जगा ऊरू  
वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित्त करै अखंमित वस्त्र रखे तो शुद्ध ९,  
जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रखे हैं  
वो सब नोगानोगकी दोनों वखत पमिलेहणा करणी १०, जीनणके  
ठिकाणे जो जो थाली कटोरा वगेरे रखेहे वो सब नोजन करे जिस  
दिन पादोनपोरसीमें पमिलेहणाकी वखतही पमिलेहणा दूसरी  
वखत अन्यथा नही ११, कदाचित्-हार कुंमलदिक गहणा अपणे

शरीरसें उतारके अपने घरादिकमें रखा होय तब विना उपधान-  
 वाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसें  
 रातका दिनका नही वह उपधानवाहीकूं देवै नर वोही स्त्री प्रजात  
 समें उनके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवै ११, उपधानमें सर्व वस्त्र  
 आप अथवा मातृकणके हाथसें पन्निखेह्यां शुद्ध होय १२, सब  
 क्रिया अनुष्ठानादिक आदेस निर्देसादिक मातृकणके आदेससें शुद्ध  
 होय १३, क्रिया अनुष्ठानकी कराणेवाली मातृकण जी दोनुं वखत  
 पन्निक्मण करै रात्री प्रायश्चित्त करै सात बेर देव वांटे तब शुद्ध  
 होय अन्यथा नही १४, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नही गिणे  
 जाय १५, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी  
 सातम आठम नवम दिन तीन तपस्यामें नही गिणे जाय १६,  
 प्रतिक्रमणमें प्रजात समें नवकारसीकाही पञ्चस्काण करै पीठे  
 क्रिया करती वखत गुरुके पास उपवास १ अथवा आंबिल  
 २ नीवी ३ अथवा एकासणोका ४ करै १७, पञ्चस्काण पारती  
 वखत पहली नवकारसी पारै पीठे उपवासादिक पारै १८, पहले  
 दो उपधान तप ग्रहण करणेके दोनों दिन नंदीके आरुंवरसें देरी  
 हो जाती हे इस वास्ते अठपहरी पोसा वण नहि आता इस  
 वास्ते तीसरे पहरकी पन्निखेहण किये बाद सर्वोपगरणोकूं पन्नि-  
 खेहके रातकूं निश्चै पोसा लेणा २०, प्रजातसमें उपधानवाही गुरु-  
 के पास आयके इरियावही पन्निखेहके पोषय वपुन सामायक लेके  
 वस्त्र पन्निखेहणा नर अंग पन्निखेहणा करै, पीठे मुहपत्ती पन्निखे-  
 हके (उहीपन्निखेहणसंदिस्तानं उहीपन्निखेहणकरूं) ऐसे खमासण  
 होय देवे पीठे ठव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवै उसका  
 क्रम ऐसे हैं बहुवेलंसंदिस्तानं १ बहुवेलंकरूं वैसणोसंदि० वैसणो-  
 गानं० सिझायसं० सिझायक० पांगरणोसं० पांगरणोपन्निगहुं

कंठासणोसं० कंठासणोपनिगहूं) एवं१० ॥ २१, पीठै वंदन दिया  
 वाद सुख तप पूजा २२, सांजकूं जी यही क्रिया करणी लेकिन  
 इतना विशेष हे पट पमिलेहणा नर अंग पमिलेहणा तो करै परंतु  
 उपधि पमिलेहण नही करै, पीठै गुरुवंदन ठव दिये वाद स्वमासमण  
 दस देवै (नहीपमिलेहणसंदिस्सा० नहीपमिलेहणकरूं सिज्जायसं०  
 सिज्जायक० वैसणोसंदिस्सा० वैसणोठांजं) बाकी पहलीकी तरै २२,  
 न्यारा पमिक्कमणा होणोसैं पाकीवंदना सुखतपपूजना पर्यंत क्रिया  
 सब करदेना २३, माला पहरणोमें सांजकूं माला मंत्रायके अपने  
 घर रात्रीजागरण करकै प्रज्ञातसमें आचार्य पास माला पहरणी  
 तिसके वाद दिन दश तक दशाहिका करणी उहां पोसा नही  
 लिया हुआ जी हे तो जी तिविहार एकासणा करताजया निरा-  
 रंजी होकर रहै २४, सज्जी उपधान उत्कृष्ट विधिसें वहना, उसके  
 अज्ञावमें श्रावक एकांतर उपवास नर साधुओंने उपवास आमल  
 निवी एकासणा करकै उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन  
 दिन संख्याका नियन नहीं हे ॥ इति नित्यकर्तव्यता समयसुंदरो-  
 पाध्याय कृत संस्कृतोपरिअस्मद् कृत ज्ञाषा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान वहणेवाला बारे  
 उपवाश अथवा चोवीस आंबिल ३५ नीवी अरुतालीस एकासणा  
 करके १२ उपवासकी पैठ पूर कर पीठै पांच अध्ययनकी वाचना  
 नमो अरिहंताणंसें लेके नमो लोएसवसाहूणं तककी १ वाचना  
 एक दिनमें लेवे, तिसके वाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमो-  
 क्कारो १, सबपावप्पणासणो २, मंगलाणंचल्लवेसिं पढमंहवइमंगल ॥ एवं  
 ३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आठ  
 अध्ययनोंकी एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो ठवतो आंबिल करै,

फेर तेला करे, तेलेके पारणे आंखिल करै, फेर तेला करै, फेर आंखिल करे, फेर तेला कर पारणा करके आठ अध्ययनौकी एकही दिनमें वाचना लेवे. आठ आंखिल ३ तीन तेला मिलायेसे उपवास १२ जये. यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविविसें करे तो पोसा २० वीस करै उपवास १२ करै, विधिसुं वहे तो १६ पोसा उपवास १२॥ यह पहिला वीसरुतप २०॥ अब दूसरा इरियावह्नीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें जी अगलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीठै इच्छाकारेणसंदिस्तहसुं लेकर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेदियासे लेकर ठामिकानुसंगं तक दूसरी वाचना देणी, उर एकही वाचना लेणी होय तो पहली तरे आठ आंखिल ३ तेला करके लेवै॥ इरियावहिया श्रुतस्कंधका तप वीसरु नामका अविविसें पोसा २० उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२॥ ॥ अब तीसरा जावारिहंतका तीसरा उपधान उगणीस उपवासांकी पैठरकर वाचना ३ लेवे सो इस सुजव. पहली १ तेला करै पीठै नमोब्रुणंसे लेकर गंधद्वीणं तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६ आंखिल करै, लोगुत्तमाणंसे लेकर धम्मवरचानुरंतचक्रवट्टीणं तक दूसरी वाचना लेवै २, पीठै सोले आंखिल करके अप्पमिहयवरणाणंसे लेकर सवेत्तिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३, यह तीसरा उपधान नमोब्रुणका पैत्रीसरु नामका जिसमें उपवास १९ विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविविधिसुं करता पोसा उपवास ॥ ॥ अथ चोथा स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका उपधान अध्ययन तीन, जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंखिल तीन करै. अरिहंतचेइयाणं इहांसे लेकर वंदणवत्तिथाए अन्नञ्जुत्तसीएणं अप्पाणं वोसिरामि तक १ वाचना लेणी. यह आपनारिहंतका



चोथा उपधान चतुर्कर्म नामका जिसमें पोसा, ४ उपवास १॥  
 अठाई ॥ ॥ नामारिहंत चतुर्वीसत्येका पहले तेला करै, पीठै  
 लोगस्तनज्जोयगरे इहांसे लेके चतुर्वीसंपिठेवली तक पहली वाचना  
 लेवै, फेर बारे आंबिल करके नसज्जमजियंचवंदे इहांसे लेकर पास-  
 तद्वदमांछ तक दूसरी वाचना देणी, फेर तरे आंबिल करके एवम-  
 एअजित्युआसे लेकर सिद्धासिद्धिममदिसंतु तक तीसरी वाचना  
 लेवै, ए नामारिहंत चतुर्वीसत्येका अठावीसकनाम तप विधिसुं व-  
 दतां दिन २० पोसा २० उपवास साढापनरे एकांतर करै, अवि-  
 धि करता दिन अठाईस पोसा २० उपवास साढासतरे ॥ ५ ॥

सुत्रार्थश्रुतस्कंध पहली १ उपवास पीठै ५ आंबिल पीठै पुस्कर-  
 वरदीवठेसे लेकर सुयस्तज्जगवतुकरेमिकानसगं तक एक वाचना  
 देणी, यह ठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम ठकन पोसा ६ उपवास  
 साढातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान  
 पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीठै सिद्धार्थबुद्धार्थसे ले-  
 के तारेइनरिवनारिवा तक एक वाचना देणी, यह सातमा उपधान  
 मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अब उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब वहीत श्रावक अथवा वहीत श्रावकएया उपधान  
 वहे तब तो संघके नामसे चंद्रमा अछा देखना, संघकी कुंजरास  
 हे, अगर एक श्रावक अथवा एकही श्रावकणी उपधान वहे तो  
 अपणे नामसे चंद्रबल लेवै तथा उपधानवाही सांजहुं वाचनाचार्य  
 के पास आयके इरियावही पन्तिकमके स्वमासमण देके कहे (अमुक  
 उपधान तपे पवेतह) गुरु कहे (पवेसामो, नवकारसी करणा अंग  
 पमिलेहण संदिस्साणा) तब उपधानवाही कहे (तद्वत्ति) इहां इमा  
 श्रमण दिखे वाद चोवीहार करै, चाहेपाणी पीवै वा अथवा जोजन



करे व्यवस्था नहीं है, अथ किसी जी कारण करके सांजकू खमासण नहीं दिया होय तो तब पन्तिकमणके वखतसे पहली पिठली रातकू जी खमासण देणा काल वखत पन्तिकमणा करणा नवकारस्तीका पञ्चस्काण मालकण पास करणा पीठै सूर्य उदय जये वाद वाचनाचार्य पास आणा, तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके उर इरियावदीके) तो प्रारंभमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी उर उत्क्षेप जी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा, इस उपरांत बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नहीं है, तिसके बाद प्रजातसमें पहले उत्क्षेप करणा, तिसके बाद पोसा सामायक लेणा, पीठै दो वांदणा देके पञ्चस्काण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पृष्ठा वांदणा होय देवै ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अय उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावदी पन्तिकमके मुहपत्ती पन्तिकेदके दो वांदणा देवै, खमासण देके उपधानवादी कहे (पहले उपधानमें पंच मंगल महासुयस्कंध तवंउरिक्वह) गुरु कहै (उरिक्वामो) पहले पंच मंगलउपधान महाश्रुतकंध उस्केवावणियं नंदीपवेसावणियं कान्तसगं करावेह, गुरु कहै करावेमो, पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध उस्केवावणियं नंदिपेवसावणियं करेमिकान्तसगं अन्नन्नउससिएणं इत्यादि कान्तसगमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चितवै, पार के प्रगटलोगस्त कहे, पीठै खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उस्केवावणियं चेइयाइवंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो, वासक्षेपकरावेह, गुरु कहे करेमो, पीठै वासक्षेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करै, ऐसें सर्व उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना, इतना विशेष हे पहले दो उपधानोंका उत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी उपधानोंके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नहीं आपे तो प्रातसमे प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन जो जो उपधान वहे उसका नाम मोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांजकूं पहिले चोविहारका पञ्चस्काण कर इरियावही पनिकमके मुहपत्ती पनिलेदके दो वांदणा देवै पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्त करेमि कां उसगं अन्नबू० कहेके कां उसग सागरवरगंजीरा तक लोगस्स विचारे, पार के प्रगट लोगस्स कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेण संदिस्सह प पहिले उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइ वंदावेद, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेद, करावेमो. पीठै गुरु वासक्षेप करै, पीठै चैत्यवंदन करै, पीठै खमासण देके उपधानवादी दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ढांककर अर्द्धवनतगात्री होयके चार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिच्चामिडुक्कमं एसें सब जगे वाचनान्जिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनको सांजकूं चोविहार करके अथवा प्रज्ञातसमें इरियावही पनिकमके मुहपत्ती पनिलेदके दो वांदणा देके उपधानतपवादी कहै—इच्छाकारेण तुप्पे अम्हं अमुक तवं निस्सिक्खि, गुरु कहे निस्सिक्खामो. फेर खमासण देके कहे—इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्सिक्खणं कां उसगं करावेद, गुरु कहे करावेमो. इच्छामि० अमुक तप निस्सिक्खणं करेमि कां उसगं अन्नत्थू० कहेके एक नवकारकां कां उसग करके खमासण देवै, अमुक तप निस्सिक्खणं चेइयाइ वंदावेद. वंदावेमो गुरु कहे, पीठै संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ पडिपुत्ता विगय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रज्ञातसमें गुरुके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण किया इस

वांस्ते मुहपत्नी पन्निहके वंदन वव देवे ( दो वांदणा देवै इसीकूं वव वंदन कहतै हे ) गुरूके साथ पन्निहमणा कीया होय तो वा-  
दिणा दोयही देवै, पीठै गुरु कहे पवेयणंपवेह ऐसा कहके कहे प  
रुपुसोविगयपारणयंकरेहत्ति, पीठै अपणी इच्चानुसार पञ्चकाण-  
करै पीठै गुरूके सामने कहे उपधानमें अन्नक्ति आसातना करी  
होय तस्त मिच्चामिडकं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रज्ञातसमें गुरु पास आयके गुरूकी  
आज्ञासैं इरियावही पन्निहमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक  
लेके दोय खमासणपूर्वक पन्निहणा नर अंगपन्निहणा करै, पीठै  
मुहपत्नी पन्निहके पहिले खमासणसैं उहीपन्निहणसंदिस्ताएमि,  
दूसरी खमासण देके उहीपन्निहणकरूं, पीठै मुहपत्नी पन्निहके गु-  
रुकूं वव वंदन देवै पीठै गुरु कहे—पवेयणं पवेयह. उपधानवाही कहै.  
इच्छा ० अमुक उपधान निमित्त निरुद्धं वातवंकरावेह. गुरु कहे उप-  
धासे आंवले निरुद्धेति एकाशणे, ऐसा कहे, पीठै दश खमासणसैं  
अनुक्रमसैं कहै—बहुवेलंसंदिस्तावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, वइसणं  
संदिस्तावेमि ३, वइसणं ठाएमि ४, सझायंसंदिस्ताएमि ५, सझा-  
यंकरेमि ६, पांगरणोसंदिस्ताउं ७, पांगरणोपमिगहूं ८, कवासणो-  
संदिस्ताउं ९, कवासणोपमिगहूं १०. पीठै मुहपत्नी पन्निहके दो  
वांदणा देवै, गुरु कहे सुखतप. उपधानवाह। कहे, तुमारे प्रसाद ॥  
इति प्रज्ञात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पन्निहणा जये वाद  
स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसैं इरियावही पन्निहमके पहिले  
खमासणसैं पन्निहण करूं १, दूसरी खमासणसैं पोसहसाला  
प्रमाऊं २, ऐसा कहके मुहपत्नी पन्निहके, एसैं दो खमासण देणे-  
पूर्वक अंग पन्निहणा नर मुहपत्नी पन्निहके. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट ( अर्थात् कणधोरा जाणना ) ऐसा गीतार्थ कहते हैं. पीठे वसति प्रमार्जकरं तहां जो उसही दिन जोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पमिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पमिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकजी वस्त्र नहीं पमिलेहे. पीठे गुरु पास आयके इरियावही पमिक्रमके पमिलेहणा १, अंगपमिलेहणा २, फेर गुरुके सामने करे. पीठे सिंज्ञायसंदिस्साएमि सिंज्ञायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीठे मुहपत्ती पमिलेहके ठव वांदणां देवै. पीठे त्रिविहार अथवा चोविहारका पञ्चस्काण कर दस खमासण अनुक्रमसँ इस मुजब देवे—उहीपमिलेहणसंदिस्सां १, उही पमिलेहणकरं २, सिंज्ञायसंदिस्सां ३, सिंज्ञायकरं ४, बइसणो संदिस्सां ५, वैसणोठां ६, कठासणोसंदिस्सां ७, कठासणोपमिग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्सां ९, पांगरणोपमिग्गहुं १०. पीठे मुहु पत्ती पमिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूठै, पीठे सर्वोपगरण पमिलेहे, मातृका ( पालसिया ) प्रमुख पमिलेहै, तथा जिस दिन जोजन करै उस दिन पूण पहरकी पमिलेहणकी वखत थाली कटोरादिक सर्व उपजोगके पात्रादिक पमिलेहै, उपवासके दिन नहीं पमिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपमिक्रम अंगामें असिंज्ञाईका काउसगग नहीं करे तो आवती परकी तक सर्व अंतकी असिंज्ञाई होय, इरियावहीका पाठ जी गुण्या नहीं सूखै. इस वास्ते असिंज्ञाईमें जी असिंज्ञाईका काउसगग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागर चंडगणिकूं पूठा तब ऐसाही जबाब दिया योगारंजकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंजमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहु र्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडधुवचरक्षिपेः । वारेजोमं शनिंविना ॥ आद्याटनंतपोनंथा । लोचनादिसुजं २ ॥ १ ॥ इति

आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपवान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपन्नासं । अठारसआसणम्मिपमिलेहा ॥ दंमे  
पत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअमा ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरु  
कंबलतइयत्तेवसंथारे ॥ कढासणेअठारस । जपेदंमेअपंचेव ॥ २ ॥ इति ॥  
प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणउववासायाम । अठयंकुणइअठमंअंते ॥  
नवकारउवहाणं । इत्तियमितंइरियाए ॥ १ ॥ सकठयंमितहएगं ।  
अठमंअंविवाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइयठए । चउत्थमायामतियगं  
च ॥ २ ॥ चउवीसठएअठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण  
उयंमिचउठं । आयामापंचउवहाणं ॥ ३ ॥ चउवीसंउववासा । ए  
गासीअंविवाणसुवंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । सुवहाणेसुजाणेसु ॥  
४ ॥ बारसवारसएगो, पणवीसअठ्ठाइपाणपन्नरस ॥ अठयउववासा  
। सुवंगंसठ्ठचउसठी ॥ ५ ॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमठ्ठअवठ्ठएगउ  
जंतेहिं ॥ इगठाणयनिविगई । विळेहिंअठं । वळेणंच ॥ ६ ॥ पणया  
लाचउवीसं । सोलसचउइहिअठहिकमेणं ॥ चउइउहियएणेणय ।  
आयरणादोइउववासे ॥ ७ ॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ रुषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम १४ तीर्थकरोंके नामकी चिठियां लिखके बीच मं-  
रुलमें २४ कोठोंमें धरे, इति चतुर्विंशति तीर्थकराः हैं । नमः १ क्रौं-  
नमः ववववववववववववववव १, ववववववववववववववव २, वववव-  
वववववववववव ३, ववववववववववववववव ४, उँ हैं । अर्हज्योनमः  
उँ हैं । सिद्धेज्योनमः उँ हैं । आचार्येज्योनमः उँ हैं । उपाध्यायेज्योनमः  
उँ हैं । सर्वसाधुज्योनमः उँ हैं । ज्ञानेज्योनमः उँ हैं । दर्शनेज्योनमः उँ हैं ।  
चारित्र्येज्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १ ॥ दूसरी वलयमें दश दिग-  
पालोंके नामकी दस चिठी दश कोठोंमें धरे ॥ इति द्वितीय वलय २ ॥

तीसरी बलयमें नव ग्रहोंके नामकी नव कोठेमें नव चिठियां ॥ इति  
तृतीय बलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोलें स्वर उकारादिक  
तेतीस वर्ण इन्द्रजित् आदि इग्यारे गणधरोके नाम नुँहों युक्त लि-  
खें. पीठै अमृतालीश लब्धिपद नुँहों अर्द्ध एसा आदिमें देकर लिखें  
॥ अमृतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंमलपूजामें लिखे हे उस  
मुजब लिखे. पीठै चोवीस तीर्थकरोके पिता नुँनाजयेनमः १ इ-  
त्यादि लिखे. पीठै नुँमरुदेवायै नमः इत्यादि चोवीस तीर्थकरोके  
माताका नाम लिखे ॥ नुँहै नुँह्रियै नमः १, नुँश्रियै नमः २, नुँघृत्यै  
नमः ३, नुँलक्ष्म्यै नमः ४, नुँधूमगोप्यै नमः ५, नुँचंरुयै नमः ६, नुँसरस्व  
र्यै नमः ७, नुँजयायै नमः ८, नुँअंबायै नमः ९, नुँविजयायै नमः  
१०, नुँक्लिन्नयै नमः ११, नुँअजितायै नमः १२, नुँनित्यायै नमः १३,  
नुँमदद्रवायै नमः १४, नुँकामांगाय नमः १५, नुँकामबाणायै नमः  
१६, नुँसानंदाय नमः १७, नुँनंदमालिये नमः १८, नुँमायात्यै नमः  
१९, नुँमायावित्यै नमः २०, नुँरौद्र्यै नमः २१, नुँकालायै नमः २२,  
नुँकाल्यै नमः २३, नुँकालप्रियायै नमः २४. एसे श्रीदेव्यादि चोवी  
सोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष नर २४ यक्ष-  
णीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीठै  
नव निधानोंके नाम लिखे, फेर चोसठ इंद्रोंके नाम लिखे. पहली  
वीशस्थानक मंमलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके  
अष्ट सिद्धिका नाम लिखे नुँअणिमसिद्धये नमः १, नुँगरिमसिद्धये  
नमः २, नुँजधिमसिद्धये नमः ३, नुँप्राकाम्यसिद्धये नमः ४, नुँमहि-  
मसिद्धये नमः ५, नुँईसित्वसिद्धये नमः ६, नुँविसित्वसिद्धये नमः  
७, नुँप्राप्तसिद्धये नमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ नुँश्रीधरणें  
डोरकतुः १, श्रीपद्मावतीरकतु २, श्रीगौतमस्वामिने नमः ३, श्रीवे  
रोत्थारकतु ४. इति श्रीरूपमंमल पूजन विधि संपूर्ण. एण पदोंमें

द्रव्य नवपदमंजल बीस स्थानक मंजलपूजा मुजब चढ़ावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुभ दिन शुभ मुहूर्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावै, आगे पंचपरमेष्ठीपट्ट स्थापन करै तथा जगवनाके दहिणे पासे दश दिग्पालपट्ट उर बांधे पासे नव ग्रह का पट्ट स्थापन करै, पीछे एक वस्त्र एक गेटा मट्टीआदिकका हंसा ऊपर खसी सपेदमट्टी पोतके चार२ केसर कुंकूका साधिया करै, पीछे उंची नीची दोय टिवची काठकी बांधे, नीची टिवची पर मोटा हंसा धरै, उंची पर गेटा हंसा धरै, हंसेके तले एक छिद्र करै, दोनुं मटकाके अंदर साधिया करै, वस्त्र मटकेकी टिवची नीचे चावलका साधिया करै, ऊपर नालेर रुपिया आपनाका धरै, दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र बटके पंचरंगी खजली एकेक खूणें २१ इक्कीस२ पोंकर च्यारों कोणोंमें ८४ खजली पोंके तणी बांधे, नालेरके आकार मोलीसूत्र को दसो नीचला मोटा हंसामें लटकतों रखके ऊपरकी मोली गेटा हंसाके छिद्रमें पोंकर ऊपर जो चौ खूणी तणी बांधीदे जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे जो संघ समुदायकी तरफसे शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै उर एक जणकी तरफसे होय तो शांति कराणेवालेके घरसे-ती सधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों मावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अन्ना वस्त्र आभूषण पहिरायके कलशके अंदर कुंकूमकेसरका साधिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोटली धरके मुख पर नारेल ढकणे माफक खसा धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके च्यारों तरफ च्यार साधिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वाजित्रादि अनेक उद्भव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-



मुख चावलोंका साधिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीठे पाच दश जणां ड्ये नर जावे अपना अंग श्रुद्ध करै, गुरुके पास से केसर मंत्रायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधि इहांसे आगे नव ग्रह दश दिग्पालका आह्वान <sup>नरपुत्रपत्नी</sup> तिसे देववंदन वगेरे करे सो सब विधि पूर्वे लिखी है अगणिः ने शि कि बलबाकुल सब देके पीठे सुंदर अंगोपांगवाले पुत्र्यापुत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन १ नवकार गुणे, जिसमें दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनों तरफ खम्हा रहै, एक स्नात्रिया धूप खेवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन वासकप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोंमें जल नरके दोनों तरफ धारा देणेवाले कलशोको पूरता रहै, दो जणे दोनों तरफ चमर दुलता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात २ नवकार गुणे, स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवै, ऐसे सात धारा दे चुके तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसे नमोर्हत्सिद्धाचा० कहके अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीठे ज्ञतामर वमीशांति बोटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृद्धशांती आती होय तब तो गुरुके संग अपने मनमें गुणता रहै, नर नहि आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंम ऊपरले बोटे कलशमें धारा देता रहै, बाँक कोई नही करै, आपसमें दूसरी संसारी विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुण पीठे तीन नवकार गुणके कलस धरे, पीठे नीचेके हंमेमेसे जितप्रतिमाकूं निकालके अन्ही तरे अंगलूहणा करके केशर पुष्पादिकसे पूजा करै, जंगवानकी अन्ही तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके आरती जतारै, मंगलदीपक करै. पीठे शांतिजल सर्व संघ लगावै,



अपने घरोंमें ठाटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे लेके राखनी बांधे. इससे संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिकर्म्म अनेक प्रकारसे रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. परागे पंचखलवाकुल परातमें रक्का आ सो लेके गुरु पूर्वोक्त क्षात्रिदिगपालपट्ट उपास विसर्जन विधि पूर्व लिखी हे उस मंत्रोंसे विसर्जन करके ठोटा शांतिक पूजा विधि सं०

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंमण रूपज जि-  
णंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ दुसरी आरती मरुदेवी-  
नंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रि-  
जुवन मोहे, रत्नसिंघासन म्हारा प्रज्जुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चौथी  
आरती नित्य नई पूजा, देव रूपजदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥  
पंचमी आरती प्रज्जुजीने जावे, प्रज्जुजीना गुण सेवक हम गावे ॥  
॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रज्जु शांतिजिनंदकी, मृग लंठनकी में  
जाजं बलिहारी ॥ जय५ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचि-  
राजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति  
कीजै प्रज्जु नेमजिनंदकी, शंख लंठनकी में जाजं बलिहारी ॥ आ०  
समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ०  
५ ॥ आरति कीजै प्रज्जु पाशजिणंदकी, फणंद लंठनकी में जाजं  
बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख  
पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह  
लंठनकी में जाजं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाकों नंदा,  
वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ७ ॥ आरति कीजे चौबीस जिनं-  
दकी, चौबीस जिणंदकीमें जाजं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कम-  
ल नित सेवित इंदा, चौबीस जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८ ॥

( ७८३ )

जई, उस शाखामें जगत्पुज्य श्रीसाधूगुणसैं चिराजमान  
 गोलगणिः परमगुरु जये, जिनोके शिष्य पंक्ति श्रीकुशलनि  
 मुनिः जये, उन परमपुरुषसाधूजी माहाराजका चरणाब्जचं  
 कि ७० श्रीरामलालगणिः ने शिष्यमंजली पं । केमचंदमुनिः चि ।  
 चंद अमरचंदादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीबीकानेर वास्तव्य  
 क विद्यार्थियोके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्तव्य सर्व जी  
 के उपगारार्थ उपायके प्रसिद्ध करा हे.

ठिकाणा पुस्तक मिलखे का बीकानेर बन्ना उपसारा विद्या  
 ला ७ । श्री । परमोपगारी युक्तिवारिधिः । रामलाल ज । गणिः ॥





करजोमी सेवक इम बोलैं, नहि कोइ माहरा प्रभुजीने तोले ॥ इति ॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय१ आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी

॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्रेश्वरी जग सौ-  
ख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गङ्गनी शासनदेवी, सकल संघने  
सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टोलनी रत्न विराजै, काने कुंरु  
ल दोय रवि शशि ठाजै ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध बोरखा सोहे,  
नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूनी  
खलके, पाये घूघरमा घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुड चढ्या  
बहु प्रेमे, तुऊ गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूनी जन्मां  
देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित१  
मानी आरती ऊतारे, रोग सोग जय दूर निवारे ॥ ज० ९ ॥ तसु  
घर पूत्र पुत्रादिक ठाजै, मन बंठित सुख संपद राजे ॥ ज० १० ॥  
देवचंड मुनि आरति गावे, जय१ मंगल नित्य वधावै ॥ ज० ११ ॥ इति ॥

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपड इण

विध खेल रे ॥ अशुभ करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग  
रे, बनीय विठायत वैस जो च० ॥ जहू नही कुमतिको लाग रे ॥

अरे० १ ॥ दान शील तप जावना च०, चोपड एह पसार रे ॥

आठ दाव इक बोलमें च०, आठ० ॥ निवार रे ॥ अरे प्राणा त

देव गुरु धर्म तीनूं जला च० ॥ श्रीरि जी जान रे ॥

हाथे लिया च०, उज्जल लेख ॥ एसी अ० ३ ॥

चारित्र जला च०, तीनूं गु० ३ इति; नही नव त या

धरो च०, ए सब सोला सचिहुं नर मन व पमदी सा

दे च०, पोबारा व्रत धार रे नु गिरना सदा में

कर हियै विचार रे ॥ अ० ५ ॥ पट् काया ठकनी पनी च०, हिर-  
दे दया विचार रे ॥ पुन्य नदय पंजनी पनी च०, पंच महावन धार  
रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काणा पञ्चा च०, सातुं विसन निवार  
रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ०  
७ ॥ चिहुं गति घाजी लग रही च०, डुख सहा जरपूर रे ॥  
करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ८ ॥ इति

॥ अथ सेतुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेतुंज खेल खिलारी, सब समझ देख सेतुंजकी घात,  
लख दोउं दल अपणे परायैकी जात ॥ कान विध कर मोह वाद-  
स्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥  
आहुं कर्म पियादे आगे फुकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत थंज  
त नहीं थंजै ॥ लोच जुंठ चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावै, मान  
माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो वजीर वीर  
घाके ढंग ठामो, वाके मारवैकों द ॥ ~~पणे~~ सजारे ॥ हे से० २ ॥  
तेरे ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग ठामो, आगे अंग समकित  
के पियादे हलकारो ॥ ~~संग~~ सांढिया सवार पर सांढियाको  
मारो, सत्य वचन तुरंग ~~सु~~ तुरंग निवारो ॥ हमा शील दोय  
फील राखो दलकै अगा ॥ ~~पर~~ पर दल कर मारो ठिनमें संहार ॥  
हे से० ३ ॥ जप तप स ~~व्रत~~ याके घेरे चिहुं नर, जब वाकै चल-  
न रहै नही ठोर ~~तेरी~~ तेरी होगी जीत दूजो हारेगो  
बधेगो मोर, ठामे इंद्र धरणेंद्र  
गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥

गइ रहै नही ठोर  
सुजशको  
वर, तेरे  
खेलन

स्तवन लिख्यते ॥

महरदी करणा हो, टु० ॥ में

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ तु० १ ॥ अ-  
 ष्ट जवनकी प्रीत हमारी, नवमे जव निरवाहना हो ॥ तु० ॥ २ ॥  
 रूपचंद जगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ तु० ३ ॥  
 इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-  
 का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिल्पा, फिटक  
 रंतन जुजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजै साहिब,  
 ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ ॥ पंच वरणकी धजा  
 फरुके, क्या कहूं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन  
 नाम तुमारो, नरनकी क्या आसा हे ॥ लो० २ ॥ चौसठ इंद्र ख-  
 मे वाके द्वारे, खिजमत बंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं-  
 जन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 सखि सध बनठन, सखी० ठाढ़े नाजि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥  
 रिपजकुमरको जनम जयो है, मंगल मुख उचारै री ॥ स० १ ॥  
 ताल मृदंग रवाव मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हां  
 व जाव करी राजत, ताँ लेत सुर तारे री ॥ स० २ ॥ सुरवनिता  
 मिल गई बधाई, मोति ॥ सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर-  
 आनंद हर्ष अपारे ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः  
 जैन तेरे दरस पर र कर हो जि० ॥ तुम विन जव २ में  
 दा, अब मेरी नर ॥ गु० ॥ हो १ ॥ अष्ट काम मेरे  
 रहे हैं, उनकूं वे ॥ या० ॥ सरण गहे आणा त-  
 ॥ इति द गुणासीमें, ॥ श्री ॥ नृदम् ॥  
 रे, म्हा० ॥ जिनंदन म वैर ॥ एसी ॥  
 री, विध ॥ जाइ जू ॥ इति; नह ॥  
 ॥ ॥ अकत ॥ चिहुं नर मन व ॥ मुकु ॥  
 ॥ ॥ दी ॥ गिरना सदा में ॥

रूपज्ञदास पूरो आस गुण गाजं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ मन लीमो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि ज्वतर  
 णा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट धन  
 हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाजि तात मरुदेवी माता, नंद रूपज्ञ सु  
 खकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिलपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांग  
 दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग दृग शशि वदन मनोहर, अंग  
 कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरिश्वर जंपै, जिन  
 समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जिंजोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजितं जिन ध्या  
 न, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत  
 ज्ञान ॥ म्हा० १ ॥ त्रिहुं जगतारन टारन अघको रे, वारुं तन धन  
 ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल  
 निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रभु पाए रे, निवृ  
 त्ति पुरंदर म्यान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यह  
 अरजी मोरी सहियां, मोहे तारल गहव हिया ॥ य० ॥ में नाहि  
 जाणूं सहियां, य० ॥ में तारण रण दयायो वै, में यातें शरणो ग  
 हियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० निवारं ॥ इन करमनके वश  
 हुयकै, में जटक्यो चिहुं गति मरि दल य० मो० २ ॥ हित करकै  
 दाश निहारै, करजोनि पमि हुं याके घेरेशेव देति क्युं न सहियां  
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

तेरी हा-

बंधेगो मोर गोमोराय अरज सु  
 १ गुणगने, दिलजर दरशण  
 रसण दीजै, सकल करम  
 सोहन पनणो, प्रहजगी प्रण  
 ॥ तु मेंमा प्रभु इण दिल

चसणावे, तेंना तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर  
 गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो त  
 त्वज्ञानके दाता, जिविजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जि  
 नचंद ऐसे प्रभु मेरे, चरणकमल चित्त ल्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहें तुम तारोगे, हम० ॥ ना-  
 जिराय मरुदेवीको नंदन, मेरी डर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि  
 जिनेसर अंतरजामी, खामी कठुन विचारोगे ॥ हम० २ ॥ जगजीवन  
 जगतारक तुमहो, एही विरुद संजारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौजा  
 ग्य सूरिंदके साहिव, जवजल पार ऊतारोगे ॥ हम० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ पंथीमा पंथ चलेगो, प्रभु जजले दिनचार ॥ पं० ॥ जूठी  
 काया जूठी माया, जूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणेमें खेल गमायो,  
 जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृढापण आयो धरम न पायो, पीठे  
 करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले रहत त्या ले जायगो, पाप पु  
 ण्य दोष लार ॥ पं० ४ ॥ दया जोरे आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं कित जू  
 जोमे थारे कोण जुमेगो ॥ पाप जवाणो कर जाणो, प्रभुजी  
 तूं तारण संसार ॥ जोण के नरी ॥ तूं नहि ठानो ॥ राग  
 जलायो नवकार ॥ जो० १ कर ॥ सुजाव ॥ प्रभु  
 जव२ देज्यो दीदार ॥ जो० गु० १ ॥ सुगु ॥ प्रभु  
 ॥ राग खंजायची ॥ या० ॥ एक मोर पप ॥

॥ भ्रमत२ लख चौरासीमें, १ ॥ श्रीजि ॥ दान व्रत  
 कैसे० १ ॥ ए रिपु कर्म वैर ॥ एसी ॥ लखकी,  
 ॥ म० कैसे० २ ॥ जो जीव० ३ इति नही ॥ मुज ॥ या  
 काज सा ॥ म० कैसे० ३ चिहुं नर मन व ॥ जंही ॥ सा  
 वाजे वैजें ॥ सरणाईनु गिरना सदा में ॥ जंही ॥



वै ॥ महा० १ ॥ इंडाणी मिल मंगल गावै, मोतियन चौक पुरावै  
 वै ॥ महा० २ ॥ सेवग प्रजुजीसैं अरज करै वै, चरणारी सेवा  
 प्यारी लागे वै ॥ महा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अमाणी १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे,  
 मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंमल लागत वाळा ॥  
 ॥ जि० १ ॥ जजोरी जजो तुम लोक सहरके, नहिय जजै सो  
 काला, माणक पर प्रजु महिर करो तो, अपणा विरुद संजाला ॥  
 जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय, रहेण  
 ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ २० १ ॥  
 अविरत धुंघट पट उधारी, अनुभव मुख निरखाय ॥ २० २ ॥  
 ॥ जव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ २०  
 ३ ॥ अति आयह स० ३॥ सारकूं, जीवन कंठ लगाय ॥ २०  
 ४-५ अति-परिपाक ॥ महा० अ० ४५ वांकमी करसगति जाय न  
 अरजी मोरी सहियां, मोहे तारल गहौनहार सो होय रही ॥ हे माय  
 जाणूं सहियां, य० ॥ में तारण रण दिहनकूं, राजुलकों तव चाह  
 हियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० निवां विलख मुरजाय रही ॥  
 हुयकै, में नटक्यो चिहुंगति मजिर दल पतिजगता, जानत सकल  
 दाश निहारै, करजोनि पति तें याके हो, पावक कुंममें धीज दही ॥  
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥  
 गगकाफी (को)  
 तेरिणिकराजा, निज सुत कोणक  
 बंधगतकी, आपणकी अपघात  
 १ मनकमें राजा, अकल कथा  
 १ नटसीकी, नवल सरवमें  
 १ पुनः ॥ १ ॥  
 ॥ ॥ ग्यान जग नगुण

। वासादेवं। मातरहं न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोहि तिमिर डुख  
नागकुं तारण, नान वढावत हेत ॥ चंद फतै नित एही चाहै,  
रजोमीने वीन खेत ॥ म्हा० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

॥ राग रमत हे, में कैसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सोतन  
राजा विन, न रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत  
जलत फिदैया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति  
मेरे पिया विन, कोन बुझावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता नंद, सोहत  
नुजव आयो, सब परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यार  
मिल, सोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥ ४॥ इति ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ वरषित वचन ॥ बा  
मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतैऊमटी, ग्यानघटा, विरो रेकवु कर-  
१॥ स्याद्वादनय विजुरी चमकित, देखत कुमनि शकूं उरु सेवा सु-  
॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न गये जूआ जूठ पर  
गु० ॥ १ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे मा दरजा ॥ ए० २ ॥  
प्रेरज्यो सुमतारससागर, समकित जूआंति सुहाई रे, नवजल  
प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवा लो कर जाणो, प्रभुजी  
इया नविजन, बोलत नक्तिनरी ॥ हंके परसे नहि गानो ॥ राग  
संजम खेती, नविक कसान करे ह सुजाव ॥ प्र  
सदज स्वजाव फली ॥ हो सुगु० ॥ हो सुगु० ॥ प्र  
मीमें रंग, वन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ एक मोर पपन जो  
मीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीरि दान व्रत  
आ अंग अंग ॥ व० या० २ ॥ एसी, राखकी,  
में प्रसाद अजंग ॥ व० या० ३ इति; नह माह ॥ सुक ह या  
॥ रागमलार चिहुं उर मन व ॥ मोहरी सा  
घन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रभु गिरना सदा में ॥ मोहरी सा

रसै ॥ चि० १ ॥ दाडुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन ज्ञए घन  
जरसै ॥ चि० २ ॥ हुंढत हुंढ सकल वनशमें, कवहुं पिया ना ढर  
सै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेंगे सजनी, दिवस घरी जिन  
फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले  
पीउर घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी  
कारी विजुरी मरावै, दूजी विरह व्याकुल जई तनमें ॥ मो० १ ॥  
वरषित गरजत दाडुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥  
काला, मा० ॥ आणंद यह सम देखण चाहै, राजुल जई विरागण ठि  
जि० २ ॥ इति पदं ॥ इति पदं ॥

॥ जीय जीवन विहाग ॥ समज नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो  
अविरत धुंधट युधटत विनही, गलत जात जेसैं नरो ॥ स० १ ॥  
॥ जब परणित तेन नरो सो, विन मांसो विन तोरो ॥ जो कबु  
३ ॥ अति आयह पुनपरहो जिम मोरो ॥ स० २ ॥ तन धनं  
४-५ इत्यादि ॥ म्हाज घनघोरो ॥ रूपचंद ब्रसनाको बांध्यो,  
थरजी मोरी सहियां, मोहे ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मत कर मा  
जाखूं सहियां, य० ॥ में ता ॥ म० ॥ वेलूकी नीत लसको मोती,  
हियां, इनते उवार लहियां ? म० १ ॥ दीयाँ गहरी नाव पुरा  
हुयकै, मैं झटकयो चिहुंगति चंद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल  
दाश निहारै, करजोरि परि प्रपदं ॥

॥ यद मो० ३ ॥ इति पं०  
गगकाफी (को)

न जोड़ं थारी वाटनी, घर आबोनी  
तुज लाख है, मेरे तूही अमोला  
रै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥  
का क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे  
जा ॥ तेरे मुख दीवै टलै, मेरे मनका  
क कहै हितकर तुं, सुमतासु न बो

ना॥ आणेंदघन प्रभु आवसी, सेजमी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम् ॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे जाग, वीरप्रभु आए  
॥ आ० ॥ चंदना खमी डुवार, चितसैं करै विचार ॥ देखत दी  
॥ र हीया, हरख जराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली,  
पली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥  
आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म जेरो ॥ सुरुत बहु  
रो, जगवान दिल जाए हे ॥ आ० ३॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत  
नरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥ आ० ४॥ इति ॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा  
गप रंगीला वाकी रंगीली, डर रंगीलो वाको सांवरो रे कबु कर-  
॥ आपन आवै वारी न लिख जेजै, प्रीत करणकुं डरु सेवा सु-  
गा० २॥ आनंदघन पिया निजघर आवै, मिट गये जूआ जूठ पर  
॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रुषज विहारी, आंति सुहाई रे, नवजल  
॥ रु० ॥ प्रथम तीर्थकर प्रथम जिनेसर,  
॥ रु० १ ॥ धनुष पांचसैं मान मनोहर सो कर जाणो, प्रभुजी  
॥ रु० २ ॥ नाजिराय मरुदेवा कैं नहि ठानो ॥ राग  
॥ रु० ३॥ जुगलाधरम निवा हो सुगुं प्र  
॥ रु० ४॥ केवल पाय प्रभु सुगुं एक मोर पप  
॥ रु० ५ ॥ आनंदघन प्रभु एजि दान व्रत  
री हो ॥ रु० ६ ॥ इति पदं ॥ राग  
॥ रु० ७॥ चित कबु जंगन ॥ राग  
॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज ॥ राग  
॥ सु० २॥ होणहार वश नस्य ॥ राग  
॥ होत पदारथ जावी न ॥ राग

॥ नृदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न ज्ञै रे ॥ सु० ५५ति  
 पदं ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स०  
 ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १  
 श्रेणक झूप चेलणाराणी, जक्ति करत हे आज ॥ स० २॥ निज  
 द्रव्य लिये पुर के जन, उमंगर गुज साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु  
 दोन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या  
 जिनजीके दरस सरसतें, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद  
 गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ जव  
 ॥ जीय कं सुखदाई, आनंद वंठित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥  
 अविरत ६ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन  
 ॥ जव परणि सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण  
 ३ ॥ अति आनंदके, जेटै सहु जवि चित सुख पाय ॥ च० २॥  
 १०-पुर्नरि म्यांनं ॥ म्यांगो, कब फरसुं वाके मंत वच काय ॥ च०  
 अरजी मोरी सहियां, मोः ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज  
 जाणूं सहियां, य० ॥ मैं ता ॥ जाके प्रज्ञाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा,  
 हियां, इनतें नवार लहियां ॥ सुख तेरी रागै, पेख्या विज्ञाव  
 हुयकै, मैं जटक्यो चिहुं गति ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रुषजे  
 दादा निहारै, करजोमि पमि ॥ हो ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम  
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥ तेरे सनाथ हमही ॥ हो ४ ॥ प्र  
 गगकाफी शको ॥ तुम रि जाखै, दिख मांज याही राखै  
 व०, तेरे ॥ तेरे ला  
 तेलन ॥ का क्या म  
 जा ॥ तेरे सको चाह लग्यो, सखी  
 एक कहै ॥ मैं जाय प्रभु दीक्षा लीनी,  
 ॥ य चहे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब कैसे विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धन२ राजुल,  
 प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः आरे-  
 मुखमारी हो वारी राज, प्यारी ठवी वरणी न जाय ॥ आ० ॥  
 शीस मुगट सोहै सिर टीको, काने आरे कुंमल सोहाय ॥ आ०  
 १ ॥ मोहनगारी सूरत आरी, देख्या म्हारो मनमो लोजाय ॥ आ०  
 २ ॥ उरऊत नेण नए दोउं निरखत, आंसु प्रभु प्रीतनी लगाय ॥  
 आ० ३ ॥ नव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलमेमें  
 चाव ॥ आ० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय  
 ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानमो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कबु कर-  
 नी करजा ॥ ए० ॥ नव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सु-  
 खदाई रे, जसु पातिहाणी, ज० ए० १ ॥ हिंसा जूआ जूठ पर  
 तिरिया, परिग्रह म० हाणी ॥ जा० घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥  
 तप जप शंजम श० नवराणी ॥ सुमति सुहाई रे, नवजल  
 निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ सुव वि०

रागकावर्गमो ॥ ए० सुख पाओ कर जाणो, प्रभुजी  
 मो० ॥ मैं मतिदीण महा ह० एक पसें नहि ठानो ॥ राग  
 द्वेष अरु मोह महा मद, वारी सुजाव ॥ ए० १ ॥  
 ए रिपु कर्म पमयो मुकु केमोरा ॥ सुगु० प्र० ए० २ ॥  
 दायह मांहि अलूज्यो, ज्युंआरा, कज० एक मोर पप० मो०  
 नववासी तूं सिंववासी, ज० ॥ आ० ३ ॥ दान व्रत  
 साम संजारो, तो दिव विणा जंगन ॥ ए० ४ ॥ सुखकी,  
 सदाई शिवसुख दाता, स० मात० नहि ॥ ए० ५ ॥ सु०  
 सूरिने निज वर, दीजै सु० ॥ मैं मन व ॥ सु०  
 रागनैरवी ॥ वी० ॥ कार सदा में ॥ सु०

मेहरवान जई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पठावै, तेरी  
सूरत कुरवान जई रे ॥ वी० १ ॥ साशशनायक एही अरज हे,  
दाजै दरस बनो वैर जई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण  
कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विज्ञास ॥ जोर ज्यो अब जाग बावरे, जो० ॥ कोऊ  
पुन्य तें नरजव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दावरे ॥ जो० १ ॥ धन  
वनिता सुत तात आतकों, मोह मगन ए विकल जाव रे ॥ जो०  
२ ॥ कोइ न तेरो तूं नही काको, इह संजोग अनाद सुजाव रे ॥  
जो० ३ ॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रजाव रे  
॥ जो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं सूबै अब पायनाव  
रे ॥ जो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट्वा॥ जागरे सवैरै ॥ १०॥ नदयो नदयाच-  
ल रविमंजल, पुन्यकाल क्यूँ - रैद फल चोरै सु० १ ॥ कमलखंरु  
वनं२ विकसानी, अजुअ न ३ ॥ दान कर मित ॥ जा० २ ॥ चेत-  
न धर्म अनादि तुमारो, जन् ४ ॥ इति ५ ॥ राणी ॥ जा० ३ ॥  
तुम कुल दोय अवस्था पश्यै ॥ जाके ६ ॥ जन् नीसाणी ॥ जा० ४ ॥  
आतम रूप संज्ञार आ ७ ॥ सुख ८ ॥ घर कुमति घराणी ॥ जा०  
दाश ९ ॥ सुध १० ॥ वुध ११ ॥ जनि पमि १२ ॥ ते घट वध होत कहाणी  
॥ य० मो० ३ ॥ इति पं १३ ॥ न १४ ॥ ग्यानसार पद निजर जया  
गगकाफी रीको १५ ॥ तु १६ ॥ सखी मेरे मन जावनो,  
का क्या म १७ ॥ तोरणसे रथ फेर च-  
जा ॥ तेरे १८ ॥ सां० १ ॥ नव जव नेह  
१९ ॥ क कहै २० ॥ रावणो ॥ आनंद राजुल  
२१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

राग ललित ॥ आज रुषज घर आवै, देखो माई आ० ॥  
 रूप मनोहर जगदानंदन, सबहीके मन जावै ॥ दे० १ ॥ केइ सुगता  
 फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय  
 रथ पायक केइ कन्या, ले प्रजु वेग बधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांस-  
 कुमर दानेसर, इकुरस बहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल,  
 साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई  
 अं० ॥ रुद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिढ्यो  
 री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे बराल  
 मिढ्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग ट-  
 ल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख ॥ आजरे/साहिब, ज्युं पारे  
 वो पढ्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुंकार ॥ आजहुंरहिसुं सुहलो री  
 ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ तरण जिह्वाज मोरा आतमराम,  
 जिनमुख जोवा जइये रे, तारो करो रे कवने सुंदरसण वै अति  
 दोहलो, अरे ॥ सोहीलो नेहारो रेणगर ॥ तनव एहवो,  
 जुमवो देखी दिलाणो रे ॥ सुख मरी ॥ खंखटको म-  
 टवरी हाथ अमोलखचो रोगयोअ एक घरी ॥ ह० कायाघ-  
 ट पाशजिणंदजोसुं, राजे ॥ तेरे सुजाव धरी ॥ सु-  
 प्रानीता मारा चेतन, करजेरीरा के हो सुगु० ३ ॥ पूर-  
 चंद लहीने, कर तूं सिद्ध बटारा, इज० एक मोर पप-  
 ारो ॥ नज मन नाजिनंअ ॥ ५ ॥ प्राणार जने ॥ दान व्रत  
 धारै, सुरनर करत हे सेज ॥ पणा जंगन ॥ २ ॥ खकी,  
 ॥ घ० मातमरक नह ॥ ३ ॥ मुज ह या  
 रांग कलव हरलै रे ॥ ४ ॥ में मन व ॥ ५ ॥ सा  
 मुनिजन अरु धरले रे ॥ ६ ॥ कार सदा में ॥ ७ ॥



पति वने सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमंत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष  
मणिधर सेव ॥ ज० ५ ॥ अस्मरण शरण हे विरुद जाको, नक्ति-  
वच्छल जेव ॥ राजसिंह प्रभु रुषज सिर पर, नाथ हे नितमेव  
॥ ज० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल घुमरी ॥ आबो नेम रहजाबो सदन, हमको न सँ  
ताबो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सऊके सजन, पशुवनको सुन देख  
रुदन ॥ गिरनारी चलै निज ठांमी वतन, तकसीर बताबो रे ॥

आ० १ ॥ पूनम जैसे चंद्रवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥  
मेरी नीकी लगी नव जवकी लगन, मत ठेह दिखावो रे ॥ आ०

१ ॥ संयमदत्ती लागी प्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके भ्रमन ॥ सब  
जुठे परेगें कोखचरि जि फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर  
कहै प्रभुजीके चर पदं ॥ वैराग धरणा ॥ लेवें दोह नेम

जिनजीकी शरण, जाग रे सब रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः करि अजुअ न खिदान - जिन सूरत प्यार रे ॥  
की० ॥ अथ पति करत अहोनिशि वंदन

॥ दरसन तुम्हारा, जन्म ॥ १ ॥ शि  
य अवस्था पड़ें ॥ जाके ॥ गहरी रे ॥ की० १ ॥ अं-

सुध/वुध ज्ञान गति ॥ की० १ ॥ सांवली

यद्यपि मो० ३ ॥ इति पं० ३ ॥ संदर सज्जग

गगकाफी शको  
२० नरे

का क्या म ॥ तोणा ॥  
सा ॥ तेने सां जये अगीवान,

॥ क कहै रावणो ॥ आ वा समोतरणा,

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

डुख होतैं जनम मरणा ॥ बैठ जव नयण रतना जमी रे, अतुं  
 शिवपुरमें हुवा अपमान, मरो अब सकूं रे, पलक न कीजै जेज  
 ॥ नाम जो जिनके दान देते, आतुं कार्तिक सुदि निधि सार ॥  
 तिनके चरण सेते, शशी सुमताकों तुं संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥  
 सूर, वरे वो जव जव सुख जरपूर। ली जिम लीन ॥ रुद्धसार जिन  
 जिन नूर हुवै डुखदूर, करो जव नूर सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ खेमटा ॥ लीजै, शर्धनाथ स्तवनं ॥  
 प्रभु तुममें मिली ॥ अगहन मुख देख्यो गोमी पारसको, मेरो ज  
 ल रही सहजानंद जवि चंदगो ॥ अन्य देवकूं बहुत में ध्यायो, तो  
 प्रभु आनन, मुख शिखर जलैआजरे में० १ ॥ जव जटकत शरणे  
 अगोचर तेरी मदि जेसें वणे लाज ॥ आजरे में० २ ॥ कमठ हरा  
 मुऊकूं आश दीस तिहारो, मनवकार ॥ आजरे में० ३ ॥ रूप  
 लग रही लगन सु इन, जगबंध तरण जिह्वाज ॥ आजरे में० ४ ॥  
 सुनिजर प्रतिपाल सु अवतारो करो रे विने गुण ॥ अरिज कर  
 ५ ॥ गंज अजीम सु निहारो रे पन पर पुरचव तदा पुनः  
 ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥ सुख मरी ॥ खंयकर ॥ शि०

॥ राग पीलू ॥ आयो एक घरी ॥ ह  
 शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ ते सुजाव धरी ॥ सु  
 फिखो धरती सत्र हैरी ॥ गीरा ॥ हो सुगु० ३ ॥ गमी  
 व, आन जई तुममें जटारा, जज ॥ एक मोर पप गोमत  
 वीन ॥ पारसनाथ ५ ॥ शरणे जने ॥ दान व्रत  
 गुर मन नरण करलै रे ॥ घ ॥ सात भरक नह माह ॥ सुख की, या  
 तनो के सम सब हरलै रे ॥ ॥ में मन व ॥ मुऊ सु या  
 न के गुण्येमें धरलै रे ॥ घ० ॥ कार सदा में ॥ मोहरी ख  
 हे ॥ पवसु ॥

घंट वाजै धननननन, इंद्रोक्त हरखनयो ॥ जनमे वर्द्धमानकुंवर,  
 वीतराग तननननन ॥ धं० १ ॥ मृदंग ताल गुण विसाल, जलरी  
 नाद कुननननन ॥ धं० २ ॥ रूपचंद राग रंग, होत ध्यान  
 मगनननन ॥ धं० ३ ॥ इति पदं ॥ निरंजन सांझ्यां रे, सांझ  
 मेश टुकसा मुजरा लै ॥ तुम तीरथके देवता जी, हम केशरदा  
 बोल ॥ कनककचोली हाथमें जी, पूजा करुं रंगरोल ॥ नि० १ ॥  
 तुम अंबरदा मेहला प्रभु, हम गिरवरदा मोर ॥ रुमजुमर मेहला  
 वरसे, ठमर नाचै मोर ॥ नि० २ ॥ हमगुण काली कोयली जी,  
 प्रभुगुण आंवा मोर ॥ मांजरके परतापसे कांइ, करवा लागी तोर  
 ॥ नी० ३ ॥ तुम हो मोतीयनकी लरी रे, हमगुण जंभा जोर ॥  
 रूपचंद दिलदार मयाकर, तुम विन देव न नर ॥ नि० ४ ॥ ~~भूतम~~ ज  
 राग कल्याण ॥ ऐसे सहर विच कोनसाही, प्रेम जमो निज  
 नीनेजीके पवनके कांगरे, दस दरवाजै रंकरे, कंचन वरण सुवा  
 पुनः केनीस नुअर, नगरकुंकरत सुवन रमण केलास ॥ व०  
 की० ॥ अथ ~~ननु~~ तुमारो, जम ~~चेतन~~ अमृतालीश उदार ॥ व० ॥ का  
 दरसण ~~यि~~ अवस्था पड़्ये ॥ जोके ~~रु~~ कदिसार ॥ व० था० ११ इति ॥  
 अ. कदंब ~~रूप संज्ञार आ~~ ॥ ~~वद~~ ~~स्त्री~~ ॥  
 उ. वन ~~सुध~~ ~~वुध~~ ~~जल~~ ~~वहु~~ गति ~~भक्ति~~ ॥ तु = ॥  
 दाश निहा ~~करजामि पमि~~ ~~ने~~ ~~रि~~ ॥ ~~इ~~ ~~कां~~ ~~ह~~ ~~रा~~ ~~ज~~ ॥ ए चालमें)  
 ॥ य० मो० ३ ॥ इति पं ~~न~~ ~~ये~~ ~~सना~~ ~~गवै~~, ~~पू~~ ~~हारण~~ ~~कारज~~ ~~नीपजै~~  
 गगकाफी ~~रंको~~ ~~तु~~ ~~रि~~ ~~जा~~, ~~पावै~~ ~~हंतल~~ ~~तोखवा~~ ~~रे~~, ~~सम~~  
 व०, तेरे ~~रै~~ ~~ला~~ ~~॥~~ ~~रे~~, ~~नक्त~~ ~~सुधारण~~ ~~का~~  
 लैन ~~का~~ ~~क्या~~ ~~मै~~ ~~इति~~ ~~पदं~~ ~~॥~~ ~~कीरत~~ ~~मुख~~ ~~संत~~ ॥  
 ॥ ते ~~हारो~~, ~~निज~~ ~~॥~~ ~~३~~ ॥ कल्पवृक्ष

गिरनारी दीपत मोहन वेलनियां ॥ २० ३ ॥ रूपचंद कहै नाथ नि-  
 क्तवधू गुण वेलनियां ॥ २० ४ ॥ इति पदं ॥ विराजो  
 , विराजो मंदिरमें, प्रभु गोमीचा पारसनाथ ॥ वि० ॥  
 चंदन ओर अरगजा, केशरमें गरकाव ॥ वी० १ ॥ शिर  
 ओ ठत्र विराजै, मोतियमे तपे रे निलाम ॥ वी० २ ॥ जव  
 रमें आण पमाहुं, बांह पकर मुऊ तार ॥ वी० ३ ॥ रूपचंद  
 नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ वी० ४ इति पदं ॥  
 किए देखा हमारा स्वामी, स्वामी अंतरजामी रे ॥ कि० ॥  
 जवकी प्रीत प्रकाशी, नवमें गया शिवगामी रे ॥ कि० १ ॥  
 सावनकी कुंजगलीनमें, मिले मोहे अंतरजामी रे ॥ कि० २ ॥  
 आये, गिरनारके ऊपर, नारी तारी केवल पामी रे ॥ कि० ३ ॥  
 वण नागकुं तारणगीनो, कहुं आज शिरनामी रे ॥ कि० ४ ॥  
 चंद कहै नाथ निरंजन, अवधू सो जोगी गुरु मेरा, उस प-  
 इति पदं ॥ पुनः सुखर एक मन्त्र विन ठाण ॥ पुनः  
 स्वामी अंतरजामें लाल सुख मरी ॥ पुनः  
 ज्ञानी ध्यानीन मान तुलसी सुख मरी ॥ पुनः  
 वलिहारो ॥ मैं, सुख एक घरी ॥ पुनः  
 हे न्यारी ॥ कि० ३ ॥ सुजाव धरी ॥ पुनः  
 कि० ४ ॥ नाथ निरंजन तोच धीरा ॥ पुनः  
 मुजरा साजिम न्यारा, एक मोर पप ॥ पुनः  
 मु० ॥ साहिव सुअ० ॥ ५ ॥ आणार ॥ पुनः  
 मु० १ ॥ केशर चं ॥ चवणा जंगन ॥ पुनः  
 वजाजं अगर उखातकाव, मातभरक नह ॥ पुनः  
 वाजित्र वजाजं ॥ ॥ च० १ ॥ मैं मन व ॥ पुनः  
 हरखित, दास ॥ मिलके, कार सदा में ॥ पुनः

फंदा तोम मोहकी फासी ॥ जिनचंड सूरेश्वर विजयराजके सर  
सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पाठक हितवृत्तन चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री  
संघ सदा कल्याण जक्ति बुध दीनी ॥ सन् उगणी सय भ्रमताल  
माघ सुद लीनी, सुन्न वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल  
क्ष्मी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्रसार कहै सुखकार जक्तिरस  
पीनी ॥ जइ कंचन काया प्रज्जु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोकी, तोरण  
आये फेर मत जानु, तुमकुं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान  
लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ उप्पन्न कोर जादव  
मिल आए, ए अवसर नही फिरणोकी ॥ ने० २ ॥ रय फेरी गिर-  
वरकुं सिधाए, हमकुं ठांसी नव जवकी ॥ मेरे सामरे ह्याम सखू  
णे, में इहां नही अब रहणोकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी में तो-  
कुं कहतहुं, देखूं शोभा गिरवारकी ॥ मातापिता वायव सब ठंसी ॥  
जामुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवै राजुल,  
बात सुणो पियु मुऊ घरकी, हमकुं ठोर चले निरधारी,  
अब हे पीतम सरणोकी ॥ मा० ५ ॥ नेम कहे तुम सु-  
ण हो राजुल, विषयारस पीत प्रकोरषी ॥ यह संसार असार निरं-  
तर, कर करणी ता-त गहि के जलक ॥ पियुजी पासे संयम  
लीयो, जिनसें क पा दरभ्यानर प्रश ॥ करिने उत्तम कीनी, यह  
जव पार उत्तरणोकी ॥ ने० ६ ॥ राजा राजुल नारी, पो-  
इता सेज परमपद, रै व जिवधे, दा ला राजुल नारी, पो-  
हे जिनकी ॥ ने० ७ ॥ कावना, जगले मर लावणी, जिनसें  
काया उदरणोकी ॥ ने० ८ ॥ सुखकोर, धूपहै, फिर फेरा नहि  
॥ ने० ९ ॥ चंपा धूपहै, फिर फेरा नहि  
॥ ने० १० ॥ चंपा धूपहै, फिर फेरा नहि

॥ अथ जिनदासजी कृतं १० घन तथां लावणीयो ।

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरो जव पार

॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले ज्यो अव-

तार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाण दुख की संसार

॥ करो प्रभु निहाल अजी जिनदास, रखो प्रभु मुज चके पा

स ॥ १ ॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली

समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं घाली ॥ अनंत जव ख वांध्या

खाली, वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदास मांभे, फि० ॥ अरु

पुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाजिनंदन आणकर बोळपो

केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटःही धर्म ॥ अब मनु

॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवन अब ० १ ॥ में सुरनर

गुण जिनदास गावै, शीश चरणें ० ॥ मारे शिव समताका सुख

या मेरा हसकर, चढावुं चंदन जे कुदेव जला कर ध्याया, जला

सकर, पाप दल दूर गया खसकरन विषय जोग जाया ॥ में पमचा

हटाया कर्मो कालसकर ॥ श्रीजिनगो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय

लिया वासा ॥ ४ ॥ समज मन जे परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म०

कणवाला ॥ वस्या तेरे हिये कुर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥

ला ॥ फेर तो ममताकी माला में धर रे, तुं करमकी माला काट

यासें दे दिया ताला, देखो जियार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं

गणधर प्रेमपती, मुजे वरदान रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान

अमती ॥ पूठ पर खमे जागततिरिया कर जान बैन अर जाई सो ने

मिटी मेरी दुर्गतिकी सब गती मुज मन जायो सदा गुण गीत, गन

चंद जक्तिसें पावै ॥ ६ ॥ किकरो नरक नही जानें ॥ अ० ॥

ज्यां जरती कुमति नारी ॥ ६ ॥ में मन वच काया ॥ ६ ॥

कामी संसारी ॥ इनोकी हार ॥ सदा में जानें ॥ सो नंद, ॥ ६ ॥

धरमधारी ॥ तुं तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आ  
या ॥ ७ ॥ चैत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हांसी ॥

कुमतिकी गले फांसी, सुमतिखुं रखी हे नदासी ॥ कुमतिकी  
वसी सेरखासी, मान रह्यो ममताकूं मासी ॥ हियो  
खोल इतकूं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ७ ॥

पर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया  
नेमनिग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊन

आये फेर मत आती तेरी डुरगतिकी गानी ॥ सेवक तोरा जिनदास  
लेख तुम व्याहन अमही काजै ॥ ए ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी,

मिल आए, ए अवसर री ॥ किया निज गुरु नियंत्रणज्ञानी, कानसे  
वरकुं सिधाए, हमकुं बांझतमें अधिक चढयो पाणी, गती तेरी  
ऐ, मैं इहां नही अब रहयेकी ॥ नंजिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही  
कुं कहतहुं, देखूं शोभा गिरवाकी ।

जानुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ठकर अपणें, जिन मंदिर जश्ये॥

बात सुणो पियु मुऊ घरकी ही० चल० ॥ चरण जिनवरजी  
अब हैं पीतम सरणकी ॥ माहि० करम सब वन मनका मेरे

करम सब तन मनका भेटो  
कोई नवरका गुण नज लौजै, सम

लीयो, जिनसे क  
भव पार कतरयो

हता सेज परमपद है जिन्की ॥

हे जिनकी ॥ ने० ॥  
काया उद्धरणकी  
॥ ॥

॥ नेत्रे ॥ काया परी नंगी ॥ प्रीत सब  
॥ चंप ॥ खरची खुटी, चेतनसे काया

जगतमें रहता नदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी डुर  
गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा—मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख  
पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चाहिये  
रे—मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम नजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे—मु० ॥

अब अचल अखंभित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ में रुढ्यो चोरासी  
मांदि नूढ्यो में नरम, नूढ्यो० ॥ महारे नदय अनंता डुख बांध्या  
जंव कर्म ॥ में कदियक हूनु रंक फिरयो तज शरम, फि० ॥ अरु  
कदियक राजा नयो गरयको गरम ॥ जब गरब आणकर बोढ्यो  
पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनु  
ष्य जनममें चेत धनी शुन आई रे, घ० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर  
का सुख वार अनंती पाया, अन० ॥ मारे शिव समताका सुख  
हाथ नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव नजा कर ध्याया, नजा०  
॥ में नलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग जाया ॥ में पन्था  
लोन्नेके फंद जोन्तो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय  
कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म०  
अ० २ ॥ अब डुलज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥  
अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट  
प परिहर रे, पा० ॥ अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं  
निर्मल नयणे देख जगतसें मर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान  
अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बैन अर जाई सो ने  
वे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुऊ मन जायो सदा गुण गीत, गन  
सदा० ॥ अब इतन दुख पा करो नरक नही जाउं ॥ अ० ॥  
मांही देव जिनेसर नेमके ॥ में मन वच काया ॥ अ० ॥  
द्वयानं ॥ ए दथा, कि कार, सदा में चाउं ॥ सानंद, ॥



घोरासी के माहि फेर नही आनं ॥ यूं अरज करै जिनदास, कीरत  
एगाई रे ॥ की० अब० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी ॥ हारे तूं कुमति कलेसण  
नार, लगी क्यूं केमे, ल० ॥ चल सरक खनी रह दूर तुजें कुण  
ठेमे ॥ हारे तूं सुमतीको जरमायो, मुजे क्युं ठोरी, मुजे० ॥ मेरी सदा  
शाश्वती प्रीत भिन कमें तोरी ॥ तुज विन सूनी मेरी सेज, कहूं करजोरी,  
क० ॥ उठ चलो हमारी संग सुखे रहो पोढ़ी ॥ थुं फुरश कुमति  
आंसु आंखसे रेमे, आं० च० १ ॥ हारे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति  
में रुठो, सेति० ॥ पकरयो साचो जिनराज, संग तेरो वूटो ॥ तेरो  
भूरख माने वात, हियाको फूटो, हिया० ॥ में सहज हुवो हुं दूर  
तार तेरो टूटो ॥ तुम करो दूरसे वात आव मत नेमे, आ० च०  
२ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नहिं पाली, पल० ॥ सुमती  
के लागो संग मुजें क्यों टाली ॥ तूं सुमतीको सिरदार, सुणावे  
गाली, सु० ॥ तेरी हम दोनूं हे नार गोरो जर काली ॥ तूं हम  
कूं वेले दूर सुमतिकुं तेमे, सु० च० ॥ ३ ॥ अब कुमतीको लल  
चायो, रती नहिं मिगियो, र० ॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय  
जगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं जगियो, दू० ॥ जिनराज  
वचनको ग्यान, हिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तूं वात खोटी  
ल मन खेमे, खो० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

अब ॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका खयाल, इसकका गाना, इस०  
हता से अलप कुमर खूट जाय, नरक उठ जाणा ॥ तें दिना चार  
हे जिनकी च लिया हे वासा, लि० ॥ तेरे सिर पर बैठा काल, करे  
काया उद्धर ॥ में बोलूं साची वात, जूठ नहीं पासा, जू० ॥ तूं सूता  
निंद, किसी कर आसा ॥ अब तेरी देव जिनराज खलक  
ना, खल० ॥ तेरे जीवन-सुखाका रंग, जूठ सब

आसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समऊ रे दिवाना, स० तु० ॥  
 १ ॥ अब बुरी जलौ सब वात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मी  
 ठा संसार जेद नहीं दीजै ॥ कर वोतराग विसवास, हिये धर ली  
 जै, हिये० ॥ पण नीच नारका संग मांहे मत ज़ीजै ॥ अब सात  
 विसनको संग, प्रीत मत कीजै, प्री० ॥ तोहे दुरगति दे पोहचाय  
 तेरो तन ठीजै ॥ तुं सुख दुखका सिरदार, रंक नह राणा, रं० तुं० २  
 ॥ तुं विसरगया जुग बीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कु  
 टंबके काज, किया फंद धरका ॥ ते दया धरम विन खोया, जनम  
 सब नरका, ज० ॥ तेरे पछे बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लि  
 था नहीं ते लाज, वखत पर करका, व० ॥ तेरी वीती वात सब जा  
 य जनम युं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे  
 स्याना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद  
 दिल आया, आ० ॥ मेरी ज़गी जूख सब प्यास सुधारस पाया ॥  
 मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनेसर राया, जि० ॥ में चाहुं चर  
 णकी सेव सफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसणकी, मेरे ए  
 हि माया, मे० ॥ यूं अरज करै जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब  
 बुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार,  
 सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस  
 असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर ठाजै ॥  
 ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्ञान, जगत सब लाजै ॥ एसो नेम  
 नवल इक वींद, अनोखो बाजै, अ० ॥ सुरनर सब गावै गीत, गनन  
 में गाजै ॥ अब दोहर सब डुनियां, देखणे आई, दे० ॥  
 १ ॥ अब चढा नेम ते गिरवर रे ॥ ग्यापवरकर, आ० ॥ ६ ॥  
 आयै सुरंगा साज, कितलै वनखंर में० ४ ॥ इति परमानंद, ॥ रि

हिया जरकर, ह० ॥ ले गयो पत्नी नेमनाथ, मेरो मन हरकर ॥  
 सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० ह्मे० २ ॥ अब  
 इण अवसरमें सूरत, स्वामकी लागी, श्या० ॥ पशुअनकी सुणी  
 पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्या-  
 गी, शिवरमणीके शिर वींढ, वण्यो वैरागी ॥ अब महल चढ़ी रा-  
 जुलकूं, खनी बिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके  
 नही पाणी, टि० ॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी ॥  
 अब कठन जीव डुरगतको, बन्यो मेंदानी, ब० ॥ जिनदास करो  
 नव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी  
 गई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक बीच मगसी पारसका बाज रह्या मंका, मुगति गढ  
 जीत लिया वंका रे, मु० ॥ मुल० ॥ करमदल बलकूं कय कोया रे,  
 क० ॥ मुगतिमहलमें केलि करै, अनुभव अमृत पीया ॥ शाशता  
 जीया, महाराज शा० ॥ कल्याणक कारज कीया, अमरापुर पद-  
 वी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥ मुल० १ ॥ प्रजु  
 पारसजले जाई रे, प्रजु पा० ॥ जाव जमरकामेट जोत तेरी जगमें  
 सवाई ॥ टेककूं टालो, महाराज टे० ॥ चंचल चितसे मत चालो, गुमान  
 गरवकूं गालो, गरवसे धूरु मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे  
 शुभ जाग्य उदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांहि प्रजु  
 मगसी पाया, पापसे मरता, महाराज पाप० ॥ जवि जीव ध्यान  
 दिल धरता, आवक नित समरण करता, मरण डख मिट्या मेरे  
 हाका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमो मगसीकी अब जाणी रे,  
 काहू नहि ऊधनी मेरी ॥ खब बिना पाणी ॥ मेरे  
 वर जाच्या, मगसी कर आसा ॥ अब दास जिनंदसे राख्या, म-  
 खल० ॥ तेरे जीवन

गंसीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संका रे ॥ क० मु० ४ ॥

॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती ना रही  
रे, पुदगलमें मान्यो सुक कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहे  
जैन निज सार संघाते आवै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वैगो,  
विषय गुण गावै ॥ अमृतकूं अलगो ढोल, बिसन विष खावै, वि० ॥  
सुगतीको मारग मेट, नवटमें जावै ॥ थारी तुछ जिंदगानी मांदि, विक्क-  
लं बुध जई रे ॥ पु० १ ॥ थारे धन दोलत जंमार जरयांहे मोती, जं-  
र्या० ॥ संत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसलें तेख  
फूलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख उठ आवै, अंबला तेरो मुख  
जोती ॥ एसी संपत ङिन मांदि सरब क्य जई रे, स० ॥ पुद० ॥  
१ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सु-  
खजर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सजिया शोले सणगार, नारिसें  
मोह्या, ना० ॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक नि-  
गोदकी वाट, पकर कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो  
आठ मद मांदि, गरबसैं बोले, ग० ॥ में सुख संपतको ना  
मेरे कुण तोले । दुर्बल करता पोकार, पलक नही खेवीनवै,  
चाकर हुय रह्या इजूर चमर सिर ढोलै, अब  
यो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥ पु० ४ ॥ कायासैं जिन धारी है ॥  
इ चंगी, व० ॥ पलजर परवारयो पुन्यतणो धारी है ॥ कहुं  
परजवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ ते काल आचारी हैं ॥  
काया पनी नंगी ॥ जिनदास कहे करमोंसैं ॥ है ॥ कहुं २ में० २ ॥  
॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः धारी है ॥ निन्नव अरु

तुम तजकर राजुल नार, तर कहुं २ में० ३ ॥ संवेगी  
में नमुं नेमके पाय गया गिरवर रे । ॥ ग्यान ध्यानसैं शिवपद-  
पल्ले लागी, तुम त्याग चलै वनखंर में० ४ ॥ इति पदं ॥ आदि

सत्तवंती जावसैं त्यागी, जा० ॥ थारे अंतरघटमें ज्योत ज्ञानकी  
 जागी ॥ यूं रोती राजकुल नार नेण जर रे, नेण॥ में० १ ॥ में अरज  
 करुं करजोम, करो मन परसन, करो० ॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार,  
 देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन,  
 ल० ॥ मेरे आवै नयणमें नोर लग्यो नित वरसन ॥ मेरे नेम मिल-  
 नकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ में० २ ॥ मैं नहि कीनी त  
 कसीर, चले क्यूं रुठै, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस  
 चूटे ॥ मैं रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूटे, जो० ॥ मैं चलूं  
 पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं उर, जगतमें वर  
 रे, ज० ॥ में० ३ ॥ तुम तारी राजकुल नार, मुगतमें मेली, मु० ॥  
 पीछै नेम गये निरवाण, करम सब ठेली ॥ मैं नित ऊठे परजात,  
 नसुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहिं उर जगतमें बेली ॥ यूं  
 अरज करे जिनदास सुणो जिनवर रे, सु० ॥ में० ४ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहिं पाया, दूजेकुं क्या  
 समझावै ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, होयो हाथमें नहि आवै ॥  
 वी लीया, द चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रिका  
 पारस नजले ज्यो, ग्यानकला कहो केलें जगें ॥ तृष्णाने जग लूट  
 सवाई ॥ टेककुं टांछरी परधनकुं ठगै ॥ खायर लोही मांस बधायो,  
 गरवकुं गालो, गरवसेने पगे ॥ विषय विपतकी करै चूषणी, चरचासैं  
 शुभ ज्ञान्य नदय आया ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकुं नहो देखै,  
 मगसी पाया, पापसे करत हिंसाहीमे हूओ हजुरी, दया दूर दिल्सैं  
 दिल धरता, आवक नित सनेप मेरो मन, अवगुणके रसकुं चाखै ॥  
 शाका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ नरणो जिनवर किम राखे ॥ ठग फा-  
 का ॥ नहि ऊपरी मेरी ॥ नसुं इनकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥  
 ॥ वर जाव्या ॥ नसी कर अ ॥ नसुं इनकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥  
 ॥ नसी कर अ ॥ नसुं इनकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥  
 ॥ नसी कर अ ॥ नसुं इनकुं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥

नही गाममे रुख अंबको, एरुं अंब सरिखो सूजै ॥ पारखे नही  
 हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुजै, गामर देख कहै मुज  
 धरमें, कामधेनु इतनी दूजै ॥ ऐसी मेरी अविनीते आतमा, अव-  
 गुण किम गाया जावै ॥ वं ० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें  
 भातो, लोभ मांहे जपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी,  
 पीम पारकी नहिं सहतो ॥ जगति नही गुरु देव धरमकी, कवन  
 वचन मुखसे कहतो, अंतर आंट न खुलै हियाकी, पूठ परमपदकूं  
 देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥  
 वं ० ही० आप० ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु नियंत्रकूं, वे जिन  
 मुझधारी हे ॥ पुलक ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे  
 ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवै, गंत नियंत्रकी न्यारी हे ॥  
 कनक कामनीके नही जोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ ठ  
 कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काटकर के-  
 वल पावै, ज्ञानगरथ गुण जारी हे ॥ न० ३ ॥ शुद्ध अंशसें सुम-  
 ती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै,  
 उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ करूं२ में ऐसे सदगुरु, धिवर कटप जिन धारी हे ॥  
 सरधा शुद्ध सदा उपदेशी, जिविजनके उपगारी हे ॥ करूं२  
 में० १ ॥ चार निक्षेपे सप्त जंग नय, देश काल आचारी हे ॥  
 विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २ ॥  
 सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्नव अरु  
 पाखंड खंनते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी  
 अरु संवेगपही, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद-  
 साधै, कहे पाठक रुद्धसारी हे ॥ करूं२ में० ४ ॥ इति पदं ॥ आदि

॥ अथ कुंगुरूकी लावणी ॥ तजुं१ में जन कुगुरूकुं, कनक का-  
मनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी बात न जाणे, अष्ट करमसें नारी  
हे ॥ तजुं० १ ॥ करी कपाल वनूत लपेटी, शिर पर जटा बधा-  
री हे ॥ कान फामकर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तजुं०  
२ ॥ जोग लेइ जंग जीव विनासै, वे मद मांस आहारी हे ॥  
कूना पंथ जगतकूं करतां, मुखसें कहे आचारी हे ॥ तजुं० ३ ॥  
कहूं नगुण कुगुरूकां कव लग, साथ नही संसारी हे ॥ आप मुवै  
नरनकूं सूवावै, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजुं० ४ ॥ समकित  
श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकूं प्यारीरे, जिनवरकूं जिनदास बीन-  
वै, कुगुरू संग खुआरी हे ॥ तजुं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास जूगो रे जूगो, येने  
लेइ लाकनी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं नरतो, ग्यान  
दियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही धरतां, जैसो लकरुको ठुंगो  
॥ यो० १ ॥ नणवा गुणवाका गुण नहिं आया, कोरोही पक-  
रुयो पूगो ॥ गपोना सुणकर लोक पूजता, ए अलग मालको ठुंगो  
॥ यो० २ ॥ पंनित गुरुकी सोबत पाई, चेत्यो ना दीयाको फूटो,  
साचा नरको संग न करतो, कूरु कपट नहीं ठूटो ॥ यो० ३ ॥  
जूगोही बोले जूगोही चालै, कपट करे एक मूगो ॥ साचो एह अ-  
सार देखके, जिनदास सबसुं रूगो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह म-  
स्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिव, आज घटे  
तनकी ॥ खबर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो क-  
रले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंरुल रवी चंडमा,  
रुजी चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां  
गङ्गाकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सपणेकी मया, उस

सुंद जलही ॥ विणस जावता वार न लागै, डुनिया जाय  
 खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी हे मंगल-  
 की ॥ हंसा ठाम चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥  
 मनमावत तन चंचलदस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सदगुरु अंकुश  
 दीया आनके, वार्ता जई थलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बं-  
 धव जाई, सब जन सुतलबकी ॥ काया माया सबे कारमी ॥ ए  
 तेरे कवकी ॥ ख० ६ ॥ ऊठ कपट कर माया जोमी, कर वार्ता  
 लकी ॥ बोजकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय डलकी ॥ ख०  
 ७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ऐ वाता सलकी ॥ राग द्वेष छ  
 पजै नही जिनकूं, वीनती अखैमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन जांत तिरणा ॥  
 हम डुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति  
 को० ६० १ ॥ घोराघोर तरकके ज़ीतर, नानाडुख ज़रना ॥ मा-  
 रन तारुन वेदन ज़ेदन, नर देह धरणा ॥ दीनप० २ ॥ कबहुक  
 तिरयंच जोनि पायकै, गलै फास परना ॥ कुधा तृषा अरु शीत  
 ज़ष्णाता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विज्रूति पायके सुंदर,  
 देखै ज़ूरना ॥ जब माला मुरजावण जागी, सोच किये मरणा ॥  
 दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके ज़क्यो, कहूं नांही धिरना ॥  
 साहिब तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थकर महावीरने, कौशल गुणधर साज ॥ कानून  
 प्ररुप्पा हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप  
 जावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोहच्यो  
 सुगति मजार ॥ २ ॥ चवदै सदस साधु दुआ, आर्या बत्तीस ह-  
 जार, लाखा आवक आविका, पाया जवजल पार ॥ ३ ॥ (चा जागि



रंकेके ख्यालकी) मेरी अदालत प्रभुजी कीजीयै ॥ जिनसासन ना-  
 थक, मुगती जाणेकी मिंगरी दीलियै ॥ जि० ॥ खुद चेतन मुद-  
 ई बनादे, आठुं करम मुदाला ॥ दावा रसता मुगति मारगका,  
 धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १ ॥ तप कागद इष्टांम लिया, त-  
 लवाणा कमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजबून वणाकर, अरजी  
 आन गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ मैं जाता था मुक्तिमारगमें, करमोंने  
 आघेरा ॥ धोखा देकर राह झुलाया, लूट लिया सब मेरा जी ॥ जि०  
 ३ ॥ बहोत खराब किया करमोंने, चौरासीके मांही ॥ डस्क अ-  
 नंता पाया मेने, अंत पार कतु नांही जी ॥ जि० ४ ॥ सबे मिले  
 वकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना, तब  
 मैं अरजी मारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आ-  
 ठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर वना चौधरी, उसकूं पूठ मंगावो  
 जी ॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी ॥  
 हाजर आवो जुआव लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥  
 जि० ७ ॥ आठुं मुदा लै हाजर आवे, मोह मुगत्यार  
 बुलाये ॥ ग्यार कषायरु आवे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये  
 जी ॥ जि० ८ ॥ ( टेर मुदायलेकी ) ॥ जिनशासन ना-  
 थक, रूठा दावा दे चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही बहकाया  
 इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, ऐसा फरेव  
 नचाया जी ॥ जि० ९ ॥ विषयजोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा  
 न जगल ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ताना जी ॥  
 जि० १० ॥ हाजर खरै गवाह हमारे, पूठियै हाल जु सारा ॥  
 बिना लियां करजा चेतनसें, कैसें करे किनारा जी ॥ जि० ११ ॥  
 ( दे मुदीकी ) ॥ चेतन कहै सतावी मांही, सुण शास-  
 की दार ॥ इमानदार हैं गवाह मारै जाणे सब संसार जी ॥

जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ ॥ (डुहा-साखी) नयसेनजी  
जीव अनंते राह चलतकूं, लुंठ चोराजीव करि एकठा, वामो ज-  
१३ ॥ बनेर पंक्ति इन लुंटे, एस त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी  
नर पाप कराया, ऐसा करज च कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुर-  
सल एन सरकारी सूत्रमें, मन्हा-साखी) याको जोजक होवसी,  
हिंसा कहकर, उलटा जीव फ सुणी नेमजी, थरहर कांपे देह ॥  
अर्थसे वेद पढाया, हिंसक यनेम० ४ ॥ पीठसे राजुलदे आई, हाथ  
खाकर, ऐसा मुझे सतायार्जकहां तू जावै मेरी जाई, नर वर हेरू  
बताया, तपस्या सेती निगामेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥  
जाल फेलाया जी ॥ जि० टी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने  
अपील होण न पावे ॥ दयां सबही समजावै, हियै राजुलके न-  
जावै जी ॥ जि० मे० १४ ॥ दो दरसावै, मेरे मन नेमकुमार जावै ॥  
को समजाया ॥ चेतनकीं कण दोरमा, तोम्या नवसर हार ॥ काजल  
या जी ॥ जि० मे० १५ ॥ सब सिणगार ॥ सहेड्यां सबही विल-  
सेती दिलाया, जि० ॥ सुधा सब शोले सिणगारा, आनूषण रत्न-  
पाई ॥ फागुण सुदि दशम सबही सुख खारा, गोरुकर चाली निर  
जि० मे० १६ ॥ इति ॥ पिता परवारकूं, तजतां न लागी वार ॥

॥ अथ अजाय चढि गिरनार ॥ जूरति गोमि मा

साहब अदालत पर ल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो  
लाए है ॥ शील हे सिद्ध गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन बुरुवाई  
वारण सत्त भावगण जुल गिरनारपें, दिनो संजमदान ॥ नवलराम  
ग्यो हे मोहोसल ताकपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध  
है ॥ रोसकी रसूम इति पद ॥

सत्यार लटकाये है नाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

धी, तबके कुठ स्वालगनमें कारि, राजलकं गिरिह डख जारि

॥ ठा० ॥ चौमासा लग्या रस जिना, अलि अपाढ रंग  
 महिना ॥ च्याहं तरफसें वादल पिना, विजलिने चमकणा  
 किना ॥ दिख होत धरुकता सिना, में अवला सखी  
 पति हीना ॥ ( उम्माना ) सरररर चंचल समीर, धररररर  
 करत सरीर ॥ मररररर मरत समीर ॥ अलि केसी करुं तदवीर,  
 बुरी तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ आवषामें  
 श्याम धनघोर, जरजोर बोलते मोर ॥ दाडुर मिल करते दोर,  
 पिनु पपझ्या सोर ॥ ऊरु लग्यो वूंद ऊमऊोर, बिच चमके दा  
 मनी कोर ॥ ( उम्मावनी ) खरुमरुमरु रवधनमाला, तरुमरुमरु  
 जल परनाला, अरुमरुमरु नाला खाला, में डुखी हुई बेहाल, हीयेमें  
 साल, हुई जलवारी ॥ राजु० २ ॥ जाद्रवमें पवन प्राचीना, वाद  
 लमें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर ऊीणा, ज्युं बाजै मनोहर  
 बीणा ॥ अब ऐसे कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुझे डुख दीना ॥  
 ( उम्माना ) युं विदपत मुख मुरझाई, सखियन मिल दौरु जगाई,  
 युं विदखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोमके प्री  
 त, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नही धीर, याडुचंद  
 जये वे पीर ॥ ऊठ चली नेमके तीर, काटन कमे जंजीर ॥ प्रीतमसें  
 लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ ( उम्माना ) शिव राजुल  
 नेम सिधाए, इंद्रादिक जसु गुण गाये, जे वजन मिल शीश नमाए ॥  
 मुनि कहे कपूराचंद, प्रेमसे उंद, जे किं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिका विवाह रूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज हे, प्रीतम दोनुं प्यारीका ॥ ऊगमा  
 दिख धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति ॥ दोनुं नारीका० ॥ चि० ॥  
 कहंति सुमता सुणारी शोकन मोह लिया ॥ प्रीतम प्यारा, अविरत न-  
 कयाय इस्कमें जल गया सुधबुध सा ॥ तूं वैरण हे जनम२की

तेरा संग लगे खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होती  
 न्यारा ॥ कहुं खराबी कब लग तेरी तेरा खरत छंदगारीका ॥  
 जगमा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग  
 अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क जमर है, इंद्री पांच सेवादीका  
 ॥ कर सिणगार कसाय सोलैके राग रंग उनमादीका, मेहुं मोहन  
 रायकी ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पास नही आवेगा  
 वालम वो है फूल हजारीका ॥ ज० २ ॥ सुण रे वैरन बात है  
 मारी तेरे संग दुख पावेगा, तेरा महल पाताललोकमें जहां वो  
 वास वसावेगा ॥ संगतके फल उसकूं लगेगा फिर पीठै पठतावेगा,  
 आखिर बेह देवेगी वैरण कैसे प्रीत निजावेगा ॥ में समजावंगी  
 प्रीतम मेरा जो माने दिलदारीका ॥ ज० ३ ॥ कुमता बोली बात  
 सुमतसे तेरे संग क्या होणा है, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख  
 दुख दोहं खोणा है ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही  
 सोणा है, नही ऊजावा नही अवेरा शिखा सहज विठोना है ॥  
 एसा मेरा जोग ठोमके सहे न दुख अणगारीका ॥ ज० ४ ॥  
 कहती सुमता सुण भेरे प्रीत इसकी संगत नही करणा, दुक  
 इक सोच करो दिल प्रीत वात अरज दिलमें धरना ॥ निगेद  
 इसकी बात कठिन है स कारण वनके नहि पटना, पहली सुखसे  
 फिर दुख उपजे वो बनारीसुं मर मरणा ॥ रतन तीनका तू है  
 जोगी सुगति महल शिणगारो ॥ ज० ५ ॥ ऐसे बोल सुणे  
 ताके चिदानंद न, सुगतिमहल गोमें आंसु जर रोती प्रीतमका  
 त्या पछा ॥ मणी ) है तूं चंपावो साजन सोकणकी सुणके  
 ना, में अबलासे मुख चंद मधुरधुसे होय तुमरा जछा ॥ मेहुं  
 नी जनमरकी, है तूं लागे सबकीका ॥ ज० ६ ॥ तजके संग  
 रतनारीका सुम २ ॥ कपटी साज, संजमसे सिणगार वणाकर

शील सुगंध लगाया है ॥ प्रीत रीतसे सदा मगन हुय सुगतिम-  
 हल जब पाया है, सीख सुरंगी मानो जविजन अपणां दिल सम  
 जाया है ॥ कहे रामरुहिसार प्यारसें तजो ख्याल संसारीका ॥  
 ज० ७ ॥ इति पदं ॥ नेमप्रभूकी लावणी ॥ सज शोले  
 सिणगारं हुई दुस्तीयार सदेख्या सारी, चली राजुल गिरनारी रे० ॥  
 करं केसरिया बेस ठिठक रह्या केश, अजब नखराली, खुली तो  
 जेसे केसर क्यारी रे ॥ गल मोतियनको हार, वशी तो दिलदार  
 हंस जेसी चाली, मधुर मुख वैण उच्चारी रे ॥ ( उमावणी ) नेण-  
 नमे कजरा हृद नीका, सिर सोहै रतनोका टीका ॥ चंदवदन सा  
 हुसन परीका, लगी पियासें लगन, मगन दिल सचन घटा जेसें  
 कारी ॥ चलीतो रा० १ ॥ करे पियासें अरज गरज मेरी सुण  
 वालम दिल वाते, गुने विन क्युं ठिठकाते रे ॥ में चरणनकी  
 दाशं रहो मेरे पाश जोवेने मदमाते, जोरु कर शीश नमाते रे ॥  
 ( उमावणी ) आठ जवनकी प्रीत हमारी, आप पिया में प्रीतम  
 प्यारी ॥ साजन प्रीत निजा इकताही, तेरे विना नहीं चैन, नींद  
 नहीं रैन, सजी तो लगे खारी ॥ सजके खुब वरात साथ  
 लियै राम कृष्णसे जाई, पहा केरतन लगे लगी रे ॥ अब  
 क्या देखी खोट लगा दिल ॥ ( जाई, कहो मुजकूं सम  
 जाई रे ॥ ( उमावणी ) चारुन जवन भिले शीश नमाए दिलमें  
 अरज हमरी लाणा, सुरीका जिं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥  
 मेह लग्या तुमसे नेह ॥ नेदिरूप लावणी ॥  
 ज्ञान एक धर ध्यान स ॥ प्रीतम दोनुं प्यारीका ॥ जगमा  
 विजली जेसी चमक ॥ प्रीति दोनं नारीका० ॥ चि० ॥  
 खिर जावे रे ॥ ( उमावणी ) लिया प्रीतम प्यारा, अविरत न-  
 प्रेम नसीसे करणा, ॥ तूं वैरण है जनमशकी

मान, ज्ञान धोखेकी समझले सारी ॥ च० ४ ॥ गुणवंतोंका संगे  
 रहे नित रंग समझले स्थायी, जगत थोमी जिंदगानी रे ॥ चली  
 जाय सब खलक पलकका नहीं ज़रोसा जाणी, करो सुकृतकी  
 निसाणारे ॥ ( उमावणी ) इतना कह्या जब दिल समझाया, अविचल  
 राजुल नेह लगाया, सदा मुगतिमें वास वसाया, कहै राम रुद्धसार,  
 करो तो ऐसा प्यार, नाम रहे जारी ॥ चली० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चंदावदती मुखसे केती गिरनारीकूं जावोगे, रा-  
 जुल ऊज्जी अरज करत हे प्रीतम कब धर आवोगे ॥ डूब ज़र ग-  
 ती मनमें चिंता नेणामें आसुं ऊरते, हाथ जोरकै राजुल ऊज्जी  
 वार वार विनती करते ॥ ज्ञान वणाई व्याहन आए घरमें  
 आनंद वरते, किस विध बांध चलै गिरनारी भेरी दया नहिं दिल  
 धरते ॥ में चरणाकी खासी जो दासी तुम विन मेरे नही सरते,  
 जूं सागरमें जल विन मबली प्राण धनी पलमें हरते ॥  
 ( उमावणी ) हे तूं महिर निजर कर आव फेर रखला रे, तूं चं-  
 दवदन दीदार मुजें दिखला रे ॥ हे तूं दिलकी धूमी खोल चुक  
 चतला रे, हे तूं मोहनगारा प्यारे हे जी मुझकूं साथ निजावोगे  
 ॥ रा० १ ॥ डूबसुं ज़री वातां मत वोखो राजुल मन धीरज धा-  
 रो, एकर आंसु मिलणे कारण मुगतीमहलमें मन मारो ॥ ज़र नार  
 डूब ज़र जे वीरवारीसुं मन प्यारो, पांच सखी ले साथ सि-  
 जोगी मुगति महल शिणगारो ॥ कवल वचन आंसुमें कीनो रा-  
 सुमताके चिदानंद ज, मुगतिमहलमें आसां हे सुंदर सोच फिकरकूं  
 पकमया पछा ॥ मणी ) हे तूं चंपकली सी नार जोवन मतवाली,  
 गह्वा, में अबलासे मुख चंद मधुरधुनिवाली ॥ हे तूं शील सखूणी  
 हासी जेनमरकी, हे तूं लागे सबकों प्यारी हे जी मुझकूं कदि न  
 कुमतनारीका सुम ॥ २ ॥ कपटी साजन हसकर बोले मनकी

नहि खोलें, या दुनिया सुतलवकी गरजी बिन सुतलव मुख नहि  
 धोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निजणी मुसकल दोले,  
 धन मानव जो प्रीत निजावै तर अयकी रंगरोले ॥ अरज वीनतो  
 करै राजुल वचन रमीला अणमोले, जलदी आयजो नेमकुमरजी  
 सुगतिमहलमें रमजोले ॥ ( बनावणी ) हेवा चंदकपूर अपूरव  
 ग्याल बनावै, हेवा तरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ हेवा जांज  
 ताल रुफ दोल मृदंग बजावै, हेवा आनंद हर्ष वयावै हे जी मन  
 वंदितफल पाजोगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ  
 देख्या रे हो सांवलिया सादिव प्यारा लागे रे० ॥ अश्वमेध घर  
 जन्म लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद  
 वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे ॥ हारै० सु० कोइ० ? ॥ बालपणे  
 शत्रु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ सहा शठ मान हरयो डुखदाई  
 रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर  
 सुगट श्रवण कुंजल हृद जारी रे, कर श्रीफल जुजवंत जलक ठिब  
 न्यारी रे, गल मोतियनको हार बाणो गुलजारी रे ॥ हारै सु०  
 को० ३ ॥ पतित न्यायण तारण विरुद बसाई रे, पारस नाम  
 जपो बरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम बवाई रे ॥ हारै प्रे० को० ४ ॥

॥ अंथ केसरियानाय लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदागिव, मत चढ जाणा धूलेवा ॥  
 गढ़पति जनका बना अरुंगा, मत वेमो तुम जन देवा ॥ सु० १ ॥  
 सकतावत बनावत बोले, हमदी नोकर जनहीका ॥ हींडपति वाकूं  
 हाय जोमै, तीन नुवन शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु  
 पाताल सवेदी, सुरनर वाकूं ध्यावत हैं ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन  
 आवै, मनकी मोजां पावत दे ॥ सु० ३ ॥ गदा राज जनहीसैं  
 आवै, निर्यनियाकुं धन देव ॥ बांज गियावै सुंदर लम्का, सदा

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग  
निवारे जवशका ॥ नूप नुजंग महार करि नदियां, चोरन बंधन  
अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौ धौ धौ धौ धौसा वाजै, दशो दिशामें  
हे मंका ॥ जाउ तातिया नहीं जलाइ मत वतलाओ गढ़ वंका ॥  
॥ सु० ६ ॥ राणाजीहे कमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥  
आंरा कीया थेहीज पावो, म्हे नहिं आंवां आं सांथां ॥ सु० ७ ॥  
भूव भरोम चढां अग्निमाने, जहर जरा है निजरूममें ॥ रुपजदेव  
हे सादिव सञ्चां, देख तमासां फजरूममें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत  
अणे मूलचंद, वमे सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर २ घोमां,  
खज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिन-  
राज ॥ धुलेवनाथ जाचो धणी, वरुणं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ ( चाल  
लावणी ) काश्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जनेनी जायो ॥  
नाजि नरेसर वंश उजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ २ ॥  
सोसव सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपे न्हंवरायो ॥ इसो  
रुपज निधि प्रगट कटपतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ ३ ॥  
खरुगदेशमें नगर धुलेवै, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा  
अपरंपारा, कविजन कीर्ति करता है ॥ ४ ॥ आदौ मुरत काल  
असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद  
थुग, बलि पूजत सूरज चंदा ॥ ५ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी,  
वरस पांचसे पन्नासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण  
गुणरासा ॥ ६ ॥ रामचंद्र शीता अरु लवमन, ए मुरत पूजन  
लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उजेशी ठहराए  
॥ ७ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, वृक्ष



पकरम अरु आपकरमकी, जई लमाई मरमनकी ॥ ३ ॥ आपक-  
 रमके ऊपर नृपनें कुष्टो वरपे परणार्ड ॥ मयणा चिंते कांई नवाई,  
 करम लिखी सो बन आई ॥ ४ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन,  
 आई श्रीजिनमंदिरपे ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरै  
 मनकंदरपे ॥ ५ ॥ ( मोतीदाम ठंड ) तूहि अरिहंत तूहि  
 जगवंत, तूहि जिनराज तूही जग संत ॥ तूहि जगनाथ तूहि  
 प्रतिपाल, तूही मनमोहन तूही दयाल ॥ १ ॥ तूहि जवजंजन  
 ज्ञाव सरूप, तूहि अरिगंजन रंजन ज्ञूप, तूही अविनाशी  
 तूही बीतराग, तूही माहाराज तूही वरुजाग ॥ २ ॥ तूही गुण-  
 धाम तूहि विसराम, तूहि नवनिद्ध तूहि वरु नाम ॥ तूही अध-  
 नाश तूहि अविनाश, तूही मतिवंत तूही मतिवास ॥ ३ ॥ तूही  
 गुण केवलरूप अनंत, तूही जगतारन तारण संत ॥ तूही जग ध्येय  
 तूही जग ध्यान, तूही चिदरूप तूही जगवान ॥ ४ ॥ तूही मम  
 तात तूही मम मात, तूही मम आत तूही मम वात ॥ तूही  
 सरणागत राखणहार, तूही दुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ ( चाल  
 लावणी ) ॥ करुं अरज एक तोपे जिनपति, कंत कुष्टसें नही मरते  
 ॥ पूरव करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥  
 पण तुज शासन जगत हेलना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म  
 अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुख मोसें  
 सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग  
 निवारण, गुण कीजै जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यहु प्रसन्न हुय फल  
 बीजेरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब जह्वास जई  
 मन, चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर, तनु  
 फरसें, कुष्टरोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवरु,  
 श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीर्त प्रभु तिहारी जूतल,

प्रगट प्रबल हे जस सेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देशरमें  
 प्रजु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागमदेश वमोद नगरमें, जग पर प्रजु क-  
 रुणा कीनी ॥ कितने वरस लग महीमें महिमा, अविचल जूतल  
 रुद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान जयो तब, पातस्याह ले-  
 रुवा आयो ॥ दूत जूत पत्थरकी मूरत, जममुखासैं उखरायो ॥  
 ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की विलराइ, आको यों वाचा बोले ॥ देव  
 हिंदको वमो जागतो, यूं बोलत फिर मोले ॥ ९ ॥ सुनो वात  
 काजी मुखां तुम, एक वातसैं त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल क-  
 हाई, गो वधसैं ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निज  
 रे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब जये महाबल,  
 शस्त्र ऊमोऊम विकराला ॥ ११ ॥ ( दूहा ) महा युद्ध करणे लगे,  
 घाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गामली, आये धुलेव सुरंग ॥ १२ ॥  
 ( चाल लावणी ॥ ) गांव धुलेवा वंशजालमें, गुप्त रहे हैं प्रजु  
 धरती ॥ गाय एक कोनी वनियनकी, आइ बाहां चरती ॥ स्त्रे  
 तिहां पयधारा शिर पर, सांज समैं फिर नही दूजै ॥ रीत करी  
 तब गोपालन पर, गौपाल अरहर धूजै ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो,  
 लह्यो जेद कह्यो वनियनपैं ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित  
 जयो हे तन मनपैं ॥ १ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, रुषजनाथकी  
 मूरत हे ॥ बहिर निकासो करो लापसी, जीतर मूरत पूरत हे ॥ २ ॥  
 ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियों  
 सिठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु ठ दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवासी  
 केइ व्रतधारी, केइ अलुआणे पांव चलै ॥ केइ लोककूं उ-  
 ळार बाधा, कब प्रजुको दरशन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस  
 तरसकी, कहे लोक मूरति काहो ॥ लाओ महाराजकी मूरत,  
 संघ सबे लीनो आनो ॥ ७ ॥ आवरदस्तसैं दिवस सातमें, लापसी

बाहिर तब कीने, अंसर जर वरण रहाए, संघ लोक दर्शन दीने ॥  
 ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें इव्य दिखायो, संघे मिल देवल कीनों ॥  
 मध्य विराजै रुषज तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनों ॥ ए ॥  
 ( दुहा ) संवत अढ़ारे तेसठे, जान सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो  
 डुष्टने, जाखूं वरण बनाय ॥ १ ॥ ( मोतीदाम छंद ॥ ) सदा-  
 शिव राय चिते मन एह, लूटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ जित्हां  
 पति नाथ धुलेव कहाय, लखो लग इव्य जंमर सुणाए ॥ १ ॥  
 जावां अब लूटण गाम धुलेव, अहुं सब माल जई तलखेव ॥ आयो  
 निज फोज जेई दल गाज, तोषां दोय साथ लियां बहु साज ॥ २ ॥  
 कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, जंठा जर साथ लिया कोकवाण ॥  
 तवां बहु लोक कहे महाराज, तही इह कारण कृत्य अकाज ॥  
 ॥ ३ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे नहीं लाज ति  
 हारिय काय ॥ तवां फिर बोले शदाशिव चूप, ग्रहां सब माल  
 अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट कछर, कीयो नज  
 राणह नाथ हजूर ॥ राख्यो नही नाथ तबे नजराण, जयो मन  
 चकितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चित जंमारी बुलाय, मीठे  
 वच बोले सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मजार, कियो  
 तब कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार, जंमारी सबे  
 इ पुकार ॥ करो अब बाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज  
 गरीब निवाज ॥ चढो अब बाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ ( दुहा )  
 जण समें कोठ सेठको, वाहण तारण काज ॥ गये अकिष्टायक  
 नाथजी, जेई गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी  
 सहेर धुलेव मजार ॥ कियो अकारज डुष्टने, शीघ्र चलो जन तार  
 ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संजाल ॥ दो घोरे  
 डोनुं चढे, जेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जित्हां कोष आपे कियो, द-

श दिशि फौज हजार ॥ मार २ चो तरफते, नई लमाई त्यार ॥  
 ४ ॥ ( जुजंग प्रयात ठंद ) कूकू कूकू कूकू वहे कोकवाणं, सण-  
 सण तीर तरकस्त वाणं ॥ धुवाके धमाके वहे नाल गौला,  
 जिंसा कर्कसा जम्मरा नयनमोला ॥ १ ॥ किते अंगपे शखरा,  
 धाव लागे, किते मारते कंपते दूर जागे ॥ किते दंतपे तिरण लेवे  
 वराका, किते थरथरे त्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुझाई-  
 लझा पुकारै, किते दीन होके खुदापे संजारे ॥ किते नाथपे केस-  
 रा खून माणै, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणै ॥ ३ ॥ सदाशि-  
 वने धाव लागो अटारो, पुनी जाउ जसवंत दोनुं संहारो ॥ वमो  
 कोप जाणी सबे फोज जाजी, हुई केशरीनाथकी जीत वाजी ॥ ४ ॥  
 सदाशिवने आखनी अटक लीनो, सचापांचसें रकमरो खून दीनो ॥  
 इसो नाथ धूलेवरो मर्दगाजी, सदा केशरानाथरी जीत वाजी ॥ ५ ॥  
 ( दूहा ) या विध कलियुग जग जणा, तार्या केई जिनराज ॥  
 दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ ( मोतीदाम  
 ठंद ) तूही नवनिद्ध तूही अमसिद्ध, तूही मनवंछित बंछित रुद्ध ॥  
 तूही सिरदार तूही किरतार, तूही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥  
 तूही कामकुंज तूही कामधेन, तूही सुरवृद्ध तूही मम शैल ॥  
 तूही दक्षिणावर्त्त दायक देव, तूही विसराम तूही वरु सैव  
 ॥ ३ ॥ तूही मम प्राण आधार जरूर, तूही मम इच्छित दायक  
 नूर ॥ तूही मम झूप तूही पतसाह, तूही मम रुद्ध जंमार अगाह  
 ॥ ४ ॥ तूही मम मंत्र तूही मम यंत्र तूही मम संत्य तूही मम  
 तंत्र ॥ तूही गछनायक तूही पण्डित तूही जग-  
 पूज्य ॥ ५ ॥ ( लावणी चाल चदनबाल र ॥ राजा मु-  
 नृप आवत हे, केशरमें ॥ जिन मु० ४ ॥ मु-  
 ॥ १ ॥ सहर परगणे देश ॥ व ॥ समवसरण देश देशाना आ-

मूसल वरु राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट  
 अलवट वाटघाटमें, रण रावल डुख दूर हरै, इक चित ध्याने जे  
 नित समरे, अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप  
 धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गरुगरु दौ गरुगरु दौ गरु-  
 गरु, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह छंदेपुर, जीम-  
 लिहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें  
 ॥ ५ ॥ संवत अटार पञ्चोत्तर वरषै, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥  
 मंगलके दिन दीपविजयकूं, दर्शन परशन दो जलसे ॥ ६ ॥ (क-  
 लश-वप्पय ठंद) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल  
 हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, जरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर्म  
 नीती हरन, सब करम उध घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सु-  
 कनु वरन शुद्ध चरन, इंड चंड पदजुगल सेवन, जगत विरुद तार-  
 नंतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, ऋषजनाथ असरनशरन  
 ॥ १ ॥ ऋषजनाथ महाराज, सबे डुख दालिइ जंजन ॥ ऋषजनाथ  
 महाराज, सबे जूप मनरंजन ॥ ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, समरघों  
 बाहर धाये, ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय  
 कविराज बहाडुर ॥ खलकें मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं,  
 सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म बनारशी हे जिनका, घ-  
 ननं घननं बाजै घंटघण ॥ ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥  
 जब कमठासय वेहागाज ॥ १ ॥ अघटा बिजुरी चमका ॥ गिरु  
 धुलव मजार ॥ कियो अकारज रु काजन शंका ॥ आ० २ ॥  
 ॥ ३ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा पीधर चित चमका ॥ फल  
 दोनु जेदे, जेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जिह प्रभू तन ठंका ॥ आ० ३

जत्र पं पं सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ भ्रमक  
धौं मा, घननं घुघरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी  
कट नौ, धौं धौंकट डुंडुंजि धौंका ॥ या विध गीत संगीत  
वजन १ ॥ न करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत  
ताल २ ॥ मौं मौं करते मंका, जेरण फेरणके जनकारे,  
जागमदी जंका ॥ आ० ६ ॥ सुरनर इंड सब जै जै करते,  
जीवत रा जिनका ॥ अमृत नदय तिण वेर जयो  
सुख, को है तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

आदि जिनेशर पारणो ॥

आदिकियो पारणो, आ रस सेलमी ॥ आ० ॥  
घमा एकसेलमी, रस जरिया है नीका ॥ नलटजाव  
श्रेयांश वहिदिवीआठूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुजी  
वाज रही है, वरखा ॥ वारे माससूं कियो पारणो,  
गई भूष सब प्रा० २ ॥ रुद्धि सिद्धि कारज मनोका-  
मना ॥ घर २ मंडुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा  
त्रीज तिवार रे ॥ श्रीसेतूंजा सिद्धि क्षेत्र है, मोटो कहिये  
धाम ॥ श्रीसंघव, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥  
संकट काटो विघनखो मेरी लाज ॥ बे करजोमी  
नानु कहता, रुषर ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीअजीतनाथ महादेववाज, जरूर जिनवर  
॥ ॥ सेवक शिरनामे, तने ॥ कर माफी मारा  
॥ जलियो रांक, अन ॥ आ० ४ ॥ एवा  
॥ इबली दुख दवमें ॥ को ॥ जिन मु० ४ ॥ एवा  
॥ माऊ केमे ॥ ल० ॥ व ॥ रामवसरण देइ देइ

स्था नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणा  
दातार रे ॥ करजोफी कवियण एम ज्ञणे, मारो जवनो फेरो टाळ  
॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रूपभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी रूपज्ञ विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥  
पो० ॥ प्रज्जु आलस अंग दुलसाई, पूवै मरूदेवा माई ॥ पो० १ ॥  
प्रज्जु नंदा सुमंगला राणी, उन्न रुचर सेज विठाणी ॥ पो० २ ॥ प्र  
ज्जु नवलसु नेह सनेहा, प्रज्जु मनवंडित फल देहा ॥ पो० ३ ॥  
प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंडित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अ  
जर अमर पद पावै, करजोफी शीश नमावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजै मंगल च्यार, आज घरे नाथ पधार्या ॥ कीजै० ॥  
पहिले मंगल प्रज्जुजीकूं पूजूं, यसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥  
बीजुं मंगल अगर नखेवुं, कंठे ठवुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे  
मंगल आरती उतारूं, घंट वजाउं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चौथे मं  
गल प्रज्जुगुण गाउं, नाचू थै थैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कदै ना  
थ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटो रे, जविजन सुखकारा ॥ सि० ॥  
प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, ज्ञारख्या विविध प्रकारा ॥ इण गिरि  
गधु अनंता सीधा, एहनी हुं बलिहारा रे ॥ ज० सि० १ ॥ रु  
जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ सि० २ ॥ एण तल  
जव प्रज्जु जेव्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ ज० सि० ३ ॥  
अधैविमनोहर अदभुत, दरशण अतही न ॥ सि० ४ ॥ मूलना  
॥ २ ॥ एण जेव्या, पूजन डख तहु वारा रे ॥ सि० ५ ॥ इति पदं ॥

मात चक्रेसरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ उष्ट  
निवारण सुमति वधारण, राजत संव रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥  
४ ॥ खरतर गद्य नायक सुख दायक, कीरत जग विसतरा ॥ गु  
ण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५  
॥ संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन  
मन हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज० सि० ६ ॥ धर्मशील प  
दपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ ताल पशाये गिरवरना  
गुण, पन्नणे मुनि रुक्सार रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले ज़ारी ॥ प्रथम  
पद तीर्थपती राजै, दोष अष्टादशकूं त्याजै ॥ आठ प्रातीहारज  
गजै, जगत प्रभु गुण दारै साजै ॥ ( दोहा-साखी ) अष्ट करम-  
दल जीतके, सकल सिद्ध ते थाथ ॥ सिद्ध अनंता जजो बीजे पद,  
एक समय शिव जाय ॥ प्रगट जयो निज स्वरूप ज़ारी ॥ ज०  
१ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा चंड सूरज जेशी ॥ उमारयो  
राजा परदेशी, एक जव मांहे शिव लेशी ॥ ( दोहा-साखी )  
चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवझाय ॥ सबे साहु पंचम पदे,  
धन धनो मुनिराय ॥ वखाण्यो वीरजिणंद ज़ारी ॥ ज० २ ॥ द्र  
व्य षट्की श्रद्धा आवै, सम संवेगादिक पावै ॥ विना यह ग्यान  
नही किरिय, नदरशनसें सब तिरिया ॥ ( उहा-साखी ) ज्ञा  
न पदारथ सुख सम पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें,  
निजपद सा रक्षाते ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जो  
गकी महिमा द्वितीय जाणी, चक्रधर गोमी सब राणी ॥ अती दश  
रम करी सोहेत्ये प श्रावक सब मन मोहे ॥ ( उहा-सा ॥  
करम निकाचिपुत्रमपवा, तप कुमार कर ध्याय ॥ कृमा आ



सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत  
 वाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर  
 तन ठवि दमकत, चमकत दामनी ज्ञास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु  
 आनन अमृतरश धारा, ऊनी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत  
 वचन मन मेरो, प्राण प्रभूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कवाण  
 इंधनुषनकी, हिलमिल जमर उजास रे ॥ अपठर गान करत  
 सुर वनिता, कोयल वचन उछाश रे ॥ आ० ३ ॥ धिर चित्त  
 लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अविर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत  
 जरी पिचकारी, बेलूं प्रभूसैं कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गु-  
 लाब फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान धरो  
 वतियनपें, रुद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषभ गया क्युं व-  
 नमें, प्रथम महीना जी लया आशाढ चोमाशा, इंदर वरपणकी  
 आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें प्रई उदासा, प्रभु रुषभ गये वनवासा  
 ॥ ( दूहा-साखी ) रुषभ प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥  
 जरतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी  
 सगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी फिरमिर  
 भेइला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ जरतादिक जी सौ पूत्र-  
 नके रुसैं, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ ( दूहा-साखी ) नगर  
 अयोध्या शुं फुरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलंजा जरतकूं, मेरा  
 पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी  
 विनमें ॥ मे० २ ॥ जादू महीना जी तज धन दोलत माया, वो  
 गया इकेली काया ॥ जरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये  
 विना कमाये पाया ॥ ( दूहा-साखी ) नित न नाटक होत हे,

कर रहै जोगविलास ॥ सब माया या रुषनकी, गोरु गया वन-  
 वास ॥ हेजी जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३ ॥ आ-  
 सू महीने जी सूरतकी ठिव लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके  
 सब लोनी जी पूत्र जये नीरागी, कनी खबर न लो वरुजागी ॥  
 ( दूहा-साखी ) जरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप  
 ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रभु आप ॥ इंद पद सेवे जी  
 नहीं दे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महीना जी कब वो रु-  
 षन घर आवै, मोहे नेणा आण बतावै ॥ नही कागद जी मुऊकूं  
 पूत्र पठावै, मेरा जीव बहोत दुख पावै ॥ ( दूहा-साखी ) फुरती  
 निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ नमकर मिलती रुषनसें,  
 जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते धनमे ॥  
 मे० ५ ॥ मिगसर महीना जी जरत बाहुबल जाई, आपसमें करे  
 ललाई ॥ जरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढ-  
 कर आई ॥ ( दूहा-साखी ) बारा वरस लमते जये, इंद्र दिये सम  
 जाय ॥ चक्रवर्ति वनता गये, जये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप  
 कारण जी खमे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी  
 पमे ठंरका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा  
 जी रुषन जगत प्रतिपाला, में रटुं रुषनकी माला ॥ ( दूहा-साखी )  
 कोइ परवतकी उदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंर तापकी विपतमें, सहै  
 बहोत दुख धंद ॥ जरत मेरे सुतका जी नहीं फिकर तेरे मनमें ॥  
 मे० ७ ॥ माइका महीना जी किसें कहूं दुख मेरा, सब पूत्र विना  
 अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे रुषनका  
 बेरा ॥ ( दूहा-साखी ) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥  
 राज रमणकी गंगा, वो गया बिनकमें गोरु ॥ ऐसा निरमोही जी  
 पटका विरह ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

झरती, सूने मन घरमें फिरती ॥ झरत यूँ केता जी सोच फिकर  
 क्यूँ करती, रदे निशदिन मुऊँसें खरती ॥ (दूहा-साखी) झरत विविध  
 तर ज्ञांतसों, कहता वात बनाय ॥ वनपालक उद्यानके, दीवी वधाइ  
 आय ॥ प्रभू पनुधारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए ॥ चैतका  
 महीना जी हय गय रथ सब त्वारी, सिणगारी सेन्धा सारी ॥  
 झरत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥  
 (दूहा-साखी) इंद्रध्वज आगे चले, जामंरुल हे लार ॥ चोसठ  
 चमर सुरपति करै, डुंडुजी गगन मजार ॥ एसो सुत तेरो जी  
 विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी मरुदेवा  
 मन हरखै, जब रूपप्रभू मुख निरखै ॥ नैणपट उधरुया जी वीत  
 शन पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा-साखी) गज ऊपर  
 सुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी दई, एसें रु-  
 पप्रभू सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभू मगतमें ॥ मे०  
 ११ ॥ जेठका महीना जी रुत गरमीकी आई, में रूपप्रभू चरण  
 छई लाई, दरस नित तेरो जी मुऊंकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम  
 सदा मन ज्ञाई ॥ (दूहा-साखी) धरम शील आधारसें, कुशल  
 सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसें, हरे डुरित डुख धंद ॥ हे  
 जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अर्थ नेमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूवरी वोमथुरावाली एचाल) ॥ सावण  
 महीने नेम पिया मोह व्याहनकूं आये, जगशेन घर वटत वधाई  
 सब मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण ज्ञाई, तोरणसें रथ फेर सि-  
 धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोकं करे हासी-मोह लियो  
 शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ मोह महीने गगन  
 बीच पीया इंदर चढ आयो, बैरण बीज गणेश ॥ मोह जेवत

गरणायो ॥ सखी मोकूं विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी,  
 मदन सदन गयो ॥ तीज विन प्रीतम यूं जासी ॥ मोह लि० २ ॥  
 आसू महीने आश पीयाकी मिलणेकी लागी, तेल चढ़ी मोकूं ठि-  
 टकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने  
 तकशीर कंत मोहे, कैसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी मारी गले फासी—  
 मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी,  
 उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी ॥ पशुनकी दयार्पे  
 चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग ज्ञानी ॥ स्याम  
 तोकुं मति ये क्या ज्ञासी—मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन  
 लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत  
 थ्यारी ॥ पिया तुम चढ़गये गिरनारी, अनंत लोग जोगी सो काम-  
 ला, लगी तुमें प्यारी ॥ पीया में चरणनकी दासी—मोह लि० ५ ॥ पोश  
 पीया जलंजा देती हिये नहीं धारो, नहीं गोमूंगी संग नाथ अब चाहे  
 सो कर मारो ॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक बेर घर अंगण आवो  
 फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समजासी—मो० ६ ॥ माह  
 महीने रुत सरदीकी ठंरु बहोत वाजै, सेज लगे तांगण सी मु-  
 ञकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण ज्ञाजै, नहीं वरुन  
 कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह ठाजै ॥ पिया विन करुं में गति  
 काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग धरोघर खेले दंपति सुख माणै,  
 में अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानै ॥ कौन संग में  
 खेलू होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं बाला जोरी ॥  
 कंत में दरशनकी प्यासी—मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई  
 कोयल सोर करै, ऐसे निरमोहीसे करके कही कुण फंद पमै ॥  
 प्रीत जिन नव चवकी तोरी, राजुल तज सिरगार हार कूं मदन  
 मान मोमी ॥ नेम विन हो रही ऊदासी—मो० ९ ॥ माश

वैशाख आंख घूं उलजै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज डुला-  
री गइ सहसावनमें ॥ देखा शिवादेवीके नंदा, इंड चंड शेवित  
पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी-मो०  
१० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं वाजै कंत बुरी, नही रैण सुख  
चैन शखीरी चल रही प्रेमवुरी ॥ पाप कोइ पूरव उदै आया,  
ठोम चलै घनस्याम आज में दरशण सुख पाया ॥ तजी में सब  
घरकी फासी-मो० ११ ॥ माश असाढ सखी संग राजुल नेम  
चरण नेव्या, धर करणी जव तिरणी होकर धंद सज्जी मेव्या ॥  
प्रीत तुम अजर अमर राखी, रुद्धसार आधार तुमारो प्रेम शिवा  
शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी-मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अजित  
तोत्तम जक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज  
सुंदर सङ्गमंदिरं, विमल केवल बोध विकेश्वरं ॥ अति सुवर्ण  
सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदिय  
जक्तिर्जविनां जवेजवे, जवेदजीष्टार्थ निदानमजुतं ॥ सएव नंदा-  
त्म समुन्नवो जिनः, समर्चनीयः खलु शीतलः प्रभु ॥ ३ ॥ कर्मा  
जितज्ञान जवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥  
सदेव देवो जवतात् सदैवमे, सदिष्ट सिद्धयै जिनराज शीतलः ॥  
४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनुं जन्मा  
सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्तिः स्फुर्तिमत् पुण्यकीर्तिः,  
जयतु गत जवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विगदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित दुरित राशि

विश्व विश्वाधदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्यो, जय  
 तु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली  
 मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कृत पदाब्जेयस्य चृंगीव पद्मा ॥ अवि  
 कृतमात कायोत्सर्ग मुझान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु  
 वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि विभ्रत् सत्फलानां सहस्रं,  
 बहुल विमल ज्ञास्वदूषणोज्ज्वल गात्रः ॥ गुरुतर वर ज्ञक्त्या सक्त  
 चित्ताङ्गजां, जवतु शिव समृद्धयै चाश्वसे निर्जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥  
 कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुह्यातंक शंका  
 पदार्ता ॥ विकशित मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु नृजग  
 लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेन्द्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्या  
 र्श्व तीर्थेशो, निपेय्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै,  
 रघाधस्या नघा गुणः ॥ स्मर्यते येन सस्मार्यो, जवेत् प्राचीन वर्हि  
 पां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यता  
 मकृयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन,  
 येन कल्पद्रुमा अपि ॥ जवेदच्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृताय च  
 ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाज प्रदायकः ॥ कल्याण  
 कारको नूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥  
 यक्षेश पार्श्वो शित पीद पार्श्व ॥ नुवामी पार्श्वे जवजेद पार्श्व ॥ १ ॥  
 स्मेरातसी सून सम प्रज्ञावा, सम प्रज्ञावा जवदीय मूर्तिः ॥ वि-  
 ज्ञाति वामां प्रजव त्रिलोके, जव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥  
 तवेश पस्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता जवेदेक

पदे पराया, निर्वेज वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेषं जूषितं  
 दान वारि, येन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ स एव गव्युत्तमं दानवारी,  
 प्रोच्चारितोदाम यशाः सदैवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव,  
 सुज्ञान सुज्ञानत्रिवुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांगवितीर्णजूषः, कड्याण  
 कड्याण कृदं गज्जाजां ॥ ५ ॥ यैरर्च्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोजिरा-  
 मैः सुमनोजिरामै ॥ कर्मात्रिधै रुज्जित जूषनास्ते, विसारि लोकेश  
 विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य जगवन् प्रोदाम कामा  
 न्वितं, पादाब्जं परज्जाग जृत् त्रिज्जुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं  
 कर्म विपक्ष पक्ष दलने ज्ञव्या ज्वंतु क्षमाः, कड्याणाश्च मुक्ति  
 माप्नु मखिलंतीर्त्वा ज्ञवाज्ञोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी ठंडः ॥ गौमीग्रामे स्तंजने चारु तीर्थे, जीराव-  
 ल्या पत्तने लोङ्गारख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपा-  
 र्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्यं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामा  
 देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे जूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥  
 २ ॥ जित्वा जेद्यं कर्म जालं विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं  
 चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्व० ३ ॥ विश्वाधी  
 शं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कलत्रं ॥ अंजोजाहं  
 सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्व० ४ ॥ वर्षे रम्यं खंङ्ग दोर्त्ताग चंड, संख्ये  
 मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा०  
 ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन सोत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, घनवन्ता घननाद विज्ञा  
 तं ॥ जजत जक्ति जेरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश  
 ॥ १ ॥ विविध वर्ण विज्जूपित विग्रहाः, विहित दुर्दम दुर्पक नि

वसु युगार्क मिताः सुकृताकराः, जिनवराः प्रज्वतु शिवकरा ॥ २ ॥  
 रुचरवर्ण निबद्ध मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रज्जिवन्दितं ॥ निखिल  
 साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल  
 ज्ञव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिन-  
 वरान्न पद्म गतोन्मुदा, ज्वतु वाग्जिनलाज शुजार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांज्जोनिधेः, सद्भा-  
 वेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः ॥ सज्जुत प्रतिबिंब तस्तु-  
 सुतरां गोप्तीपुरोद्भासिनः, सोद्धासंप्रणिपत्य सत्यमनसां तत्रैवनिष्ठं  
 स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो ज्ञव्याव्रजंतोष्वनि,  
 स्पृश्यंतेनहि छुष्टजंतुनिवहे र्वन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्वालदवानलै  
 र्जलचराकीर्णैर्जलैजातुनो, सःश्रीपार्श्वविज्जुर्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्यो-  
 नकेषांजवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणान्तं कुटिलतां मोहादिनोद्भा-  
 वितां, धृत्वानिर्मलजावनांचविधिनायद्भक्तिमातन्विता ॥ लज्यन्ते  
 नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा  
 संसेव्यतांविश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीरुषजस्ततो जितजिनः, श्रीशंजवस्तीर्थकृत् ॥  
 सुश्रीमालजिनंदनश्चसुमतिः, श्रोसन्नपद्मप्रजः ॥ पृथ्वीकुक्षिजवसुपा-  
 र्श्व, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रजः ॥ सर्वज्ञःसुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्री  
 शीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांशप्रज्जुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः,  
 शांतिःकुंथुररस्ततो जितपुर्मह्विर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्द्धतो नमिनेमिशुद्ध  
 मुनिपौविश्वत्रेयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनःप्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान  
 प्रजुः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्रद्धाश्चतुर्विंशति, निःशेषो-  
 त्तमज्ञव्यजंतुहृदयांज्जप्रबोधयताः ॥ विद्यन्तेसुरवंदव्यविशदश्लो



कव्रजानिर्जय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ प्रंगलाष्टकलित्यते ॥

श्रीमन्नमसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रज्ञा, ज्ञास्वत्पादनखेदव-  
प्रवचनांजोधौव्यवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-  
साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्द-  
र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-  
र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्मःसूक्तिसुधाश्चैत्यमखिलं जैनालयंश्रयालयं  
प्रोक्तंतत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ २ ॥ नाज्ञेयादिजिना-  
धिपा स्त्रिजुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोत्तरतेश्वरप्रभृतयोयेच  
क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः ससाधिकाविंशती,  
त्रैलोक्येजयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषभस्य  
निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशे  
लेहतां ॥ शेषाणामपिचोर्द्धयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्दतो, निर्वाणा-  
विनयःप्रसिद्धविज्जवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरज्ञावनाम  
रगृहे मेरौकुलाडौस्थिता, जंबुशाळमलिचैत्यशाखिषुतथावहाररूप्या-  
दिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौचक्रुंरुलनगेद्दीपेचनंदीश्वरे, जैलेयेमनुजोत्तरे  
जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगज्ञवितरोजयत्यर्दतांजन्मान्नि-  
षेकोत्सवे, योजातः परिनिक्रमेवचज्ञवो यःकेवलज्ञानज्ञाक् ॥ यःकै-  
वल्यपुरप्रवेशमहिमा संज्ञावितः स्वर्गिनिः, कळ्याणानिचतानिपंच  
सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ६ ॥ येपंचोषधिरुद्धयः श्रुततपोरुद्धिगतापंचये,  
येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि  
बलिनोयेबुद्धीरुद्धीश्वरा, ससैतेसकलाश्चतेगणभृताकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ७ ॥  
देव्याश्चाष्टजयादिकादिगुणिताविद्यादिकोदेवत्प, श्रीतीर्थकरमातृका-  
भजनकायकाश्चयद्दीश्वराः द्वात्रिंशद्विदशाग्रहानिधिसुरा दिक्कन्यका-  
श्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकव्याणकालेर्हतां, पूर्वाण्हेपिमहोत्सवेपिस-  
ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येऽगृण्वन्तिपठन्ति तैश्चमनुजैर्द्धर्मार्थकामा-  
न्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वन्तुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति  
मङ्गलाष्टकं संपूर्णं ॥

॥ अथ परमात्मां स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबन्धु नैकर्म नकर्ता ॥

न भ्रमं नसंगं नशृङ्गा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥

नबन्धो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नजोगं नव्याधि नजोकं ॥

नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ

नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिद्रा, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं

नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिन्ता, नकुतूह

नजोतं नकृष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नजृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि० ४ ॥

त्रिदंमे त्रिखंमे हरे विश्वव्यापं, रुषीकेश विद्धंस कर्म्मरिजालं

॥ नपुण्यं नपापं नअकानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नबाल्यं नवृद्धं

नविद्धि नमूढा, नवेद्यं नजेद्यं नमूर्तिर्नमीहा ॥ नकृष्णं नशुक्लं नमोहं

नतंज्ञा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नड्यं नक्षेत्रं

नदृष्टो नजगत् ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥

इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, नपूणां नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो

जिज्जिह्वां नपरमार्थं कं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणानि

विश्वैतन्यरत्नाकरं, सर्वज्ञतगतागते सुख दुःख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥

त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायन्ति योगेश्वराः, वंदेतं हरिवं-

श हर्ष हृदयं श्रीमान्मूढच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं,

दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेन च ॥

नृतिष्ठति चिरं पापं, विद् हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य  
 स्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश  
 कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्माभृत वर्षणं ॥ जन्मदाय वि-  
 नाशाय, वृंहणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेज्जक्ति, जिनेज्जक्ति दिने २  
 ॥ सदामेस्तु २, सदामेस्तु ज्ञवेश ॥ ५ ॥ नहित्राता १, नहित्रा  
 ता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नज्जुतो नज्जविष्यति ॥ ६ ॥  
 अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन,  
 रक्ष २ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखंदृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रज्ञं ॥  
 नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नि-  
 त्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्मः सर्वत्र  
 मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इदार्हंतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो-  
 कोत्तमो यतीशानां, धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हं  
 तः, सिद्धा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म शरणं मर्हं  
 तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ तपगङ्गा समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोचनं वृद्ध स्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स  
 कुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रि  
 सदातणो, नंदन गुण गंजरी ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान  
 धर्मवीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनंदनै, चरणे करी परिणाम ॥  
 जविक जीवनाहित जणी, पूढै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मा  
 रग आराधियै, कहो किण पर अरिहंत ॥ सुभा सरस तब वचन  
 रस, जाखे श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार अलोचियै, व्रत धरीये गु  
 रू साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥  
 विधिसुं वलि वोसराविये, पाप स्थानक अद  
 ॥ चार शरण नित

अनुसरै, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ करणी अनुमोदियै, जा  
 व जलो मन आशि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु  
 जाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधनतणा, ए ठै दश अधिकार ॥ चि  
 त्त आणीने आदरो, जिम पामो जव पार ॥ ८ ॥ ( ढाल ॥ १ ॥  
 ए ठिंमी किहां राखी ॥ इस चालमें ) ज्ञान दरिशाण चारित्र तप  
 वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह जव पर जवना, आलोइये  
 अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी  
 रे ॥ प्रा० ज्ञा० १॥ गुरु नलविये नही गुरु विनयें, कालै धरी बहु  
 मान ॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधा, जणिये वही उपधान रे ॥  
 प्रा० ज्ञा० २॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ एह  
 तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥  
 ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव प  
 र जव वलिय जवोजव, मिठाडुकर तेहरे ॥ प्रा० समकित  
 द्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजै, नवि परमत  
 अजिलाष ॥ साधुनणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥  
 प्रा० स० ५ ॥ मूढपणुं ठंमो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा  
 हमीने धर्म करि शिना जगति प्रजावना करिये रे ॥ प्रा० स०  
 ६ ॥ संघ चैत्य प्रख्यातते जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे  
 वको जे विणसाह ॥ इ विपसंतां नवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-  
 त्यादिक विपरीत ० ६ ॥ समकित खंम्युं जेह ॥ आ जव प०,  
 मि० ॥ प्रा० इह साहेबजी चि आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण  
 गुप्ति विराधी ॥ साधुनणे घरमे प्रमादे, अशुद्ध  
 वचन मन, शरीर जे ० चा० १ ॥ आवकने धर्म सामायक, पो  
 सहमां मन शरीर ते ॥ आयणापूक जे आवे, प्रवचनभायन पाली  
 रे ॥ प्रा० चा० ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र रहोद्व्युं

जेह ॥ आज्ञव०, मित्रा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ वारे जेदे तप नवि  
कीधो, ठते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि  
फोरविनं जगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर,  
विविध विराध्या जेह ॥ आज्ञव०, मित्रामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥  
वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर व  
चन सुणीते, पाप मैल सवि घोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२)  
पृथ्वी पाणी तेज, वाज वनस्पती, ए पांचे आवर कहा ए ॥ करी  
करसण आरंज, खेत्र जे खेमीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥ १ ॥  
धर आरंज अनेक, टांका जेयरां, मेमी माल चिणाविया ए ॥  
लीपण गुंण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥  
२ ॥ धोयण नाहण पाणी, जीलण अप्पकाय, ठोती धोती कर दू  
हव्या ए ॥ ज्ञाठीगर कुंजार, लोह सोवनगरा, ज्ञानजूजा लिहालागरा  
ए ॥ ३ ॥ नापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए ॥ इ  
ण परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेज वाज विराधिया ए ॥ ४ ॥ वामी  
वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूटीया ए ॥ पौंदक  
पापनि शाक, सेक्या सूकव्या, ठेद्या वृंद आश्रिया ए ॥ ५ ॥ अल  
शीने एंरु, घाणी घालीने, घणा तिलाकिं रीया ए ॥ घाली कोलू  
मांझि, पीली सेलमी, कंद मूल फल दे शो ॥ ६ ॥ इमं एकै-  
डी जीव, हणया हणाविया, हणतां शो, एक जेया ए ॥ आज्ञव  
परजव जेह, वलिय जवोजव, ते शो, कर्कमं ए ॥ ७ ॥  
क्रमी सरमिया कीमा, गामर गंमो, शो, ब्यामि ॥ शलशीआ ए ॥  
वाला जलो चूमेल, विचलितरसत, शो, प्रवच सुधा सरस मुखना ए ॥  
८ ॥ इम बेइंडी जीव, जे में दूखी, शो, आलोइये, व नदेही जू  
लीख, मांकरु मंकोमा, चांचरु, शो, जे जनि चोरासी ला, गहदिया  
पीवेल, कानखजुरमा, गीमोल, शो, अक्षर ॥ व्यातेइंडी जीव,

जे में दूहव्या, ते मुऊ मिछा० ॥ १० ॥ माखी मछर मास, मसा  
 पतंगिया, कंसारी कोलियावमा ए ॥ टीकण विबु तीरु, जमरा  
 जमरीय, कौंता बग खरुमांकनी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव,  
 जे में दूहव्या, ते मुऊ० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या,  
 वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीरुया पंखी जीव, पानो पा-  
 समां, पोपट घाड्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंडी जीव, जे में दू०, ते  
 मुऊ० ॥ १३ ॥ ( दास ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए  
 चाल ) क्रोध लोभ जय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥  
 क्रूर करी धन पारका जी, लोधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी  
 मिछामि डुक्कम आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥  
 देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥ १ ॥ देव मनुज तिर्यचना जी,  
 मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह  
 रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, जव२ मेली आधि ॥  
 जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोश्य न आवै साथ रे ॥ जि० ३  
 ॥ रयणी जोजन जे कर्या जी, कीधा जह अन्नह ॥ रसना र-  
 सनी लालचें जी, पाप कर्या परतह रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई  
 बीसारीया जी, बलि जांग्या पञ्चस्काण ॥ कपट हेतु किरिया करी  
 जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी,  
 आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अ-  
 धिकार रे ॥ जि० ६ ॥ ( ढाल ४ ॥ साहेलनीनी देशी ॥ ) - पंच  
 महाव्रत आम्रद साहेलनी रे ॥ अथवा ड्यो व्रत बार तो ॥ यथा  
 शक्ति व्रत नःशंख ॥ १० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १ ॥ व्रत लिया  
 संजारीयै, राशरी जेधमै धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन-  
 तणो, साक्षा शार ते अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सबै खमावियै  
 सा० ॥ यो॥ शि॥ ३ ॥ लाख तो ॥ मनशुद्धै करो खामणा, सा० ॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवौ, सा० ॥  
 कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजै  
 जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साइमी संघ खमाविषै, सा० ॥ जे उप  
 नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा  
 सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमाविषै, सा० ॥ एहीज धर्म  
 नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि  
 कार तो ॥ ६ ॥ मूषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ घन मुर्छा मैशुन्न  
 तो ॥ क्रोध मान माया तूष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥  
 निंदा कलह न कीजीयै, सा० ॥ कूना न दीजै आल तो ॥ रती  
 अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-  
 विधर बोलराविषै, सा० ॥ पाप स्थान अछार तो ॥ शिवगति आ-  
 राधनतणो, सा० ॥ ए चोखो अधिकार तो ॥ ९ ॥ ( दाल ५ मी  
 ॥ हवै निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥ ) जनम जरा मर-  
 णो करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्या कर्म सहु अनुजवे ए,  
 कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनु ए, शरण  
 सिद्धजगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रौजैननो ए, साधु शरण गुणवंत  
 तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार  
 तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥  
 आज्ञव परज्ञव जे कस्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म  
 साखे निंदिये ए, पंक्तिमिये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत  
 वर्त्ताविया ए, जे जाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाबलने बले ए,  
 बलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५ ॥ घम्या घमाव्या जे ह्य मु ए, धरटी  
 हल हथियार तो ॥ जवर मेली मूकीया ए, करत, ब्र, संहार  
 तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोपीया ए, जनमर परिवाली ला ॥ जन-  
 मांतर पोइतां पठी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आनक

परजन्म जे कर्या ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध वैसि  
 राविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा इम  
 करी ए, पाप कर्या परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए  
 ठो अधिकार तो ॥ ९ ॥ ( ढाल ठो ॥ आदि तुं जोइने आपणी  
 ॥ ए चाल ॥ ) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान  
 शील तप आदरी, टाढ्या दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शत्रुंजादिक तीर्थ  
 नी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, बलि पोष्या पात्र ॥  
 ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर चिन चैत्य ॥ संघ चतु  
 विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पक्कमणा सुपैरे कर्या,  
 अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवझायनें, दीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥  
 धर्मकारज अनुमोदिये, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
 सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ जाव जलो मन आणीयै, चित्त अ  
 णी ठाम ॥ समता जावे जाविये, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख  
 दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचर्या,  
 जोगविये सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्य  
 काम ॥ ठारि ऊपर ते लीपणू, जाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ जाव  
 जली परै जाविये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
 आठमो अधिकार ॥ ध० ९ ॥ ( ढाल ७ मी ॥ रैवत, गिरि ऊपर  
 ॥ ए चाल ) हवै अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसण  
 आदरिये पञ्चस्त्री च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूकी ठांमी ममता  
 अंग, ए आतन खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यारे कीधा आ  
 हार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीनु रंक ॥ इसहो  
 ए वली२ अणशणनो परिणाम, एहशी पामीजै शिवपद सुरपद ठाम  
 ॥ २ ॥ धन धन शक्ति जइ खंयो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या  
 जवनो पार ॥ शिवांदिर जास्यै करी एक जइ शिवाधन केरो



ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारै महा मंत्र नवकार,  
 मनथी नवि मूँको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जायै दुर्ग  
 ति दोष विकार, सुपरे ए समरो चन्द्र पूरबनो सार ॥ ४ ॥ ज-  
 न्मांतरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर अव-  
 तार ॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह जव ने परजव सुख  
 संपति दातार ॥ ५ ॥ जुन जील जीलणी राजा राणी थाय, नवपद म  
 हिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुं पाम्या बै सुर  
 जोग, इक जवथी लेख्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व  
 ली मंत्र फढ्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥  
 शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना  
 सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर जाख्यो, आराधनकेरो विधि  
 जिणे चित्तमां राख्यो ॥ तिणे पाप पखाली जवजय दूरे नांख्यो,  
 जिन विनय करंता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ७ ॥ ( ढाल ७  
 मी ॥ नमो जवि जावसुं ए ॥ ए चाल ) सिद्धारथराय कुल तिलो  
 ए, त्रिशला मात मळहार तो ॥ अवनी तलै तुमे अवतरया ए,  
 करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में  
 अपराध करया घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आ  
 व्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० १ ॥ आज करीने आवियो  
 ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उखेखस्यो ए, तो किम  
 रहस्ये लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूण आकरा ए, जनम मरण  
 जंजाल तो ॥ हुं हुं एदथी जग्यो ए, गोमव देवदयाल ॥ ज०  
 ४ ॥ आज मनोरथ मुज फढ्या ए, नाग डाख दंदोल तो, तूगे  
 जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥ ज० ५ ॥ जव  
 विनय तुम्हारमो ए, जाव जगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि  
 दीजीये ए पंथी ए, सुपसाय ॥ ज० ॥ १ ॥ ( कलश ) इय

तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जंग जयो ॥ श्रीवीर  
 जिणवर चरण शुणतां, अधिकमन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव  
 सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगहपति श्रीविजयप्र  
 न्नसूरि, सूरि तेजे जंगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वा  
 चक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तश शिष्य वाचक विनय वि-  
 जयें, शुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत जगणतीसे,  
 रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण  
 अन्यास ए ॥ ४ ॥ नरजव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील वि  
 लास ए ॥ निर्जरा देते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥  
 इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिंहाय लिख्यते ॥

जरहेसर बाहुबली, अन्नयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥ सिरिज  
 अणियाउत्तो ॥ अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मे अज्जयूलिज्जदो, वरय  
 रिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंरुअो केसि  
 करकंभू ॥ २ ॥ इह विहइ सुदंसण, सालि महासालि सालिज्ज  
 दोअ ॥ जदोअ दसन्नज्जदो, पसन्नचंदोअ जसज्जदो ॥ ३ ॥ जंबूपह  
 वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चि-  
 लाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिय, अज्जसुहत्थो  
 ज्जदाय गोमणगो ॥ ५ ॥ सूरि सत्तो, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ६ ॥  
 पज्जवो विन्दुकुम ॥ इति कुमारो इहपहारोअ ॥ सिज्जस कूरगडुअ,  
 सिज्जज्जव मेहकु ॥ ७ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुण  
 णोहि संयुत्ता तिष्ठान्ता ॥ मग्गइणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ज-  
 शांसा चंदणवाणो कंतुमनरे ॥ मयणरेहा दमयंती ॥ नुयतं ॥ व-  
 सज्जा, नंदा ज्जदोअत्ता का ॥ ८ ॥ राईमई रिमिद्धा नारीतहगं-  
 पंपणा सिरीदेवी इणवीअ ॥ जिह मिगावई ॥ ९ ॥ माहा-

॥ ए ॥ वंजी सुंदरी रुपिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई  
 होवई धारणी, कलावई पुष्पचूलाय ॥ १० ॥ उदमावईय गोरी,  
 गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चजामा, रुपिणी कन्हव  
 महिस्तीन ॥ ११ ॥ जस्काय जस्कादिना, नूआतह चव नूअ दि-  
 न्नाय ॥ सेणा वेणारेणा, नअणीओ धूलजदस्त ॥ १२ ॥ इच्चाई महा-  
 सईओ, जयंती अकलंक शोल कलिआन ॥ अऊ विवऊई जासिं,  
 जस परुहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीननो सिझाय

॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिछंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ उव्विहआव-  
 स्सथंमि, उज्जुत्तोहोइपयदिवसं ॥ १ ॥ पवेसुपोसहवयं, दाणंशोलं  
 तवोअजावोअ ॥ सझायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥  
 २ ॥ जिणपूआजिणयुणिणं, गुरुअसाहम्मिआणवच्चलं ॥  
 धवहारस्सयसुद्धी, रहयत्तातित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशमविवेकसंवर,  
 ज्ञासासमिईवज्जीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोच  
 णपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिअहुमाणो, पुत्थयलिहणंपजावणा  
 तित्थे ॥ सट्ठाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवणैसां ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोह, जिनवर नामे मंगल कोरु ॥ पदेले  
 स्वर्गे लाख बत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं उधेखस्थ ॥ १ ॥ बीजै लाख  
 अघावीश कह्या, बीजै बार लाख सरदा आकराथे स्वर्गे अरु लाख  
 जभार, पांचमें वादूं लाखज व्यार ॥ २ ॥ गोम्व देगे सहस पचास,  
 ४ ॥ १०० चालीस सहस प्रागाद ॥ आवाग दुःख लं हज्जार, नव द-  
 जिन चोवें शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार होख ॥ ४ ॥ से सार, नव्वे २  
 विनय तुम्हारभटार ॥ पांच अनुत्तर स पाय तें लाख चोरासी हरि  
 दीजीये ए पढी ऐ, १०० स्तानु त्रे ॥ १० ॥ जिनवरनुवईय

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पच्चास उंचा बहोत्तर धार ॥ ५ ॥  
 एकसो असो बिंब परिमाण, राजा सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोम  
 बावन कोम संजाल, लाख चोराणुं सहस चोआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर  
 साठ विसाल, सबी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोमने बहो-  
 त्तर लाख, जुवनपतीमां देवल नारव ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब  
 प्रमाण, इकर चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोमि निव्याशी कोमि,  
 साठ लाख वंदू करजोम ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने ओगणसाठ, तिर्ग-  
 लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशौ वीश ते  
 बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर ज्योतषीमां बलि जेह, शाश्वता जिनवर  
 वंदू तेह ॥ रुपजा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-  
 शेण ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥  
 विमलाचल ने गढगिरनार, आवू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥  
 शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-  
 काणो पाश, जीरावलो ने थंजणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर  
 पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन  
 वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-  
 गार, सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार,  
 पाले पलातलो चाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अन्त्यंतर तप उजमाल, ते  
 मुनि वंदू गुणगाल ॥ निह २ ऊठी कीर्तिकरुं, जीव कहे जव-  
 सायर तरुं ॥ १ ॥ इति खंडोस

॥ इति ॥ इति स्तोत्र ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठाना ॥ गहदिगो गवश्रियः ॥ पुनर्वःस्वरुज-  
 शान, मार्हित्यप्रणिंकृतुममरोहिणी ॥ कतिद्रव्यजावैः, पुनत ॥ व-  
 गज्जनं ॥ क्षेत्रेकालेच्छता काली म ॥ प्रमुपास्महे ॥ नारीतहगं-  
 मंप्रवीनाथ, मादिषवीअ वरुहा ॥ १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १०० ॥

मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितंविश्व, कमलाकरज्जास्करं ॥ अस्त्रोन्-  
 केवलादर्श, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वजव्यजनाराम्, कुड्या-  
 तुड्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंजवजगत्पतेः ॥ ५ ॥  
 अनेकांतमतांजोधि, समुद्धाशनचंडमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, जगवान  
 जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्कीरीटशाणाग्रो, तेजितांजिनखावलिः ॥  
 जगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वज्जिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रजप्रजोर्देह,  
 ज्ञासःपुष्पंतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥  
 श्रीसुपार्श्वजिनेंदाय, महेंद्रमहितांहये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-  
 जोगज्ञास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रजप्रजोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्ति-  
 मुर्ति सितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकशद्विश्वं, कल-  
 यनकेवलश्रियां ॥ अर्चित्यमहात्स्यनिधिः, सुविधिर्वोधयेस्तुवः ॥ ११ ॥  
 सत्त्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वाडामृतनिस्यंदी, शीतलः  
 प्रातुवोजिन ॥ १२ ॥ ज्वरोगार्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निः-  
 श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीञ्चूत,  
 तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनातुवः ॥ १४ ॥  
 विमलस्वामिनोवाचः, कृतककोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो,  
 जलनैर्मल्यदेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पदि, करुणां मया ॥  
 अनंतजिदनंताव, प्रयत्नतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्प कोमलधर्माण,  
 मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्ध्याधर्मदेष्टारं, धर्मेनाहं ॥ १७ ॥  
 सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतसरदशखः ॥ करुणामृगलक्ष्म्यातमःशांत्यै,  
 ज्ञांतिनाश्रजिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुण्ड १ गोमय देव, सनाथोतिशयधि-  
 यः ॥ १९ ॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकनाश आलोक दुःख ॥ २० ॥ अरनाथस्तुज  
 जिनश्चतुर्भारनजोरविः ॥ श्वनुर्यपुन्यार लोल ॥ २१ ॥ अंवितांतुवः ॥ २२ ॥  
 विनय तुलनाधीश, मयूरनववारिचर सूर पाय तं ॥ २३ ॥ इति, महंमहिमजि  
 दीजीये ए पत्न्यमहामोहनियाणु त्रेत ॥ २४ ॥ जि... निमवननाथस्य,

देशनावचनेस्तुमः ॥२२॥ लुण्ठतो नमतांमूभि, निर्मलीकारकारिणं ॥  
 वारिष्ठवाश्चनमेः, पातुं पादनखांशवः ॥ २३ ॥ यद्वंशसमुद्भूतः,  
 कर्मककुहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्जगवान्, जूयाद्योऽरिष्टनाशनः ॥  
 ॥ २४ ॥ कसोठधरल्लेद्रेच, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनो-  
 वृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय, सनाथा-  
 चान्द्रतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मराळाया र्दतेनमः ॥ २६ ॥ कृता-  
 पराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्वाष्पार्दयोर्जद्र, श्रीवीरजिनने-  
 त्रयोः ॥ २७ ॥ जयति विजिता न्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्री-  
 मान् ॥ विमलस्त्रांसविरहित, स्त्रिभुवनचूरामणिर्जगवान् ॥ २८ ॥  
 वीरः सर्वसुरासुरेण्डमहितो, वीरंबुधाः संधिता ॥ वीरेणाग्निहतः स्वक-  
 र्मनिचयो, वीराय नित्यं जमः ॥ वीराक्षीर्षमिदं प्रवृत्तमंतुलं, वी-  
 रस्य घोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्तिं कांतिनिचयः, श्रीवीरभद्रं दिशः ॥  
 ॥ २९ ॥ अवतितलगतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां, वरभुवनगतानां दिव्यं  
 चैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां  
 जगवतोद्देनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्रं लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीशदायारं ॥ समरामिजत्त-  
 पात्तग, निवाणीगरुक्कयसेवं ॥ १ ॥ नैसनेमो विप्पोसहिपत्ताणं,  
 संतिसामि पायाणं ॥ जौस्वाहा मंतेणं, सत्ताशिवपुरिअहरणाणं  
 ॥ २ ॥ नैसंतिलमुक्कारो, खेवोसहि माइल्लहिपत्ताणं ॥ सौहैनिमो  
 सहि, पत्ताणं चंदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरि-  
 स्करायगणिपिरुगा ॥ गहदिंतिगालसुरिंदा, सयाविरक्कंतुजि-  
 ने ॥ ४ ॥ रक्कंतुममरोहिणी, तान्नत्तीवज्जासिंखत्तासया ॥ व-  
 सेचक्केसरी, नरदत्ता काली मत्तं ॥ ५ ॥ गोरीतहगं-  
 महजाला माणवीअ वरुद्धा ॥ रीने ज चट्टे, ॥ आ माहा-

माणसिआन देवीन ॥ ६ ॥ जस्कागोमुहमहाजस्का, तिमुहजस्के  
 सुतुंवरुकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिन, वंनोमाणुनसुरकुमारो ॥ ७ ॥  
 ठमुहपायालकिन्नर, गरुडोगंधवतहयजरिंदो ॥ कुवेरवरुणोजिन्मी  
 गोमेदोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीनचकेसरी, अजिआडुरिआरि  
 कालीमहाकाली ॥ अञ्जुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिवञ्जा ॥ ९ ॥  
 चंदाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निदाणिअञ्जुआधरणी ॥ वइरुट्टु-  
 तगंधारी, अंबपनुमावईसिध्वा ॥ १० ॥ इयत्तिथरस्करया,  
 अन्नेविसुरासुरीचक्रहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरस्कंसयाअंजे  
 म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिदिसुरगण, सहिओसंघस्ससंतिजिणचंदो ॥  
 मझविकरेउरस्कं, सुणिसुंदरसूरिअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना  
 इसम्मदिदी, रस्कंसरइतिकालंजो ॥ सवोवदवरहिओ, सलहइसुह  
 संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगण्ठगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरु  
 णं ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिंजणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता ॥ पुस्कलेवई वि-  
 यें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंरुरीगणी, नयरी  
 यें सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, जवियणना मन मोहे ॥ २ ॥  
 चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंथु अर जिन  
 अंतरै, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रभु जनमिया, वली  
 योवन पावै ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावै ॥ ४ ॥  
 जोगवी सुख संतारना, संजम मन लावै, मुनिसुव्रत नमी अंतरै;  
 दीक्षा प्रभु पावै ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो दय करी, पास्या केवल  
 नांण ॥ वृषभ लंठने शोजता, सर्व जावना जाण ॥ ६ ॥ चौराशी जस  
 गणधरा, मुनिदेव एकसो जोगि ॥ त्रण जुवनमां जोघतां, नहि  
 कोई एहनी जेस ॥ ७ ॥ निदुश लाख कह्या केवली, प्रभुजीनो



परिवार ॥ एक सनय त्रण कालना, जाणै सर्व विचार ॥ ७ ॥  
 छंदय पैढाल जिनांतरे ए, आशै जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु  
 प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ८ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः  
 ॥ आसामंधर जगधनी, आ जतरते आवो ॥ करुणावंत करुणा  
 करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल जक्त तुमे धणो ए, जो होवे  
 अम नाथ ॥ जवोजव हूं हूं ताहरो, नहीं मेळूं हवे साथ ॥ २ ॥  
 समयल संग ठंमी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने,  
 शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुऊनें धणो ए, पूरो सोमं-  
 धरदेव ॥ इहांअकी हूं वीनवूं, अवधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिजुवन दिनकरं ॥  
 सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल  
 गिरिवर शृंग मंरुण, प्रवर गुणगण जूधरं ॥ सुर असुर किन्नर  
 कोमि सेवित; नमो ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जि-  
 नगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमैं अहनिशि, नमो ॥ ३ ॥ पुंन-  
 रीक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल  
 गिरिवर शृंग सीधा, नमो ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद  
 मुनिवर, कोमिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगै, नमो ॥  
 ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि  
 अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर  
 शिखर मंरुण, दुःख विहंरुण ध्याईये ॥ निज शुद्ध सत्ता साध-  
 नार्थ, परम ज्योतिर्नेपाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विगोह निडा,  
 परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, अवि-  
 जयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीजय  
 सिद्धक्षेत्र, दीवै दुर्गति वारै ॥ जाव घरीनें जे चढै, तेने ज



ऊतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥  
 पूर्व नवाणूं रुषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंभ  
 सोहामणो, कवचयुक्त अजिराम ॥ नाजिराया कुलमंरुणो, जिन-  
 वर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेसर परमात्मा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधि  
 देव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा  
 रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण  
 अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कळ्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन  
 ध्यानधी, चिदानंद सुख आय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमात्म पासे जावजो ॥ मुऊ  
 चीनतमी, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संजलावजो ॥ जे त्राण्य जुवन  
 ना नायक है, जस चोसठ इंदर पायक है, नाण दरशण जेहना  
 कायक है ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया है, जश धोरी  
 लंगन पाया है, पुंरुरीगणी नगरीनो राया है ॥ सुणो० ॥ २ ॥  
 बार पर्पदा मांहि विराजै है, जश चोत्रीश अतिशय ठाजै है,  
 गुण पेत्रीस वाणीयें गाजै है ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ जविजनने ते पम्बोहे  
 है, तुम अधिक शीतलगुण सोहे है, रूप देखी जविजन मोहे है ॥  
 सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो बूं, पण जरतमां दूरै वसि  
 ओ बूं, महा मोहराय कर फसियो बूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण  
 साहिब वित्तमां धरियो है, तुम आणा खरग कर ग्रहियो है, तब  
 कांइक मरियो है ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे  
 पूरो, पद्मविजय आजुं शूरो, तो बाधे मुऊ मन अति नूरो ॥  
 ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखदिये रे में आज सेत्रुंजो दीगो रे, सवालाख टकानों  
 दिहानो रे, लागे मुंनै मीगो रे ॥ सफल अयो म्हारा मननो ऊमा  
 हो, वालामारा, जवनो संशय जाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर  
 निवारी, चरणे प्रज्जुजीनै लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवजवनो  
 लाहो लीथो, वाला० देहनी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपाने फू-  
 लमे वधावो, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधमे पखाळीनै  
 केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे  
 जोतां, पापमेवासी धुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सु-  
 रपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ  
 मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इंद सरीखा ए  
 तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल  
 टालै, सूरजकुंरुमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरे१ श्रीसिद्धक्षेत्रे,  
 वा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अ-  
 नंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाझिराया सुत नयणे जोतां, वा०  
 मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री  
 आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदियै, कीजै एहनी सेवा ॥ मानू  
 हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जाल जिन गृहमंमली,  
 तिहां दीपै उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि०  
 २ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि  
 आगलै, श्रीसीमंधर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कर्या,  
 जात्राफल लहियै, तेहथी ए गिरि जेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥  
 वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश  
 विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाजिराजांगजं,  
वंदैरैवतशैलमौलिमुकुट श्रीनेमिनाथं यथा ॥ तारंगे अजितं जिनं नृगु  
पुरे श्रीसुव्रतं स्थंजने, श्रीपार्थ्वप्रणमामिसत्यनगरे श्रीवर्द्धमानं त्रिधा  
॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प जुवने ग्रैवैयके अंतरे, ज्योतिष्कामरमंदरा  
द्विसतो स्तीर्थकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे  
कुंभले, ये चान्येपि जिना नमामिसततं तान् कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥ २ ॥  
श्रीमद्गीरजिनास्य पद्महृदतो निर्गम्यते गौतम, गंगावर्त्तनमेत्यया प्रवि-  
शन्ने मिथ्यात्ववैताद्वयकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहति त्रिपथगा ज्ञानां-  
बुधावृद्धिगा, सामेकर्ममलंहरत्वं कलं श्रीद्वादशांगी नदी ॥ ३ ॥ शक्र  
श्रंदरविग्रहाश्चरण ब्रह्मैंद्रशांत्यंत्रिका, दिग्पालाः सकपर्दिगो मुख  
गण श्रकेश्वरी जारती ॥ येन्ये ज्ञानतपक्रियाव्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रा  
दिपु, श्रीसंघस्य तुराचतुर्विधसुरा स्ते संतुज्ज्वलकराः ॥ इति श्रीपंच  
तीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिंहाय ॥

( नदी यमुनाके तीर नुमे दोय पंखीया ॥ ए देशी ) पिउजी  
पिउजी रे नाम जपुं दिन रातियां, पिउजी चढ्या परदेश तपे मो  
री गतियां, ॥ पगपग जोती वाट वालेसर कव मिले, नीर विठो  
ह्या मीन के ते जुं टलवलै ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिव विण  
नवि गमे, जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारुं मन जमे ॥ जो होव  
सज्जन दूर तोही पासै वसै, किहां सायर किहा चंद देखी मन न  
हसै ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलवि  
हैह दीपक मनमें नही ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहनें,  
साखे रे सख समान हियामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यग्रानी पीन  
जोवन ~~व~~य अति दहै, जेहनो पिउ परदेश ते माणस दुःख सहै ॥

जुरी२ पंजर कीध काया कमला जिसी, हजुअ न आब्यो नेम मि  
ली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहमु रंग टाढ्यो ते नवि टलै,  
चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिलै ॥ आंबा केरो स्वाद निंबू  
ते नवि करै, जे नाह्या गंगा नीर ते ठीकर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या  
मालतीफूल धतुरे किम रमे, जेहने घीसुं प्रेम ते तेले किम जमे ॥  
जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करै, नवजोवन तजी नेम वैरागी  
थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वां  
द्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनै ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती  
मनरली, रूपविजय प्रभु नेम जेढे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिंहाय लिख्यते ॥

आउखो तूटाने सांधो को नही रे, तिण कारण म करो  
जीव प्रमाद रे ॥ जरा आब्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा गोमनि  
दया पाव रे ॥ आ० १ ॥ कुटुंब कबीला नारो कारणे रे, मूरख  
संख्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे ठंढी जूरसे रे, सहीसे इह  
लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ उंचा चिणाव्या मंदिर मालि  
या रे, दे दे धरतीमें ऊंढी नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्युं ऊंढी  
चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जाव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्र  
वर्त्ति हर बल राणो केशवो रे, जोजो बली इंद्र सुरानो नाथ रे ॥  
ऊगी२ने उवेही आथम्या रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे ॥  
आ० ४ ॥ अशिर संसार तजी मुनि नीसरथा रे, करता मुनि  
तेह विहार रे ॥ जारंमपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे मम-  
ह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पावै रूमी रीतसुं रे, देवे  
मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोहने रे, जइ  
लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता  
धरो रे, म करो मुनि जणानुं अजिमात रे, रुषी चौथमल सूत्र

देखीने रे, जोरु करी जालोर मजार रे ॥ आन० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतोर्थी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रति  
मा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥ १ ॥ ओत्रुंजय श्रीआदिदेव,  
नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आवू रुपज्ज जूहार  
॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरै, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय  
मूर्ति मानसुं, जरेते जरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ  
वसूं, ज्यां बीजै जिन पाय ॥ वैज्जारकगिरि ऊपरै, श्रीवीर जिने  
श्वरराय ॥ ४ ॥ मांमवगढनो राजियो, नामे देव सुभाश ॥ रुपज्ज  
कहै जिन समरतां, पोहचै मननी आश ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

हु विध धर्म जिन उपदिस्थो, चोथा अज्जिनंदन ॥ बीजै  
जन्म्या ते प्रभु, जवहुःख निकंदन ॥ १ ॥ हु विध ध्यान तुम्है  
परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकार्युं सुमतिजिन, ते चविया  
बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने जवि तजिये ॥  
मुऊ परे शीतल जिन कहै, बीज दिन शिव जजिये ॥ ३ ॥ जी  
वाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने वासुपूज्य परे,  
लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न  
अहिये ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहिये ॥  
॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीये, एम जिनकड्याण ॥ बीज दिने केई  
पामिया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अतंत चोवीशीये, हुआ  
बहुत कड्याण ॥ जिन उत्तम पद पढ़ने, नमतां होय सुख  
खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगनै बैग वीरजिन, नाखै जविजन आगै ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणी मनरागे ॥ १ ॥ आराहो जवि जावसें, पांचम  
 अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तित्थि निहाली ॥ २ ॥  
 ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी  
 लह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कहा,  
 काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक पन्थान  
 ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करै कर्मनो खेह ॥ पूर्व कामी वरसा  
 खगै, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व  
 आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥  
 पंच मास लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच  
 माशनी, पंचमी करो शुभ दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,  
 काजसग लोहस केरो, ऊजमणूं करो जावशुं ए, टाले जव फेरो  
 ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणी जाव अपार ॥ वरदत्त  
 गुणमंजरी वरे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमी चैत्य-  
 वंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण  
 वदि आठमें, संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें,  
 जनम्या रुषज्जिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम  
 मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म करया दूर ॥  
 अजिनंदन चोथा प्रभू, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम  
 चली, जनम्या भुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-  
 लवै सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥  
 नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण  
 वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगन्नाथ ॥ तिम श्रावण सुदि आठमें,  
 पासजीनो निर्वाह ॥ ६ ॥ ज्ञाडवा वदि आठम दिने, चविथा

स्वामी मुपास ॥ जिन उच्चम पद पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥७॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवन्दनं लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभुकेवल पायो, संव चतुर्विध आपवा,  
महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमलद्विज  
यज्ञ ॥ इन्द्रुति ओद मित्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसे  
चतु गुणी, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करै, मन अजिमान  
अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संसय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरे-  
थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर  
मल्लि पास, वर चरण विलागी ॥ रूपज अजित सुमती नमी, मल्लि  
घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रज शिव वाश पास, जवजवना  
तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्रि सगली जोमी ॥ ६ ॥ दश  
केत्रे त्रिहु कालनां, देहसे कल्याण ॥ वरज अग्यार एकादशी, आराधो  
वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंग लखाविये, एकादश पाठा ॥ पूंजणी  
ठवणी विटणी ॥ मसी कागल काठा ॥ ८ ॥ अग्यार अव्रत ठाम्वा ए,  
वहो पन्निमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनै, सफल करो अव-  
तार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहिव देव, अरिहंत सकलनी  
जाव धरो करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर जाषित वाणी,  
जयवंतो आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ( यह थुई च्यार  
वखते पण कहवाय ठे )

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंभु  
अरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परसंसा ॥ १ ॥ सुव्रत नमि  
अंतर वर दीक्षा, शिक्षा जगतनि रासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांत-  
रमां प्रभु, जासे शिवबहु पासे जी ॥ २ ॥ वत्रीस चउसदि

चनसठि मलिया, इगसथ सठि लुक्किठा जी ॥ चन अरु अरु मिली  
 मध्यम काले, वीश जिनेसर दिठा जी ॥ दो चन व्यार जधन्य  
 दश जंबू, धायई पुरकर मजारे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे,  
 प्रवचनसार उद्वारेजी ॥ १ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद  
 खवण निमित्ते जी ॥ अर्थेनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत  
 विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरब युत रचिया, गणधर लब्धि विक-  
 सिया जी ॥ अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अकर पदना रसिया  
 जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगो, विविध जंग व्रतधारी जी  
 विह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपज्व हरनारीजी ॥ पंचां-  
 गसनदेवी, देती तस जश रुद्धो जी ॥ श्रोशुन वीर  
 कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्र-  
 तणी जिहां रेख ॥ तिहां चंड विमानें शाश्वत जिनवर  
 जे बीजतणे दिन प्रणमं आणी नेह ॥ १ ॥ अग्निनंदन  
 चदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव  
 साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें  
 दिन प्रणमं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजै द्विविध धर्मजग-  
 वंत, जेम विमला कमला विजल नयण विकसंत ॥ आगम अति  
 अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कोअे पातिकनो परि-  
 हार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्रे-  
 सरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोमीबीजे हुं प्रणमं तस पाय,  
 इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज थुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमजिनंदतो ॥ ६ ॥ शैल-



रण तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस्र-वरस प्रभु  
 आनखो ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए,  
 पोहता मुक्ति मज्जार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या  
 मुक्ति मज्जार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार  
 तो ॥ पावापुरी नगरीमां बली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत-  
 शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥  
 नेमनाथ झानी हुवा ए, जाखे सार वचन तो ॥ जीवदया गुण  
 बेलनी ए, कीजै तास जतन तो ॥ मृषा न बोखो मानवी ए,  
 चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थकर इम कहे ए, परहरियै  
 परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष जलो ए, देवी श्रीअंबिका  
 नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै बलि धर्मना काम तो ॥  
 तपगढ नायक गुण निखो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिष-  
 जदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सुरराजाजी ॥  
 आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिने  
 श्वर जन्म महोत्वस, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप  
 करतां अस घर, मंगलकमला बाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी  
 गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमें आठसुरूप विचारी  
 मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंचता जिनवर,  
 फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अस घर, नित्य  
 बाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण  
 ३. जिन राजै जी ॥ आठमें आठ सो आगम जाखी, जिव मन २॥  
 अंत जाजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पावै निरतीचारो जी  
 रमां प्रभुमने दिन अष्ट प्रकारै, जीव दया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥

प्रकारी पूजा कराने, मानवजन्म फल लीजै जी ॥ सिद्धाई देवी  
जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजैजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजै,  
निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, तपशी,  
गोरु कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवनी, गोविंद पूरै नेम ॥ कोण कारण  
पर्व मोटुं, कहो मुझसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अति-  
घणा, एकशो ने पञ्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोहोटुं, करो मौन  
उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहै ते जिनवर  
देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौबीस  
जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल  
नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग, लखाविये,  
अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवली विंटाणा, ठवणी पूंजणी  
सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी  
इम ऊजमो, जेम पामिये जव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी  
कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ जुजरुं चंरु अखंरु  
जेहनें, समरतां सुख आय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि  
दर्ष पंक्ति शीश, शासनदेवो विघन निवारो, संघतणा निश  
दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शच्याविजोः शैशवै ॥ रूपा-  
लोकनविश्मया, हृतरसप्रांत्या भ्रमञ्चकुषा ॥ उन्मृष्टनयनप्रज्ञा  
धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रं यस्य पुनः पुनः सजयति, श्रीवर्द्ध-  
मानोजिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मरेणुकपिश, क्षीरार्णवांनोन्नृतैः ॥  
कुंजैरप्सरसांपथोधरजर, प्रस्पृधिन्निःकांचनैः ॥ येषांमंदररत्नशैल-

शिखरे जन्मान्निषकेःकृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेषांनतोद्दं  
 क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशालं ॥  
 चित्रंबद्धर्षयुक्तंमुनिगणवृषजै, धारितंबुद्धिमन्निः ॥ मोक्षाग्रद्वारज्जु-  
 तंत्रलचरणफलं, ज्ञेयज्ञावप्रदीपं ॥ ज्ञक्तयानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं,  
 सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचं-  
 द्रजदंष्ट्रं ॥ मत्तघंटाववेशप्रसूतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढो-  
 दिव्यनागंविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यक्षःसर्वानुज्जतिर्दिश-  
 तुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्याणकंदं पदमं जिणंदं, संतितञ्ज नेमजिणं मुण्णिंदं ॥ पासं  
 पयासं सुगणिककाणं, जत्तीइवंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपारं  
 संसारं समुद्रपारं, पत्ताशिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुर-  
 विंदं विंदा, कल्याणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निवाणम्मगे वरजा-  
 ण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं दुहाणं  
 ॥ नमामि निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदींहु गोखीर तुसारवन्ना,  
 सरोज हत्ता कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुण्णयवग्ग हत्ता ॥ सुहा  
 यसा अम्ह सयापसत्ता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार,  
 बाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम  
 चंद्र वखाणूं, जलधर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम  
 दंश, कुलमांहे जिम रुषज्जनो वंश, नाजितणो जे अंश ॥ दामा  
 वंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवरमहंता, शत्रुंजयगिरि गु-  
 णवंता ॥ १ ॥ रुषज्ज अजित संजव अजिनंदा, सुमतिनाथ मुख  
 धूनमचंदा, पद्मप्रज्ज सखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रज्ज सुविधी, शीतल-

श्रेयास सेवो बहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत  
 जिन धर्म ए शांती, कुंशु अर मल्लि नमुं एकांती, सुनिसुव्रत सुद्ध  
 पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश;  
 सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ १ ॥ ज़रतराय जिन साथै बोलै, स्वामी  
 शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रुषज कहै सुणो ज़र  
 तराय, बहरी पालंता जे नर जाय, पातिक जूको थाय ॥ पशु पं  
 खी जे इण गिरि आवै,, जवबीजे ते सिद्ध ज आवै, अजरामर  
 पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो बखाण्यो, ते में आगम दिलमांहे  
 आय्यो, सुणता सुख ज़र आय्यो ॥ ३ ॥ संघपति ज़रत नरेसर  
 आवै, सोवनतणां प्रासाद करावै, मणिमय मूरति ठावै, नाग्निरा-  
 य मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरो बहिन विख्याता, मूर्ति नवाणुं  
 ब्राता ॥ गोमुख नैं चक्रेसरीदेवी, शेत्रुंजय सार करै नित्यमेवी,  
 तपगढ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरेश्वरराया, श्रीविजयदेव  
 सूरि प्रणमी पाया, रुषजदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्र सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी,  
 रूपाना कोशीला विराजै रत्नना दीवा दीपै जी ॥ कुंकुमवर्णी  
 गहंली विराजै मोतीना अद्भुत सार जी, त्यां वैठा सीमंधरस्वामी  
 बोलै मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन ज़री रे कचोली क  
 स्तूरी बराश जी, पहली रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमते परजात जी ॥

॥ अथ पंचिदिय संवरणो ॥

॥ पंचेदिय संवरणो, तह नव विह बंजचेर गुत्तिधरो ॥ च  
 नविह कसाय मुक्को, इय अहारस गुणेहि संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच म  
 हवय जुत्तो, पंच विहायारपालण समत्थो ॥ पंच समईतिगुत्तो,  
 बत्तीस गुणेहिं गुरुमज्ञ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाश्यवयजुत्तो, जावमणेहोइनियमसंजुत्तो ॥ विन्नइअ सुहंकम्मं, सामाश्यजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाश्यंमिन्नकए, समणो श्वसावन्नहवइजह्मा ॥ एएणकारणेणं, बहुसोसामाश्यंकुज्जा ॥ २ ॥ सामायक विधे लोधु विधे पारिजं विधि करतां जे अविधि हुओ होइ ते सबे हुं मन वचन कायार्थे करी मिञ्चामि डुक्कं ॥ दशं मनना-दश वचनना बरै कायाना एवं वत्तीस दूषणामांहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायार्थे करी मिञ्चामि डुक्कं ॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवर्निसोसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह पणिमा, अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहशिज्जा, सुवसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइजयवं, दह्वयंतंमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लोधुं विधे पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हुन होय ते सवि हुं मन वचन कायार्थे करी मिञ्चामि डुक्कं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इत्थाकारेण संदिस्सइ जगवन् चैत्यवंदन करूं, इत्थं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्कण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगज्जाव वियक्कण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पनिहय शाशण ॥ १ ॥ कम्मजू-मिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण बिहरं त लअई ॥ नवकोमिहिं केवल्लिण, कोमि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमिहिं वरणाण ॥ समणहकोमी सहस दोअ, शुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसइसंतुंजि उज्जित पडू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंण, जरुअअहि मुणिसुवय ॥ महुरिपसा

छह डुरिय खंमण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि  
 जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ  
 सहस्सा, लस्का उपन्न अठ कोमीउ, बत्तीसय बासीआइ, तिय  
 लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी बायाल लस्का  
 अमवन्ना ॥ उत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंवाइ पणमा-  
 मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥  
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिउ ॥ १ ॥ काले विणए  
 बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तडुजय,  
 अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्तंकिअ निक्कंखिअ, निवि ति  
 गिन्हा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वञ्जल पन्नावणे अठ  
 ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस  
 चरित्ता यारो, अठविहो होइनायवो ॥ ४ ॥ बारसविहंमिवि तवे, अ  
 अंतिर बाहिरे कुजल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायवा सो त  
 वायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसञ्चान  
 काय किलेसो संली ए याय, वज्जो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायञ्चित्तं वि  
 णउ, वेथावच्चं तदेव सञ्ज्ञान ॥ जाणं उस्सग्गोविय, अंतिर उ न  
 वो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिक्रमइ जो जंहुत्त मा  
 क्तो ॥ जुंजइअ जहायामं, नायवो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यदंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनेन्द्रस्य,  
 मुखपद्मपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामग्निषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात्  
 सुखं सुरेन्द्राः ॥ तृणमपि गणयन्ति नैव नाक्रं, प्रातः संतु शिवाय ते  
 जिनर्जोः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुयसनं सदोदयं ॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रनाथितं, दिनागमे नौमिबुवैर्नमस्कृतं ॥१॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवतानां स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि कानुसगंगं० सुअ देवया जगवई, ना  
णावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेडं सययं, जेसिं सुअसायरे जत्ती १

॥ अथ क्षेत्रदेवतानां स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सइएहिं ॥ साहं-  
ति मुक्कमगं, सा देवी हरज डुरियां ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानां विधि ॥

॥ प्रथम नुंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी थापना मूकीने आ-  
वक आविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहरी ज-  
ग्या पूंजी कटासण ऊपर बैशी मुहपत्ती नावा हाथमां मुख पास-  
राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी  
( पंचिंदिअ ) कही इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी  
अन्नन्नससिएणं कहै, १ लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो कानु-  
सगंग करै ( पारी ) प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देई इच्छाका-  
रेण संदिस्सह जगवन् सामायक मुहपत्ती पन्निहेहुं इत्थं । एम कही  
मुहपत्ती तथा अंगनी पन्निहेहणना पञ्चाल बोल कही मुहपत्ती प-  
न्निहेहीए पठी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् सामा-  
यक संदिस्साजं इत्थं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकठानं  
इत्थं । एम कही वे हाथ जोम्मी एक नवकार गणी इच्छाकार जग-  
वन् पत्ताय करी सामायकदंरुक उच्चरावोजी, पठी गुरु प्रमुख व-  
नेल करेमिजंते कहै, पठी खमासमण देई इच्छा० वैसणो संदिस्सा-  
जं । खमा० इच्छा० वैसणोठानं, खमा० इच्छा० सिज्जाय, संदिस्साजं-  
खमा० इच्छा० सिज्जाय कंरुं इत्थं, एम कही त्रण नवकार गणवा । पठी  
वे घन्नी सज्जाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानां विधिः ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पनिकम्याथो ( यावत् ) लौ  
गरस सूयी कही खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पनिलेहुं एम कही मुंह  
पत्ती पनिलेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति,  
वली खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं तहत्ती कही पठी ज  
मणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव  
कार गणी सामाश्यवयजुत्तो० कहिए, पठी जमणो हाथ थापना  
सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार  
वानो विधि ॥

॥ अथ दैवरिकं प्रतिकर्मण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजै, पठी पाणी वावरुं होय तो मुहपत्ती  
पनिलेहवी अने आहार वावरयो होय तो वांदणा वे देवा, तिहाँ  
बीजा वांदणामां आवस्सियाए ए पाठ नही कहिवो. पठी यथाशक्ति  
पञ्चस्काण करुं, पठी खमासमण देई इच्छा० कही वनेरायें अथवा  
पोते चैत्यवंदन कहवुं, पठी जंकिंचि० नमोभुणं० कही ऊना अईने  
अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो कानसग्न करी नमोर्हत्तुं क  
हीनें प्रथम थुई कहवी, पठी लोगस्स० सवलोए अरिहंतचेइयाणं  
कही एक नवकारनो कानसग्न पारीनें बीजी थुई कहवी, पठी  
पुंस्करवरदी० कही सुअस्सज्जगवत्तं करेमिकानुसग्नं वंदण० कही  
एक नवकारनो कानसग्न पारी त्रीजी थुई कहवी पठी सिद्धाणंबुद्धाणं०  
कही वेयावच्चगराणं० करेमि कानसग्नं अनत्तू० कही एक नवका  
रनो कानसग्न पारी नमोर्हत्तुं कही चौथी थुई कहवी पठी वैसोनें  
नमोत्थुणं कहै, पठी चार खमासमण देवापूर्वक जगवान् आचार्य  
उपाध्याय सर्वसाधुज्यः प्रते श्रीज्वंदनं करीयै. पठी इच्छाकारेण०  
दैवरिकं प्रतिकर्मण ठाउं एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटा



लणा ऊपर थापीने इहं सवस्सवि देवसियं कहेवुं, पढी ऊजा अई  
 करेमिज्जंते इहामिठामिकानुसगं जोमेदेवसिउं तस्सउत्तरीं कहीने  
 अतीचारनी आठ गाथानो कानुसग करवो, आठ गाथा न आवमे  
 तो आठ नवकारनो कानुसग करवो. ते कानुसग पारीने लोगस्स  
 कहेवुं, पढी बैसीनै त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेहीने वांदणा  
 बे देवा, पढी ऊजा अईने इह्याकारेणं देवसियं आलोउं इहं आलो  
 एमि जोमेदेवसिउं कहीने सातलाख कहवा. पढी अठार पांप  
 स्थानक आलोइये, सवस्सविदेवसिअ कहीने बेसवुं, बैसीने एक नव  
 कार गणी करेमिज्जंते इहामिठामिपमिक्कमिउं कहीने वंदित्तु कहेवुं  
 पढी वांदणा बे देवा, पढी अप्पुच्छिमिअप्रितर देवसिअं खामीने  
 वांदणा बे देवा, पढी ऊजा अई ओयरियउवद्याए कहीने करेमि  
 ज्जंते इहामिठामि जोमेदेवसिउं तस्सउत्तरीं कही बे  
 लोगस्स अथवा आठ नवकारनो कानुसग करवो, ते पारीने लोगस्स  
 कही सवल्लोए अरिहंतचेइयाणं वंदणवत्तिं कही एक लोगस्स  
 अथवा चार नवकारनो कानुसग पारीने पुक्करवरदीं सुअस्सज्जं  
 गवसं करेमिकानुसगं वंदणं कहीने एक लोगस्स अथवा चार  
 नवकारनो कानुसग करवो, ते पारीने सिद्धाणं बुद्धाणं कही सुअ  
 देवयाए करेमिकानुसगं अननुं कही एक नवकारनो कानुसग  
 करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पहली थुई कहवी  
 अने स्त्रिये कमलदलनी पहली थुई कहवी. पढी खेत्रदेवतानीं  
 वीली थुई स्त्रिये तथा पुरुषे बन्नेए एकज कहवी. पढी १ नवकार  
 प्रगट गुणी बैसीने ठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पमिलेहीने बे  
 वांदणा दीजै, पढी सामायक चउवीसठो वंदनक पमिक्कमणुं कानु  
 सगं अने प्रचस्काण कहुंवुंजी एम ए ठए आवश्यक संज्ञारवा. पढी  
 इत्तामो अणुत्तहिं नमोऽग्गमालमणाणं कही नमोऽर्हत् कही पुरुष

नमोस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संसारदावानी त्रण शुई कहे  
 पढी नमोस्तुणं कही स्तवन कहवुं, पढी वरकनक कही जगवान  
 आदे वांद्वा, पढै जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी अद्वाइजेसु क-  
 हेवुं, पढी देवसिअपायञ्चित्तनो कान्तसग च्यार लोगस्त अथवा  
 शोलनवकारनो करवो, कान्तसग पारी प्रगट लोगस्त कही बेसोने  
 खमासमण देई इच्चा० सिद्धायसंदिस्साउं, बीजुं खमासमण देई  
 इच्चा० सिद्धायजणूं एम सिद्धायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी  
 सिद्धाय कहवी, पढी एक नवकार गणी खमासमण देई दुःखक-  
 नकम्मस्कननो कान्तसग च्यार लोगस्तनो संपूर्ण अथवा शोल  
 नवकारनो करवो, ते एक वरेरे अथवा पोत पारीने नमोईत्कही  
 लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्त कहै, पढी इरियावही० तस्तन-  
 त्तरी० कही एक लोगस्त अथवा च्यार नवकारनो कान्तसग करी  
 प्रगट लोगस्त कहवो, पढी चनकसाय० नमोत्तुणं० कही जावंति  
 वे कहीने नवसगहरं० जयवीरराय कही मुंइपत्तो पमिलेहवो पढी  
 इच्चा० इच्चाका० सामायकगरुं यथाशक्ति इच्चा० इच्चाका०  
 सामायकगरुं तहत्ति कही पढी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी  
 एक नवकार गणीने सामाश्यवयजुत्तो० कहेवुं, पढी आपेजी था-  
 पना होयतो एक नवकार गणी नठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि  
 केह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाथी समजवो ॥ इति देवशी अति-  
 क्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम पूवली रीते सामायक लेवुं पढी इच्चा० इच्चाका०  
 कही कुसमिणनो दुसमिणनो च्यार लोगस्तनो अथवा शोल  
 नवकारनो कान्तसग करी पारी प्रगट लोगस्त कहवो, पढी खमास-  
 मण देई जगचित्तमणीनुं चैत्यवंदन जयवीरराय सूधी कहेवुं, पढी

ચ્યાર સ્વમાસમણપૂર્વક જગવાન આચાર્ય નિપાધ્યાય અને સર્વસાધુ પ્ર-  
 ત્યેકે વાંદવા, પઠી સ્વમાસમણ વે દેઈ સચ્ચાનૌ આદેશ માંગી એક  
 નવકાર જાણીને જરૂરેસરની સચ્ચાઈ કહીને ફરી ? નવકાર ગણ-  
 વો, પઠી શ્લોકારસુહારાઈનો પાઠ કહવો, પઠી શ્લોકાં રાઈપન્નિ-  
 ક્ષમણોઠાનું કહીને જમણો હાથ ઝપઘી ઝપર આપીને પઠો શ્લોક  
 સવસ્તવિરાઈય ડુચ્છિંતિય૦ કહી નમોત્તુણં તથા કરેમિજંતે કહી  
 શ્લોકામિઠામિકાનસગં૦ તસ્સજત્તરી૦ કહી એક લોગસ્સ અથવા  
 ચ્યાર નવકારનો કાનસગ પારીને પ્રગટ લોગસ્સ કહી સવલોએઞ-  
 રિહંત૦ કહી એક લોગસ્સ અથવા ચ્યાર નવકારનો કાનસગ કરવો,  
 પઠી પુસ્કરવરદી૦ સુઅસ્સ૦ વંદણવ૦ કહી અતીચારની આઠ ગા-  
 થાનો અથવા ન આવમે તો આઠ નવકારનો કાનસગ પારી સિ-  
 ક્ષણંબુદ્ધાણં કહીને ત્રીજા આવશ્યકની મુંદપત્તી પમિલેહી વાંદણા  
 વે દેવા તિહાંથી લેને અપ્પુલ્લિમિસ્વામી વાંદણા વે દીજે તિહાં સૂધી  
 દેવશીની રીતે જાણવું, પણ જે ઠિકાણે દેવસિયં આવે તે ઠિકાણે  
 રાઈયં કહેવું, પઠી આયરિયજવચ્ચાએ૦ કરેમિજંતે૦ શ્લોકામિઠામિ૦  
 તસ્સજત્તરી કહી તપવિંતામણી કરતાં ન આવમે તો ચ્યાર લોગસ્સ  
 અથવા શોલ નવકારનો કાનસગ કરવો, તે પારી પ્રગટ લોગસ્સ  
 કહી ઠઠા આવશ્યકની મુંદપત્તી પમિલેહી વાંદણા વે દેવા, પઠી સ-  
 કલ તીર્થવંદન કરીને યથાશક્તિયે પચ્ચક્કાણ કરવું, પઠી શ્લોકા-  
 કારેણ સંદિસ્સહ જગવન્ સામાયકચત્તવીસત્થો વંદનક પમિલ્લમણ  
 કાનસગ પચ્ચક્કાણ કર્યું ઠેજી, એમ ઠ આવશ્યક સંજ્ઞારવા, પઠી  
 પચ્ચક્કાણ કરવું હોયતો કરવું ઠેજી અને ધારવું હોયતો ધારવું ઠેજી,  
 એમ કહેવું, પઠી શ્લોકામોઅણુસર્દિં૦ નમોસ્વમાસમણાણં૦ નમોર્હત્ત૦  
 કહીને વિશાલલોચન૦ નમોત્તુણં૦ અરિહંતચેશ્યાણં૦ કહી એક  
 નવકારનો કાનસગ પારી નમોર્હત્તકહી કલ્યાણકંદની પ્રથમ થોય

कहवी, पढी लोगस्स० पुस्करवरदी० सिद्धाणंबुद्धाणं कही अनु-  
क्रमे च्यार थोयो कहवी, पढी नमोबुणं कही जगवान् आदि चारने  
च्यार खमासणे वांदवा, पढी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर थापी अ-  
च्छाइजेसु कहेवुं पढी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवी-  
राय० कानसग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पढी खमा-  
सणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय कान-  
सग० अने थोय कहवी, पढी सामायक पारवानी विधिथे. सामा-  
यक पारवुं इति ॥

॥ अथ परकी प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिकं प्रतिक्रमणमां वंदितु कही रहिये तिहांसूधी  
सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलाईतनुं कहेवुं अने थोयो स्नात-  
स्यानी कहेवी, पढी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदिस्सह जग-  
वान् देवसियं आलोइयंपस्किंता इच्छा० पस्कियमुंदपत्ती पस्किहेहुं  
एम कही मुंदपत्ती पस्किहेहीये, पढी बांदणा बे दीजै, पढी इच्छा-  
कारेण० संबुद्धाखामणेणं अप्पुठ्ठिहं अप्पिंतर पस्कियंखामेणं इच्छं  
खामेमिपस्कियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं०  
कही इच्छाकारेणसं० पस्किअंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपस्कि-  
अइयारोकन कही इच्छा० परकी अतीचार आलोऊं. एम कही  
बुद्ध अतीचार कहीये, पढी एवंकारे आवकतणें धर्मे श्रीसमकितमृ-  
तवारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पक्कदि-  
वसमांहे सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणतां हुन होथ ते सबे हुं  
मनकर वचनकर कायार्थेकरी मिच्छामिउक्कमं ॥ सबस्सविपस्किअ  
उत्तिअ उप्पासिय उच्चिठिय इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तस्स  
मिच्छामिउक्कमं ॥ इच्छाकारिजगवन् पसान करी परकी तपप्रशाद  
कराउ जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकउ-

पचाश वेद्यांविल त्रणनीवि च्यारएकाशणां आठवेआसणा वेदजार  
 सज्ञाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश करयो होयतो पइठी कहीए,  
 करवो होयतो तद्वत्ति कहीये, न करवो होयतो अणवोड्या रहीये  
 पठी वांदणा बे दीजै, पठी इच्छाकारे० पतेयखामणेणं अष्टुठिनहं  
 अग्निंतर पस्किअं खामेनं इहं खामेमिपस्किअं पन्नरसदिवसाणं  
 पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पठी वांदणा वे दीजै पठी देव-  
 सियआलोइयपस्किंता इच्छाका० जगवन् पस्किअं पस्किमुं समपस्कि  
 कमामि इहं एम कही करेमिजंतेसामाइयं० कही इच्छामिपस्कि  
 मिनं जोमेपस्किनं० कहवो पठी खमासमण देई इच्छाका० प  
 स्कीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी सांधु न होयतो त्रण  
 नवकार गणीने श्रावक वंदितुं कहै, पठी सुयदेवयानी श्रोय कहवी  
 पठी देवा बैसी जमणोढींचण ऊजो राखो एक नवकार गणी क  
 रेमिजंते० इच्छामिपस्कि० कही वंदितुं कहेवुं०, पठी करेमिजंते इ  
 च्छामिछामिकाउसगं जोमेपस्किनं० तस्सउत्तरी० अन्नवू० कहोने  
 (१२) अर लोगस्सनो काउसग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मल  
 यरा सूधी कहवा अथवा अरुतालोस नवकारनो काउसग करी  
 पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंदपत्ती पस्किहेहीने वांदणा  
 बे दीजै, पठी इच्छाका० समासिखामणेणं अष्टुठिनहं अग्निंतर०  
 पस्किअंखामेनं इहं खामेमिपस्किअं पन्नरसदि० कही पठी खमा-  
 सण देई इच्छाका० कही पस्कीखामणाखामूं एम कही खामणा-  
 च्यार खामवा पठी दैवसीप्रतिक्रमणामां वंदितुं कह्या पठी बे वां-  
 दणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूथी सर्व दैवसीनी  
 पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी धुईने ठिकाणे जानादि श्रोयो कहवी  
 स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सज्ञायने ठिकाणे उवसगहरं तथह  
 संसारदावानी धुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोदटी

शांति कहेवी ॥ इति परकी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरने कहा प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो वि-  
शेष, बार लोगस्सना काउसगने ठिकाणे बीस लोगस्सनो काउ-  
सग्न करवो अने परकीना आगारने ठिकाणे चउमासीना कहवां,  
यथांतपने ठेकाणे ठेकेणं वे उपवास च्यार आंबिल ठनीवी आठ ऐ-  
काशणा शोल वेआसणा च्यारहजारसंजाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण परकीना  
चार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्न अथवा एक  
शो शाठ नवकारनो काउसग्न करवो, अने तपने ठिकाणे अढमन्नत  
एटले त्रणउपवाश ठआंबिल नवनीवी बारएकाशण चोवीश वेआ-  
सणा अने ठहजार सिझाय ए रीते कहवुं अने परकीना आगारने  
ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधी ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पन्तिक्रमवी. आपना हो-  
य तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पठी उस्सउत्तरी कही एक लो-  
गस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्न करी प्रगट लोगस्स कही  
उत्ते पगे बैसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीनं कंदोरो  
आदिनुं पन्तिकेहण करवुं, पठी काजो काढी जीव कलेवर सच्चित्त  
आदि जोवुं, पठी काजो काढनार आपनाजी सन्मुख उत्तो रही  
इरियावही पन्तिक्रमे पठी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार  
अणुजाणहजस्सुगो कही काजो परठवे, पठी त्रण बार वोसिरे  
कहे ॥ इति पन्तिकेहण करवानो विधी ॥

॥ अथ पञ्चस्काण पारवानो विधि ॥

प्रथम इरियावही पन्तिकमिये, पठी जगचिंतामणीनुं चैत्य  
वंदन जयवीधराय सूची करवुं पठी मन्हजिणाएंनी सिझाय कह  
बी, मुहपत्ती पन्तिकेही इच्छामि० इच्छाका० पञ्चस्काणपारुं यथाश  
क्ति० इच्छामि० इच्छाका० पञ्चस्काणपारयुं तहति एम कही जमणो  
हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर आपी एक नवकार गणी प  
ञ्चस्काण करयुं होय ते कहेवुं, ते लखियेठिये ॥ जग्गए सूरें नमोकां  
रसहियं पोरसिं साढपोरसिं गंठिसहियं मुठिसहियं पञ्चस्काणकरयुं  
चनबिहार आंबिल नीवी एकासणुं बेआसणुं करयुं तिविहार पञ्च  
स्काण फासियं पालियं सोहियं तोरिअं कीट्टिअं आराहियं जंचन  
आराहियं तस्समिंछामिउक्कं ॥ एम कही १ नवकार गणवो ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

पुष्कलवइ विजयें जयो रे, नयर पुंनरीगणी सार ॥ श्री  
सीमंधर साहिवा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिणंदराय धरज्यो धर्म  
सनेह ॥ (आंकणी) मोहोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥  
शशि दरिशाण सायर वधै रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० २ ॥ ठाम  
कुठाम न लेखवे रे, जग वरसत जलधार ॥ कर होय कुसुमै वा  
सियो रे, गया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा  
गणै रे, ज्योते शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे  
सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे ठो  
माहाराज ॥ मुजसुं अंतर किम करो रे, बांह ग्रह्यांनी लाज ॥ जि०  
॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो  
माने सवितणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषजलबल  
माता सत्यकी रे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वांचक जश इम वीनके  
रे, जयजंजण जगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥



॥ अथ बीजनं स्तवन ॥

( ॥ फलमल पाणीमाने जाय ए देगी ॥ ) ॥ प्रणमी

शारदमाय, शासन वीर सुहकरुं जी ॥ बीज तिथी गुणगेह, आ  
दरो नवियण सुंदरु जी ॥ १ ॥ एह जिन पंच कल्याण, विवरीने  
कहूं ते सुणो जी ॥ माहा सुदि बीजे जाण, जन्म अजिनंदनतणो  
जी ॥ २ ॥ आवण सुदिनी हो बीज, सुमनि चढ्या सुरलोकथी  
जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥  
समेतशिखर शुभ्र ठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र व-  
दिनी हो बीज, वर्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाटगुन  
मासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस ज्यवन,  
कर्मकर्यें तब पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजे  
वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराज  
नो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहा  
जो ॥ खातर किरिया हो जाण, खेन समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥  
उपशम तद्रूप नीर, समकित ठोरु प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी  
अहो वाम, पञ्चस्काण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु  
चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुभवरूप, उत्तरे  
चारित्र फल जिहां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी  
सुख लीजीये जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस  
कीजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीस  
मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालियें शील वसुधासती जी  
॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पमिलेहण दोय लीजीये जी ॥ दे  
ववंदन त्रिण काल, मन वच कायायें कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊज  
मणुं शुभ्र चित्त, करी धरीयें संजोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम,  
पीजीये श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें दो बीज,



राग ने देष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति उल्लट  
धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुजक्ति, विनय करी सेवो सदा जी  
॥ पद्मविजयनो शिष्य, जक्ति पाये सुख संपदा जी ॥ १५ ॥ इति  
बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

( ॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए वेशी ॥ ) सुत सिद्धारथ  
चूपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, ज्ञाखे  
श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ जिवियण चित्त धरो ॥ मन वच कांय  
अमायो रे, ज्ञान जक्ति करो ॥ एआंकशी ॥ गुण अनंत आतमत-  
णारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वहुं रे, जिणायी  
दंतण होय रे ॥ ज० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने  
उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने धिवरपणुं लहे रे, आचारज उवझाय रे  
॥ ज० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोवासां रे, कठिण करम करे नाश ॥  
वह्नि जेम इंधन दहे रे, कणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज० ४ ॥  
प्रथम ज्ञान पढे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणां  
पगधालीये रे, जेम चढे मोह आवासीरे ॥ ज० ५ ॥ म५ सुअ  
उहि मणपद्धवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक  
वे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज० ६ ॥ तेदना साधन जे  
कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावै साचवैरे, धर्मी वरी  
अप्रमादो रे, ॥ ज० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, जणतां  
करे अंतराय ॥ अंधा बदेरा बोवना रे, मुंगा पांगुल थाय रे  
॥ ज० ८ ॥ जणतां गुणतां न आवने रे, न मले वल्लज चीज ॥  
गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज० ९ ॥ प्रेम  
पूवै परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे,  
करो अधिकार पसायो रे ॥ ज० १० ॥ इति ॥

( ॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ )-

जंबुद्वेपना नरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजित-  
सेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आ-  
राधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए  
आकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें  
जणवा मूँकिनु रे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंक्ति  
यत्न करे घणो रे, मात्र जणावण हेत ॥ अकर एक न आवरे रे,  
ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोढें व्यापी देहनी रे, राजा  
राणी संचित ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंददास धनवंत रे  
॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोजित अंग ॥ गुण  
मंजरी तस बेटनी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल  
वरसनी सा रई रे, पामो यौवनवेश ॥ दुर्जग पण परणे नही रे,  
मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे,  
विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रत-  
धार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक जूपावने रे, दीध वधाइ जाम ॥  
चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्म-  
देशना सांजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन  
मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ९ ॥ ज्ञान विराधन परजवे रे,  
मूर्ख पर आधीन ॥ रोगें पीछ्या टलवले रे, दीसै दुःखीया दीन  
रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥  
ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥  
श्रेष्ठी पूढे मुणिदने रे, जाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुऊ अंग-  
जा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

( ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमां )

धातकीखंनना नरतमां, खेटक नयर सुगम ॥ व्यवहारी

जिनदेव ठै, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा,  
 पुत्री चतुरा चार ॥ पंक्तिपासे सीखवा, तातें मुंक्या कुंमार ॥ २ ॥  
 बालस्वजावें रामतें, करतां दहामा जाय ॥ पंक्ति मारे जाहरे,  
 मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवै, जणवानुं  
 नही काम ॥ पांढ्यो आवे तेमवा, तो तस दणजो ताम ॥ ४ ॥  
 पाटी खनिया लेखणा, वाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि  
 रुचै, जेम करहाने डाख ॥ ५ ॥ पामा परे मोहोटा थया, कन्या  
 न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥  
 त्रटकी जाखे जामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी,  
 जाणे ठै सहू कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म  
 बोल ॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें  
 मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटी उपनी, ज्ञान  
 विराधन हेव ॥ ९ ॥ मुर्खांगत गुणमंजरी, जातीसमरण पामि ॥  
 ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे  
 सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साथो  
 वंछित योग ॥ ११ ॥ उज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥  
 नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव  
 उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल दोश्ये, धान्य  
 फलादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवटणो, साधियो मंगल गेह ॥  
 पोसदमान करी सके, तेण विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा  
 सौजायपंचमी, उज्वल कार्तिक मास ॥ जावज्जीव लगे सेविये,  
 कजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

( ॥ ढाल चौथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥ )

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥ चावखी दोरा रे,  
 पाटी पाटला वर तणा ॥ मसी कागल रे, कांबी खनिया लेखणी ॥

कचली माबली रे, चंद्रुआ ऊरमा पूंजणी ॥ १ ॥ ( त्रूटक ) प्रा-  
साद प्रतिमा तास जूषण, केसर चंदन माबली ॥ वासकूंपी वांला  
कूंची, अंगलूहणा ठावनी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरती नें  
धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती साहमी वडल, नोकरवाली आपना ॥  
॥ २ ॥ ( ढाल ) ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप  
संयुत रे, गुणमंजरीयें सदह्या ॥ नृप पूठै रे, वरदत्त कुंवरनें अंग  
रे ॥ रोग उपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ ( त्रूटक ) मु  
निराज ज्ञासै जंबुद्वीपें, जगत सिंहापुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु  
तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमतां दोय  
बांधव, पुण्य योगें गुरु मळ्या ॥ वैराग्य पामी जोग वामी, धर्म  
धामी संवरया ॥ ४ ॥ ( ढाल ) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी  
लहै, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे,  
अशुज्ज उदय थयो अन्यदा, संघारे रे, पोरसी जणी पौढ्यो यदा  
॥ ५ ॥ ( त्रूटक ) सर्वधाति निंद व्यापी, साधु मांगे वायणा ॥  
जुंघमां अंतराय थातां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जा-  
ग्यो, लाग्यो मिळ्या जूतनो ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, जेरयो  
धापतणो घनो ॥ ६ ( ढाल ) मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥  
श्रुत अज्यातो रे, तो एवमो संताप रे ॥ मुज बांधव रे, जोयण  
खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥  
( त्रूटक ) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुज्ज  
ध्याने आयु पूरी, जूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जम  
पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो  
सही ॥ ८ ( ढाल ) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ जव दीगो रे,  
गुरु प्रणमी कहे शुज्ज मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्रय दी  
बनो ॥ गुण अवगुण रे, ज्ञासन जे जग परवनो ॥ ९ ॥ ( त्रूटक )

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो किम आवने ॥ गुरु कहे  
तपशी पाप नासै, टाढ जेम घन तावने ॥ जूप पञ्चर्षे पूत्रने प्रजु,  
तपनी शक्ति न एवमी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा  
दियो वेवमी ॥ १० ॥ इति ॥

( ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ )

सज्जु वयस सुधारसे रे, जेदी साते घात ॥ तपसुं रंग लागो,  
गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नागो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप  
महिमा घणो रे, पसरथो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस्र  
सयंवरा रे, वरदत्त परणयो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ जूपे कीधो पाट  
वी रे, आप थयो मुनि जूप ॥ त० ॥ जीम कांत गुणो करी रे, वर  
दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, जोगवै  
जोग अखंरु ॥ त० ॥ वरसेंश ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंरु ॥ त०  
॥ ४ ॥ जुक्तजोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥  
गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावै निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख  
विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण  
ऊप्रनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे  
रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्ये  
कीधो जेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या ज  
रतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥  
त० ॥ ८ ॥ तिहां पण ते तप आदरथुं रे, लोक सहित जूपाल ॥  
त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पालै राज्य ऊदार ॥ त० ॥ ९ ॥  
चार महाव्रत जुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि  
मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शु  
जापुरी रे, जंबुविदेह मजार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे,  
अमरावती धरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत अक्की चवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सु  
 यीव ॥ त० ॥ १२ ॥ बीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥  
 त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥  
 पंचमी तप महिमा विषे रे, जाषै निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे  
 जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

( ढाल छटो ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी )

चोवीश दंरुक वारवा, हुं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे,  
 हुं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गथी, हुं० ॥ त्रिसळा नर  
 सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आं-  
 कणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे,  
 हुं० ॥ माहाविशीष सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे,  
 हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधर्यो, हुं० ॥ चंरुकोसियो साप रे,  
 हुं० ॥ यज्ञ करंता बांजरा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा०  
 ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषजदत्त वली विप्रे, हुं० ॥  
 व्यासी दिवश संबंधथी, हुं० ॥ कामित पूरयो क्षिप्र रे ॥ हुं०  
 मा० ४ ॥ कर्मरोगने ढालवा, हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे,  
 हुं० ॥ आदर्यो में आसा धरा, हुं० ॥ मुऊ ऊपर हित आशि रे,  
 ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयलिह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास  
 रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास  
 रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निद्धे, हुं० ॥ खिर्माविजय  
 गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो, हुं० ॥ पंचमी  
 तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ ( कलश ) इय वीर लायक  
 विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोमर  
 गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर जाणुं संवत्सर,  
 श्रीपार्श्व जन्मकट्याण दिवसें सकल जिव मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हारे मारे गाम धरमना साढापचवीश देश जो, दोपे रे  
 त्या देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हारे मारे नगरी तेहमां राज-  
 गृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजै गज परे रे लो ॥ १ ॥  
 हारे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां  
 आवी वीर समोसरथा रे लो ॥ हां० चउदसहस मुनिवरना साथे साथ  
 जो, सूधारे तप संयम शियले अलंकरथारे लो ॥ २ ॥ हां० फूड्या  
 रसज्जर फूड्या अंव कदंब जो, जाणुं रे गुण शीलिवन हसि  
 रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो,  
 वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतु-  
 र्विंश आवै कोराकोरु जो, त्रिगुरु रे मणि हेम रजतनुं ते स्वे रे  
 लो ॥ हां० चोसठ सुरपति लेवे होराहोरु जो, आगे रे रस लागे  
 इंजणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण बेठा  
 आप जो, ढाढे रे सुर चामर मणिरतनें जम्या रे लो ॥ हां०  
 सुणतां डंडजि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस  
 जानू अम्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे धन जेम लूंव  
 जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी  
 हरखी आवै जन मन लूंव जो, पोषे रे रस न पमे धोषे जर्ममां  
 रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो,  
 आव्यो रे परवरियो ह्य गय रथ पायगे रे लो ॥ हां० दइ प्रद-  
 क्षिणा वंदी बैगो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे जायगे रे  
 लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिभूवननायक लायक तब जगवंत जो, आणी  
 रजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी  
 जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो ॥ ८ ॥  
 इति ॥ (॥ दाल बीजी ॥ वालम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसे, सांजलो चतुरस्रजाण रे ॥  
 मोहनी नीदधां कां पमो, उलखो धर्मनां गाण रे ॥ १ ॥ विरति  
 ए सुमति धरी आदरो, ( ए आंकणी ) परिहरो विषय कषाय रे ॥  
 वापना पंच परमादधी, कां पमो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥  
 करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले  
 करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ  
 पर्व खटना कहा, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आ  
 राधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु  
 परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराध  
 तां, प्राणिन सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल  
 तिहां, पूछै गौतमस्वामि रे ॥ जविकं जीव जाणवा कारणे, कहे  
 वीरप्रभु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, सं-  
 पदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजै, एहथी आठ गुण  
 सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ पंढिहारनो, अठ पचयण  
 फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे  
 ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म कं-  
 ड्याण रे ॥ व्यवन संजवतणो एह तिथे, अजिनंदन निर्वाण रे ॥  
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमोया, नेमनो मुक्ति दिन  
 जाण रे ॥ पासजिन एह तिथे सिद्धा, सांतमा जिन व्यवन माण  
 रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिन, दंभवीरज लह्यो  
 मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्त रे ॥ वि०  
 ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कड्याण  
 रे ॥ एह तिथे बलि घणा संजमी, पामले पद निर्वाण रे ॥ वि०  
 ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिआ, एह तिथे करे ऊपवास रे ॥  
 व्रतधारी जीव पोसो करै, जेहने धर्म अज्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥



प्राणियो वीरे आठमतणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ डि  
 मुखे उच्चरी प्राणिया, पामसे जवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४  
 एह्यी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोरु रे ॥ सेवजो शिष्य बु  
 प्रेमनो, कहै कांति कर जोरु रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ ( कलश ) ए  
 त्रिजग ज्ञासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरु, बुध प्रेम गुरु सु  
 पसाय पामी संशुणयो अलवेसरु ॥ जिन गुण प्रसंगे जणयो रंगे  
 स्तवन ए आठमतणो, जे जविक ज्ञावे सुणो गावै कांति सुख पावे  
 धणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरथा ॥  
 जगपति बंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोमिसुं परिवरथा ॥ १ ॥ जग  
 पति धीगुण फूल अमूल, जक्तिगुणें साला रची ॥ जगपति पूजी  
 पूवै कृष्ण, द्वायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र  
 धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति मुऊ आतम उद्धार,  
 कारण तुम विन कोण कहै ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ  
 नाथ, साथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताय,  
 जेम करे शिवबधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्जल भागशिर मास,  
 आराधो एकादशी ॥ नरपति एकदशो ने पच्चाश, कल्याणक तिग्नि  
 उल्लासी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे म  
 ली ॥ नरपति नेउ जिननां कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥  
 ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥  
 नरपति वर्तमान चोवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरप  
 ति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच  
 काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धां-  
 तकीखंरु, पश्चिम दिशि शकुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

जिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंडावती  
 तास, चंडमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शुर विख्यात, शोयल  
 सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सारे नृपण  
 चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा  
 करै ॥ ११ ॥ नरपति पौषे पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करै ॥  
 नरपति देववंदन आवश्यक, काल बेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति  
 ( ढाल बीजी ) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ वि  
 नये वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन  
 एक, थोमो पुण्य कियो री ॥ बाधे जिम वरुबीज, शुभ अनुबंधी  
 थयो री ॥ २ ॥ मुनि जणै महाजाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ ए  
 कादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी  
 सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शु  
 वगे री ॥ ४ ॥ सांजलि सज्जु वैण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥  
 तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर  
 आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांजलि केशवराय, आगलि जेह थसे  
 री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्धत वमो री ॥ प्रीतिमती प्रिया  
 तास, पुण्ये जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूर्वे अवतार, सूचित  
 शुभ स्वप्ने री ॥ जनम्यो पूत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुक्रने री ॥ ८ ॥  
 नाल निक्षेप निधान, जूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्ज दोहद अनु  
 ज्ञाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र  
 अनेक जण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥  
 ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पंचस्काण धरे री ॥ अगियार  
 कंचन कोरु, नायक पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणमार,  
 तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रतसेव, जाती स्मरण लहे  
 री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, जर्के तप उच्चरे री ॥ एक

दशी दिन आठ, पहरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ ( ढाल त्री  
 जी ) पत्नी संयुते पोसह लीधो, सुव्रतशेठे अन्यदा जी ॥ अवसर  
 जाणी तस्कर आया, घरमां धन लुंढै तदा जी ॥ १ ॥ शासनन  
 के देवीशर्के, अंजाणा ते बापमा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल  
 आयो, नूप आगल धर्या रांकमा जी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी,  
 दयावंत लेइ जेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठे की  
 धा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वानल लागो, सोरीपुरम  
 आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बैठा ॥ लोक कहे हठ कां  
 करो-जी ॥ ४ ॥ पुएयें हाट वखारो शेठनी, नगरी सहू प्रशंसा  
 करै जी ॥ हरखे सेठजी तप ऊजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥  
 ॥ ५ ॥ पुत्रनें घरनो नार जलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ च-  
 न नाणी विजय शेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक  
 खटमासी ब्यार चोमाशी, दोसेय ठठ सो अठमकरे जी ॥ बीजा तप  
 पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरें जी ॥ ७ ॥ एक अध-  
 म सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी,  
 अंगे वधारे व्याधिनें जी ॥ ८ ॥ कर्मै नमियो पापे जमियो, सुर क-  
 है जाल औषधजणी जी ॥ साधु न जाये रोप नराये, पाटु प्रहारें  
 हएयो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल  
 दहे कर्मनें जी ॥ केवल पामी जितपदरामी, सुव्रत नेम कहे  
 श्यामनें जी ॥ १० ॥ ( ढाल चौथी ) कान पर्यपै नेमने ए, धन्य  
 थादव वंश, जिहां प्रभु अवतरया ए ॥ मुऊ मन मानस हंस, ज  
 यो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावमी ए, समुद्रविज  
 य धन्य तांत, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥  
 ज० २ ॥ चरण विराधी ऊपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥  
 तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी-जेम कावव गढ्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण  
हुं न करी सकुं ए, डुळ कर्मना जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो  
बलियातणो ए, कीजै सीजै काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांज  
ली ए, बांढ-ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए,  
समकित युत आराध ॥ ज० ॥ आईस जिनवर बारमो ए, चावी  
चोवीशीयें लाध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य  
पुरंदर रेवताचल मंरुणो, बाण नंद मुनि चंद वरसे रा  
जनगरे संश्रुण्यो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय  
गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि क्षमाविजय गणि, जिनविजय ज  
यसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीनुं हालरिऊं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला जुलावै पुत्र पालणें, गावे हाळो हाळो हाल  
रुवानां गीत, सोना रूपानें वली रत्नें जमियुं पालणुं, रेसम दोरी  
घूघरी वागे ठुमठुम रीत ॥ हाळो हाळो हाळो हाळो मारा नंदने  
॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रज्जुषी वरस अढीशें अंतरे, होसे चोवीशमो  
तीर्थकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी वाणी सांजली,  
साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने  
होवै चक्री के जिनराज, बीता बारे चक्री नहि हुवै चक्रीराज ॥  
जिनजी पास प्रज्जुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचने जाण्या चो-  
वीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज,  
मारी कूखें आव्या त्रण्य जुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या  
संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी अई आज ॥ हा० ॥  
॥ ३ ॥ मुऊनें मोहलो उपण्यो जे बेसुं गजअंबामीयें, सिंहासण पर  
बेसुं चामर ठत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुऊने नंदन ताहरा ते-  
जनां, ते दिन संजारुनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर-

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ ठै, तेहथी निश्चय जाण्य  
 जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणो जंगें लंगन सिंह विराजसो,  
 में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला  
 बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाइयोना देवर ठो सुकमाल, ह  
 ससैं जोजाइयो कही देवर माहरा लामका, हसशे रमशे नें वली  
 चूँटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा०  
 ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेमाराजाना ज्ञाणेज ठो, नंदन नवला पां-  
 चसैं मामीना ज्ञाणेज ठो, नंदन मामलिआना ज्ञाणेजा सुकमाल ॥  
 हशशे हाथे उछाली कहीने नाइना ज्ञाणेजा, आंख्युं आंजीनें  
 वली टवकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे  
 टोपी आंगलां, रतनें जमिया जालर मोती कशबीकोर ॥ नीला  
 पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकि  
 शोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखमलो सहु लावशे  
 नंदन गजुबे जरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन सुखमा जोईने लेशे  
 मामी जामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥  
 ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेमा मामानी साते सती, मारी जत्रीजी ने  
 बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंजे जरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें  
 जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे  
 लावशे लाखटकानो घूघरो, वली गूमा मेंना पोपट नें गजराज ॥  
 सारस हंस कोयल तीतर नें वलि मोरजी, मामी लावशे रमवा  
 नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ ठप्पन कुमरी अमरी जलकलशें  
 नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी  
 वृष्टि कीधी योजन एकने मंमले, बहु चिरंजीवो आशीष  
 दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमनें भेरुगिरिवर सुरपतिये नव-  
 राविआ, निरखी हरखी सुकृत लाज कमाय ॥ सुखमा ऊपर वारुं

कौटी कौटी चंडमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥  
 हा० १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर  
 अंबामी बेसामी मोहोटे साज ॥ पसलो जरशुं श्रीफल फोफल  
 नागरवेळशुं, सूखरुली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० १४ ॥  
 नंदन नवला मोहोटा आशोने परणावशुं, बहु वर सरखी जोमी  
 लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूने पधरावशुं, वर बहु  
 पोंखी लेशुं जोई जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-  
 रा बेजं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-  
 हरे आंगण वूठा अमृत डुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया  
 सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला  
 सुतनुं पालणुं, जे कोई गाशे लेशे पूत्रतणा साब्राज ॥ बिलीमोरा  
 नगरे वरणव्युं वीरनुं हावरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय  
 कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिंहाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोड्या महां  
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणो  
 मायवाप रे ॥ निं० १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब  
 लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगमां रे, कहो केम  
 ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,  
 निंदानी मूको परी टेव रे, ॥ थोमें घणो अवगुणो सहु जरया रे, के-  
 हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 आये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-  
 जो आपणी रे, जेम ठूटकवारो आय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-  
 जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख  
 पारुशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पन्तिकमवाथी मांनिने यावत् लौगस्त  
कही पठी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्पुणं कही अरुधुं जयवी  
राय आन्नवमखंता सूधी हाथ जोमी कहै, वली चैत्यवंदन कहीने  
नमोत्पुणं कही यावत् चार थोयो कहीये ठीये तिहां सूधी बधूं कं  
हेवुं, पठी नमोत्पुणं कही वली चार थोयो कहीये त्यांसूधी बधूं  
कहेवुं, पठी नमोत्पुणं तथा बे जावंती कही स्तवन कही अरुधुं ज  
यवीअराय आन्नवमखंता सूधी कही पठी चैत्यवंदन कही नमोत्पुणं  
कही आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवां तेमां मन्ह  
जिणाणंनी सज्ञाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांजें देववांदवामां  
सज्ञाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमाशी देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पन्तिकमी कानुसग करी लोगस्त० क  
ही एक खमासमण देइ इच्छाका० श्रीरुषज्जजिन आराधनार्थ चैत्य  
वंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करै ॥ ( श्री आदिजिन चैत्यवंदन  
लिख्यते ) ॥ प्रथम जिनेसर रुषज्जदेव, सब्बथी चविया ॥ वदि  
चउथें आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दि  
वसे प्रजु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी आया  
॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुज ध्यान ॥ महा वदि ते  
रगे शिव लह्या, परमानंद निधन ॥ १ ॥ इहां नमोत्पुणं० अरिहंत  
चेइयाणं० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनो कानुसग पारी थुइ  
क्रमथी कहिये ते लखिये ठीये ॥ ( ॥ अथ थोय जोमो प्रारंज ॥ )  
रुषज्जजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला  
जास जाया ॥ वृषज्ज लंठन पाया देव नर नारी गाया, पणसय  
धणु ठाया ते प्रजु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

प्रेवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया । निरधार ॥ गिरि  
 कमलों आया पोहता गढ़ गिरनार, चैत्रोपूनम दिनें ते वंदू जयकार  
 ॥ १ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगम सूत्र मजार, सिद्धाचले सीधा  
 षोड्या बहु अणगार ॥ ते साटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार ।  
 जिन नेटे आवे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेसरी शा  
 सननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करै संजाल ॥ गिरुओ  
 जस महिमा संप्रति कालै जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि नामें  
 लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्पुणं जावंती वे कही  
 नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जी, उलगनी अवधार ललना ॥ प्रथम  
 जिनेसर प्रणमीयें, वंछित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ०  
 ॥ १ ॥ उपगामी अवनितले, गुण अनंत जगवान ललना ॥ अवि-  
 नाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥  
 गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें  
 लहे, ए जुगलुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इहाग छै जे  
 हनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ जरतादिक अया केवली, अ-  
 नुन्नव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाजिराय कुलसंरुणों,  
 मस्देवी सर हंस ललना ॥ रुषजदेव नित वंदिछे, ज्ञानविमल  
 अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री रुषजजिन स्तवनं ॥  
 पठो जयवीरराय अर्धो कहेवुं, एक खमासमण देई इहा० श्री  
 अजितनाथजी आराधनार्थ पैत्यवंदत करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी तेरशें, चविया विजयंत ॥ माइ सुदि आ-  
 ठमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ माइ शुदि नवमें सुनि अया,



पोषी इग्यारस ॥ उज्ज्वल उज्ज्वल केवली, थया अकृप कृपास ॥  
 वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल  
 कविरायनो, नय प्रणामें धरी नेह ॥ २ ॥ इति ॥ प्रवी नमोत्पुणं  
 अरिहंतचे ॥ कही एक नवकारको काजसंग करके थुईनी गाथा  
 कहै, इसी तरै सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ श्रीय प्रारब्ध-

ते ॥ अजित जिनपतीनो, देह कंचन जरीनो ॥ जत्रिक जन  
 नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुज पद लीनो, जेम जल मां-  
 हे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति  
 अजित श्रीय ॥ ॥ अथ श्री शंजवनाथ चैत्यवंदन ॥

सत्तम भैवेयक थकी, चविया श्री शंजव ॥ फागुण सुदि आठम  
 दिने, शुदि चवदशी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासे जलमीया,  
 तणी पूनम संजम ॥ कार्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरू-  
 पम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी जजली ए, शिव पोहता जिनराज ॥  
 ज्ञानविमल प्रजु प्रणमतां, सीजै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य-  
 वंदन ॥ ॥ अथ श्रीय प्रारब्धते ॥

जिन शंजव वारू, लं-  
 वने अश्व धारू ॥ जवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र दारू ॥ सुर  
 तरुपरी वारू, इसमाकाल भारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना  
 ध्यान तारू ॥ १ ॥ इति श्रीय समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अजि-  
 नंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानथकी, चव्या, अजिनंदनराया  
 ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ साहा शुदि वारशे  
 अहिय दिसक, पोष सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें  
 शिवसुख रश ॥ चउथा जिनवरने नमी ए, चउगति भ्रमण निवार  
 ॥ ज्ञानविमल गणप्रति कहै, जिनगुणजो नही पार ॥ ३ ॥

॥ अथ स्तुति प्रारब्धते ॥ ॥ अजिनंदन वंदो, साम्यमाकंद  
 कंदो ॥ नृप संवरनंदो, धर्पितशेष हंदो ॥ तमतिमिरदिणंदो, लंवजे

वानरिंदो ॥ जस आंगल मंदो, सौम्य गुण सारिंदो ॥ १ ॥ इति  
 थोय ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ आवां  
 सुदि बीज चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमु,  
 पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संजं  
 म ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्या  
 रश ऊजली ए, केवल पाये देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें,  
 नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ  
 थोय प्रारच्यते ॥ ॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोमि कापै  
 ॥ सुमति सुजन व्यापे, बोधिनं बीज व्यापै ॥ अविचलपदे आपे,  
 जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदही नावे, जो प्रज्जुध्यान व्यापे ॥  
 १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रज्जु चैत्यवंदन ॥ ॥  
 नवम त्रेवेयकथी चव्या, माहा वदि ठठदिवसे ॥ कांति  
 वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखै ॥ वदि तेरस संजं-  
 म ग्रहे, पद्मप्रज्जस्वामी ॥ चैत्रीपूजम केवली, वलि शिवगति पामी  
 ॥ मृगशिर वदि इग्यारसे, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन  
 राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारच्य  
 ते ॥ ॥ पद्मप्रज्जु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ सुगति वधूं म  
 नावे, रक्त तनुं कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य  
 पावे ॥ प्रज्जु गुणगण ध्यावे, अष्टमहासिद्धि आवे ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री  
 सुपार्थजिन चैत्यवंदन ॥ ॥ ठठा त्रेवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥  
 जादरवा वदि आठमें, अवनरिया खास ॥ जेठ शुक्र बारसो जण्यो,  
 तस तेरसे संजंम ॥ फागुण वदि ठठ केवली, शिव लहे तस स  
 तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ ॥ इति निविम  
 ल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय  
 प्रारच्यते ॥ ॥ फले कामित आशी, नामथी दुःख नाशे ॥ ॥

हिम महि प्रकाशे, सतिमा श्रीसुपासे ॥ सुरनर जस दास, संप  
दानो निवाश ॥ गाय जवि गुणरास, जेहना धरी नद्धास ॥ १ ॥  
इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्ञजिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आ

ठमा, चंद्रप्रज्ञ शस देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चै  
त्रेह ॥ पोष वदि बारसें जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण व  
दिनी सातमे, केवल निराबाध ॥ जाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी  
धूरण ध्यान ॥ अठ महासिद्धि संपजै, नय कहै जिनअभिधान ॥ २

॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥ ॥ शुभ नरगति पामी, ज्यमे  
धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रज्ञ नाम रुचामी ॥ सुज  
अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति बरगामी, रेहन  
पुण्ये पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधानाथचैत्यवंदन ॥

गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्पदंत ॥ फागुण वदि न  
वमे चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस  
ठेठ दिक्षा ॥ काती शुदि त्रीजे केवली, दिखे बहु परे शिक्षा ॥ शु  
दि नवमी जाइवां तणी ए, अजर अमर पद दोय ॥ धीर विमल  
सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शो

य प्रारच्यते ॥ सुविधि जिन जदंत, नाम बलि पुष्प-  
दंत ॥ सुमंति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म  
उरंत, लखि लीला वरंत ॥ जव जलधि तरंत, ते नमीजे  
महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथचैत्यवंदन ॥

प्राणतकल्पभकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी ठ  
है, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माइ वदि बारस जनम दिख्या,  
तस बारसें लीध ॥ वदि पोष चवदशे दिने, केवली परसिद्ध ॥ व  
दि बीजै वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिन  
राजथी, सीजे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शोय

प्रारज्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वालही तुझ सेवा ॥ जेम  
गज मन रेवा, तूही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम ठै नित्य  
मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांग जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी  
चव्या, श्रेयांग जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस ठेठे, करत बहु आ  
नंद ॥ फागुण वदि बारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह  
अमावशि, देशन चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजै लह्या ए, शिवसु-  
ख अक्षय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै एजगवंत ॥ १ ॥  
इति ॥ ॥ अथ श्रेय प्रारज्यते ॥ सवि जिन अवतंस,

जास इहागवंत ॥ विजित मदन कंश, शुद्ध चारित्र हंग ॥ कृतज्ञ  
विध्वंस, तीर्थनाथ श्रेयांग ॥ वृषज ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश  
॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया,  
ज्येष्ठ सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥  
माह शुदि बीजै केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या क  
र्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे  
काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख आय ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रेय प्रारज्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीज  
यादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंठन विख्यात ॥ जस  
गुण अवदात, शीत ज्ञाणे निवात ॥ होय नित सुख गात, ध्याव  
तां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवं  
दन ॥

॥ अठम कल्पथकी चव्या, माघव सुदि बारस ॥ शु  
दि महा त्रीजै जण्या, तस चोर्थे व्रत रस, शुदि पोष ठेठे लह्या,  
वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल  
॥ विमल जिणोसर वंदियै ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो  
जिन नितु दिये, पुण्य परिघल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

शोय प्रारब्धते ॥ विमलेश जावे, वंदतां डख जावै ॥ नव  
 निधि घर आवै, किंभमां मान पावै ॥ मुंघर लंगन कावै, जोमि  
 जरस्वेदथावै ॥ मनु विनति जणावै, स्वामिनुं ध्यान ध्यावै ॥ १ इति ॥  
 ॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतश्चकी चविया उहां,  
 आवण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चंवदसें व्रत ॥  
 वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी  
 दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चंचदमाएं, कीधा ड  
 प्पमेन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामश्री, तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥  
 ॥ अथ शोय प्रारब्धते ॥ अनंत जिन नमीजै, कर्मनी कोटि ठीजै ॥  
 शिवसुख फल लीजै, सिद्धि लीला वरीजै ॥ बोधिबीज मोह दाजै,  
 एटलुं काज कीजै ॥ मुंऊ मन अति रीजै, स्वामिनुं कार्य सीऊ ॥  
 ॥ १॥ ॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि  
 सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयचकी साहमाशनी, शुदि त्रोजें  
 जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये संजमजार ॥ पोषिपूनमें के  
 वली, गुणना जंमार ॥ जेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पाम्या  
 जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥  
 ॥ अथ शोय प्रारब्धते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांइ  
 जीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख  
 कीनो, लंगने वज्र दीनो, नवि होय ने दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥  
 ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ ज्ञाद्रव  
 वदि सातम दिने, सब्बथी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जण्या, डुः  
 खदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥  
 केवल ऊजल पोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवरा ए  
 शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वेदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो  
 काज ॥ १६ ॥ ॥ अथ शोय प्रारब्धते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन मुखकारी, सस्र जय ई  
वारी ॥ सहस्र चतुस्रि नारी, चतुद्र रत्नाधिकारी ॥ जिन शां  
जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली, मांहे क  
पूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गंध धूली ॥ जरी पुष्प  
पटोली, टाढीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजियें जाव  
लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम नपांग बार ॥ बलि मूल  
सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश प्रयत्न उदार, वेद खट वृत्ति  
सार ॥ प्रवचन विस्तार, ज्ञाप्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय  
जय नंदा, जैन दृष्टी सूरिंदा ॥ करै परमानंदा, टाढता दुःख धंदा ॥  
ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्या  
नधी नित्य जहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥  
मोक्षीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतस्कंदा, शान्तिकरण  
श्री शान्तिजिणंदा ॥ साहिवा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज  
हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो, पलक मात्र  
न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे,  
ठंमयो पण तुम्हे नवि ठंमाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न  
खावो, वीतराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर  
कहो एम समजे, पण गौरु दीधायी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना  
हठथी नवि चालै, जे मागे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ जक्ति  
खांची मनमांहे आणयो, सहज स्वजावें पण में जाणयो ॥ सा० ॥  
माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥  
॥ ४ ॥ कबजे आब्या तो वृटीजे, जेह सुंद मागे तेहिज दीजै ॥  
सा० ॥ अजेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकल-  
शो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अकयजाव निधी तुम पाश, आपी दासनें  
पुरो आश ॥ ज्ञानविमल सनकित प्रभुताई, दीधी साहब एह व

माई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंशुनाथ चैत्य-  
वंदनं ॥ ॥ आवण वदि नवमी दिने, सव्वव्यी चविया ॥ वदि

चवदश वैशाखनी, जिन कुंशु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी,  
लीये संजमजार ॥ शुदि त्रांजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ प  
निवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ ठा चक्री जय  
करु, ज्ञानविमल सुखखाण ॥ १७ ॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥

जिन कुंशु दयाला, ठाग लंठन सुहाला ॥ जश गुण शुभमाला,  
कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति नवि त्रिकाला, अंगल श्रेणी माला  
॥ त्रिजुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १८ ॥ इति श्रोत्र ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथश्री अविद्या,  
फागुण शुदि बीजे ॥ मृगशिर शुदि दशमी जणया, अरदेव नमी  
जे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्जल  
वारसें, केवलगुण बरिष्ठ ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद  
लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रानें नमूं, नय कहे जोनी हाथ ॥ १९  
॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारूं, क  
र्मनो क्लेश वारूं ॥ अहनिश संजारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ कृत ज  
यजयकारूं, प्राप्त संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप  
तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

चव्या जयंतविमानश्री, फागुण शुदि चवथे ॥ मृगशिर सुदि इम्या  
रसें, जनम्या निग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिनें, कळ्याणक तीन ॥  
फागुण शुदि वारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर  
नीलमा ए, उमशीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणभूपपद, नव  
जल तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ श्रोत्र प्रारज्यते ॥  
जिन मल्ली महिला, वान बै जेह नीला, ए अचरज लोला, स्त्री  
पणें नाम पीला ॥ दुस्मन सवि पीड्या, स्वामि जो बै वसीला ॥

अविचल सुखलीला, दीनिये सुण रंगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लि  
 स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपरा  
 जितथी आयिया, आवण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारमी,  
 थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि वारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥  
 फागुणानी तेम जेठ नवमी, कृष्णै निर्वाण ॥ वर्षा इयाम गुण ज-  
 जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमलजिनराजना, सुरनरन-  
 यक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ मुनिसुव्र  
 तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुऊ अंतरजामी कामदाता अका-  
 मी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्भ्या सर्वदारामी  
 राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै  
 त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ आ  
 वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आपाढ  
 नी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, वर केवल  
 धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अस्कय अनंता सुस्क ॥ नय कहे  
 श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग दुःस्क ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रा  
 रज्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेहं नही विश्वगानो ॥ सुत वप्रा मानो,  
 पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंज ठे जे कृपानो ॥ स  
 वि जुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ अथ श्रीने  
 मीनाथ चैत्यवंदन ॥ अपराजितथी आविया, कांती वदि  
 वारस ॥ आवण शुदि पंचमी जणया, थांदव अवतंस ॥ आवण  
 सुदि ठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आपाढनी आ  
 ठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमो अणपरणीया ए, राजी  
 मंतीना कंत ॥ ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥ २२ ॥ इति  
 ॥ ॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥ गया शस्त्रागारे, शंख  
 निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कण्यो तिवारे ॥ २३ ॥



संशय धारे, एहनी कौश सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालग्री ब्रह्मचा  
रे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंमे,  
सुरनर सारे सेव ॥ अरु पुष्करअरधे, इणि परे वीश जिनेश ॥ सं  
प्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, ज  
वज्रनिधिने तारे ॥ कोहादिक मोटा, मज्जतणा जय वारे ॥ जिहां  
जीव दयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ जवि जाव धरीने चित्त करीने  
चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विमारे ॥ समकित  
दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो ज  
व पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥  
॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घ

नीयां, दो घनीयां दो चार घनीयां ॥ रहो रहो ० ॥ मोज मद्दिरा  
ण शिवादेवी जाया, तुमें गो आधार अरुवनियां ॥ रहो ० १ ॥ ना  
ह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चनियां ॥ रहो ०  
२ ॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, ठोरुदीए पशुपंखी चनियां  
॥ रहो ० ३ ॥ गोद विठानं में बली जानं, करुं वीनती चरणे प  
नियां ॥ रहो ० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवरु, न गमे  
स्वपनमें सेजनियां ॥ रहो ० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन  
वामी वन घर सेरनियां ॥ रहो ० ६ ॥ अष्ट जवांतर नेह निजाव  
त, नवभें जव ते वीठनीया ॥ रहो ० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी  
सुणीने, राजुल रेवतगिर चनियां ॥ रहो ० ८ ॥ पीयु करे निज  
शिरे हाये देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलनियां ॥ रहो ० ९ ॥ जादव  
वंश विजुपण नेमजी, राजुल मीठी वेलनियां ॥ रहो ० १० ॥ ज्ञान  
विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखनीयां ॥ रहो ०  
११ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कृष्ण धौथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोय वदिदशमी ज

नम, त्रिजुवन सुख पाया ॥ पोप वदि इंग्यारसें, लहै मुनिवर पंथ ॥  
 कमठापुर उपसर्गनो, टाढ्यो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोअह दिनें  
 ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ आवण शुदि आठमें लेह्या, अविचल  
 सुख नरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥ ॥ अथ शीघ्र प्रारब्धते ॥ जलंधर  
 अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विना  
 रे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोमि वारे ॥ मुऊ प्राणाधारे, मान  
 वामा मढ्हारे ॥ १ ॥ अरं जनम सुहावे, वीर चारित्र पावै ॥ अ  
 तुजव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कट्याण, संप्रति जे  
 प्रमाणे ॥ सवि जिनवर ज्ञाण, श्रीनिवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दशवि  
 धि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सत प्रकार, पञ्चस्का  
 णादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे जथा जिहां उदार ॥ ते  
 प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला,  
 जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयवि  
 मल विशाला, ज्ञान लब्धी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे  
 सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ थारे-मा  
 थे पंचरंगी पांग सोनानो ठोगलो मारुजी ॥ प्रभु पास जिनेसर  
 जुवन दिनेसर संकरो, साहिवजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर  
 झूथरो ॥ साहिवजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो,  
 सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुबवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥  
 तूं अक्षय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी  
 तुम गुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी  
 निजमते, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमते ॥  
 सा० २ ॥ षट् दर्शन ज्ञासे युक्ति निरासे शासने, सा० ॥ स्याद-  
 वाद विशाले सहज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञानने ज्ञाने  
 आतमध्याने आतमा, सा० ॥ परमाण्व वेदी जेद अजेद नही त

मा ॥ सा० ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेके देखिये, सा० ॥ आत  
 म तत्कामी अगुण अकामी देखिये ॥ सा० ॥ सवि गुण आरा  
 मी ठो बहुनामी ध्यानमां, सा० ॥ आपे गतनामी अंतरजामी ज्ञा  
 नमा ॥ सा० ४ ॥ तूं अनियतचारी नियत विचारी योगमां, सा०  
 ॥ अध्यात्म सेली ऐम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तूं धर्म सन्या  
 सी सहज विलासी समगुणें, सा० मोहारि विनाशी तूं जितका  
 शी कवि जणे ॥ सा० ५ ॥ ज्ञानदर्शनदायक गुणमणी लायक  
 नाथ ठै, सा० ॥ दुर्गति दुःखघायक गुणनिधि दायक हाथ ठै ॥  
 सा० ॥ जित मनसथ सायक त्रिजुवन नायक रंजणो, सा० ॥ अ  
 नेकांती एकांती तूं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ६ ॥ ध्यानानल योगें  
 पुदगल जोगें ते दह्या, सा० ॥ अंतररिपु हणिया मूलथी खणिया न  
 वि रह्या ॥ सा० ॥ तूं हेतू समीयो सुरवर नमीयो सह  
 कहे, सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुण लहे ॥ सा०  
 ७ ॥ इम तुम गुण शुणिये कर्मने हणिये पलकमां, सा० ॥  
 पण नवि अवगणिये सेवक गणिये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे  
 नंदा त्रिजुवन इंदा संयुणे, सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुम पय  
 वंदा गुण जणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीवर्द्धमान  
 जिनचैत्यवंदन ॥ शुदि आषाढ ढढ दिवसें, प्राणतथी चवि  
 था ॥ तेरस चैत्रह शुदि दिने, त्रिसलायें जणिया ॥ मृगशिर वदि  
 दशमी दिने, आपे संजम आराधै ॥ शुदि दशमी वैशाखनी, वर  
 केवल साधै ॥ काती कृष्ण अमावशी ए, शिवगति करै ज्योत ॥  
 ज्ञानविमल गौतम लहै, पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥ इति ॥  
 ॥ अथ श्रौच प्रारब्धते ॥ लह्यो जवजल तीर, धर्म कोटीर  
 दीर ॥ दुरति रज समीर, मोह मूसार सीर ॥ दुरित दहन नीर,  
 माण ॥ कर्पे सगं कर पणसय धणु माणुं, सासय असासय

मेरुथी अधिक धीर ॥ चरम श्रीजिनवीर, चरण कट्पट्ट कीर ॥  
 ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥ जगजंतु दयाला,  
 धर्मनी शास्त्रशाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला विशाला ॥  
 सुरनर महिपाला, वंदता है त्रिकाला ॥ २ ॥ श्रीजिनवर वाणी,  
 द्वादशांगी रचाणी ॥ सुगुण रयणखाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ न-  
 वम रस रंगाणी, सिद्धि सुखनी नीसाणी ॥ उह पीलण घाणी,  
 सांजलो ज्ञाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोंगपा-  
 ला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगलमाला,  
 टालीने मोहहाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजै विशाला ॥  
 ॥ ४ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ आज गइ श्री हुं समव-  
 सरणमें ॥ ए चाल ॥ वंदो वीर जिनेसरराया, त्रिशलामाता  
 जाया जी ॥ हरि लंगन कंचन सम काया, मुऊ मनमंदिर आया  
 जी ॥ वंदो वी० ॥ १ ॥ दूषम समर्थे शासन जेहना, शीतल चं-  
 दन ढाया जी ॥ जे सेवता जविजन मधुकर, दिन२ होत सवाया  
 जी ॥ वंदो० २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी, जस मनमां-  
 जिन आया जी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया  
 जी ॥ वंदो० ३ ॥ कर्म कठिन जेदन बलवत्तर, वीर विरुद्ध जिन  
 पाया जी ॥ एकलमल अतुलीबल अरिहा, उत्तमन डुर गमाया  
 जी ॥ वंदो० ४ ॥ वंछित पूरण, संकट चूरण, मातपिना तूं सहा-  
 या जी ॥ सिंहपरे चारित्र आराधी, सुजस निशान वजाया जी ॥  
 वंदो० ५ ॥ गुण अनंत जगवंत विराजै, वर्द्धमान जिनराया जी  
 ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, शुद्ध समकित गुणदाया जी  
 ॥ वंदो० ६ ॥ इति ॥ इहां पूरण जयवीरराय कहेवो ॥  
 ॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन ॥ सकल  
 मंगलकार एही, सिद्ध सकल पय दाय ॥ स्याद्वाद साधन पद एही,

अध्यात्म गुणघाण ॥ १ ॥ ( सही ए नमो जिणाणं ) २ ( ए  
 आकणी ) विहंतरे लख सगकोमि जवणवई, सासय जिण  
 हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, सगसठ बिंबह परिमाणं ॥  
 सही० ॥ ३ ॥ मेरु वैताळ्य वस्कारा कंचन, यमरु कुंम ड्ह जाणुं ॥  
 एकत्रीश ओणण्यासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥  
 त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, व्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुच  
 क कुंमल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥ ५ ॥ अरु  
 शत सय सहस चालोसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले वत्तोससें  
 गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख  
 सहस एकाणुं, चव सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर  
 त्रिवारा, रुचक कुंम नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोके नव  
 ग्रैवेयके, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रे  
 वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं,  
 सहस चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्द्धलोके, जिन प-  
 मिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ९ ॥ त्रिचुवनमांहे सासय जिनहर,  
 सगवन्न लख बसें व्यासी ॥ आठ कोमि अष्ट प्रतिमा संख्या, सु  
 णजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी, बेतालीश  
 कोमी, तेम अठावन्न लखा ॥ ठत्रीश सहस अशी वलि साधिक,  
 सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रति  
 मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सत्ता तिहां, साठ वधारो, एकश  
 त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रुषज चंडानन ने वर्द्धमान, वा  
 रिखेण चव्र नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पमि  
 मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर जावना जावै, समकि  
 तगुण दीपावै ॥ परिच संसार करी शिव जावै ॥ कुमति ते मन  
 जावै ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

ज्ञाण ॥ सं० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विष्णु; सेत्रुंजादि  
 कं बहुला ॥ ते सविहूने त्रिविधे नमतां, पातक जाये संगला ॥  
 सं० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रज्जु नाम जपंता, लहिये कोमि कळ्या  
 ण ॥ मनहं मनोरथ संगला सीऊ, जंनम सफल सुविदाण ॥ सं०  
 ॥ १७ ॥ जंयहरं जंगवताणं जयत्तुर, नमो जिणाणं सही ए ॥  
 नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥  
 ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोग  
 स्सको कानुसग्ग चंदेसुनिम्मलयर। सूयी एक जण करे, ते कानुस  
 ग्ग पारी पठी चार थोथो कहेवी ते लखिये ठिये ॥  
 ॥ अथ थोथ प्रारज्यते ॥ कृष्णदत्ते नमुं गुण निर्मला, डुध-  
 मांहे जिम जेखी सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार ठे,  
 जव२ मुज्जे चित्ते रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली,  
 जेह हसे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे,  
 जिन पदिमा प्रणमुं नित जगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम कीरं  
 महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ अविक देह सदा पावने  
 करे, डुरित तापर जोमल अपहेरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन ज्ञासन  
 कारिकां, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रज्जुताये  
 दीपता, डुरित डुष्टतणा जय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशा-  
 श्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहां एक जण  
 मोटो शांति कहे ( अने ) बीजां सर्व कानुसग्गमां सांजलै ॥  
 पठी सर्व जणा कानुसग्ग पारोने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहे ॥  
 पठी बैसीने एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पठी सर्व  
 जण मुखअंकी आवी राते कहे- श्रीशेत्रुंजायनमः १ श्री पुंरुरीका  
 यनमः २ श्रीसिद्धकोत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री  
 सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेश्वरायनमः ९ श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री  
 शाश्वतायनमः ११ श्रीदशशक्तयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिलायनमः १३  
 श्रीपुष्पदन्तायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय  
 नमः १६ श्रीसूरजगिरयेनमः १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री  
 पातालमूलायनमः १९ श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा  
 यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीनां २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने  
 पठे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये ठिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशो ॥  
 नीलनी रायणातरुतले, साहेलनियां ॥ पीलनी प्रभुजीनां  
 पांथ, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइये, सा० ॥ एहीज मुग  
 ति उपाय ॥ गु० ॥ १ ॥ शीतनी ठायीये बैसीये, सा० ॥ रातमो  
 करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल अई, सा० ॥ पहेरी व  
 खादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलमे, सा० ॥ नेह  
 धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे जवे गिव लहे, सा० ॥ धाये निर्म  
 ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे  
 सार ॥ गु० ॥ अन्नंग प्रीति होए जेहने, सा० ॥ जवश तुम आ  
 धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा अरु  
 ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाअै, सा० ॥ तीरअने अनुकूल ॥  
 ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मने, सा० ॥ सेवो एहने उठाह  
 ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु ज्ञाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम  
 मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीशत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अर्थ श्रीगिरिनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होलाप कामे ॥ ए  
 चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करुं, हो लाल के ॥ सेव ॥

अद्विज ताहं ध्यान के दिल मांहे धरूं हो जावें, दि० ॥ शंख  
 लंठन गुणखाण के अंजन वान वै हो लाल के अं० ॥ राजिम-  
 नीना कंत के परया विणुअ वै हो० प० ॥ १ ॥ तूहीज जीवन-  
 प्राण के आतमराम वै हो० आ० ॥ मांहे परम आधार के ताहं  
 नाम वै हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो०  
 नि० ॥ कीजाये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥  
 जोत्या मनमय राज रही गढ़ ऊपर हो० र० ॥ पहरी शील  
 सनाइ उदास ऐसी धरै हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि  
 तुझे अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुम्हरपणे धरी धोर महाव्रत  
 उचरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ जवांतर नेह जे तेह लवेखीने  
 हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥  
 पूरण पाखी प्रीत वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमनार  
 पहोचामी पारमें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणुं जे प्रीत करे ते  
 जन धर्या हो० करे० ॥ निरवाहे धरी नेह के ते बिरला सुएया  
 हो० ते वि० ॥ राजमनीनो कंत वखाणे कविजना हो० व० ॥  
 तुझे तो दीधा ठेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जाद-  
 वनाअ सनाअ करो मुऊने सदा हो० क० ॥ द्विज रुद्र शिर हाथ  
 होवे जेम संपदा हो० हो० ॥ जलिर मरे पतंग दीवाने मन नंदी  
 हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोरो दोने सही हो० घो० ॥ ६ ॥  
 सबला साथै प्रीत निबलने नवि कही हो० नि० ॥ धिण लागी  
 जे थोकी किहां जाये वही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते नीनि-  
 न मंजीये हो० नी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मन  
 मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो इसमन होय दूर कोणे नवि  
 मंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दूरशन दीजीजे हो०  
 द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर मलीने कीजाये होला० म० ॥



॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआबूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥  
 ॥ आवो आवोने राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइयै ॥ श्रीजिनवरनी  
 जक्ति करीने, आतम निर्मल थइये ॥ आवो० ॥ विमलवसीना  
 प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइये ॥ चंपक केतकी प्रमुख  
 कुसमवर, कंठे टोकर ठविये ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें पासे लूणग  
 वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखी, दुःख दो  
 हग सवि गमिये ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्रीरूपज जिनेसर, रैवत  
 नेम समरिये ॥ अरे दो वसीनी यात्रा करतां, बिहुं तीरथ चित्त धरिये ॥  
 आ० ३ ॥ मंरुप मंरुप विविधि कोरणी, निरखी हियमै ठरिये ॥  
 श्रीजिनवरना बिंब निहोली, नरजव सफलो करिये ॥ आ० ४ ॥  
 अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुज्जकरम सब हरिये ॥ पाश शां  
 ति निरखी जब नयणें, मन मोह्यो मुंगरीयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे  
 चढतां उजम बाधै, जेम धोमे पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी के  
 शर, पापपरुल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकल ध्यानें प्रज्जुनें ध्या  
 तां, मनमांहे नवि रुरिये, ज्ञानविमल कहै प्रज्जु सुपशायें, सकल  
 संघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आया ॥ पु  
 ष्पक नामें विमाने बैशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्रीजिन पूजियें  
 लाल, समकित निर्मल कीजै ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरजव  
 सफलो कीजै ॥ हीयमै हरखी लाल, समता संग करीजै ॥ ( आं  
 कणी ) चउमुख चउगति हरण प्रशोदै, चउवीशें जिन बैठा ॥ च  
 नुदिशि सिंहासन सम नाशा, पूरन दिशि दोय जिठा ॥ श्री० २ ॥

॥ संजव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि न  
 त्तरदिशि जाणो, एवं जिन चव्वीशा ॥ श्री० ३ ॥ वैरा सिंदतणे  
 आकारै, जिनहर नरते कीथा ॥ रयणविंव मूरत आपीनै, जग ज  
 शवाद प्रमिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण  
 तांत वजावै ॥ माडल वीणा ताल तंवूरो, पगरव ठमठमकावै ॥  
 श्री० ५ ॥ जक्तिजावें एम नाटक करतां, तूट तंत विचालै ॥  
 सांधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासुं ततकालें ॥ श्री० ६ ॥  
 द्रव्य जावशुं जक्ति न खंसी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुर-  
 तरु फल पामांनै, तर्थाकर पद लाध्युं ॥ श्री० ७ ॥ इणि परे ज  
 विजन जे जिन आगें, बहुपरे जावनाजावें ॥ ज्ञानविमल गुण ते  
 इना अदनिश, सुरनर नायक गावै ॥ श्री० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसमेतशिखर स्तवनं ॥

॥ समेतशिखरगिरि जेटीये रे, मटवा जवना पास ॥ आत  
 मसुख वरवा जणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ जवियां  
 सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ जवि० से० १ ॥ (आंक  
 णी ) समेतशिखर कलपें कह्यो रे, वीश ठुंरु अधिकार ॥ वीश त  
 र्थाकर शिव वर्या रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ ज० से० २ ॥ सि  
 ष्केत्र मांहे वस्या रे, जाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूप-  
 मारे रे, दोय नय प्रजुजीना साररे ॥ ज० से० ३ ॥ आगमवचन वि  
 चारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिणे जाणिये रे, ते  
 आगम स्याद्वाद रे ॥ ज० से० ४ ॥ जयरथरायनणी परे, जात्रा  
 करो मनरंग ॥ जवहुःखने देइ अंजली रे, आयें सिद्धबधूनो संग रे  
 ॥ ज० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु आय  
 ॥ जवहेतु किरिया त्यागशी रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ ज० से०  
 ६ ॥ जेह सभें समकित अयो रे, तेह समये होय नाश ॥ ज्ञान

विमल गुरु ज्ञाखियो रे, आवश्यकज्ञाप्यनी वाण रे ॥ जठ मे०  
॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववन्दन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषण्यर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोच्चव कीजै जी  
॥ होख दमांमा जेरी नफेरी, ऊल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन  
आगल ज्ञावना ज्ञावी, मानवजव फल लीजै जी ॥ परव पजूसण  
पूरव पुन्ये, आया इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ आस पास वज्र द-  
शम डुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय क  
रीनें, जिन चौवीश पूजीजै जी ॥ वरुाकळनो ठठ करीनें, वीर-  
बंखाण सुणीजै जी ॥ परवानें दिन जन्म महोच्चव, धवल मंगल  
वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावो, अठमनुं  
तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परै कैवल लहियै, जो शुज जावै  
रहेये जी ॥ तेलावर दिन त्राण कळयाणक, गणधरवाद वदीजै  
जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजै, रुपज चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥  
वारशें सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पम्किमियें जी ॥ चैत्यप्र-  
वानी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें खामीजै-जी ॥ पारणानें दिन  
मामीवन्नल, कीजै अधिक वरुाई जी ॥ मानवजय कहे सकल  
मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू जली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोर-  
णश्री रथ फेरीयो रे लाल, नीतुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पद-  
मणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी  
अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नावो  
पीठ ॥ प्रीतम दिन दिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥  
हो २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो डुख-दैण ॥

नो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥  
 माहमहीने सी पमे हो लाल, प्रीत संग पांढै नारी ॥ प्रीतम वि  
 ण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले  
 हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हुं किणसुं खेलूं हिवे हो  
 लाल, पाश नही जरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहाने चादणी रे ला  
 ल, संजोगण सुख दैण ॥ विरहणनै वालम विना रे लाल, रोवत  
 जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही  
 महकाय ॥ अरज सुणी अवला तणी हो लाल, तपत मिटावो  
 आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाऊ कोम  
 लगात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूवै सुऊ  
 चात ॥ हो० ८ ॥ आसादे काली घटा हो लाल, ऊनमि आयो  
 मेह ॥ कंत मिट्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥  
 हो० ९ ॥ ए ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, घन बरसे ऊमला-  
 ॥ १० ॥ इण रुत सूनां एकली हो लाल, क्युं कर रैण विराई ॥ हो०  
 ॥ १० ॥ काली कालाहण मिलो हो लाल, जाइवमै वर खंत ॥  
 अरज सुणीनै साहिवा हो लाल, पूरो सो मन खंत ॥ हो० ॥ ११ ॥  
 आसोजै आंसू ऊरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न  
 पूवो साहिबे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० ॥ १२ ॥  
 काती दृढ गाली करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख  
 निज नाहनो हो लाल, सफल गिणो अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥  
 संयम ले पिण्ड सेंहथे हो लाल, पामे जवनो पार ॥ इण पर पाले  
 प्रीतनी हो लाल, घन ९ ले नर नारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जे कीधी  
 यशु ऊरै हो लाल, भो पर करज्यो देव ॥ चंद जणो द्यो करि  
 दया हो लाल, प्रजु चरणारी सेव ॥ हो० ॥ १५ ॥ इति श्रीनेम  
 राजुल वारेसासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपठरा करतो आरती जिन आगै, हारे जिन आगे रे जिन  
आगै, हारे ए तो अविचल सुखमा मागै, हारे नाज्जीनंदन पाश ॥  
॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हारे दोय च-  
रणे जांजर जमकै ॥ हारे सोवनना घूघरो घमकै, हारे लेती फूड-  
रु बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशल। रुफ वीणा, हारे  
रूमा गावंती स्वर जोणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नयणां, हारे जो-  
ती मुखसुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभु जा-  
या, हारे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हारे मे तो पूरव पून्ये पाया,  
हारे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु  
प्यारो, हारे प्रभु सेवक हूं तुं तारो, हारे जवोजवना दुखमा  
वारो, हारे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो  
चिन्त घरजो, हारे मोरी आपदा सवली हरजो ॥ हारे सुनि मा-  
णक सुखिल करजो, हारे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिंहाय ॥ देशो उमादे भटीयाणोरी ॥

पहली तो समरुं हो सिद्ध बुद्धी दाता सारदा, लागुं गुरां  
रे पाय ॥ प्रभुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिव जिनतणा, सुजमत  
आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरपुरहुंतो हो नेमीसर साहिव ये  
चढ्या, जान करी याडाय ॥ हमतो तो सिणगारया हो नेमसर  
साहिव ये जला, घोरलांरी गिणती न काय ॥ २ ॥ बाजा तो अ-  
धिका हो नेमीसर साहिव बाजता, आया तोरण बार ॥ सहिव  
चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥  
आंख फरुके हो सहेलो मारी जीमणी, फिरताइ दीसे वै जरता-  
र ॥ वानो तो जरीयो हो नेमीसर साहिव जीवनो, पशुवाणी  
पुर्णी रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊसो तो रथनें हो नेमीसर साहिव राखी-

यो, ए पशु बांध्या है किण काज ॥ गोरो तौ होसी हो नेमीसर  
 साहिब तुमतणो, सारथी कहे है महाराज ॥ ५ ॥ थोमा तो  
 सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥  
 जीव बंध्याने हो नेमीसर साहिब गोमियां, जीव सवे तिण वार  
 ॥ ६ ॥ अणपरणो राजुल हो नेमीसर साहिब गोमने, जाय  
 चढ्या गिरनार ॥ आठें तो करमांसुं हो नेमीसर साहिब जीतवा,  
 लीधो संजमजार ॥ ७ ॥ राजुल तो जूरे हो नेमीसर साहिब  
 एकली, जल विन मठली जेम ॥ नव जवारो हो नेमीसर साहि-  
 ब गोमनें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावै हो  
 राजुल दुःख भत करो, एतो कालो है जरतार ॥ पावो तो राजुल  
 जावै हो सहेली मारी थे सुणो, इण जव एं जरतार ॥ ९ ॥ रा-  
 जुल तो चाली हो नेमीसर साहिब वांदवा, साथे तो घणुं रे परि-  
 वार ॥ गिरनारे चढतां हो सब आगे पावै नीकड्या, एकली रही  
 है राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अ-  
 तिथणा, ज्ञाज्या है सब सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल  
 नारी अति जली, चीर निचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो  
 वाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घूघरना ऊणकार ॥ ऊणकां तो  
 सुणिया हो रहनेमी बैठे ध्यानमें, खोली है पलक तिणवार ॥ १२ ॥  
 रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी बैठो ध्यानमें, कहै सुंदर करो मौसुं  
 प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मानै गोम है  
 नेमजरतार ॥ १३ ॥ जोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांम गो,  
 उलटी करै नांखे तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पावो नही  
 जखै, जखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम  
 थारे सारखी, हुं वसा चाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम  
 साहरे ऊपरां, तो प्रस्यो थे नरक मजार ॥ १५ ॥ एहवा तो व-

घने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपमा  
तो पहर्या हो राजुलनारो आपणा, पुहती वै प्रज्जु दरबार ॥ १६ ॥  
राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वादिया, बांदीनें लीधो सं-  
जमजार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती  
वै सुगति मजार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आग-  
लै, मिलिया वै सुगति मजार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब  
गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिंज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिंज्ञाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूठा करे, विनय करी शीस नमाय प्रज्जुजी ॥  
अविचल आनक में सुएथो, कृपा करी मोय वताय प्रज्जुजी ॥ शिव-  
पुरनगर लोढामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करो, साख्या  
आतम काज प्रज्जुजी ॥ छूटा संसारना दुख थकी, रहवानो  
किहां ठाम प्रज्जुजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उई लोकमां,  
निद्वशिदातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे,  
तेइना धरे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस  
जोजना, लांघी पोहलो जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जानी  
विचै, वेरे माखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला द्वार  
मोतीतणा, गोडुध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी ऊजली  
अधिणी, उदटो ठत्र संगण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजन-  
स्वर्ण शम दापती, बठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन  
थकी निरमलो, सुंआली अतंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥  
निद्वशिदा उलंधी गया, अधर रह्या तिदगाज हो गोतम ॥  
अवाकसुं जाई अरुंधा, साख्या आतकाज हो गोतम ॥ शि०  
॥ ७ ॥ जनम नही मरणा नही, नही जरा नही रोग हो गोतम ॥  
धरि नही मित्रा नही, नही संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ८ ॥ झूख नहीं तिरखा नहीं, हरख नहीं नहीं सोक हो गो-  
 तम ॥ करम नहीं कार्या नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥  
 शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, फरस नहीं नहीं वेद हो  
 गोतम ॥ बोले नहीं चाले नहीं, मोनपयूं नहीं खेद हो गोतम ॥  
 ॥ शि० १० ॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नहीं ऊज्जाम हो गोतम ॥  
 काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम ॥ शि०  
 ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नहीं ठाकुर नहीं दास हो गोतम  
 ॥ मुक्तिमें गुरु चेखो नहीं, नहीं लघु वरमाई वास हो गोतम ॥  
 शि० १२ ॥ अनंता सुखमें जिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो  
 गोतम ॥ सहुकोईनें सुख सारिखा, सगलानें अविचल राज हो  
 गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, वली अनंता जाय  
 हो गोतम ॥ अवर जग्या रुंधे नहो, जोतमां जोत सझाय हो गो-  
 तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित वै, केवलदर्शन खास हो  
 गोतम, कायंकलमकित दीपता, कदय न होवै ऊदाश हो गोतम ॥  
 शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे बुलखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥  
 शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि०  
 १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविखल  
 वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकेरो, जाद्ववंस मांहे वरेरो ॥ १ ॥  
 नगरी सोरीपुरपृथ्वीमें दीपे, रिद्धै सभृद्धै अलकामें जीपे ॥ राजा समुद्ध  
 विजै शिवादे राणी ॥ सीलै रूपै कर अधिकी वखाणी ॥ २ ॥  
 तेहनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमणसुं घाले वै बाथो ॥ आलंङ्ग  
 घणें वसंत आयो, कुली बत्तीसैं फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाज  
 सारु चलिया गोपालो ॥ रुफ चंग बाजै रेमे गुलालो ॥ रुखमण



राणी राधा सतजामा, बीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेम-  
 नाथजीरो व्याह मंमायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥  
 राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई,  
 जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरघू सखरी सरणाई, जुंगलने  
 जेरी सखरी सजाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाळ कुहके करनाला, गोरी  
 जी गावै गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजै घूघरमाला, मदऊरता  
 मंगल जाकजमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, ला  
 की राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग जराई ॥ सीस  
 फुलारी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले जालै टीकोजी सोहै, अ  
 णियाली आंण्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जमावकेरा, नकवे-  
 सर मोती जलके जलेरा ॥ ९ ॥ दामिमकुलियां दांत वत्तासे, वदनी  
 बोले सार उत्तीसै ॥ डुलमीतिलमी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर  
 कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूने नें गहणें जाइ न वखाणी, रू  
 पैकर गोरी जीपे इंडाणी ॥ जांऊरनें नेवर बूघर घमकंती, हंसा तो जीपै  
 सुंदर हालंती ॥ ११ ॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुयामेदेही गर  
 काव कीधी ॥ फाबंते कपडै सखियां वणाई, राजूल राखी नार न  
 काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां ति  
 ण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें  
 मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोरेजी  
 ग्यानं जादव थाटो ॥ घणुं मठराला महा अजिमाना ॥ केसरियेवागै  
 मिलिया बै जानी ॥ १४ ॥ डुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही  
 जानी जूपति जलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजामै, जातां कालनें  
 जाल पठ मै ॥ १५ ॥ तिहां माहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता  
 सुरपतिसुं नर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोभे जु चंदो, तिण विध  
 मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ वुढाया, अण-

परण्या नेमजी पाठाजी आया ॥ धिग् १ संसार मायाजंजालो,  
जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी  
चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल  
ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम  
नाथजीरो सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिख्यते ॥  
प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने जरणे नित  
नमूं ॥ धुरि तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपा-  
ध्याय मन आणियै ॥ ( उल्लाखो ) आणियै निज मन जाव सुद्धे,  
उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमजूमिमांहे, साधु प्रणसुं ते  
वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नें शुक्ल पक्ष वलि शील पाळ्यो ते  
सुणो, जरतारने लो विन्हे तेहनो चरित जावेसुं जणो ॥ १ ॥  
( ढाल ) जरतकेत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कब्बदेसै रे विजय-  
सेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बालागणै रे ए-  
हवो निश्चै मन कियो ॥ ( उल्लाखो ) मन कियो एहवो तेण निश्चै  
पक्ष अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा टाल-  
स्युं ॥ इकअठै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्ल  
पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ ( ढाल ) कर्म-  
जोगे रे मांढोमांहे बिहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुन विवाह सुहाम-  
णो ॥ तब विजया रे सोले गृंगारजला करी, पिउमंदररे पोहती मन  
उल्लट धरी ॥ ( उल्लाखो ) मन धरी उल्लट अधिक पहुतो पिया  
पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोलै शील निश्चो संजरी ॥ मुज  
शील निश्चो पखअंधारे तेहना दिन तीन बै, ते नेम पालो शुक्ल  
पक्षे हुं जोग जोगविस्थुं पवै ॥ ३ ॥ ( चाल ) इत सांजल रे वि-

जया मन विलखी आई, पिउ पूठै रे किम चिंता तुजने जई ॥  
 तब विजया रे कहै शुक्लपक्ष व्रतमें लियो, व्रत चोप्रे रे बालापण  
 निश्चो कियो ॥ ( उल्लाखो ) बालपणमें कियो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत  
 पालस्युं, तो उजय पक्ष हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥  
 तुझे अवर नारी परणने हिव शुक्लपक्ष सुख जोगवो, कृष्णपक्ष  
 अनज निमय पाली अजिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तब  
 बलतो रे तसु जरतार कहै इसो, विपचारस रे कालकुटविप  
 ह्वे तिसो ॥ ते ठंमी रे शीलव्रत दोनुं पालस्यां, एह वार्त्तारे माता  
 पिता न जणावस्यां ॥ ( उल्लाखो ) मानपिता जब जाणस्ये तब  
 देख्य लेस्यां धर दया, इम अजिग्रह लेईने ते जावचारत्रिया  
 अया ॥ एकत्र सध्या सयन करतां खरुगधारा व्रत धरे, मन वचन  
 काया करी सूधो शील वेउं आचरै ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ) विमल  
 केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसरया ए ॥  
 आणी अधिक विवेक, आवक जिणदास, कहै विनयगुण परि-  
 वरयो ए ॥ ६ ॥ सहस चोराली सांधु, मुऊ घर पारणो, करै मनो-  
 रथ तो फलै ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहै आवक सुणो, एह  
 बात तो नवि मिलै ए ॥ ७ ॥ किहा एतला अणगार, किहां बलि  
 सूऊतो, जातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो हिव तेह विचार, करो  
 तुम्हें जिम तिम, फल अन्ह हुवै तेतलो ए ॥ ८ ॥ अठै हिवे कछ-  
 देश, सेठ विजय बली, विजया जार्था तसु धरै ए ॥ जावयती  
 ग्रहवास, तेहनें जोजन, दीधां फल हुवे तेतलो ए ॥ ९ ॥ जिण  
 दास कहै जगवंत, ते मांहे एतला, कुण गुण कुण व्रत वै घणा  
 ए ॥ केवली कहै अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपक्ष व्रतत  
 णा ए ॥ १० ॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहै जग हूं वमो ए ॥ देशी ॥  
 केवलीनें सुख सांजली, आवक ते जिनदास रे ॥ कछदेशें हिव

आवियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो,  
 शील शमो नही कोय रे ॥ शीलै देव सानिध करै, शीलथो शिव  
 सुख होई रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय विजयाज्ञाणो, जगतसुं ज्ञो-  
 जन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारणानो फल लेई रे ॥  
 ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूरै तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥  
 केवलीने मुख जिम सुण्यो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥  
 ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें, पारणो दीये कोइ जाय रे ॥  
 कृष्ण शुक्लपद्म दंपती, ज्ञोजननो फल आय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥  
 मातपिता जब जाणियो, प्रगट हूल संबंध रे ॥ सेठ विजय विज-  
 या लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ४ ॥  
 केवलीनें पासे, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूंकी, पालै निर-  
 तीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते सु  
 गते पहुंचा, दंपती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै,  
 जावै जे नर नार ॥ ते वंछित सुख लहै, पहुंचै जवनै पार ॥ १९ ॥  
 ॥ कलश ॥ इम कृष्णपद्म नें शुक्लपद्म शील पाढ्यो निरमलो,  
 ते दंपतीना जाव शुद्धै सदा शुभगुण सांजलो ॥ जिम डुरिय दो-  
 हग दूर जायै सुख आयै बहु परै, दलि सरल संगल मनह वंछत  
 कुशल नित घर अवतरै ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुप्रोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलांमे बैठी राणी कमलावती, ज्जीणी तो नरै मारग  
 खेह ॥ जेवै तमासो इखुकार नगरमें, कौतुक उपनो मनमें एह ॥  
 सांजल रे दासी आज नगरमें वहदो किम घणो ॥ १ ॥ कांतो  
 परधान सखी मंकीया, कां केइ लूंछ्या राजा गांव ॥ कां कोइ गा-  
 र्ग्यो धन नीसर्यो, गारु रह्या वै ठामो ठाम ॥ सां० ॥ आ० ॥  
 ॥ २ ॥ नातो परधान वार्जजी मंकीया, ना कोई राजा लूंछ्या

गांव ॥ जगूपुरोहित धनं तज नीसरयो, राजारै धन लेवा  
 चाव ॥ सांजल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥  
 ३ ॥ घेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घएयोही पितामात ॥  
 ते पिण चारित्र लेवा ऊनह्या, जगू जसा तिशें मोह ललचात ॥  
 सांजल हे रा० ॥ ४ ॥ इन सुण कमलावतीराणी डम कहै, इहां  
 तो कमी नहीं काय ॥ सांजलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म  
 मृता नही ठाय ॥ सा० दासी राजानें ए वाता जुगती नही ॥ ५  
 ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई वै राजारे हजूर ॥ वचन कहै  
 राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोले सूर ॥ सां० हो राजा  
 ब्राह्मण ठोमी रुद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोमी कमला कहै, सां  
 जल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे रुद्धि परिहरि, ते तो घर बाहे म  
 त आण ॥ सांजल हो राजा० ७ ॥ ए रुद्धिसुं अणणे कांड घणो हुसी,  
 राजारा मोटा वै जाग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा  
 कै काग ॥ सांजल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीठो नर जखै,  
 नही परसंसवा जोग ॥ जगूपुरोहित रुद्धि तज नीसरयो, थे  
 जाणयो वै असी म्हारे जोग ॥ सां० राजा० ॥ ९ ॥ संक-  
 लपियोमो पाठो किम लिखै, सांजल हो महाराज ॥ दान दि-  
 यो थे पहिलां हाथसुं, ते पूठो लेतां नावै आने लाज ॥ सांजल  
 रा० १० ॥ निहचे तो मरणो राजाडक दिने, ठोमीनें काम विशेष  
 ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तरै जिनजीरो धर्म एक ॥  
 सांजलहो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन जैलो करी, थे धाळो  
 जंमारारे मांदि ॥ तोपिण ब्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनमो  
 थाय ॥ सांजल हो राजा० १२ ॥ सांजलनें इखुकारराजा बोलीयो,  
 तूं जापैनी वचन संजाल ॥ का तनें राणी जोलो वाजियो, का  
 काई कीधी मतवाल ॥ सांजल हो राणी राजानें, करमा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी जोलो वाजीयो, ना कोइ  
 कीधी मतवाल ॥ ब्रह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण  
 आई हो जूपाळ ॥ सांजल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीने  
 इम कहै, इसमी वैरागण आय ॥ अजू तो निजरां आवै नही, तूं  
 बैठी ठै घर मांय ॥ सांजल हे राणी० १५ ॥ उत्तरवाली तो दीसे  
 नही, इसमी आई ठै मतवाल ॥ हुंतो घर ठोमने नीसरी, थे  
 पिण ठोमो हो जूपाळ ॥ सांजल हो राजा आग्या देवो तो संजम  
 आदरुं ॥ १६ ॥ रतन जस्तरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पमियो  
 फंद ॥ इण रीतै हूं थारे राजमें, रहिने पांमु आणंद ॥ सांजल  
 हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोमने, आरंज  
 धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत आई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो  
 सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मऊ,  
 हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमां-  
 हे हरखित आय ॥ सां० रा० राण द्वेषरा ज्ञांगा लग रह्या १९ ॥  
 मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ दुस्मन  
 तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥  
 सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोन्नी मूरख थका, मुरऊ  
 रह्या जोगमांहि ॥ पहिलाने दुखियो देखी चेत नही, लागी राग  
 द्वेषरी लाय ॥ सांजल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी वोटी  
 पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पमियो आय ॥ आमिष सम  
 जोग ठोमनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांजल रे प्राणी संय  
 मथी सुख पामियै २२ ॥ महल पिलंगादिक अशिर ठै, ते पाम्याठे  
 आपणे हाथ ॥ कामजोगमें रकत होयरह्या, ते तजहोय सांनाथ ॥  
 सांजलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रियारा जोग ठोमने, इय ज्ञावै  
 हलक आय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

सांजल रे प्रा० २४ ॥ गिरुधपंखी ज्युं जोग जाणज्यो, ए काम  
 बंधरै संसार ॥ साण ज्युं मोर प्रकी मरतो रहै, ज्युं पापसुं संक-  
 स्यां इण वारंगे ॥ सांजल रे प्रा० २५ ॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां  
 संयमज्जार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां जेप्र विहार ॥ सांजल  
 रे प्रा० २६ ॥ तन धन जोवन करमो, चंचल बीज समान ॥ खिण रे  
 खूटै आनखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांजल रे प्रा० २७ ॥  
 हस्ती ज्युं बंधण तोरनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटै संयम  
 लियां, सुणो कहं वुं महारांय ॥ सांजल हो रा० सं० २८ ॥ इम  
 सुणनें इखुकारराजा चेतियो, ठोमीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो  
 ए तंजतां दोहिलो, विप्र सहित सार्यां काज ॥ सांजल हो राणी  
 सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह ठोरकै, पायो जिनध-  
 रम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥  
 ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति गुपति  
 दयाल ॥ जमरानी परै करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां०  
 प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज वै, जव्यजीवनें उतारै  
 पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं०  
 ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी संमज्जनें, निरमल जावना जाव ॥  
 वैए जणा ओला कालमें, सुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥  
 ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलोवती, जगुपुरोहित जसा नारणी  
 जगुप्रोहितना दोष दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० सं०  
 ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा जगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥ ३५ ॥  
 ॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥ ३६ ॥  
 ॥ ३७ ॥ प्रथम जिनैलर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रशोद ॥ दान  
 शील तप जावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसस्या  
 राजगृही जेयाने ॥ समवेसरण देवें रंघ्यो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बैठी बारै परखदा, सुणवा जिएवर वाण, दान कहै प्रजु हुं वमो,  
 मुऊने प्रथम वखाण ॥ ६ ॥ सांजलजो सहुको तुमै, कुण बै मुऊ  
 समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥  
 प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीधारी देवल-चढ़ै,  
 सीधै वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरने पारणे, कुण करस्यै मुऊ  
 होम ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारै कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग  
 सगलो वस करुं, मुऊ मोटी बै वांत ॥ कुण दानथकी तिरथा,  
 ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥  
 धनसारथवाह साधुनें, दीधुं धृतनो दान ललना ॥ तीर्थकर पद में  
 दियो, तिरौं मुऊने अजिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहै जग हुं  
 वमो, मुऊ सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा,  
 दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती,  
 पत्निजाज्यो अणगार ललना ॥ कुमार सुबाहु सुख लहै, ते तो मुऊ  
 उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणने पारणे, पत्निजाज्यो  
 कृषिराय ललना ॥ शालिजइ सुख जोगवै, दानतणै सुपसाय ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसें मुनिने पारणो, देतो वोहरी आण  
 ललना ॥ नरत थयो चक्रवर्त्ति जलो, ते पण मुऊ फल जाण ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उमदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष  
 ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥  
 ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणै, श्रीश्रियांशकुमार ललना ॥ सेलमी-  
 रस बहरावियो, पाम्यो जवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंद-  
 नबाला बाकुला, पत्निजाज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट  
 थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव  
 पारेवहुं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थकर चक्रव-  
 र्त्तिपणै, प्रगटयो पुन्य पमूर ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजजव शिशलो



राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेष्ठिकने घर अ  
 चतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ ५म अनेक में  
 ऊधर्या, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुऊ  
 पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहै सुण दा-  
 न तुं, कियो करै अहंकार ॥ आरुंवर आवै पदुर, याचकसुं विव-  
 हार ॥ १ ॥ अंतराय बलि ताहरै, जोगकरम संसार ॥ जिनवर  
 कर नीचो करै, तुऊने पमो धिकार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान  
 तूं, मुऊ शूँ सऊ कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्युं राजा  
 होय ॥ ३ ॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी  
 दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकट सऊ टले,  
 शीले जज्ञ शोजाग ॥ शीले सुर सानिध धरै, शील बनो देराग ॥ ५ ॥  
 शीले सर्प न आज्ञमै, शीले शीतल आग ॥ शीले अरिकरी केसरी,  
 जय जावै सब जाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जय अकी, में डोन  
 व्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांजलजो सुविवेक ॥ ७ ॥  
 ॥ दोहा २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहै  
 जग हूं बनो, मुऊ बात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावै लो-  
 कने, में दानतणी बात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग  
 जाणीये, बलि विरती नही पण काई रे ॥ ते नारद में सीऊव्या,  
 मुऊ जुल ए अधिकार रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिर्या वैरखा, शं-  
 खराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपल्लव  
 कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंद्रै घर आणो  
 रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी०  
 ४ ॥ चंपावार उधारिया, बली चलणिये काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय  
 सुजद्रा जस अयो, में तसु कीधी जीरो रे ॥ शी० ५ ॥ राजा मां-  
 रण मांसीयो, राणी अनयसिं रूपण दाख्या रे ॥ शूलो सिंहासण

में कियो, में श्रेष्ठ सुदर्शन रख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाहि  
 मंत्रीसरें, अवतां अरिदल अंज्यो रे ॥ तिहां पिण सानिध में करी,  
 वला धरम काज आरंज्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट  
 किया, में अगेत्तरसो वारो रे ॥ पांखवनारी डौपदी, में राखी मा-  
 म जारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनवालिका, बलि शीलवती  
 दवदंती रे ॥ चेमानी साते सुत, राजीमंती सुंदर कुंती रे ॥ शी०  
 ९ ॥ इत्यादिक में ऊंघर्या, नर नारीना वृंदो रे ॥ समथसुंदर प्र-  
 नु वीरजी, पहिले मुज आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥  
 तप बोडिथो त्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुज आंगल तुं  
 कितुं, सांजल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा जोजन ते तंज्या, जगमें  
 मीठा नाद ॥ देहतणी शोभा तजी, तुजसो कियो सवाद ॥ २ ॥  
 नारी थकी मरसो रहे, कायर कियुं बखान, कूरु कपट बहु के  
 लवी, जिध तिध राखै प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुज आदरै, ठंकी  
 सहु संसार ॥ आप एक तूं जांजतो, बाजा जांजै चार ॥ ४ ॥ क-  
 रम निकाचित तोरवा, जांजु जवजय जौम ॥ अरिहत मुजने  
 आदरै, वरस ठम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदोसर ऊपरै, मुज  
 खबधै मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारै शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥  
 ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पा-  
 यकतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुज कर फरसै उपशमै, कु-  
 षादिकना रोग ॥ लब्धि अठावीस ऊपजै, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥  
 जे में तार्या ते कहूं, सुणजो मन उछास ॥ चमत्कार चित पाम  
 सो, देशो मुज साबास ॥ ९ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नखदलरी दे  
 शी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, इत्या कोधी चार हो सुंदर ॥ ते  
 पिण तिण जव ऊंघर्यो, मूख्यो मुगति मजार हो सुंदर ॥ १ ॥  
 तप सरखो जग को नही, तप करै कर्मनूं सूरु हो सुंदर ॥ तप

करवुं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूरु हो सुंदर ॥ त० २ ॥  
 सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन  
 माली में ऊपरयो, ठेथा कर्म कगोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिषे  
 एने में कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुतर सहस अतेउरी,  
 सुख जोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घ  
 णो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोनी सेवा करै, ते में  
 कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लवधे कियुं, ला  
 ख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुज शक्ति  
 अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, बांधा जिन  
 चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिवूज्यो, तिण मुज अधिक  
 जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधनो अ  
 णगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुज अधिकार  
 हो सुंदर ॥ त० ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलै, उकरकारक एह हो सुं  
 दर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुज महिम। सवि तेह हो सुंदर ॥ त०  
 ९ ॥ नंदिषेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर ॥ वृष्टिकरी सोव  
 नतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १० ॥ इम बलज्जद्र प्रमुख  
 बहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी,  
 पहिलो मुज प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ जाव कहै  
 तप तूं किसुं, ठेमथुं करै कषाय ॥ पूर्वकोनी जो तप तपै, कणमां  
 खैरूं आय ॥ १ ॥ खंयक आचारज प्रतें, तें बाढ्यो सवि देश ॥  
 अशुज नियाणो तूं करै, कमा नही लवजेश ॥ २ ॥ द्वीपायन  
 रुषि दूहव्या, सांव प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तब क्रोध करी तिहां, कियो  
 छारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शील तप सांजलो, म करो जूठ गुमान ॥  
 लोक सहुको साख दे, धर्म जाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक ठो  
 त्रिण्दे, ये व्याकरणी साख ॥ काम सैर नहि कोइनुं, जाव अणे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रस-  
 वति रस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र  
 मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ जाव विना ते सवि वृथा, जाव फलै  
 नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विधर कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो  
 जाव न हुंततो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ जाव कहे में एकलै,  
 तारया बहु नर नार ॥ सावधान अइ सांजलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥  
 ( ढाल चौथी ॥ कपूर हुवै अति उजलो रे, एदेशी ) ॥ काजिनमें का  
 जसग रह्यो रे, प्रश्नचंद रुबिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, तत-  
 खिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, जाव वर्यो संसार ॥  
 एतो बीजो मुज परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे,  
 लोहचाडूं जवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एला-  
 पूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो०  
 ३ ॥ नूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल  
 महिमा सुर कैरे रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाजथी लोज  
 बाधे घणो रे, आयो मन वैराग ॥ कपिल अयो मुनि केवली रे,  
 ते मुजनें सोजाग ॥ सो० ५ ॥ अणिकासुत गह्वनो धणी रे,  
 खीणजंघा बलि जाण, कीधो अंतगम केवली रे, गंगाजल गुण  
 खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसें तापसजणी रे, दीधी गौतम दिस्क ॥  
 ततखिण कीधा केवली रे, जो मुज मांन सीख ॥ सो० ७ ॥  
 पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी  
 ठोरया रे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंरुडने चालतारे,  
 दीधो दंरु प्रहार ॥ नवदीक्षित अयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी  
 वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पमिलाज्यो उलास ॥  
 मृगलो जावना जावतो रे, प्रोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥  
 निज अपराध खमावती रे, मूक्यो मनथी मान ॥ मगावतीने

में दिखुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपर  
 रे, देखी पूत्रनी रुद्धि ॥ मुजने मनमांहे धर्योरे, ततखिण पामी  
 सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाढ्यो मारगे रे, चांप्यो चपल  
 तुरंग ॥ दर्डुर नामे देवता रे, तेह थयो मुज संग ॥ सो० ॥ १३ ॥  
 प्रभु पाय पूजन नीसरी रे, दुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचमां  
 करी रे, पोहती स्वर्ग मजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ छायांनी शोभा  
 कारमी रे, रूप किसुं अजिमान ॥ जरत आरीसाजुवनमां रे ॥  
 पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढजूति फलानियो रे, प्र  
 गढ्यो जरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप  
 ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन छाजलग रह्यो रे, अजलुकमाल स-  
 साण ॥ सोमल शीस प्रजाखीयो रे, लिहि गयो शुज जाण ॥ सो०  
 ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांजल पृथ्वीचंद ॥ पोते  
 केवल पामियो रे, सेव करै सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक  
 में ऊथर्या रे, मूक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी रे,  
 मुजने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर  
 कहै तुमें सांजलो, दान शील तप जाण ॥ निंदा ठै अति पापणी,  
 धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ पशनिंदा करतां थकां, पापे पिंन जरा-  
 य ॥ वेढ राम बाधै घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक स-  
 रिखो पापीयो, जूनो कोइय न दिह ॥ बलि चंडाल समो कह्यो,  
 निंदक वदन अदिह ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद  
 नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासै निजगुण वंद ॥ ४ ॥ को  
 केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रहो,  
 सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको जाव ठै, एकाकी  
 समरत्य ॥ दान शील तप त्रिणें जला, पण जाव विना अकयष्ट  
 ॥ ६ ॥ अंजन आंसै अंजता, अधिको आणी रेख ॥ रजमांहे

तज काढतां, अधिको ज्ञाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण  
 जणी, चारे सखान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चउ विध  
 धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ए सी ॥ बीर जिणेसर  
 इम जणे रे, बैठी परखदा बार, धर्म करो तुमैं प्राणिया रे, जिमे  
 पामो जव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारों रे,  
 जवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी  
 धन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म  
 समो नहि कोथ रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति परतां प्राणिया रे, राखै  
 श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहको कारमो रे, मति जूलो जवि जर्म रे ॥  
 ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, बलि होसे बै जेह ॥  
 ते जिनवरना धर्मथी रे, छत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥  
 सोलेसे ठासठ सखे रे, सांगाने मजार, प्रद्यप्रजु सुपसाजले रे,  
 एह जणयो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे,  
 खरतरंग ह कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मु-  
 नींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयेवंत ज-  
 सवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ ध० ॥  
 ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ स-  
 मयसुंदर वाचक जणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥  
 दान शीयल तप ज्ञावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां  
 ज्ञावसुं रे, रुद्र समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति दान शील  
 तप ज्ञाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधने मन्त्रथीको  
 वारो ॥ संतोषवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर थाउ उछासी  
 ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतेवनी वात विदलते

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो वो, जैनमार्ग वंदी जुलां  
 कां जमो वो ॥ २ ॥ अलोत्ती अमानी निरागी तजो वो, सलोत्ती  
 समानी सरागी जजो वो ॥ हरि हरादि अन्यथी सुरमो वो, नदीगंग  
 मुक्ती गलीमां पमो वो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे अस्ति चक्रधारा, केइ  
 देव घाले गले रुंममाला ॥ केइ देव उत्संगे राखेवे वामा, केइ  
 देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ  
 मांस जंही माहा विकराला, केइ योगणी जोगिणी जोग मांगे,  
 केइ रुद्रणी ठागनो जोग मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश रा  
 खे, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥ ६ ॥ जदा लोचना थोकनो पार  
 नाव्यो, तदा मथनो विंडुत मन जाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी  
 आस राखे, तेह पिंरुने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी जीम  
 ते केम जाजे, फूटो टोल होवे कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ  
 भ्राता जजो मोक्षदाता, अलोत्ती प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ ८-  
 त्रविंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंरुसुं मत  
 राचो ॥ ९ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेवै, सवि धर्म एकत्व जूलो  
 जमेवै ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां नू-  
 रीरं ॥ १० ॥ किहां स्वर्णधालं किहां कुंजखंमं ॥ किहां कोइवान  
 कीरमंमं ॥ किहां कीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु  
 गगखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां क्रूरवाणी, किह  
 किहां रायरणी ॥ किहां नारकीने किहां देवजोगी, किहां  
 कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म  
 स्वामी जजो अन्य वारी ॥ जिती सेजमां स्वप्न-  
 चे मंदबुद्धी धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अग्रि-  
 राचे, जना मूढमां श्रेष्ठसुं इष्ट वाजै ॥ तजो  
 रातो, तजो पुण्य पोसी जजो ते अरोतो



॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रजु  
पाय स्वामी ॥ तूही २ तुंही प्रजु परमरागी, जवफेरनी शंखला मोह  
जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी है एक अर्ज मोरी, दीजै दासकूं  
सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुआ गुरु आज मेरो, विवेकें  
लह्यो में प्रजु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ बंठित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥  
निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अमृत अक्षर  
अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ दोतराग सेंमुख वंदे, पंच  
परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरथां संपत्ति  
आय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल  
मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु ज्ञापित सार, सोनवियां मन शुद्धसे,  
नित जपिये नवकार ॥ ४ ॥ ( छंद हाटकी ) नवकार अकी  
श्रीपाल नरेश पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कु  
मरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपतां नरक निवारै, पामे ज  
वनो पार ॥ सो ज्ञवियां ज्ञते चोखे चित्ते नित जपियै नवकार ॥ ५ ॥  
॥ बांधी वनसाखा ठीके बैसी हेठल कुंमहुं ताश, तस्करने बलि मं  
त्र समर्थो श्रावक उज्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विष  
धर विष टालेढाले अमृतधार ॥ सो ० ६ ॥ बीजोरा कारण राय महा  
बल अंतर छुष्ट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यह प्र  
तिबोध ॥ नवलाख जपता आयै जिनवर एहवो है अधिकार ॥  
सो ० ७ ॥ पल्लीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध  
परजव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परधख रिद्ध ॥ ए मंत्रअको  
अमरपुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो ० ८ ॥ सन्यासी कासी  
तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीगो श्रीपासकुमारे पन्नग अभवलतो



ते टाले ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इन्द्रनुवन अवतार ॥  
 सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण  
 ध्याने कुष्ट टड्युं नंबरतुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नव-  
 निधि आयै, धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णजुजंगम  
 घाढ्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रज्ञावे हारफूलनो, वसुधा-  
 मांहि विज्ञात ॥ कमलावतियें पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥  
 सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पामी वाण प्रहार,  
 पंद पंच सुणांता पांमुपतघर ते अइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख  
 महिमा मंदिर नवडुख नंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संवल  
 कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकरे गया देवलोके  
 विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही विलसै  
 जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार  
 अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम ज्ञाखै जगवंत ॥  
 पूरवदिसि चारै आदि प्रपंचे समरयां संपति सार ॥ सो० १४ ॥  
 परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंरुरगिरि ऊपर  
 प्रत्यक्ष पेख्यो मणिघर नें इक मोर ॥ सहशुरु सन्मुख विधियें  
 समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आशपेण तस्कर  
 कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अ-  
 मरनी रुद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार  
 ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच  
 सिज्ञाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो  
 पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ ( कलश ॥ उप्पय ) नित्य  
 जपियै नवकार सार संपति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो  
 एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिइंत सुसिद्ध सुख आचार्य जणीजै,  
 श्रीनवज्ञाय सुसाधु पंच परमेष्टि शुणीजै ॥ नवकार सार संसार

वै कुशल लाज वाचक कहै, एक चितै आराधता रुद्रिसिद्धि वंछित  
लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणी लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥

जाकी ठवि कांति अनोपम उपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-

ज्योति जिगामिग जिगमगर, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप

वखाणाहि नूपत, तूही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर

लोक सबे मिल, जाका जस्स शुणंदा है ॥ तेरी खिजमत्त करे

इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तें जलता आग निकाड्या तांग,

किया वरुजाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला

अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पंचागनि,

ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी दुद्धाधारी, अल्प अहार

लियंदा हे ॥ सब जेष सन्यासी रहे नदासी, अविनासी ध्यावंदा

हे ॥ दिसि च्यारां दिठी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥

महिमा बद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण

वत्तां धरिय नकत्तां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अरु कै कुण तो

परके, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो

गारंज जगंदा हे ॥ ४ ॥ जननी मन आसा पूरण पासा, औरापत्ति

संजंदा हे ॥ गल घग्घरमाला जाण हेमाला, दंताला उपंदा हे ॥

वर वीर धंताला मद मतवाला, जोलाली जलकंदा हे ॥ ५ ॥

पंचरंगी परकर सजी सरकर, ढालांसुढलकंदा हे ॥ धतकारे धत्ता मत्ता

अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खमे रहाए, प्रभु

ज्ञानी आरु कंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अजिंमानी तप अज्ञानी, पावक

जीव जलंदा हे ॥ तिहां फाम दुफाम दिखाले लकर, वर फणधर

नागंदा हे ॥ नवकार सुणायां सुरपद पायां, तापस जस घटंदा हे ॥

तिल किया नियाणा तप खजाणा, कोनी सट्टे वेचिंदा हे ॥ ७ ॥  
 हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमगासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन  
 सुतन महाराज विषय डुख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुढी  
 लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रजु अप्रतिबंध वि-  
 हार कियो तव, रत्नवन वास वसंदा हे ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे  
 कान्तसग मजारे, कमगासुर दाव लहंदा हे ॥ वना असुराणा बली  
 हेराणा, पिंढाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार  
 विरोध, महा अजिमान धरंदा हे ॥ बाजल मतवाली नीली काली,  
 वायु महा वाजिंदा हे ॥ ९ ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट,  
 दिवाकर तेज ठिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा उमटी, अरु बाजू  
 गाजंदा हे ॥ गरमाटा वाटा सुणिया आटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥  
 हुआ अकाला धुर वरसाला, बीजलिया षीवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी  
 धारासुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चह्ले जल खाला नदियां  
 नाला, हेमाला हालंदा हे ॥ दरियाव उलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि  
 मावंदा हे ॥ दिगपाल दहल्लां धरिय उत्थल्लां, खोणीपत्ति खिसंदा  
 हे ॥ ११ ॥ वने पादामां जंगी जामां, सजामां ढाहंदा हे ॥ सम  
 दाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ बहु वासर बूढा जाण  
 किरुण, जूठा मन असुरेंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, कान्त  
 लग्न कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ उवसगगाहंदी केल करंदी, पाठा  
 नांदि मुरुंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान  
 धरंदा हे ॥ प्रजु नासा तांड नदी आई, तोही नांहि खुजंदा हे ॥  
 देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीन सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिल  
 अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण वेग चलंदा हे ॥ तिल अवधि  
 प्रयुंजी दीठे प्रजुजी, तन मन अति उलसंदा हे ॥ तिहां पदमा-  
 वनी देव सकती, सुं मिल वेग वहंदा हे ॥ हुयके हेराना वैठ वि

माना, पांवां अंय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फलनाग हजारों कर-विस-  
 तारा, उत्तर जंठावंदा हे ॥ ले आपण खंधे-प्रेम निबंधे, पूरब  
 प्रीत सुखंदा हे ॥ इंडाणीनारी सब सिणगारी, जोवन अंग जिल  
 कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सुंदर रूप सो  
 हंदा हे ॥ आयाला कज्जल जलके विज्जल, खूब वणाव वणंदा  
 हे ॥ नकवेर नत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती जलकंदा हे ॥ नटण  
 पाटंवर जीरो अंबर, आचूषण जलकंदा हे ॥ १६ ॥ जर कंचु क  
 सिया तन छसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा  
 हरिया दूव, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कमियां सोने जमि  
 यां, हीरा पीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके धूरियां पाए धरियां,  
 पग नेवर एणकंदा हे ॥ ले जांजर ताला ताल कंसाला, पस्कावज  
 वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला बीच रसाला, जंगी ढोल घुरंदा हे ॥  
 बाजे सरगई सखरी घाई, नगारा रोमंदा हे ॥ १८ ॥ पञ्चमा बै  
 रुद्धा आण जलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्तायेइर तान त  
 रुंदा, रत जेद रमंदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न बीता, पा  
 वस जल पसरंदा हे ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिठाण्या,  
 कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्ती आख्या रत्ती, किच्ची रीस  
 आवंदा हे ॥ रे मुठा धिठा चित्त विणठा, क्यूं नांही समजंदा हे ॥  
 साहिव बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा हे ॥ २० ॥ ए  
 कमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा हे ॥ असमान खमाई  
 रीस जराई, हिकाइ वजरंदा हे ॥ किच्ची बहु गह्नां पमै दहह्नां,  
 धमहम देह धूजंदा हे ॥ धरणेंद्र मराया तब ते आया, पावां आय  
 लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोमि खमाया सीस नमाया, जगनायक  
 जिनचंदा हे ॥ तूं साहिव-सच्चा तो गुण रच्चा, मेस दिल खुलंदा  
 हे ॥ तें रीस न धरियां क्षिणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा हे ॥

कमठासुर किर्ती बहु विनती, निज अपराध खमा दे ॥ २२ ॥  
 सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा हे ॥ सुध सं  
 जम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा हे ॥ सधनशिखर पर  
 चढकै ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा हे ॥ तेरी कीर्त्ती ज ऊपत्ती, पार  
 न को पावंदा हे ॥ २३ ॥ तूं सच्चा रखे जेद परस्के, गुमानी मो  
 रंदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव कदा हे ॥ तूं  
 दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अल्लापीर फकीर  
 मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुगं मरद अ  
 ठछां, तूंही शेष फरींदा हे ॥ तेंही ऊपाया धंदे लाया, मायामें मु  
 लकंदा हे ॥ तूं बूढ़ा बाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा हे ॥ तूं  
 कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहंदा हे ॥ २५ ॥ बाबागो-  
 साई जेद न पाई, जीम पड्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरा-  
 यण, माधव तूंही मुकंदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतार, तूं देवा  
 देवंदा हे ॥ तूं एकां अण्ये एक नथप्ये, अति निज सुध प्रापंदा हे  
 ॥ २६ ॥ तो देवल मझां लोकति संज्ञा, सीरणिय वाटंदा  
 हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत ज्ञाते, जीणे सुर गवंदा हे  
 ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेमा धुखंदा हे ॥ कुंकुम कसतूरी  
 केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला  
 हंदा, टोमर कंठ ठवंदा हे ॥ चंपा गुलाबां जरीया ठावां, परमल  
 तिहां वासंदा हे ॥ कसाबोई चंगी रचियै अंगो, फूलां बीच फावें  
 दा हे ॥ आजूपण धरियां तन ऊपरियां, कुंमल कान जिगंदा हे ॥  
 २८ ॥ सूरत सोहंदा मूरत हंदा, दीठां नैण ठरंदा हे ॥ तेरी बलि  
 जान मोजां पाजं, वीनती तूंहि सुणंदा हे ॥ २९ ॥ क्या कल्युं ग  
 ह्नां हुकम अदछां, समकित मनबलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिहा  
 रदासा, तुज सेवक बिलसंदा हे ॥ घग्घर नीसांणी पास बखाणी

गुण जिनहर्षकहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीघर नीलाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विशेषे रुद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगै पुण्यदशा सफली

॥ जिन कुश सूरि गुरु अतुलबली, मनवन्तित आपै दादो रंग  
रली ॥ १ ॥ गल लील समें विपुला, नवनवा महोन्नव राजेला ॥ सुप-

सायै गुरु नृती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही

दिन आयै नवला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ

पायक बला, किछोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वीजै चमर नि

साण धुरै नर बै दरवार खरा पुहरै ॥ जय २ करजोनी उचरै, सा

निद्ध गुर सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा जोजन पान सदा, डुख

रोग डुकल न होय कदा ॥ अविचल जलट अंग मुदा, गुरु कूरम

दृष्टि प्रदन्न सदा ॥ ५ ॥ धमधम मादल नाद धुमें, बत्तीसे नाटक

रङ्गरमै । प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें

॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरें वेलानल होयरनें ॥ ध्या

विो कुशल गुरु एक मनें, जूझक सुर मंदिर जरै धन ॥ ७ ॥ तत

खरा दण खंच्यो आवै, करि स्यामघटा मेह बरसावै ॥ तिसीयां

तोय दुरत पावै, जलदाना त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां

जल कछोल करै, प्रवहण नवसायर मझ मरै ॥ वून्ता वाहण जे

समरै, ते आपद निश्वेसुं उवरै ॥ ९ ॥ खरुखरु खरुग प्रहार वहै,

सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल २ गुरु नाम कहै, ते खे-

मकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुभ सकल परचा पूरै, श्रीनाग

पूरै संकट चरै ॥ मंगलोर अधिके नूरै, देरावर जय टालै दूरै ॥ ११ ॥

वीरमपुर बानै सुधरै, खंजायतपुर विक्रमनघरै ॥ जिणचंद सूर पा

टै पवरै, जसु कीरति महीमंरुल पसरै ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम द

रुण आगै, नत्तर गुरु दीपै शोभागै ॥ दहदिशि जन सेवा मागै;

श्रीखरतरगच्छनी महिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टण जन ठाम, ॥  
 ईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते कवर्त्ति पद  
 दी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजने सुखिया  
 राखै ॥ समस्यां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाक जाखै  
 ॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सगुरु उत्पत्ति स्तवन

॥ वर लाठ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनी आश  
 फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश तलै ॥ १ ॥  
 ॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ ज-  
 सु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥  
 शुभ मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥  
 आराध्यां आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥  
 जिण जीती चोसठ जोगणियां, वरा वावन खेतलबोर कियां ॥  
 जसु नामे न परे बीजलियां, भूत प्रेत न कर सके बल्ललियां  
 ॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण  
 पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु  
 सिद्ध बाधी ॥ ५ ॥ सुत सुगल कियो सरजीत बहु, पाये जागा  
 नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक  
 कीध सहू ॥ ६ ॥ वरुनगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लड़ जिण  
 चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेप सहू गुरु पाय  
 परी ॥ ७ ॥ वज्रमय शंजो दोय खंरु कियो, पोथी परगट परज  
 व थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सजियो, वर नयर उज्जैणी सुजश  
 लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंवरु वंसे जीवदया, मंत्री वाठग परलिद्ध  
 थया ॥ बाहुदे कूळै जनम जणूं, ते चवदे विद्या जाण धणूं  
 ॥ ९ ॥ इग्यार वत्तीसै जनम जणूं, इग्यार इगतालै दिह्युं ॥

युगवर ङ्ग्यारै बुलहरै, स्वर्गे वारैसै ङ्ग्यारै ॥ १० ॥ जिनवेछ्छन्नी  
 सूनी पटोहरां, परचाव उदेसर जयहरां ॥ नवनिधि लंछनी  
 संपति करणं, बलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ थुंन  
 सकय श्रीअजमेरे, गढमंनो वर वीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल  
 मेरे, दीपे गुरु गाजीखान मेरे ॥ १२ ॥ सुलतान नगर महिमा  
 सागे, ज्ञावठ दालिदू दूरे जागै ॥ मेरे असमालखानके सोजागे,  
 गुरु पुररने कोरति जागै ॥ १३ ॥ धन२ जे सद्गुरु ध्यान धरे,  
 तेरनवन पूजा जेह करै ॥ गढ खरनरनी महिमा पसरै, कवि  
 सूरि उदय जिनकीरति करै ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सद्गुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसद जिनसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव  
 वंदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ ( चोपाई ) चंद  
 कुलावर पूनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल मुनिंद ॥ नाम मंत्र जसु  
 महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंजल सवि-  
 याणो गाम, धण कण कंचन अति अजिराम ॥ जिहां वसै जि-  
 द्वागन मंत्र, जैतसिरा जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे  
 गीले जग्य, सेताले सिरितंजम रस्य ॥ पाटण संतइतरे जसु पाट,  
 निव्यासियै तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ नूमंजल सरंगे पायाल, अचि-  
 राचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रभु प्रताप नवि आने लोय, में नवि  
 नयलें दागे जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन सुवन्न, पुत्रहीण  
 पामें बहु पुत्र ॥ असुखी पामे सुख संतान, एक मनां करतां गुरु  
 ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सेयल संति सुख संप-  
 ति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते ठंकि नवि संकै व्याप ॥  
 ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उक्कंग जिहां ॥  
 अवेता सुरतरुनी ठांइ, निअै दालिदू मेटे बाहि ॥ ८ ॥ रिसद



विसनरै विस नरनाह, जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रभु नामें ते न  
 बैर पीर, जाजै जावठ जवजय जीर ॥ ए ॥ गेग सोग सवि  
 नासै दूर, अंधकार जिम जुगै सूर ॥ मूरख फीटी पंथित आय,  
 प्रभु पसाय दुख डुरिष पुलाय ॥ १० ॥ दिन २ जिनतासन उ-  
 द्योत, जिहांअठै जवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में जेव्यो आज,  
 गलियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ - ॥ दाख ॥ आज घरअ-  
 गण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, उंदयो पर-  
 मानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धनै गिलियो, जुगपदरागम जो  
 में थुणियो, चंद्रयन्त्र महिषा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी  
 पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥ १४ ॥  
 चार १ एक चित्त जणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सूरै काज  
 आयास विन ॥ १५ ॥ संबत चंवद इक्यासी वरसै, मुलक वादण  
 पुरमें मन हरसै, अजिय जिणोसर पर जुवणै ॥ १६ ॥ कीयो क  
 विन ए मंगल कारण, विधन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत  
 संसो धरो मनै ॥ १७ ॥ जिय १ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल  
 मुनीसर पाया, जयसागर उवझाय धुणै ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु  
 गुण अजिनंदै, रुद्धि लमृद्धै सो चिरनंदै, मनवंठित फल मुऊ हुवो  
 ए ॥ १९ ॥ इति पदं ॥ . . . पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ  
 आश घरे, गुरु मोन ग्रहां कहो केम सरे ॥ दर्शन वहिखो सद  
 गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विश्वमी  
 विरियां आयवणी, केहवी करिये तुऊ अरज घणी ॥ दिव अलगा  
 जो तो वेगा आवो, दिव हील धनीजर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद  
 गुरु खरतर गव साचो, कोइय न जाणो तुऊने काचो ॥ इण संक  
 टमें आज्ञा म करो, दादा दुसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक  
 पनी सदगुरु दमसुं, तो लूं कहसो तिण पर खमसुं ॥ दिवणा दूह

थे मंत ताणो, निथे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आये स्व  
 श्रीमंथ अठा लगै, पाठा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर कश्चि  
 गुरुं अरज इसी, दिव सगला भेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुश  
 ल सूरीसर जंग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले  
 जंजवांलो, परघल निज गेरु प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गमाथे  
 ए गायो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजी हुयं सगला रंगरली,  
 जिनचंदनी आस्या सकले फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 सदगुरुजी थे सांजलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध  
 करो, पुरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो दो दादाजी संफ  
 ति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, आहरा विरुद अने  
 क दो ॥ थां समरथां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो  
 ॥ दो० २ ॥ जीती चौसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥  
 सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥  
 पदिकमणामांहे बीजली, बली २ ऊबकाय हो ॥ थे मंत्रा  
 राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्चव क  
 रतां उच्चमें, मूंड सुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवाभियो, संव  
 मांहे राख्यो दादै सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वरुनगररे ब्राह्मणें, देदरे  
 धरी मृनगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादै पा  
 ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकोया तें सडू डस्क  
 ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सडुनें दियो दादै सुस्क हो ॥ दो०  
 ॥ अंबर हाथे अकरै, थे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग  
 जयो, आखै अंविकादेव हो ॥ दो० ॥ ७ ॥ थांजो वज्र विदारनें,  
 थी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअकरे, उंजेलीमांहे लीध  
 ॥ दो० ॥ ८ ॥ इम विरुद घणा वै तादरा, कहतां नावै पार  
 ॥ जागसंजोगे दादो जेदियो, अरुदभिया आधार हो ॥ दो० ॥

॥ १० ॥ हुं ठूं सेवक ताहरो, थे आपो धन रुद्ध हो ॥ कनककीरत  
 सुपसानलै, लाज्जनदय सुख सिद्ध हो ॥ दा० ११ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशणसदा देवो ॥  
 दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो ममरचां आपे सुखंशाता, दादो  
 जगबंधव जगगुरु आता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगले पूरै,  
 दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो डुरित हरै सद्गुनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥  
 दादो अलगंधी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हाारा  
 दादाजीनी जोरु कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे  
 राजै, जिहां सुजशनगरा नित वजै, दादो गोगाळां सेहर ठाजै,  
 दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकरु घोली, हाथे लेइ सोवन क  
 चोली, पूजो दादाजीनें मिलै टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरति-  
 यां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन  
 सासन नित उजवाळै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत  
 माहाराजा, दादो राजै खरतर गढ राजा, दादो समरचां सफल  
 करै काजा ॥ दा० ॥ ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी,  
 दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाडं दादाजीनी हूं वलिहारी ॥  
 दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन गो  
 हगाटै, जसु थान सोहे जग थिरआटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर  
 निजर मुऊ पर करियै, दादा आरति पोसा छुख हरियै, दादा जिय  
 जग जयकमला वरियै ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध कर  
 ज्यो, दादा दुस्मणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनबंधित फलज्यो ॥  
 दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गमाळै,  
 सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै  
 सेवकनी चिंता चूरै हो ॥ गा० ॥ २ ॥ ठतरीनितरी ठबि ठावे  
 विगमें थिर थुन थिराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ ऊलरे यात्री मि-

आवै, दादोजी दीठां सुख पावै हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घल  
 जारिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो  
 पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ६ ॥  
 दादोजी छुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा०  
 ॥ ७ ॥ हय हाथी रघुपति बहुला, गुरु नामे पामे कमलां हो ॥  
 ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी  
 हो ॥ गा० ॥ ९ ॥ अलगांथी रोग गमावै, गुरु पूज्यां वंछित पावै  
 हो ॥ गा० ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी, तिण  
 बेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ ११ ॥ ग्रह गोचर चोर  
 जंजालै, पीरा हुवै आलेमालै हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ बाजै  
 जग जशना बाजा, राजै खरतर गढ राजा हो ॥ गा० ॥ १३ ॥  
 जसु जैतसिरी वर माता, जिह्वा गरमंत्र विख्याता हो ॥  
 गा० ॥ १४ ॥ संवत सतरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥  
 गा० ॥ १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासे  
 हो ॥ गा० ॥ १६ ॥ सम यात्रा करी आणंदे, जिनप्रति जतीसर  
 वंदे हो ॥ गा० ॥ १७ ॥ इति पदं ॥ पुनः सदाइ मेरे श्रीजि-  
 नकुशल गुरु ॥ कुशल करण कलिमाहे प्रगटयो, खरतर गढ वरू  
 ॥ स० ॥ वावनेचंदन मृगमद मेलो, पूजो प्रेम जरू ॥ स० ॥ १ ॥  
 चिंता चूरण विघ्न विमोक्षण, दालिड दूरहरू ॥ स० ॥ २ ॥ दिन १  
 साहिव चढते वाने, ध्यावो ग्यानधरू ॥ स० ॥ वाजै जेहना  
 जशना बाजा, ठावी ठामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अटारसमें  
 अरुसठै, मिगसरमाश शिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु जेटे,  
 श्रीजितहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाय गजालै, तरण नमंता, तूठो  
 कटप्रतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिने, उदयरत्न करू ॥  
 स० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जी, समरंता दादोजी

आशा ॥ संकट देख सेवककूं सद्गुरु, देराजरतें ध्यायेजं ॥ १ ॥  
 ॥ १ ॥ दादा बरसे मेहनै रात झंयेरी, वाय पिया सबलो वायो ॥  
 पंचनदी हम वैगे वेरी, दरायै चित नरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥  
 दादा नञ्जणी, पोहचावण आयो, खरतर संव सवायो ॥  
 समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स०  
 ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ जाया जक्तिसुं पूर ह्वो रे,  
 झरिजन संव डुर ह्वो रे ॥ ज्ञा० ॥ मेरे मनमें जक्ति वैरागी, चित  
 परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी ज्ञान्यदशा अब जागी, जीया हो  
 ज्ञा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आयो, गुरुचरणे चोक पूरावो ॥  
 बलि अकत आल बधावो, जीहा हो ज्ञा० ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत,  
 सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया  
 हो ज्ञा० ॥ ३ ॥ घत केसर जरके कर्बोली, मांहे मृगमद कुंकुम  
 थोली ॥ गुरु पूज रचो जर जोली, जीया हो ज्ञा० ॥ ४ ॥ श्री  
 जिनदर्प सूरिसरराजा, वाजै जग जशना वाजा ॥ सत्यरत्न करै  
 सुज काजा, जीया हो ज्ञा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
 ॥ राग कैरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो जवि हितसुं, कु० ॥  
 कशर चंदन कपूर अरगजा, जाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु०  
 १ ॥ मोगरा लाल गुलाब आलती, मन सुख माल करै जवि रुच-  
 सुं ॥ कु० २ ॥ अशरण शरण परम गुरु सबो, धरम ध्यान धरौ  
 आत्म रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आता  
 पूरै गुरु धणुं दत्तसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुधारै ज्ञान वधारै, रूप रंग  
 देव वित दिन मत्तिसुं ॥ कु० ५ ॥ कुशल सूरिंद गुरु सानिधका  
 री, परतिख परचा पूरै सतसुं ॥ कु० ६ ॥ श्रीजिनदर्प सदा  
 सुबिलाशी, सत्यरत्न सुख एही उत्तसुं ॥ कु० ७ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ राग दे० रीचलत ॥ गन करो रे उगाह, श्रीजिनकुशल

